मास्टर ऑफ आर्ट्स (हिस्ट्री)

द्वितीय सेमेस्टर

इतिहास लेखन: प्राचीन एवं मध्यकालीन

अध्ययन मण्डल

अध्यक्ष,

कुलपति,

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,हल्द्वानी

अध्ययन मण्डल के सदस्यों के नाम

1. प्रोफेसर गिरिजा प्रसाद पाण्डे, निदेशक समाज विज्ञान विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
2. प्रोफेसर रामेश्वर प्रसाद बहुगुणा, इतिहास विभाग एवं संस्कृति विभाग, जामिया मिल्लिआ इस्लामिय विश्वविद्यालय , दिल्ली
3. प्रोफेसर शन्तन सिंह नेगी , इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, एच.एन.बी. गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय,गढ़वाल
4. प्रोफेसर वी.डी.एस. नेगी , इतिहास विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा
5. डॉ. मदन मोहन जोशी, समन्वयक इतिहास विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. मदन मोहन जोशी

इकाई लेखन

इकाई एक:इतिहास: अर्थ, महत्व एवं प्रकृति डॉ. रमा जैसवाल,डी- 170, गामा 1,ग्रेटर नोयडा, गौतम बुद्ध नगर

इकाई दो: इतिहास का विषय क्षेत्र,डॉ. रमा जैसवाल,डी- 170, गामा 1,ग्रेटर नोयडा, गौतम बुद्ध नगर

इकाई तीन:ऐतिहासिक व्याख्या: अर्थ, प्रकृति, सिद्धान्त, प्रकार एवं विशेषताऐं, डॉ. रमा जैसवाल,डी- 170, गामा 1,ग्रेटर नोयडा, गौतम बुद्ध नगर

इकाई चार: इतिहास में पूर्वाग्रह या झुकाव तथा वस्तुपरकता की समस्या,डॉ.तबस्सुम निगार, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, विवि. दिल्ली

इकाई पांच : इतिहास की पुराण परंपरा, डॉ. मोना राठौड़, देवसंसंस्कृजिविश्वविद्यालय, हरिद्वार

इकाई छह : भारतमें जीवनी साहित्य का विकास, डॉ. सिराज मोहम्मद, एम.बी.पी.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी

इकाई सात : प्राचीन इतिहास लेखन: हेरोडोटस, थ्यूसीडाइड्स डॉ. नूतन सिंह,,इतिहास विभाग, वाई.डी. कालेज, लखीमपुर, उत्तर प्रदेश

इकाई आठ : मध्यकालीन चर्च और इतिहास लेखन: टेसीटस, सन्त ऑगस्टाइन, डॉ. नूतन सिंह,,इतिहास विभाग, वाई.डी. कालेज, लखीमपुर, उत्तर प्रदेश

इकाई नौ : इस्लामी परंपराऐं और इब्न खाल्दून, मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन: कल्हण,,बरनी,अबुल फजल, बदायूंनी,, डॉ. नूतन सिंह,,इतिहास विभाग, वाई.डी. कालेज, लखीमपुर, उत्तर प्रदेश

आई.एस.बी.एन.	:
कॉपीराइट	: उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
प्रकाशन वर्ष	:
Published by	: उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल-263139
Printed at	:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी अंश उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इकाई एक- इतिहास: अर्थ, महत्व एवं प्रकृति

1.1 प्रस्तावना

1.1.1 उद्देश्य

1.3 इतिहास का अर्थ

1.3.1 भारतीय दर्शन के अनुसार इतिहास का अर्थ

1.3.2 पारसी धर्म में इतिहास का अर्थ

1.3.3 'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति

1.3.4 इब्न खल्दूम द्वारा इतिहास की परिभाषा

1.3.5 इतिहास विज्ञान है, कला का विषय है या कुछ और है

1.3.6 इतिहास का तात्पर्य तथा 'इतिहास' शब्द की व्याख्या

1.4 इतिहास का महत्व

1.4.1 इतिहास के प्रेरक-प्रसंग

1.4.2 इतिहास के अध्ययन की महत्ता

1.4.3 इतिहास के अध्ययन की उपयोगिता त्तथा उसकी अनुपयोगिता

1.4.4 क्या हम इतिहास से कुछ सीख सकते हैं?

1.5 इतिहास की प्रकृति

1.5.1 इतिहास किस अनुशासन के अंतर्गत आता है

1.5.2 इतिहास स्वयं को दोहराता है

1.5.3 इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है

1.5.4 इतिहास की प्रकृति रेखीय है

1.5.5 समय के साथ-साथ इतिहास-दृष्टि तथा इतिहास-लेखन की तकनीक में परिवर्तन

1.5.6 मार्क्सवादियों की दृष्टि में इतिहास की प्रकृति

1.5.7 कारणत्व की प्रकृति – क्या इतिहास ख़ुद को दोहराता है?

1.6 सारांश

1.7 पारिभाषिक शब्दावली

1.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

1.10 निबंधात्मक प्रश्न

1.2 प्रस्तावना

संस्कृत भाषा में 'इतिहास' शब्द को -'इति-ह-आस' इन तीन शब्दों का संश्लिष्ट रूप माना गया है. 'इतिहास' का अर्थ है - 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ.' **'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति – ग्रीक भाषा के शब्द 'हिस्टोरिया' से हुई है जिसका अर्थ है – मानवीय अतीत के अन्वेषण द्वारा प्राप्त ज्ञान.** प्रसिद्द अरब इतिहास - दार्शनिक इब्न खल्दूम के अनुसार-

'इतिहास क्रान्ति तथा राजनीतिक विप्लव के फलस्वरुप ,युद्ध ,सामाजिक परिवर्तन ,संस्कृति-विश्व ,समाज-मानव - '.पतन का वृतांत है-राष्ट्रों के उत्थानचूंकि इतिहासकार, घटनाओं के दृष्टा तथा प्रायः उनके भागीदार हैं इसलिए वो आम तौर पर घटनाओं का विवरण अपने समय के परिप्रेक्ष्य में करते हैं बेनेदेत्तो क्रोचे के अनुसार – 'समस्त इतिहास, समकालीन है.' लेकी इतिहास को नैतिक क्रान्ति का लेखा-जोखा तथा उसकी व्याख्या मानता है और लेबनीज़ उसे धर्म के वास्तविक निरूपण के रूप में देखता है. कार्ल मार्क्स के अनुसार – 'आज तक विद्यमान सभी समाजों का इतिहास, वास्तव में वर्ग-संघर्ष का इतिहास है.' इतिहास का अत्यधिक महत्व है. प्रसिद्द चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस कहता है –'यदि तुम भविष्य को परिभाषित करना चाहते हो (उसे समझना चाहते हो) तो अतीत का अध्ययन करो.' इतिहास के प्रेरक प्रसंग हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व रखते हैं. महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व और कृतित्व से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं. कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' का अध्ययन कर हम आदर्श शासक के मापदंडों से अवगत हो सकते हैं. औपनिवेशिक शासन में जहाँ गौरांग प्रभुओं द्वारा गुलाम भारत के नागरिकों को अर्ध-सभ्य और बर्बर समझा जा रहा था वहां इतिहास के माध्यम से संसार को यह ज्ञात हुआ कि भारत में लगभग 5000 वर्ष पूर्व हड़प्पा सभ्यता जैसी उन्नत सभ्यता थी. इतिहास ही हमको यह बतलाता है कि हिटलर और उसकी ही जैसी रोगी-मानसिकता वालों का अहंकार, घृणा, जातीय-श्रेष्ठता तथा संकुचित-राष्ट्रीयता की भावना का परित्याग करने में ही संसार का कल्याण है.

हमारा इतिहास-विषयक दृष्टिकोण, हमारे वर्तमान-विषयक दृष्टिकोण को विकसित करता है और हमको यह सुझाता है कि हम वर्तमान में विद्यमान अपनी समस्याओं अतीत के ज्ञान की सहायता से कैसे सुलझाएँ. 18 वीं शताब्दी के ब्रिटिश विचारक एडमंड बर्क ने भी इतिहास के अध्ययन को बेहतर वर्तमान और बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक माना है –'वो लोग जो इतिहास नहीं जानते हैं, वो उसे दोहराने के लिए अभिशप्त हैं.'इतिहास की प्रकृति आंशिक रूप से एक विज्ञान की है, आंशिक रूप से कला के एक विषय की और आंशिक रूप से एक दर्शन की भी है.

इतिहास स्वयं को दोहराता है, इसकी पुष्टि इतिहास की युग-चक्रवादी व्याख्या से भी होती है. इतिहास की प्रकृति चक्रीय है. इतिहास का चक्र घूमता रहता है, कभी इसमें उत्थान होता है तो कभी पतन होता है.इतिहास के चक्रीय सिद्धांत का पोषक अरब इतिहासकार इब्न खल्दून का विचार है कि जब कोई समाज एक महान सभ्यता के रूप में विकसित हो जाता है तो अपने चरमोत्कर्ष के बाद उसके पतन का काल प्रारंभ हो जाता है.स्पेंगलर विश्व इतिहास को महान संस्कृतियों का एक नाटक मानता है. प्रत्येक संस्कृति का अपना बचपन, जवानी और बुढ़ापा होता है और एक समय ऐसा भी आता है जब कि उस संस्कृति की मृत्यु हो जाती है. **टॉयनबी** ने भी चक्रीय सिद्धान्त का अनुकरण किया है.

अनेक इतिहासकार मानते हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है क्योंकि उनकी दृष्टि हर ऐतिहासिक घटना अपने आप में अनूठी होती है. डेविड इरविंग का यह मानना है कि इतिहास नित्य अपना रूप बदलता है –'इतिहास एक नित्य-परिवर्तनशील वृक्ष के समान है.' हेगेल का विचार है कि इतिहास द्वंद्वात्मक संघर्ष की एक अटल प्रक्रिया है. मार्क्सवादी इतिहास सामान्यतः नियतिवादी है क्योंकि यह प्रदर्शित करता है कि इतिहास एक निश्चित अन्त की ओर बढ़ता है और वह अन्त है - 'एक वर्गहीन मानव-समाज' की स्थापना.आर्थर मेर्विक के अनुसार इतिहास के स्वरुप में तथा उसकी विषय-वस्तु में, विभिन्न पीढ़ियों की ऐतिहासिक प्रणालियों के, तथा ऐतिहासिक सामग्री की उपलब्धता के अनुरूप, बदलाव होता रहता है.

1.3 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य विभिन्न विद्वानों के इतिहास के अर्थ विषयक विचारों से आपको परिचित कराना है और मानव-जीवन में इतिहास के महत्व तथा इतिहास की प्रकृति से भी आपको अवगत कराना है. इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप अग्रांकित के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे-

1- प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के विद्वानों द्वारा इतिहास के अर्थ की व्याख्या और उसके परिभाषा के विषय में.
2- विभिन्न इतिहास-दार्शनिकों तथा विचारकों द्वारा इतिहास के महत्व को स्पष्ट करने के विषय में.
3- इतिहास को खुद को दोहराने की अपनी प्रकृति के विषय में
4- इतिहास को खुद को न दोहराने की अपनी प्रकृति के विषय में
5. इतिहास की रेखीय प्रकृति के विषय में.

1.3 इतिहास का अर्थ

1.3.1 भारतीय दर्शन के अनुसार इतिहास का अर्थ

संस्कृत भाषा में 'इतिहास' शब्द को -'इति-ह-आस' इन तीन शब्दों का संश्लिष्ट रूप माना गया है. 'इतिहास' का अर्थ है - 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ.' भारतीय इतिहास-चिंतन की दृष्टि से - अतीत के जिन वृतांतों को हम निश्चयात्मक रूप से प्रमाणित कर सकें, उसे हम इतिहास के श्रेणी में रखते हैं. अपने ग्रन्थ में आचार्य दुर्ग कहता है 'निरुक्ति भाष्य वृत्ति' – वह ,यह जो कहा जाता है 'यह निश्चित रूप से ऐसा हुआ था' अर्थात् 'इति हैवमासीदिति यत् कथ्यते तत् इतिहासः' – .इतिहास हैसंस्कृत भाषा में 'इतिहास' शब्द को -'इति-ह-आस' इन तीन शब्दों का संश्लिष्ट रूप माना गया है. 'इतिहास' का अर्थ है - 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ.' भारतीय इतिहास-चिंतन की दृष्टि से - अतीत के जिन वृतांतों को हम निश्चयात्मक रूप से प्रमाणित कर सकें, उसे हम इतिहास के श्रेणी में रखते हैं.

प्रारंभ में इतिहास को केवल आख्यानों, नायकों की गाथाओं तथा लोक-गाथाओं तक सीमित किया जाता था. अरब कहा करते थे – 'इतिहास शासकों तथा योद्धाओं के लिए, कविता मनुष्यों के लिए तथा अंकगणित दुकानदारों के लिए है. परन्तु वास्तव में इतिहास में उन सब का चित्रण किया जाता है जो कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य को प्रभावित करते हैं.'

1.3.2 पारसी धर्म में इतिहास का अर्थ

पारसी धर्म के प्रवर्तक ज़रथुस्त्र के अनुसार –'इतिहास - सत् और असत् के मध्य संघर्ष की तथा अंततः सत् की विजय की गाथा है.'

1.3.3 'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति

'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति – ग्रीक भाषा के शब्द 'हिस्टोरिया' से हुई है जिसका कि अर्थ है – मानवीय अतीत के अन्वेषण द्वारा प्राप्त ज्ञान. 'हिस्ट्री' - यह ज्ञान के अन्वेषण की वह शाखा है जिसमें कि विवरणों, घटनाओं के क्रमिक वृतांतों का परीक्षण तथा विश्लेषण किया जाता है. 'अन्वेषण' वह आयनिक व्युत्पत्ति है जिसका कि पहले गौरवशाली यूनान में विस्तार हुआ और फिर इसका विस्तार समस्त हेलेनिस्तिक सभ्यता में हो गया. 'हिस्तोरे' का अर्थ – पदार्थों

का, दिक्काल द्वारा निर्धारित ज्ञान होता है. इसमें स्मरण द्वारा उपलब्ध ज्ञान की महत्ता है (जब कि विज्ञान में बुद्धि, विवेक द्वारा उपलब्ध ज्ञान को तथा काव्य में स्वैर कल्पना (स्वप्न-चित्र) द्वारा प्राप्त ज्ञान को महत्ता दी जाती है). ग्रीक (यूनानी) भाषा में 'हिस्तोरे' उस विशेषज्ञ को कहते थे जो कि वाद-विवाद में निर्णायक की भूमिका निभाता था. 'हिस्ट्री' शब्द का पहली बार प्रयोग हेरोडोटस ने किया था. 'हिस्ट्री' से उसका आशय- 'अन्वेषण' था.यूनानी मिथकशास्त्र में इतिहास तथा खगोलशास्त्र का विकास म्यूसेस की दैविक प्रेरणा के कारण माना जाता है और इस तरह इतिहास, कला से सम्बंधित प्रतीत होता है. इतिहास में हम वास्तविकता का विश्लेषण करने के स्थान पर हम अपने ढंग से उसकी व्याख्या करने पर बल देते हैं. सामान्यतः वैज्ञानिक ज्ञान, वस्तुगत वास्तविकता पर मानव-क्रिया का एक भाग है. इतिहास में सबसे अधिक महत्त्व लिखित वृतांत को दिया जाता है. यूनानियों से रोमवासियों को 'हिस्ट्री' का अर्थ ज्ञात हुआ और तदन्तर इसका प्रसार विश्व की अन्य भाषाओँ में हुआ.

हैलीकर्नेसस के डायोनिसियस के अनुसार – उदाहरणों से जो दर्शन प्राप्त होता है वह इतिहास है.अंग्रेज़ी भाषा में 'हिस्ट्री' शब्द का प्रवेश 1390 में हुआ इसका अर्थ – 'घटनाओं की गाथा' बताया गया. 15 वीं शताब्दी से इसे अतीत में हुई घटनाओं का लिखित वृतांत कहा जाने लगा और 1531 से इतिहास-विषयक शोध-कर्ता को इतिहासकार कहा जाने लगा.

1.3.4 इब्न खल्दून द्वारा इतिहास की परिभाषा

प्रसिद्द अरब इतिहास-दार्शनिक इब्न खल्दून के अनुसार -'इतिहास - मानव-समाज, विश्व-संस्कृति, सामाजिक परिवर्तन, युद्ध, क्रान्ति तथा राजनीतिक विप्लव के फलस्वरुप राष्ट्रों के उत्थान-पतन का वृतांत है.'

1.3.5 इतिहास विज्ञान है, कला का विषय है या कुछ और है

इतिहास, रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र और जीव विज्ञान शैक्षिक अनुशासन हैं. इन अनुशासनों में निरंतर अध्ययन कर नई-नई खोज की जाती हैं. समय के साथ-साथ ज्ञान में वृद्धि के कारण इन विषयों में अन्वेषण की प्रणालियों में परिवर्तन होता रहता है और फिर इन में नई-नई खोजें होती हैं. ये विषय रूढ़िवादी नहीं हैं, इन विषयों में कही जाने वाली बात का सदैव एक ही अर्थ नहीं होता है और हमारा विश्व भी समय बदलने के साथ बदलता रहता है. इस दृष्टिकोण से हम केवल इतिहास को ही नहीं, अपितु प्रतिष्ठित वैज्ञानिक विषयों को भी कला के अंतर्गत मान सकते हैं.

1.3.6 इतिहास का तात्पर्य तथा 'इतिहास' शब्द की व्याख्या

इतिहास का तात्पर्य, अतीत में हुई घटनाओं की उत्पत्ति का अन्वेषण करना, उनका अन्तः-सम्बन्ध समझना तथा उनकी एक-दूसरे से तुलना करना होता है. यह समाज में गतिमान बलों के आकार तथा उनकी रूपरेखा के अन्वेषण का प्रयास करता है. थॉमस कार्लाइल को इतिहास में 'ग्रेटमैन थ्योरी' (महापुरुष का सिद्धांत) का भाष्यकार माना जाता है. उसका विचार है – 'सार्वभौमिक इतिहास महान पुरुषों के कार्यों (उपलब्धियों) पर आधारित है.' इतिहास उन ' -घटनाओं का वृतांत है जो कि मानवजाति के मध्य घटित हुई हैंपतन सहित ऐसे अन्य -राज्यों का उत्थान ,इन में राष्ट्रों . जाति की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को प्रभावित -महत्वपूर्ण परिवर्तन भी सम्मिलित हैं जिन्होंने कि मानव '.किया है

- वोल्तेयर 'दि फिलोसोफिकल डिक्शनरी में कहता है –
- 'समस्त इतिहास की पहली बुनियाद, बाप-दादों द्वारा अपने बच्चों को सुनाए गए किस्से- कहानियाँ हैं. यही किस्से-कहानियां एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं. अगर ये किस्से-कहानियाँ हमारी सामान्य-बुद्धि को झकझोरते नहीं हैं तो अपने मूल में ये सत्य के निकट हो सकते हैं किन्तु एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते इनमें सत्य का अंश निरंतर घटता जाता है.'

चूंकि इतिहासकार घटनाओं के दृष्टा तथा प्रायः उनके भागीदार हैं इसलिए वो आम तौर पर घटनाओं का विवरण अपने समय के परिप्रेक्ष्य में करते हैं और कभी-कभी इस आशय से वर्णन करते हैं कि अपने स्वयं के भविष्य के लिए हम उन घटनाओं से क्या और कैसे सीख़ ले सकते हैं. बेनेदेत्तो क्रोचे के शब्दों में – 'समस्त इतिहास, समकालीन है.'
इतिहास प्रायः वस्तुपरक दृष्टिकोण से घटनाओं के कारणों तथा उनके प्रभावों का अन्वेषण करता है. इतिहासकार इतिहास की प्रकृति तथा उसकी उपयोगिता पर बहस करते हैं. सर वाल्टर रैले के अनुसार – 'इतिहास का लक्ष्य तथा उसका कार्य-क्षेत्र है – अतीत में हुई घटनाओं के उदाहरणों से हमको ऐसी बुद्धि प्रदान करना जो कि हमारे कर्मों तथा हमारी आकांक्षाओं का मार्ग-दर्शन कर सके. अरस्तू के अनुसार – 'इतिहास अपरिवर्तनशील भूतकाल का वृतांत है.'
फ्रांसिस बेकन के अनुसार – 'इतिहास वह अनुशासन (विषय) है जो मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है.'आर डब्लू एमर्सन के अनुसार – 'सही कहा जाए तो इतिहास जीवनियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है.' थॉमस कार्लाइल के अनुसार: 'मेरी दृष्टि में –'सार्वभौमिक इतिहास, मनुष्य की उपलब्धियों का वृतांत है. इतिहास, मुख्यतः महान व्यक्तियों के कार्यों की गाथा तथा समाज का गठन करने वाले व्यक्तियों के सामाजिक जीवन का कुल जोड़ है. इतिहास असंख्य व्यक्तियों की जीवनियों का सार है.'लेकी के अनुसार – 'इतिहास नैतिक क्रान्ति का लेखा-जोखा तथा उसकी व्याख्या है.' लेबनीज़ के अनुसार – 'इतिहास, धर्म का वास्तविक निरूपण है.'वोल्तेयर के अनुसार – 'अपराध तथा दुर्भाग्य को चित्रित करना इतिहास है.' गिबन के भी वोल्तेयर के इतिहास विषयक विचार को दोहराते हुए कहता है- 'वास्तव में इतिहास - अपराध तथा दुर्भाग्य के लेखे-जोखे से कुछ ही अधिक है.'

सर जॉन सीले के अनुसार –'इतिहास, प्राचीन राजनीति है.'कार्ल मार्क्स के अनुसार – 'आज तक विद्यमान सभी समाजों का इतिहास, वास्तव में वर्ग-संघर्ष का इतिहास है.' लार्ड ऐक्टन के अनुसार – 'मानव-स्वातंत्र्य की कहानी को बतलाना ही इतिहास है.' अमेरिकी इतिहासकार एलेन नेविन के अनुसार – 'इतिहास वह पुल है जो कि अतीत को वर्तमान से जोड़ता है और हमको भविष्य को जाने वाला मार्ग दर्शाता है.'

'व्हाट इज़ हिस्ट्री' में ई. एच. कार कहता है – 'इतिहासकार तथा तथ्यों के मध्य निरंतर पारस्परिक क्रिया का प्रक्रम, इतिहास है. इसमें वर्तमान तथा अतीत के मध्य शाश्वत संवाद होता है.'अलग अर्थों -शब्द का हम दो अलग 'इतिहास' – में प्रयोग कर सकते हैं

1. वे घटनाएँ तथा वो कार्य जिनको मिलाकर मानव-अतीत बनता है. इस सन्दर्भ में इतिहास – अतीत का वास्तविक वृतांत है.
2. अतीत का वृतांत और उस वृतांत हेतु उपयुक्त अन्वेषण की विधियाँ. इस सन्दर्भ में इतिहास का अर्थ – अतीत में हुई घटनाओं का अध्ययन तथा उनका वर्णन है.

स्पेंगलर इतिहास की व्याख्या करते हुए कहता है – 'मानव-जीवन अपनी आतंरिक प्रवृत्ति तथा मौलिक प्रेरणा से विकास और निर्माण की जिस प्रक्रिया में गतिमान है, उसी का नाम इतिहास है.' स्पेंगलर इतिहास को एक निरंतर एवं क्रमबद्ध प्रक्रिया नहीं मानता है. इतिहास को 'प्रागैतिहासिक काल', 'प्राचीन काल', 'मध्य काल' तथा 'आधुनिक काल' में विभाजित किया जाना उसे स्वीकार्य नहीं है. स्पेंगलर के अनुसार इतिहास की प्रवृत्ति रेखात्मक नहीं अपितु वृत्तात्मक (चक्रीय) है.

जी. आर. एल्टन के अनुसार – 'इतिहास का सम्बन्ध अतीत में हुए मनुष्य के उन सभी कथनों, विचारों, कार्यों तथा कष्टों से है जिन्होंने वर्तमान के लिए अपनी धरोहर छोड़ी है. इतिहास में मनुष्य के अतीत की विशिष्ट घटनाओं का, तथा उसके जीवन में हुए विशिष्ट बदलावों का अध्ययन किया जाता है.'ई. एच कार के अनुसार – 'इतिहास – अतीत और वर्तमान के मध्य एक चिरंतन संवाद है और इतिहासकार का मुख्य कार्य, वर्तमान की पहेली को समझने की कुंजी के रूप में अतीत को भलीभांति समझना है.'

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि इतिहास के केंद्र में मुख्यतः मानव-गतिविधियाँ हैं और इसमें प्रगति एवं विकास हेतु मानव-संघर्ष का अध्ययन किया जाता है. इतिहास में परिवर्तन का अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि जीवन में भी नियमतः परिवर्तन होते हैं. इसलिए सच्चा इतिहासकार वह है जो कि अपने दृष्टिकोण में जीवन के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में हो चुके, हो रहे, तथा होने वाले परिवर्तनों को महत्ता प्रदान करे. संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अतीत में घटित घटनाओं का वास्तविक तथा सत्यनिष्ठापूर्ण वृतांत – इतिहास है.

1.4 इतिहास का महत्व

1.4.1 इतिहास के प्रेरक-प्रसंग

प्रसिद्द चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस कहता है –'यदि तुम भविष्य को परिभाषित करना चाहते हो (उसे समझना चाहते हो) तो अतीत का अध्ययन करो.' इतिहास वह दर्शन है जो कि उदाहरण से शिक्षा देता है –थ्यूसीडाइड्सइतिहास के प्रेरक प्रसंग हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व रखते हैं. महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व और कृतित्व से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं. महान शासकों के कुशल प्रशासन, अपनी प्रजा के प्रति उनका स्नेह, उनका निष्पक्ष न्याय, उनका चातुर्य, उनका साहित्य और कला के प्रति प्रेम, उनकी कर्मठता और बहुधा उनका त्याग हमारे लिए एक आदर्श उपस्थित करता है.सॉलोमन का चातुर्य, विशेषकर उसकी व्यावहारिक बुद्धि, परवर्ती शासकों के लिए एक प्रेरणा स्रोत रही है. सम्राट अशोक जिस प्रकार से चंडाशोक से धम्माशोक बना और जिस प्रकार से उसने शांति, अहिंसा तथा परोपकार की भावना को अपने शासन में स्थान दिया यह ऐतिहासिक गाथा किसी भी शासक के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकती है. राजा विक्रमादित्य का न्याय और खलीफ़ा हारून-अल-रशीद का अपनी प्रजा के कष्टों का निवारण करने के लिए भेस बदल कर घूमना, भोज का साहित्य तथा कला को प्रोत्साहन देने का सराहनीय प्रयास, या फिर शेरशाह की प्रशासनिक सु-व्यवस्था आदि इतिहास के अनेक ऐसे प्रेरक प्रसंग हैं जिनका ऐतिहासिक ज्ञान किसी भी शासक के सुशासन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकता है.

इसी प्रकार कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' का अध्ययन कर हम आदर्श शासक के मापदंडों से अवगत हो सकते हैं और अमीर ख़ुसरो की रचनाओं को पढ़कर हम न केवल 13 वीं तथा 14 वीं शताब्दी की राजनीतिक. सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन की झलक की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं बल्कि सांप्रदायिक सद्भाव और गंगा-जमुनी तहज़ीब का सबक भी सीख सकते हैं. इतिहास ही हमको बताता है कि अपनी सभ्यता का ढिंढोरा पीटने वाले अंग्रेज़ जब 16 वीं

शताब्दी में धर्म के नाम पर अपनी असहिष्णुता प्रदर्शित करते हुए एक-दूसरे को ज़िन्दा जला रहे थे उस समय भारत में अकबर का नव-रत्न मानसिंह खुले-आम अकबर के मत 'दीन-ए-इलाही' अथवा 'तौहीद-ए-इलाही' की आलोचना करता हुआ उसे अस्वीकार कर सकता था.

औपनिवेशिक शासन में जहाँ गौरांग प्रभुओं द्वारा गुलाम भारत के नागरिकों को अर्ध-सभ्य और बर्बर समझा जा रहा था वहां इतिहास के माध्यम से संसार को यह ज्ञात हुआ कि भारत में लगभग 5000 वर्ष पूर्व हड़प्पा सभ्यता जैसी उन्नत सभ्यता थी और भारत में ही दशमलव पद्धति तथा शून्य की परिकल्पना का विकास हुआ था. सर विलियम जोंस तथा मैक्समुलर जैसे विद्वानों ने भारतीय दर्शन, भारतीय भाषा तथा साहित्य की महानता से विश्व को जिस प्रकार परिचित कराया था उसे इतिहास की ही देन माना जा सकता है. नव-जागरण काल में हमारे धर्म सुधारकों एवं समाज सुधारकों ने भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक-सामाजिक कुरीतियों को शास्त्र-विरूद्ध सिद्ध करने के लिए ऐतिहासिक शोध किया था. राजा राममोहन रॉय ने सैकड़ों साल से चली आ रही सती प्रथा जैसी तथाकथित धार्मिक प्रथा के विषय में यह दर्शाया था कि ऋग्वैदिक काल में इसका चलन था ही नहीं और अनसूया, सावित्री और सीता जैसे 'सती' कहलाने वाली महान स्त्रियों में से किसी ने भी अपने मृत पति के साथ सह-मरण नहीं किया था. ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने प्राचीन इतिहास के अनेक दृष्टान्त (विशेषकर 'पाराशर संहिता' से) दिए थे कि अनेक स्थितियों में विधवाओं को पुनर्विवाह करने की अनुमति थी. स्वामी दयानंद सरस्वती ने यह सिद्ध किया था कि वैदिक काल में स्त्रियों और शूद्रों को भी विद्याध्ययन करने का अधिकार था तथा तब बल-विवाह को शास्त्र-सम्मत नहीं माना जाता था. इतिहास ही हमको यह बतलाता है कि हिटलर और उसकी ही जैसी रोगी-मानसिकता वालों की आर्यों की जातीय-श्रेष्ठता की अवधारणा किस प्रकार मानव-जाति के लिए विनाशकारी सिद्ध हुई और साथ ही साथ हमको यह सबक भी सिखाता है कि अहंकार, घृणा, जातीय-श्रेष्ठता तथा संकुचित-राष्ट्रीयता की भावना का परित्याग करने में ही संसार का कल्याण है.

1.4.2 इतिहास के अध्ययन की महत्ता

'इतिहास महत्वपूर्ण है.' सदियों पहले यह कथन स्वयं-सिद्ध प्रतीत होता. प्राचीन संस्कृतियों में बच्चों को उनके परिवार के तथा उनके वंश का इतिहास पढ़ाने में अत्यधिक श्रम का व्यय किया जाता था. यह माना जाता था कि अतीत के विषय की जानकारी प्राप्त कर बच्चा स्वयं को जान पाने में सक्षम हो जाता है. हांलाकि आधुनिक समाज अतीत के ज्ञान के प्रति प्रायः उदास रहता है. हम द्रुत-परिवर्तन तथा द्रुत-प्रगति के युग में जी रहे हैं. हमारे लिए अब यह अधिक महत्त्वपूर्ण है कि – 'हम कहाँ जा रहे हैं?' न कि यह कि - 'हम कहाँ से आए हैं?.'किन्तु इतिहास का महत्त्व है. एक उक्ति है – 'जो अतीत को नियंत्रित करता है, वह भविष्य को भी नियंत्रित करता है.'

हमारा इतिहास-विषयक दृष्टिकोण, हमारे वर्तमान-विषयक दृष्टिकोण को विकसित करता है और हमको यह सुझाता है कि हम वर्तमान में विद्यमान अपनी समस्याओं अतीत के ज्ञान की सहायता से कैसे सुलझाएँ. कोई भी व्यक्ति अतीत में हुई किसी भी घटना के विषय में समस्त जानकारी को लेखबद्ध नहीं कर सकता. इतिहास का लक्ष्य हमको अतीत में हुई किसी घटना की वह सारगर्भित कहानी सुनाना है जो कि उस घटना के विषय में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा पूर्णतः सत्य है.इतिहास में क्या महत्वपूर्ण है और क्या नहीं, यह इतिहासकार निर्धारित करता है. कभी ऐसा चयन उसकी अपनी अभिरुचि पर निर्भर करता है तो कभी उसके प्रशिक्षण पर अथवा उसके समय की परिस्थितियों पर. अन्य

व्यक्तियों की तरह इतिहासकार भी समाज का अंग होता है और वह स्वयं तथा उसका दृष्टिकोण भी, अपने समय तथा अपने परिवेश से प्रभावित होता है. इसलिए इतिहासकार के लेखन में प्रायः वही महत्वपूर्ण समझा जाता है जो कि उसके अपने समय के सामाजिक मूल्यों की दृष्टि में महत्वपूर्ण होता है. इतिहास के विषय में यह कहा जाता है कि इतिहासकार मुख्यतः अपने समय के मूल्यों, मापदंडों, परिस्थितयों तथा परिवेश के परिप्रेक्ष्य में ही अतीत को चित्रित करता है.

1.4.3 इतिहास के अध्ययन की उपयोगिता त्तथा उसकी अनुपयोगिता

इतिहास पढ़कर हम उन त्रुटियों को दोहराने से बच सकते हैं जिनसे हमें पहले कभी हानि उठानी पड़ी थी.हम इतिहास से प्रेरणा लेकर ऐसे कार्यों को कर सकते हैं जो कि हमारे लिए, हमारे समाज के लिए, हमारे राष्ट्र के लिए अथवा समस्त मानव-जाति के लिए कल्याणकारी हो सकते हैं.इतिहास की अनुपयोगिता – हेनरी फोर्ट ने इतिहास को एक शयन कक्ष कहा है जब कि हेगेल ने कहा है कि –'शिक्षा के लिए इतिहास में कोई भी तत्व नहीं है.'

के. एम. पनिकर की दृष्टि में इतिहास में केवल वंशावली और तिथियों का उल्लेख मिलता है. इसलिए उन्होंने इसे टेलीफ़ोन डायरेक्टरी कह दिया. अगर तुम आज को समझना चाहते हो तो तुम्हें बीते हुए कल की खोज करनी होगी – पर्ल, एस. बक - अगर तुम इतिहास नहीं जानते थे तो तुम कुछ भी नहीं जानते थे. तुम वो पत्ती थे जिसको यह पता ही नहीं था कि वो पेड़ का हिस्सा थी. - प्रोफ़ेसर जोंसटन- इतिहास वह उपन्यास है जिसको कि जनता ने लिखा है. – एल्फ्रेड दी विंगी- इतिहास हमको अतीत तथा वर्तमान में तादात्म्य स्थापित करने में सक्षम बनाता है.

18 वीं शताब्दी के ब्रिटिश विचारक एडमंड बर्क ने भी इतिहास के अध्ययन को बेहतर वर्तमान और बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक माना है –'वो लोग जो इतिहास नहीं जानते हैं, वो उसे दोहराने के लिए अभिशप्त हैं.'कार्ल सेगन भी इतिहास को वर्तमान को समझने का साधन मानता है –अपना वर्तमान को समझने के लिए तुमको अपने अतीत को जानना होगा.'किन्तु जॉर्ज बर्नार्ड शॉ इतिहास से सबक लेने वाली अवधारणा का उपहास उड़ाता है –'हम अपने अनुभव से यही सीखते हैं कि हम अपने अनुभव से कभी कुछ नहीं सीखते.' सर जॉन सीले कहता है – 'जब हम इतिहास पढ़ते हैं तो हम अतीत के बारे में नहीं, बल्कि भविष्य के बारे में पढ़ते हैं. आर. जी. कॉलिंगवुड के अनुसार – 'इतिहास का उद्देश्य - आत्म-ज्ञान है. इतिहास के अध्ययन से हमको आलोचना करने की समझ आ जाती है ताकि हम तथ्यों का सर्वांगीर्ण चिंतन कर, सत्य तक पहुँच सकें.

चार्ल्स फ़िर्द के अनुसार – 'इतिहास ज्ञान की एक शाखा मात्र नहीं है जिसका कि अध्ययन केवल उसको जानने के लिए किया जाए, बल्कि यह तो उस प्रकार का ज्ञान है जो कि मनुष्य के दैनिक-जीवन के लिए उपयोगी है.' ई. एच कार के अनुसार – 'इतिहास – अतीत और वर्तमान के मध्य एक चिरंतन संवाद है और इतिहासकार का मुख्य कार्य, वर्तमान की पहेली को समझने की कुंजी के रूप में अतीत को भलीभांति समझना है.'इतिहास की यह विशेषता है कि वह वर्तमान तथा भविष्य को समझने में हमारी सहायता करता है. जेनी हैन इतिहास की उपयोगिता स्वीकार करते हुए कहती है –'इतिहास को काट फेंकना अथवा उसकी उपेक्षा करना बड़ा कठिन काम है क्योंकि इतिहास को फेंकना कुछ उसी तरह का काम हुआ जैसे कि तुमने अपने शरीर का ही कोई हिस्सा काट फेंका हो.' डेविड मैककलग इतिहास को मनुष्य के कठिन समय में उसके मार्ग-दर्शक के रूप में देखता है.

1.4.4 क्या हम इतिहास से कुछ सीख सकते हैं?

विभिन्न इतिहासकार, एक ही प्रकार के तथ्यों के आधार पर अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार, भिन्न-भिन्न व्याख्या करते हैं. विभिन्न इतिहासकारों की ऐतिहासिक व्याख्याओं में इतना अंतर देख कर यह प्रश्न उठाया जाना स्वाभाविक है –'क्या हम इतिहास से कुछ सीख सकते हैं?' इसका उत्तर है – 'हाँ, यदि हम ईमानदारी से अतीत से कुछ सीखना चाहें तो.' इतिहास महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमको वर्तमान को समझने में हमारी सहायता करता है. अतीत को भलीभांति समझकर हम अपनी आज की समस्याओं को सुलझाने का मार्ग खोज सकते हैं. बहुत से विद्वान इतिहास की शक्ति को कम आंकते हैं. सच्चा इतिहास हमको मूल्यों की शिक्षा देता है.

1.5 इतिहास की प्रकृति

1.5.1 इतिहास किस अनुशासन के अंतर्गत आता है

वर्ण्य विषयों के आधार पर यदि हम विचार करें तो इतिहास की प्रकृति आंशिक रूप से एक विज्ञान की है, आंशिक रूप से एक कला के विषय की है और आंशिक रूप से एक दर्शन की भी है.

1.5.2 इतिहास स्वयं को दोहराता है

अतीत की घटनाओं का अध्ययन करने पर हम यह अवलोकन करते हैं कि समय-समय पर एक जैसी घटनाएँ होती हैं. एक ही जैसे कारणों से युद्ध होते हैं, उनके कई बार एक जैसे ही परिणाम होते हैं. अतीत में हुई अनेक क्रांतियों की परिस्थितियां भी लगभग एक समान पाई जाती हैं. विभिन्न राज्यों में और विभिन्न कालों में हुए उत्तराधिकार के युद्धों में भी सामी मिलता है. विभिन्न कालों में दुरभि-संधियों, षड्यंत्रों, राज्यों के उत्थान-पतन आदि में भी एक-रूपता देखी जा सकती है. इन सब बातों से इस अवधारणा की पुष्टि होती है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है. इतिहास स्वयं को दोहराता है, इसकी पुष्टि इतिहास की युग-चक्रवादी व्याख्या से भी होती है. भारतीय अवधारणा के अनुसार इतिहास एक निरंतर चलायमान युग-चक्र है. इस युग-चक्र में कभी उत्थान होता है तो कभी पतन होता है. इतिहास का चक्र घूमता रहता है. इस युग-चक्र में सत् और असत् बार-बार आते हैं. इतिहास चक्रीय है. चूंकि हम बार-बार जन्म लेते हैं अतः हमको बार-बार यह अवसर मिलता है कि हम ख़ुद को सही कर सकें, अर्थात हम स्वयं का ब्रह्मांडीय चेतना के साथ एकाकार कर सकें. इतिहास का चक्र घूमता रहता है, कभी इसमें उत्थान होता है तो कभी पतन होता है किन्तु इतिहास में कुछ भी अंतिम नहीं है.

इतिहास के चक्रीय सिद्धांत का पोषक अरब इतिहासकार इब्न खल्दून का विचार है कि जब कोई समाज एक महान सभ्यता के रूप में विकसित हो जाता है तो अपने चरमोत्कर्ष के बाद उसके पतन का काल प्रारंभ हो जाता है. इसका अर्थ यह हुआ कि एक विकसित सभ्यता को पराजित करने वाला समाज, पराजित समाज की तुलना में असभ्य होता है. फिर विजयी समाज भी असभ्य से सभ्य होने के मार्ग पर अग्रसर होता है और अंततः विकास के चरमोत्कर्ष के बाद उसका भी पतन हो जाता है. इब्न खलदून ने इतिहास को मानव-समाज, विश्व-संस्कृति, सामाजिक परिवर्तन, संघर्ष, क्रान्ति तथा विद्रोह के फलस्वरूप राज्यों के उत्थान एवं पतन का विवरण बताता है. वह इतिहास को संस्कृति का विज्ञान मानता है.

स्पेंगलर विश्व इतिहास को महान संस्कृतियों का एक नाटक मानता है. इस नाटक में प्रत्येक संस्कृति स्वयमेव पल्लवित होती है. प्रत्येक संस्कृति एक जैव इकाई के समान है जिसके कि विभिन्न जीवन-चक्र होते हैं. प्रत्येक संस्कृति का अपना बचपन, जवानी और बुढ़ापा होता है और एक समय ऐसा भी आता है जब कि उस संस्कृति की मृत्यु हो जाती है, अर्थात् वह पूरी तरह नष्ट हो जाती है. प्रत्येक संस्कृति आरम्भ में बर्बरता के दौर से गुज़रती है और कालान्तर में विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं, कला, विज्ञान आदि का विकास होता है. अपने अंतिम दौर में संस्कृति विकृत होकर अपनी सृजनशीलता को खोकर पतन की ओर अग्रसर होती है जिसमें सर्वत्र विकृतियां दिखाई देने लगती हैं और संस्कृति की सृजनशीलता समाप्त हो जाती है. अन्ततः संस्कृति नष्ट हो जाती है.

टॉयनबी ने 'ए स्टडी ऑफ़ हिस्ट्री' में स्पेंगलर के ग्रंथ 'दि डिक्लाइन ऑफ़ दि वैस्ट' में प्रतिपादित चक्रीय सिद्धान्त का अनुकरण किया है किन्तु उसे उसका प्राचीन यान्त्रिक नियतिवाद का आदर्श स्वीकार्य नहीं है. वह यह मानता है कि ऐतिहासिक अध्ययन की सुबोधगम्य इकाइयां राष्ट्र अथवा काल नहीं बल्कि समाज अथवा सभ्यताएं हैं.आर. आर मार्टिन कहता है –'इतिहास एक चक्र है क्योंकि मनुष्य की प्रकृति अपरिवर्तनीय है और यह सुनिश्चित है कि जो पहले हो चुका है, वह दुबारा भी होगा.'

1.5.3 इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है

अनेक इतिहासकार मानते हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है क्योंकिउनकी दृष्टि हर ऐतिहासिक घटना अपने आप में अनूठी होती है और उसकी किसी अन्य घटना से ऊपरी तौर पर भले समानता दिखाई दे किन्तु वास्तव में एक घटना दूसरी घटना के पूरी तरह से समान कभी नहीं हो सकती. ली बेंसन के अनुसार एक इतिहासकार अपने समय से पहले हुए इतिहासकारों के इतिहास-लेखन में व्यक्त विचारों को तो दोहराता है किन्तु इतिहास स्वयं को कभी नहीं दोहराता है –'इतिहास स्वयं को कभी नहीं दोहराता है किन्तु इतिहासकार खुद को दोहराता है.' डेविड इरविंग का यह मानना है कि इतिहास नित्य अपना रूप बदलता है –'इतिहास एक नित्य-परिवर्तनशील वृक्ष के समान है.'समय के चक्र और धर्म के क्षेत्र में होने वाले निरंतर विकास के साथ इतिहास का स्वरुप भी बदलता रहता है. सत तथा असत दोनों ही, इस इतिहास-चक्र में बार-बार आते हैं. इतिहासकार का लक्ष्य, अपने विवेक द्वारा असत्य तथा भ्रम को दूर कर सत्य की स्थापना करना होता है.

पारसी धर्म के प्रवर्तक ज़रथुस्त्र ने सत तथा असत के मध्य होने वाले संघर्ष को ही इतिहास कहा है और असत पर सत की विजय को इतिहास का परम लक्ष्य माना है. यहूदी इतिहासकार क्लाउड मोटेफ़ियोर मानव इतिहास की पृष्ठभूमि उद्देश्यपरक मानता है.इतिहास कभी स्थिर नहीं रहता क्योंकि यह समय के साथ गतिमान रहता है.

1.5.4 इतिहास की प्रकृति रेखीय है

हेगेल का विचार है कि इतिहास द्वंद्वात्मक संघर्ष की एक अटल प्रक्रिया है. इन परस्पर संघर्षरत प्रक्रियाओं में एक दूसरे से विरोधी विचारों का मुक़ाबला होता है. हेगेल इन्हें 'धारणा' तथा 'प्रति-धारणा' कहता है. इन दोनों का संघर्ष अंततः संश्लेषण में परिणत होता है जिसमें कि धारणा तथा प्रति-धारणा का संयोजन होता है.

1. मनुष्य द्वारा अतीत की व्याख्या करना इतिहास है.
2. कालानुक्रम तथा भूगोल इतिहास की दो आँखें हैं. कालानुक्रम 'काल' का आधार है तथा भूगोल 'आकाश' (दिक्) का आधार है. दिक्काल की निरंतरता इतिहास का लौकिक आधार है.

1.5.5 समय के साथ-साथ इतिहास-दृष्टि तथा इतिहास-लेखन की तकनीक में परिवर्तन

इतिहास के तकनीकी दृष्टिकोण के अनुसार प्रत्येक काल अपने परवर्ती काल की तुलना में पिछड़ा हुआ होता है. रैंके का मत है –'हम सावधानी व साहस के साथ विशिष्ट से सामान्य की ओर बढ़ सकते हैं किन्तु ऐसा कोई मार्ग नहीं है जिससे कि हम सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ सकें.' वह कहता है – 'प्रत्येक युग ईश्वर के निकट है.'' इस कथन से उसका तात्पर्य यह है कि इतिहास का प्रत्येक युग विशिष्ट है और उसको उसी के परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए तथा केवल उन सामान्य विचारों की खोज का प्रयास करना चाहिए जिन्होंने कि उस काल को जीवन्त बनाया था. ऐतिहासिक तथ्यों (जैसे संस्था, विचार आदि) की प्रकृति को समझने के लिए उनके ऐतिहासिक विकास और कालान्तर में उनमें आए हुए परिवर्तनों को समझना आवश्यक है रैंके का यह मानना है कि ऐतिहासिक युगों को पूर्व-निर्धारित आधुनिक मूल्यों एवं आदर्शों की कसौटी पर नहीं परखा जाना चाहिए बल्कि आनुभविक साक्ष्यों पर आधारित इतिहास (जैसा कि वास्तव में हुआ था) के परिप्रेक्ष्य में उनका आकलन किया जाना चाहिए.

1.5.6 मार्क्सवादियों की दृष्टि में इतिहास की प्रकृति

मार्क्सवादी इतिहास लेखन की प्रमुख समस्या इतिहास की प्रकृति को लेकर बहस पर है और वह बहस यह है कि - 'क्या इतिहास नियतिवाद से संचालित होता है अथवा उसकी प्रकृति द्वन्द्वात्मक है.' मार्क्सवादी इतिहास सामान्यतः नियतिवादी है क्योंकि यह प्रदर्शित करता है कि इतिहास एक निश्चित अन्त की ओर बढ़ता है और वह अन्त है - 'एक वर्गहीन मानव-समाज' की स्थापना.

इतिहास की प्रकृति -आर्थर मैरविक

इतिहास के स्वरुप में तथा उसकी विषय-वस्तु में, विभिन्न पीढ़ियों की ऐतिहासिक प्रणालियों के, तथा ऐतिहासिक सामग्री की उपलब्धता के अनुरूप, बदलाव होता रहता है.

1.5.7 कारणत्व की प्रकृति – क्या इतिहास ख़ुद को दोहराता है?

ई. एच. कार के अनुसार – 'प्रत्येक ऐतिहासिक तर्क, कारणों की प्राथमिकता के प्रश्नों के इर्द-गिर्द घूमता है.'इतिहास में निर्धारीकरण तथा संयोग, वो दो सिद्धांत हैं जो कि घटनाओं के कारणों से घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं. इसे संक्षेप में हम यूँ कह सकते हैं – इतिहास में जो भी घटित होता है, उसका एक कारण होता है.

1.6 सारांश

संस्कृत भाषा में 'इतिहास' शब्द को -'इति-ह-आस' इन तीन शब्दों का संश्लिष्ट रूप माना गया है. 'इतिहास' का अर्थ है - 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ.' पारसी धर्म के प्रवर्तक ज़रथुस्त्र के अनुसार सत् और असत् के मध्य संघर्ष - इतिहास' – '.की तथा अंततः सत् की विजय की गाथा है 'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति – ग्रीक भाषा के शब्द 'हिस्टोरिया' से हुई है जिसका कि अर्थ है – मानवीय अतीत के अन्वेषण द्वारा प्राप्त ज्ञान. हैलीकर्नेसस के डायोनिसियस के अनुसार – दार्-प्रसिद्द अरब इतिहास.उदाहरणों से जो दर्शन प्राप्त होता है वह इतिहास हैशनिक इब्न खल्दून के अनुसार - 'इतिहास क्रान्ति तथा राजनीतिक विप्लव के फलस्वरुप ,युद्ध ,सामाजिक परिवर्तन ,संस्कृति-विश्व ,समाज-मानव -

'.पतन का वृतांत है-राष्ट्रों के उत्थानचूंकि इतिहासकार घटनाओं के दृष्टा तथा प्रायः उनके भागीदार हैं इसलिए वो आम तौर पर घटनाओं का विवरण अपने समय के परिप्रेक्ष्य में करते हैं और कभी-कभी इस आशय से वर्णन करते हैं. बेनेदेत्तो क्रोचे के शब्दों में –'समस्त इतिहास, समकालीन है.'
लेकी के अनुसार – 'इतिहास नैतिक क्रान्ति का लेखा-जोखा तथा उसकी व्याख्या है.' लेबनीज़ के अनुसार – 'इतिहास, धर्म का वास्तविक निरूपण है.'वोल्तेयर के अनुसार – 'अपराध तथा दुर्भाग्य को चित्रित करना इतिहास है.'कार्ल मार्क्स के अनुसार – 'आज तक विद्यमान सभी समाजों का इतिहास, वास्तव में वर्ग-संघर्ष का इतिहास है.'स्पेंगलर इतिहास की व्याख्या करते हुए कहता है मा' –नवजीवन अपनी आतंरिक प्रवृत्ति तथा मौलिक प्रेरणा से - '.उसी का नाम इतिहास है ,विकास और निर्माण की जिस प्रक्रिया में गतिमान हैप्रसिद्द चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस कहता है –'यदि तुम भविष्य को परिभाषित करना चाहते हो (उसे समझना चाहते हो) तो अतीत का अध्ययन करो.'इतिहास वह दर्शन है जो कि उदाहरण से शिक्षा देता है थ्यूसीडाइड्स –इतिहास के प्रेरक प्रसंग हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व रखते हैं. महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व और कृतित्व से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं. यहूदी शासक सॉलोमन का चातुर्य, चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे महान शासकों का कुशल प्रशासन, अशोक जैसे शासकों का अपनी प्रजा के प्रति स्नेह, विक्रमादित्य का का निष्पक्ष न्याय, भोज का साहित्य और कला के प्रति प्रेम, शेरशाह की कर्मठता आदि हमारे लिए आदर्श उपस्थित करते हैं.

इसी प्रकार कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' का अध्ययन कर हम आदर्श शासक के मापदंडों से अवगत हो सकते हैं.औपनिवेशिक शासन में जहाँ गौरांग प्रभुओं द्वारा गुलाम भारत के नागरिकों को अर्ध-सभ्य और बर्बर समझा जा रहा था वहां इतिहास के माध्यम से संसार को यह ज्ञात हुआ कि भारत में लगभग 5000 वर्ष पूर्व हड़प्पा सभ्यता जैसी उन्नत सभ्यता थी और भारत में ही दशमलव पद्धति तथा शून्य की परिकल्पना का विकास हुआ था.इतिहास ही हमको यह बतलाता है कि हिटलर और उसकी ही जैसी रोगी-मानसिकता वालों का अहंकार, घृणा, जातीय-श्रेष्ठता तथा संकुचित-राष्ट्रीयता की भावना का परित्याग करने में ही संसार का कल्याण है.

हमारा इतिहास-विषयक दृष्टिकोण, हमारे वर्तमान-विषयक दृष्टिकोण को विकसित करता है और हमको यह सुझाता है कि हम वर्तमान में विद्यमान अपनी समस्याओं अतीत के ज्ञान की सहायता से कैसे सुलझाएँ. 18 वीं शताब्दी के ब्रिटिश विचारक एडमंड बर्क ने भी इतिहास के अध्ययन को बेहतर वर्तमान और बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक माना है –'वो लोग जो इतिहास नहीं जानते हैं, वो उसे दोहराने के लिए अभिशप्त हैं.'जेनी हैन इतिहास की उपयोगिता स्वीकार करते हुए कहती है –'इतिहास को काट फेंकना कुछ उसी तरह का काम हुआ जैसे कि तुमने अपने शरीर का ही कोई हिस्सा काट फेंका हो.' इतिहास की प्रकृति आंशिक रूप से एक विज्ञान की है, आंशिक रूप से कला के एक विषय की और आंशिक रूप से एक दर्शन की भी है. इतिहास स्वयं को दोहराता है, इसकी पुष्टि इतिहास की युग-चक्रवादी व्याख्या से भी होती है. अनेक इतिहासकार मानते हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है क्योंकि उनकी दृष्टि हर ऐतिहासिक घटना अपने आप में अनूठी होती है. डेविड इरविंग का यह मानना है कि इतिहास नित्य अपना रूप बदलता है –'इतिहास एक नित्य-परिवर्तनशील वृक्ष के समान है.'

इतिहास की प्रकृति चक्रीय है. इतिहास का चक्र घूमता रहता है, कभी इसमें उत्थान होता है तो कभी पतन होता है.इतिहास के चक्रीय सिद्धांत का पोषक अरब इतिहासकार इब्न खल्दून का विचार है कि जब कोई समाज एक महान

सभ्यता के रूप में विकसित हो जाता है तो अपने चरमोत्कर्ष के बाद उसके पतन का काल प्रारंभ हो जाता है. स्पेंगलर विश्व इतिहास को महान संस्कृतियों का एक नाटक मानता है. प्रत्येक संस्कृति का अपना बचपन, जवानी और बुढ़ापा होता है और एक समय ऐसा भी आता है जब कि उस संस्कृति की मृत्यु हो जाती है. **टॉयनबी** ने भी चक्रीय सिद्धान्त का अनुकरण किया है.हेगेल का विचार है कि इतिहास द्वंद्वात्मक संघर्ष की एक अटल प्रक्रिया है.मार्क्सवादी इतिहास सामान्यतः नियतिवादी है क्योंकि यह प्रदर्शित करता है कि इतिहास एक निश्चित अन्त की ओर बढ़ता है और वह अन्त है - 'एक वर्गहीन मानव-समाज' की स्थापना.आर्थर मेर्विक के अनुसार इतिहास के स्वरुप में तथा उसकी विषय-वस्तु में, विभिन्न पीढ़ियों की ऐतिहासिक प्रणालियों के, तथा ऐतिहासिक सामग्री की उपलब्धता के अनुरूप, बदलाव होता रहता है.

1.7 पारिभाषिक शब्दावली

व्युत्पत्ति – मूल उद्गम
विप्लव – विद्रोह, क्रान्ति
पारसी धर्म – ज़रथुस्त्र द्वारा विकसित अग्नि-पूजक धर्म
हेलेनिस्तिक सभ्यता – सिकंदर महान की ईरानी साम्राज्य पर तथा मध्य-पूर्व पर विजय के परिणामस्वरुप यूनानी सभ्यता के विस्तार के रूप में विकसित सभ्यता
इब्न खल्दून – 14 वीं शताब्दी का महान अरब इतिहास-दार्शनिक जिसका ग्रन्थ 'मुक़द्दमा', धर्म-निरपेक्ष इतिहास-लेखन का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है.
स्वैर कल्पना – स्वप्न-चित्र
सॉलोमन – महान यहूदी शासक जो कि अपनी बुद्धिमत्ता के लिए विख्यात है

अभ्यास प्रश्न

निम्नांकित पर चर्चा कीजिए

1. भारतीय दर्शन के अनुसार इतिहास का अर्थ
2. इतिहास स्वयं को दोहराता है
3. मार्क्सवादियों की दृष्टि में इतिहास की प्रकृति

1.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. देखिए 1.1.3.1 भारतीय दर्शन के अनुसार इतिहास का अर्थ
2. देखिए 1.1.5.2 इतिहास स्वयं को दोहराता है
3. देखिए 1.1.5.6 मार्क्सवादियों की दृष्टि में इतिहास की प्रकृति

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

कॉलिंगवुड, आर. जी. 'दि आइडिया ऑफ़ हिस्ट्री' न्यूयॉर्क, 1994
गूच, जी0 पी0 - दि हिस्ट्री एण्ड दि हिस्टोरियन्स ऑफ़ दि नाइन्टीन्थ सेन्चुरी, लन्दन, 1913
इगर्स, जॉर्ज जी0, जेम्स, एम0 पावेल - लियोपोल्ड रैंके एण्ड दि शेपिंग ऑफ़ दि हिस्टोरिकल डिसिप्लिन, न्यूयार्क, 1990

श्रीधरन, ई0 - ए टैक्स्ट बुक ऑफ़ हिस्टोरियोग्राफ़ी, नई दिल्ली, 2013
लियोपोल्ड वान रैंके (सम्पादनः इगर्स, जॉर्ज, जी0) - 'दि थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ़ हिस्ट्री', न्यूयार्क, 2011
कार, ई0 एच0 (अनुवादकः चक्रधर, अशोक) - 'इतिहास क्या है', नई दिल्ली, 1993
थापर, रोमिला (सम्पादक) - 'इतिहास की पुनर्व्याख्या' नई दिल्ली, 1991
बुद्धप्रकाश - 'इतिहास दर्शन' इलाहाबाद, 1962
वर्मा, लालबहादुर - 'इतिहास के बारे में', इलाहाबाद, 2000
शर्मा, रामविलास - 'इतिहास दर्शन', नई दिल्ली, 1995
टोश, जॉन – 'दि पर्सूट ऑफ़ हिस्ट्री: एम्स, मेथड्स एंड न्यू डायरेक्शंस इन दि स्टडी ऑफ़ मॉडर्न हिस्ट्री' हार्लो, 1999
लाल, के. बी. – 'पाश्चात्य दर्शन, वाराणसी, 1990,
'दि सोशल कॉन्ट्रैक्ट' (रूसो) अंग्रेजी अनुवाद – मॉरिस क्रेस्टन', लन्दन, 2007
रेनियर, जी. जे. – 'हिस्ट्री: इट्स पर्पज़ एंड मेथड' न्यूयॉर्क, 1965
चौबे, झारखंडे – 'इतिहास-दर्शन', वाराणसी, 2015
सिंह, परमानन्द –'इतिहास-दर्शन, दिल्ली, 2014

1.10 निबंधात्मक प्रश्न

इतिहास के प्रेरक प्रसंग किस प्रकार हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाते हैं? सोदाहरण व्याख्या कीजिए.

इकाई दो: इतिहास का विषय क्षेत्र

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2. 3 इतिहास के समग्र अध्ययन हेतु अन्य विषयों के अध्ययन की आवश्यकता

2. 3.1 अन्य विषयों की एक शाखा के रूप में इतिहास का स्थान

2.3.2 वर्तमान काल में इतिहास के क्षेत्र का विस्तार

2.3.3 समय के साथ-साथ इतिहास के अध्ययन की विधि में परिवर्तन

2.3.4 ऐतिहासिक अध्ययन का विस्तार

2. 4 इतिहास के क्षेत्रों के वर्ग तथा उनके प्रकार

2.4.1 इतिहास के क्षेत्रों के वर्ग तथा उप-वर्ग

2.4.2 इतिहास के क्षेत्र के प्रकार

2 5 इतिहास की विषय-वस्तु

2.5.1 समय के साथ-साथ इतिहास की विषय-वस्तु का विस्तार

2.5.2 इतिहास की विषय-वस्तु की दार्शनिक अवधारणा

2.5.3 इतिहास की विषय-वस्तु की व्यावसायिक अवधारणा

2.6 इतिहास के स्वरुप का विभाजन

2.6.1 जॉन डिबी तथा कार्ल मार्क्स द्वारा इतिहास का विभाजन

2.6.2 स्पेंगलर द्वारा इतिहास का विभाजन

2.6.3 डी. डी. कोसाम्बी द्वारा भारतीय इतिहास का काल विभाजन

2.7 इतिहास के प्रमुख भेद

2.7.1 सैनिक इतिहास

2.7.2 क्लियोमैट्रिक्स

2.7.3 तुलनात्मक इतिहास

2.7.4 सांस्कृतिक इतिहास

2.7.5 कूटनीतिक इतिहास

2.7.6 आर्थिक इतिहास

2.7.7 राजनीतिक इतिहास

2.7.8 विचारों का इतिहास अथवा बौद्धिक इतिहास

2.7.9 सार्वभौमिक इतिहास

2.7.10 भौगोलिक खोजों का इतिहास

2.7.11 मुद्रा शास्त्र

2.7.12 पुरा-लिपि शास्त्र

2.7.13 सामाजिक इतिहास

2.7.14 विधिक, प्रशासकीय तथा संवैधानिक इतिहास

2.7.15 धार्मिक इतिहास

2.7.16 औपनिवेशिक इतिहास

2.7.17 आविष्कारों का तथा तकनीकी विकास का इतिहास

2.7.18 यात्रा-वृतांत

2.7.19 दैनन्दिनी

2.7.20 हिस्ट्री फ्रॉम बिलो

2.8 इतिहास का अन्य विषयों से सम्बन्ध

2.8.1 इतिहास और धर्मशास्त्र

2.8.2 इतिहास और नीति शास्त्र

2.8.3 इतिहास और राजनीति शास्त्र

2.8.4 इतिहास और समाजशास्त्र

2.8.5 इतिहास और भूगोल

2.8.6 इतिहास और साहित्य

2.8.7 इतिहास और दर्शन

2.9 इतिहास का व्यापक क्षेत्र

2.10 सारांश

2.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.12 पारिभाषिक शब्दावली

2.13 सन्दर्भ ग्रन्थ

2.14 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इतिहास सामाजिक विज्ञान की श्रेणी में आता है. एक समय में यह दर्शन शास्त्र का एक अंग था और कालांतर में यह राजनीति शास्त्र का अंग बन गया. आज एक स्वतंत्र विषय के रूप में इसकी प्रतिष्ठा है और नित्य ही इसका क्षेत्र-विस्तार होता जा रहा है. आज इतिहास का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है. आज उसमें विश्व का तथा मानव-जाति के विकास का, समग्र रूप से अध्ययन किया जाता है. इतिहास का व्यापक रूप जानने के लिए हमको निरंतर गतिशील वैज्ञानिक प्रगति के परिप्रेक्ष्य में उसका मानवतावादी दृष्टिकोण से अध्ययन करना होगा.

इतिहासकारों ने इतिहास विषय के अंतर्गत अनेक क्षेत्रों में उसका वर्गीकरण किया है इन में से कुछ वर्ग हैं – राजनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास, सामाजिक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, बौद्धिक अथवा वैचारिक इतिहास आदि.इतिहास के कुछ प्रकार ऐसे हैं जो अन्य विषयों से सम्बद्ध होने के साथ-साथ इतिहास से भी सम्बद्ध हैं. जैसे कि – कला का इतिहास, आविष्कारों का तथा तकनीकी इतिहास, भौगोलिक खोजों का इतिहास, प्रशासनिक इतिहास, चर्च का इतिहास, जन-सांख्यिकी का इतिहास, नृजाति-इतिहास आदि.

प्रत्यक्षवादी इतिहासकार नेबूर तथा रैंके ने सार्वभौमिक इतिहास-लेखन को महत्ता देकर इतिहास की विषय-वस्तु को व्यष्टि से समष्टि तक विस्तृत किया था. इतिहास की विषय-वस्तु में शासन, कानून, परम्पराओं, धर्म, कला भूगोल, जलवायु, पर्यावरण आदि सबका समावेश किया जाना आवश्यक है. इतिहास के अध्ययन में व्यक्ति और समाज की बौद्धिक, भौतिक तथा भावनात्मक क्रियाओं का अध्ययन भी सम्मिलित किया जाना भी आवश्यक है. स्पेंगलर तथा टॉयनबी ने संस्कृति और सभ्यता को इतिहास की विषय-वस्तु बनाकर इतिहास के क्षेत्र को और अधिक विकसित किया.

कॉलिंगवुड यह मानता है कि मनुष्य का कार्य-व्यवहार ही इतिहास की विषय-वस्तु होना चाहिए. जबकि हेगेल ने इतिहास की विषय-वस्तु - समाज तथा राज्य को माना है. टॉयनबी इतिहास की विषय-वस्तु का विस्तार मानव-जीवन से सम्बद्ध समस्त कार्य-व्यापार तक कर देता है.
स्पेंगलर ने इतिहास को दो भागों में विभाजित किया है –

1. प्रकृति-विषयक इतिहास,
2. मानव-विषयक इतिहास

इतिहास के विभिन्न भेदों में उल्लेखनीय हैं –

सैनिक इतिहास, क्लियोमैट्रिक्स, तुलनात्मक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, कूटनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास, राजनीतिक इतिहास, बौद्धिक इतिहास,सार्वभौमिक इतिहास, भौगोलिक खोजों का इतिहास, **मुद्राशास्त्र,** पुरा-लिपि शास्त्र, सामाजिक इतिहास, विधिक एवं प्रशासनिक इतिहास, धार्मिक इतिहास, औपनिवेशिक इतिहास, आविष्कारों का तथा तकनीकी विकास का इतिहास,यात्रा-वृतांत, दैनन्दिनी, हिस्ट्री फ्रॉम बिलो (उपाश्रितों से इतिहास). इतिहास का अन्य विषयों से सम्बन्ध -इतिहास और धर्मशास्त्र, इतिहास और नीति शास्त्र, इतिहास और राजनीति शास्त्र, इतिहास और समाजशास्त्र, इतिहास और भूगोल, इतिहास और साहित्य, इतिहास और दर्शन. इतिहास का व्यापक क्षेत्र इतिहास की तो यह विशेषता है कि प्रत्येक विषय में उस विषय के इतिहास का अध्ययन किया जाता है - इसलिए इतिहास की व्यापकता और उसकी उपयोगिता पर कोई प्रश्न नहीं उठाया जा सकता.

2.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य – इतिहास के क्षेत्र की विशद व्याख्या करते हुए इतिहास की विषय-वस्तु, इतिहास के विभिन्न वर्ग, उसके उप-वर्ग तथा उसके प्रकार से आपको अवगत कराना है. इसके साथ ही साथ आपको इतिहास के अन्य विषयों से संबंधों की भी आपको जांनकारी उपलब्ध करानी है. इस इकाई का अध्ययन कर आप –

1. इतिहास के एक स्वतंत्र विषय के रूप में विकसित होने के विभिन्न चरणों से परिचित हो सकेंगे.
2. इतिहास के क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि से अवगत हो सकेंगे.
3. इतिहास के वर्ग तथा उसके उप-वर्ग की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
4. इतिहास के विभिन्न भेदों को विस्तार से जान सकेंगे.
5. इतिहास के अन्य विषयों से सम्बन्ध के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.

2. 3 इतिहास के समग्र अध्ययन हेतु अन्य विषयों के अध्ययन की आवश्यकता

2. 3.1 अन्य विषयों की एक शाखा के रूप में इतिहास का स्थान

किसी भी विषय के क्षेत्र से हमारा आशय यह होता है कि वह विषय प्राणिमात्र के जीवन अथवा निर्जीव वस्तुओं के किन-किन पहलुओं से सम्बद्ध है. देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुरूप उस विषय का महत्त्व, उसके क्षेत्र-विस्तार का भी द्योतक है. समय-समय पर विषयों के स्वरुप में परिवर्तन, संशोधन तथा परिवर्धन अथवा संकुचन होता है जिसके कारण उनके क्षेत्र का विस्तार होता है अथवा उनका क्षेत्र सिकुड़ता है.

इतिहास सामाजिक विज्ञान की श्रेणी में आता है. एक समय में यह दर्शन शास्त्र का एक अंग था और कालांतर में यह राजनीति शास्त्र का अंग बन गया. आज एक स्वतंत्र विषय के रूप में इसकी प्रतिष्ठा है और नित्य ही इसका क्षेत्र-विस्तार होता जा रहा है.

2.3.2 वर्तमान काल में इतिहास के क्षेत्र का विस्तार

आज इतिहास का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है. आज उसमें विश्व का तथा मानव-जाति के विकास का, समग्र रूप से अध्ययन किया जाता है. इसमें पुरा-प्राणिविज्ञान और आदिम सभ्यता से लेकर भाषा के बहुविध विकास, प्रागैतिहासिक काल में उपकरणों के निर्माण तथा कलाकृतियों की रचना, शिकारियों तथा संग्राहकों का दुनिया भर में प्रवसन, उपयोगी वनस्पतियों का रोपण, जानवरों को पालतू बनाना, कृषि का विकास, महामारियों का प्रकोप, मनुष्य का इधर-उधर भटकना छोड़ कर एक ही स्थान पर स्थायी रूप से बसना, व्यापार का विस्तार, मुद्रा-प्रणाली का विकास, तकनीकी नव-प्रवर्तन, ऊर्जा-श्रोतों का दोहन, प्राकृतिक साधनों का उपयोग तथा जनसँख्या-वृद्धि आदि सब का अध्ययन किया जाता है.

आज इतिहास के व्यापक रूप को जानने के लिए पहले हमको उसे एक विज्ञान के रूप में पढ़ना पड़ेगा और उसको पुरातत्व, भूगोल, आनुवंशी, तंत्रिका-विज्ञान, भाषा-शास्त्र, अभियांत्रिकी, अर्थशास्त्र, जन-सांख्यिकी आदि से सज्जित करना पड़ेगा. इन अनुशासनों की सहायता से और इनके माध्यम से हम अतीत के विषय में क्रमबद्ध तरीके से जानकारी एकत्र कर, फिर उस जानकारी का मानव-विकास के परिप्रेक्ष्य में तथा वैश्विक दृष्टिकोण से विश्लेषण कर हम इतिहास का तथा उसके क्षेत्र का, समग्र रूप से अध्ययन करने में सक्षम हो सकते हैं. इतिहास के इस वृहद् रूप में राष्ट्रीय इतिहास तथा धार्मिक इतिहास का सम्मिलित किया जाना भी आवश्यक है.

2.3.3 समय के साथ-साथ इतिहास के अध्ययन की विधि में परिवर्तन

इतिहास का व्यापक रूप जानने के लिए हमको निरंतर गतिशील वैज्ञानिक प्रगति के परिप्रेक्ष्य में उसका मानवतावादी दृष्टिकोण से अध्ययन करना होगा. अनेक विद्वान ऐसे हैं जो यह समझते हैं कि 'बिग बैंग थ्योरी' से लेकर

आज तक की, विश्व की बड़ी-बड़ी समस्याओं, मानवता से सम्बद्ध बड़े-बड़े प्रश्न तथा भविष्य में आने वाली चुनौतियों को समझने के लिए और उन्हें विद्यार्थियों को समझाने के लिए विज्ञान पढ़ाने का वर्णनात्मक दृष्टिकोण सबसे अच्छा है. प्रारंभ में मनुष्य, इतिहास का अध्ययन अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए करता था. इतिहास का जनक कहलाने वाले हेरोडोटस ने इतिहास का प्रयोग मानव-जाति के वर्तमान तथा उसके भविष्य को शिक्षा प्रदान करने के लिए किया. उसका यह मानना था कि अतीत का अध्ययन कर हम अपने वर्तमान और अपने भविष्य के लिए बहुत कुछ सीख सकते हैं.

प्रत्येक युग के धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मूल्यों एवं परिस्थितियों के अनुरूप इतिहास का क्षेत्र परिवर्तित होता रहा है. मानव समाज में विकास की प्रक्रिया अनवरत रूप से चलती रहती है और इस विकास-प्रक्रिया के साथ –साथ सामाजिक आवश्यकताएँ भी तदनुरूप विकसित होती जाती हैं. जी. जे. रेनियर अपने ग्रन्थ 'हिस्ट्री, इट्स पर्पज़ एंड मेथड में ' कहता है –

'प्रत्येक युग में समाज, इतिहासकारों के समक्ष किंचित प्रश्न रखता है और इतिहासकार अपने परिश्रम से नवीन साक्ष्यों को खोजकर उनके आलोक में, अतीत में हुई घटनाओं से उनका उत्तर प्राप्त कर उन्हें समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है.'

2.3.4 ऐतिहासिक अध्ययन का विस्तार

इतिहास का आधुनिक अध्ययन का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है. इसमें विशिष्ट क्षेत्रों का अध्ययन तथा ऐतिहासिक अन्वेषण के विशिष्ट प्रासंगिक अथवा विशिष्ट विषयों के घटकों का अध्ययन किया जाता है.इतिहास का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है ,महामारी ,उद्योग ,व्यापार ,आन्दोलन ,आविष्कार ,क्रान्ति ,युद्ध ,अन्वेषण ,राष्ट्र ,राज्य ,समाज ,व्यक्ति . साहित्य आदि सबका इतिहास होता है और इतिह ,कला ,यांत्रिकी ,विज्ञान ,दर्शन ,मेले ,त्यौहार ास लेखन तथा ऐतिहासिक चिंतन का भी इतिहास होता है 19 .वीं शताब्दी से प्रायः प्रत्येक विषय के गहन अध्ययन के लिए उसका इतिहास जानना आवश्यक हो गया .इतिहास की विषयवे ,और उसके अन्य विषयों से सम्बन्ध ,उसके प्रकार ,वस्तु- जो कि उसका क्षेत्र निर्धारित करते ,तत्व हैंहैं .

2. 4 इतिहास के क्षेत्रों के वर्ग तथा उनके प्रकार

2.4.1 इतिहास के क्षेत्रों के वर्ग तथा उप-वर्ग

इतिहासकारों ने इतिहास विषय के अंतर्गत अनेक क्षेत्रों में उसका वर्गीकरण किया है इन में से कुछ वर्ग हैं – राजनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास, सामाजिक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, बौद्धिक अथवा वैचारिक इतिहास आदि. इतिहास के इन वर्गों के उप-वर्ग भी होते हैं. जैसे कि हम राजनीतिक इतिहास के अंतर्गत एक विशिष्ट समय के एक विशिष्ट क्षेत्र की एक विशिष्ट घटना के इतिहास का अध्ययन करते हैं जैसे कि पुनर्जागरण काल में फ्लोरेंस में चित्रकला और मूर्तिकला का विकास. अथवा 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति. अथवा 1930 में गाँधी जी का दांडी मार्च.

2.4.2 इतिहास के क्षेत्र के प्रकार

इतिहास के कुछ प्रकार ऐसे हैं जो अन्य विषयों से सम्बद्ध होने के साथ-साथ इतिहास से भी सम्बद्ध हैं. जैसे कि –कला का इतिहास, आविष्कारों का तथा तकनीकी इतिहास, भौगोलिक खोजों का इतिहास, प्रशासनिक इतिहास, चर्च का इतिहास, जन-सांख्यिकी का इतिहास, नृजाति-इतिहास आदि. पहला अंकित इतिहास हमको गुफ़ा-मानव के चित्रों में मिलता है. इस से पहले तो हमको जो भी जानकारी मिलती है वह जीवावशेषों के अध्ययन से मिलती है. मिटटी से बर्तन, खिलौने आदि बनाने की तकनीक, धातु के उपकरण बनाने की विधि, कागज़ बनाने की विधि आदि ने इतिहास के इतिहास के स्वरुप को बिलकुल बदल दिया. इतिहास के इतिहास में भाषा तथा लिपि के विकास का

अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है. इसीलिए लिखित वृतांतों से पहले की सूचनाओं पर आधारित ज्ञान को हम इतिहास के अंतर्गत नहीं रखते और उसे प्रागैतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं.

2 5 इतिहास की विषय-वस्तु

2.5.1 समय के साथ-साथ इतिहास की विषय-वस्तु का विस्तार

प्राचीन काल में घटना-मात्र को ही इतिहास की विषय-वस्तु मान लिया जाता था किन्तु पुनर्जागरण काल में इतिहास की विषय-वस्तु के अंतर्गत राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को भी सम्मिलित किया गया. अब इतिहास की विषय-वस्तु समय की सामाजिक आवश्यकता के अनुरूप हो गयी. अब किसी घटना को एक आयाम का न मानकर उस घटना से सम्बंधित मनुष्यों की मानसिक-स्थिति का भी अवलोकन किया गया और इस प्रकार इतिहास के क्षेत्र में दर्शन तथा मनोविज्ञान का समावेश भी किया गया. इस प्रकार इतिहास की विषय-वस्तु का विस्तार हुआ और वह व्यष्टि से ऊपर उठकर समष्टि तक पहुँच गयी. प्रत्यक्षवादी इतिहासकार नेबूर तथा रैंके ने सार्वभौमिक इतिहास-लेखन को महत्ता देकर इतिहास की विषय-वस्तु को व्यष्टि से समष्टि तक विस्तृत किया था.

रैंके तथा सीले ने इतिहास को जब इतिहास की विषय-वस्तु को केवल राजनीति-शास्त्र और राजनीतिक घटनाओं तक सीमित किया तो आलोचकों ने उन पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने इतिहास के क्षेत्र को संकुचित करने का प्रयास किया है. जब कि इतिहास की विषय-वस्तु में शासन, कानून, परम्पराओं, धर्म, कला आदि सबका समावेश किया जाना आवश्यक है. इतिहास के अध्ययन में व्यक्ति और समाज की बौद्धिक, भौतिक तथा भावनात्मक क्रियाओं का अध्ययन भी सम्मिलित किया जाना आवश्यक है.

हर्डर जैसे रूमानीवादी इतिहासकारों ने इतिहास की विषय-वस्तु में भूगोल, जलवायु तथा पर्यावरण जोड़कर उसकी विषय-वस्तु और उसके क्षेत्र का विस्तार किया था.स्पेंगलर तथा टॉयनबी ने राज्यों-राष्ट्रों का इतिहास न लिखकर आदि-काल से आधुनिक काल तक की संस्कृतियों तथा सभ्यताओं का इतिहास लिखकर सार्वभौमिक इतिहास-लेखन की परंपरा को समृद्ध करते हुए इतिहास की विषय-वस्तु तथा उसके क्षेत्र को विस्तृत किया था.अध्ययन की सुविधा के लिए इतिहास की विषय-वस्तु को हम दार्शनिक तथा व्यावसायिक वर्ग में विभाजित कर सकते हैं.

2.5.2 इतिहास की विषय-वस्तु की दार्शनिक अवधारणा

इतिहास की दार्शनिक विषय-वस्तु की व्याख्या करते हुए आर. जी. कॉलिंगवुड कहता है –

'ऐतिहासिक ज्ञान, अतीत में मनुष्य के मस्तिष्क में सुरक्षित ज्ञान है. इतिहास की विषय-वस्तु वह विचार-प्रक्रिया है जिसे मनुष्य अपने मस्तिष्क अपने अनुभव द्वारा एक सजीव-रूप प्रदान करता है. इतिहासकार प्रत्येक युग की सामाजिक आवश्यकतानुसार इतिहास की विषय-वस्तु का निर्धारण करता है. चूंकि इतिहासकार अतीत कालिक व्यक्तियों के विचारों का स्वयं अनुभव करता है अतः इतिहास की विषय-वस्तु, वह विचार भी हो सकता है जिसकी कि पुनरानुभूति करना इतिहासकार के लिए संभव हो सकता है. कॉलिंगवुड के ही अनुसार –

'मनुष्य का कार्य-व्यवहार ही इतिहास की विषय-वस्तु होना चाहिए.'

हेगेल ने इतिहास की विषय-वस्तु - समाज तथा राज्य को माना है. उसके अनुसार –

'संस्कृति, राष्ट्र तथा राजनीतिक आन्दोलन, जन-आन्दोलन आदि इतिहास की विषय-वस्तु हो सकते हैं.'

2.5.3 इतिहास की विषय-वस्तु की व्यावसायिक अवधारणा

इतिहास की विषय-वस्तु की व्यावसायिक वर्ग की अवधारणा के अनुसार अपने-अपने युग की आवश्यकताओं के अनुरूप ही इतिहासकार, इतिहास की विषय-वस्तु निर्धारित करता है. जहाँ हीरोडोटस तथा

थ्यूसीडाइट्स इतिहास की विषय-वस्तु पूर्वजों की स्मृति का सजीव चित्रण करने तक सीमित करते हैं, वहां टॉयनबी उसका विस्तार मानव-जीवन से सम्बद्ध समस्त कार्य-व्यापार तक कर देता है –

'इतिहास की विषय-वस्तु में मानव-जीवन से सम्बद्ध समस्त कार्य-व्यापार समाविष्ट होते हैं जिसमें ऐतिहासिक घटनाएँ, राज्य तथा समुदाय ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण समाज का सम्बन्ध होता है. मानव-जीवन से सम्बद्ध सम्पूर्ण कार्य-व्यापार इतिहास की विषय-वस्तु है.'क्रोचे इतिहास की विषय-वस्तु के अंतर्गत समस्त मानवीय कार्यों को सम्मिलित करता है और इस प्रकार वह इतिहास के क्षेत्र को अत्यधिक विस्तृत कर देता है. ए. एल. राउज़ इतिहास की विषय-वस्तु के अंतर्गत – भौगोलिक, आर्थिक, पर्यावरण-सम्बन्धी, प्रशासनिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक नीतियों एवं स्थितियों के विस्तृत अध्ययन को सम्मिलित करता है.

2.6 इतिहास के स्वरुप का विभाजन

2.6.1 जॉन डिबी तथा कार्ल मार्क्स द्वारा इतिहास का विभाजन

इतिहास का स्वरुप विविध प्रकार का है. सामान्यतः इसे दो वर्गों में विभाजित किया जाता है –

1. अतीत कालिक इतिहास
2. समसामयिक इतिहास

जॉन डिबी ने इतिहास के इन दोनों प्रकारों में समसामयिक इतिहास को अधिक महत्त्व दिया है.

कार्ल मार्क्स ने साम्यवादी विचारधारा के विकास से पूर्व के इतिहास को 'प्रागैतिहासिक इतिहास' कहा है और उसने इतिहास को चार भागों में बांटा है –

1. एशियाई इतिहास
2. प्राचीन यूरोपीय इतिहास
3. सामंतशाही इतिहास
4. पूँजीवादी इतिहास

2.6.2 स्पेंगलर द्वारा इतिहास का विभाजन

स्पेंगलर ने इतिहास को दो भागों में विभाजित किया है –

1. प्रकृति-विषयक इतिहास

प्रकृति-विषयक इतिहास से स्थायित्व, मूर्तिमान तथा सादृश्य गुण वाली वस्तुएं सम्बद्ध हैं.

2. मानव-विषयक इतिहास

मानव-विषयक इतिहास से गतिशील, अमूर्त, प्रक्रियात्मक तथा निर्माण वाली विशेषताओं की वस्तुएं सम्बद्ध है.

2.6.3 डी. डी. कोसाम्बी द्वारा भारतीय इतिहास का काल विभाजन

इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को अनेक कालों में विभाजित किया है. मार्क्सवादी विचारक एवं इतिहासकार प्रोफ़ेसर डी. डी. कोसाम्बी द्वारा उत्पादन और उत्पादन के संसाधनों के परिप्रेक्ष्य में भारतीय इतिहास का काल विभाजन उल्लेखनीय है –

1. नगरीय स्थिर, सिन्धु घाटी संस्कृति (3000 से 1500 ईसा पूर्व)
2. आर्यीकरण अर्थात् उत्तरकालीन कांस्य तथा प्रारंभिक लौह-युग (1500 से 800 ईसा पूर्व)
3. आर्यों की ग्रामीण संस्कृति से नगरीय सभ्यता के विकास तक और मगध साम्राज्य की स्थापना तक (800 से 250 ईसा पूर्व तक)
4. आदिम प्रकार का सामंतवादी युग (250 ईसा पूर्व से 400 ईसवी तक)
5. विशुद्ध सामंतवादी युग (400 ईसवी से 1200 ईसवी अर्थात् उत्तर भारत में मुस्लिम आधिपत्य के प्रारंभ तक)

6. जागीरदारी, मनसबदारी और ज़मींदारी का युग (1200 से ब्रिटिश आधिपत्य से पूर्व तक का युग)
7. आधुनिक पूंजीवादी युग तथा नए स्वदेशी बुर्जुआ शासन का प्रारंभ

प्रोफ़ेसर कोसाम्बी ने केवल - कृषि, व्यापार, दास, सामंतवाद, व्यक्तिगत संपत्ति और पूँजीवाद के विकास के आधार पर ही भारतीय इतिहास का जो काल विभाजन किया है उसमें इतिहास के धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं की नितांत उपेक्षा की गयी है.

2.7 इतिहास के प्रमुख भेद

2.7.1 सैनिक इतिहास

सैनिक इतिहास, इतिहास की वह शाखा है जिसमें अतीत में हुए क़बीलों से लेकर राष्ट्रों तक के मध्य हुए, मानव-जाति के संघर्षों का अध्ययन किया जाता है. इसमें युद्धों का वृतांत देने के साथ-साथ युद्धों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभावों का अध्ययन किया जाता है.

हम देखते हैं कि द्रविड़ों की महान नगरीय सभ्यता आर्यों की ग्रामीण सभ्यता से केवल इसलिए पराजित हो जाती है, क्योंकि द्रविड़ों के पास आर्यों जैसे लोहे के बने हथियार नहीं थे. बाबर की 12000 सैनिकों की सेना इब्राहीम लोदी की 100000 की सेना को तुलुगमा (तोपखाने और घुड़सवार सेना का संयुक्त आक्रमण) रणनीति के कारण पराजित कर देती है. इसी तरह अंग्रेज़ों की बंदूकों से युक्त पैदल छोटी-छोटी टुकडियां, भारतीयों की बड़ी से बड़ी घुड़सवार सेनाओं को पराजित कर देती हैं. इस प्रकार के सभी वृतांत सैनिक इतिहास का अंग होते हैं.

2.7.2 क्लियोमैट्रिक्स

इसमें सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास का अध्ययन करने के लिए आर्थिक सिद्धांत तथा गणितीय प्रणाली का क्रमबद्ध उपयोग किया जाता है.

2.7.3 तुलनात्मक इतिहास

इसमें एक निश्चित समय में अथवा एक समान सांस्कृतिक परिस्थितियों में विभिन्न समाजों का तुनात्मक अध्ययन किया जाता है. इस दृष्टिकोण के प्रस्तावकों में अमेरिकन इतिहासकार - बैरिंगटन मूर, हर्बर्ट ई. बोल्टन, ब्रिटिश इतिहासकार - अर्नाल्ड टोयनबी, ज्योफ्री बैराक्लग तथा जर्मन इतिहासकार – ओसवाल्ड स्पेंगलर सम्मिलित हैं.

2.7.4 सांस्कृतिक इतिहास

सांस्कृतिक इतिहास, इतिहास की वह शाखा है जिसमें लोकप्रिय सांस्कृतिक परम्पराओं तथा ऐतिहासिक अनुभव की सांस्कृतिक व्याख्याओं का प्राणिविज्ञान तथा इतिहास के दृष्टिकोणों को मिलकर अध्ययन किया जाता है. इसमें रीति-रिवाज, लोक-कलाओं की निरंतरता आदि का अध्ययन किया जाता है.

स्पेंगलर विश्व-इतिहास को महान संस्कृतियों का एक नाटक मानता है. वह विश्व- इतिहास को संस्कृतियों के इतिहास तक सीमित करता है. स्पेंगलर इतिहास को संस्कृति की जीवन-लीला मानता है जिसके कि नियम निश्चित तथा अपरिवर्तनीय होते हैं.टॉयनबी यह मानता है कि ऐतिहासिक अध्ययन की सुबोधगम्य इकाइयां – राष्ट्र अथवा काल नहीं, बल्कि समाज अथवा सभ्यताएँ हैं.

कला का इतिहास यूं तो सांस्कृतिक इतिहास का ही अंग है किन्तु अपने आप में इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसका वर्णन करने के लिए कोई महाकाव्य भी कम पड़ सकता है. लोक-संगीत, शास्त्रीय संगीत, चित्रकला, स्थापत्य कला, मूर्ति कला, आदि तो विस्तृत विषय हैं ही, अकेले वस्त्र-निर्माण से जुड़े हुए चिकनकरी, ज़रदारी,

पाषाण-सज्जा से जुड़ी नक्काशी, पीत्रा-दुरा, इन-ले वर्क, जाली का काम, स्थापत्य कला के अंतर्गत शिखर, मेहराब, गुम्बद आदि पर विशद ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं.

2.7.5 कूटनीतिक इतिहास

इतिहास की इस विधा पर लियोपोल्ड वोन रैंके के इतिहास-दर्शन का प्रभाव पड़ा है. रैंके ने राजनीति तथा राजनीतिज्ञों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया है. रैंके महान शासकों को इतिहास की निरंतरता तथा उसमें हुए परिवर्तन का श्रेय देता है. इस प्रकार के राजनीतिक इतिहास में विभिन राज्यों, राष्ट्रों के मध्य कूटनीतिक संबंधों के अध्ययन को महत्त्व दिया जाता है तथा अंतर्राष्ट्रीय सबंधों की चर्चा की जाती है. आम तौर पर इतिहासकारों ने इसी प्रकार के इतिहास की रचना की है.

2.7.6 आर्थिक इतिहास

आर्थिक इतिहास में अतीत में हुई आर्थिक गतिविधियों तथा आर्थिक विकास एवं आर्थिक अवनति का अध्ययन किया जाता है. आर्थिक इतिहास में विश्लेषण करने के लिए ऐतिहासिक प्रणाली तथा सांख्यिकी प्रणाली का संयुक्त रूप से उपयोग किया जाता है और ऐतिहासिक परिस्थितियों पर आर्थिक सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है. इसमें व्यापार का इतिहास, जनसांख्यिकी-इतिहास तथा श्रमिक-इतिहास सम्मिलित हैं.

2.7.7 राजनीतिक इतिहास

राजनीतिक इतिहास, इतिहास की सबसे प्रमुख शाखा के रूप में स्थापित है. प्राचीन काल से लेकर आज तक राजा-महाराजाओं, सम्राटों-बादशाहों, सामंतों, दरबारियों आदि के छोटे-बड़े कार्यों को इतिहास में स्थान दिया गया है. इतिहासकारों द्वारा शासकों की वंशावलियों, उनके आपसी सम्बन्ध, राज-परिवारों में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष, राजनीतिक षड्यंत्र आदि को सदैव महत्व दिया जाता रहा है. चूंकि रैंके राजनीतिक शक्ति को इतिहास का प्रमुख प्रतिनिधि मानता है, इसलिए उसने अपने इतिहास ग्रंथों में सामाजिक एवं आर्थिक बलों की उपेक्षा कर राजाओं और अन्य राजनीतिक नेताओं के कार्यों को, अर्थात् राजनीतिक इतिहास को सर्वाधिक महत्व दिया है. रैंके पर बीसवीं शताब्दी के इतिहासकारों द्वारा यह आरोप लगाया जाता है कि उसने राजनीतिक इतिहास, विशेषकर महा-शक्तियों के राजनीतिक इतिहास को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया है.

2.7.8 विचारों का इतिहास अथवा बौद्धिक इतिहास

बौद्धिक इतिहास में मानवीय विचारों तथा सिद्धांतों का अध्ययन होता है. डॉक्टर सैमुअल जॉनसन बौद्धिक इतिहास को इतिहास की सभी शाखाओं में से सबसे उपयोगी शाखा मानता है. फ्रांसीसी क्रान्ति की पृष्ठभूमि तैयार करने का श्रेय रूसो, मोंतेस्क्यू, वोल्तेयर और दांते जैसे विचारकों को दिया जाता है.लिप्ज़िंग के कार्ल लीम्प्रे को बौद्धिक इतिहास का प्रणेता कहा जाता है. बौद्धिक इतिहास-लेखन के लिए पेजहाट, तार्दे, दुर्खीम, जेम्स हार्वे रोबिन्सन तथा रेड्ले के नाम भी उल्लेखनीय हैं. एच. ई. बार्ने ने पाश्चात्य-जगत के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की रचना की है.

2.7.9 सार्वभौमिक इतिहास

चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के एफ़ोरस और तदन्तर डलोडोरस के लेखन में हमको सार्वभौमिक इतिहास की पहली झलक मिलती है. तीसरी तथा दूश्री शताब्दी ईसा पूर्व के रोम के इतिहासकार पोलीबियस ने पहली बार सार्वभौमिक इतिहास लिखे जाने की आवश्यकता का अनुभव किया था. सेंट अगस्ताइन की रचना - 'सिटी ऑफ़

गॉड' सार्वभौमिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण प्रतिनिधि रचना है.अरबी दार्शनिक इब्न खल्दून की 'मुक़द्दमा' को भी हम वैश्विक इतिहास कह सकते हैं. मध्यकालीन इसाई इतिहासकार बेसुएट ने भी इस दिशा में सार्थक प्रयास किए थे.

आधुनिक दार्शनिक-इतिहासकारों तथा चिंतकों में हर्डर, शिलर, हेगेल, कार्ल मार्क्स तथा हर्बर्ट स्पेंसर के लेखन में भी सार्वभौमिक इतिहास की झलक मिलती है. जर्मन इतिहासकार रैंके, इतिहास लेखन में व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ता है. वह विभिन्न देशों के इतिहास की विशिष्टताओं को सार्वभौमिक इतिहास की आवश्यक कड़ियां मानकर सार्वभौमिक इतिहास की ओर बढ़ता है.स्पेंगलर तथा टॉयनबी की रचनाएं प्राथमिक स्रोतों पर आधारित इतिहास तथा सार्वभौमिक इतिहास के समाकलन के दो उदाहरण हैं. आज जब हम ग्लोबल विलेज की परिकल्पना को साकार होते हुए देख रहे हैं, तब वैश्विक इतिहास-लेखन की महत्ता और भी अधिक बढ़ गयी है. आज इतिहास, जाति, धर्म, राष्ट्र और महाद्वीप की सीमाओं को लांघकर वैश्विक तथा सार्वभौमिक हो चुका है.

2.7.10 भौगोलिक खोजों का इतिहास

इतिहास को गति, दिशा एवं अर्थ प्रदान करने में भौगोलिक उपकरणों तथा भौगोलिक खोजों ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. नवीन भौगोलिक खोजें आने वाले परिवर्तनों का वाहक बनीं. बार्तालोम्यू डियाज, कोलम्बस, वास्कोडिगामा, वोराज़ानो, जे0 कार्तियर, जॉन स्मिथ आदि ने अफ्रीका, एशिया तथा अमेरिका में अज्ञात क्षेत्रों की खोज की.भौगोलिक खोजों ने यूरोप में वाणिज्यिक क्रान्ति को सशक्त व व्यापक बना दिया. वास्तव में भौगोलिक खोजों, औपनिवेशिक साम्राज्यों की स्थापना तथा वाणिज्यिक क्रान्ति का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है. इन सबने मिलकर मनुष्य के संकुचित दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में तथा विश्व इतिहास को मध्य युग से आगे बढ़ाकर आधुनिक युग में प्रविष्ट कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी.

2.7.11 मुद्रा शास्त्र

मुद्राशास्त्र, में धातु तथा कागज़ की मुद्राओं तथा रुपयों के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है. यह आर्थिक इतिहास का एक अभिन्न अंग है और इसके माध्यम से हम मानव-सभ्यता के विकास का अध्ययन भी करते हैं.

2.7.12 पुरा-लिपि शास्त्र

पुरा-लिपि शास्त्र प्राचीन लिपियों को पढ़ पाने का विज्ञान है. प्राचीन लिपियों को पढ़ पाने से हमको इतिहास के रहस्यों को उद्घाटित करने में बहुत सफलता मिली है. आज भी हड़प्पाकालीन सभ्यता की लिपि को सही-सही पढ़ा नहीं जा सका है जिसके कारण इस महान सभ्यता के विषय में हमारा ज्ञान आज भी अधूरा है.

2.7.13 सामाजिक इतिहास

'समाजशास्त्र' का संस्थापक कॉम्ते इतिहास को सामाजिक भौतिकशास्त्र मानता है जिसमें कि मानव-व्यवहारों के सामान्य नियमों का अध्ययन किया जाता है. टॉयनबी की दृष्टि में – 'इतिहास का निर्माण सामाजिक अणु-तत्वों से हुआ है.'

ट्रेवेलियन के अनुसार –'सामाजिक इतिहास के अभाव में आर्थिक इतिहास मरुस्थल के समान है और इसके बिना राजनीतिक इतिहास का तो वर्णन ही असंभव है.'

रेनियर के अनुसार –'सामाजिक इतिहास, आर्थिक इतिहास की पृष्ठभूमि है तथा यह राजनीतिक इतिहास की कसौटी है.

2.7.14 विधिक, प्रशासकीय तथा संवैधानिक इतिहास

मनु-स्मृति का अध्ययन हम विधिक इतिहास के अंतर्गत करते हैं. हमारे भारत में अनेक विधान-संहिताएँ हैं. कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' को विधिक एवं प्रशासनिक इतिहास के क्षेत्र में मील का पत्थर माना जाता है.प्रशासकीय इतिहास की दृष्टि अबुल फ़ज़ल की 'आइन-ए-अकबरी' एक प्रामाणिक ग्रन्थ है.पाश्चात्य विधिक इतिहासकारों में गमोलोबिज़, गिक, इह्रिंग, बूनर, कोहलर, मेटलैंड, ब्लैकस्टोन, पोलक, लास्की, डुगविट, चार्मार्ट, विगमोर आदि प्रमुख हैं.

2.7.15 धार्मिक इतिहास

धार्मिक इतिहास के अंतर्गत विश्व में प्राचीन काल से लेकर आज तक के प्रचलित एवं लुप्त हो चुके धर्मों के उत्थान-पतन, उनके दर्शन, उनके सिद्धांत, उन से सम्बद्ध कला (संगीत, साहित्य, स्थापत्य कला, चित्रकला, मूर्तिकला आदि), उत्सवों, मेलों आदि का अध्ययन तो होता ही है साथ ही उनके व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक प्रभाव का भी अध्ययन होता है. धर्म, राजनीतिक प्रभाव-क्षेत्र के विस्तार का निमित्त रहा है. सम्राट अशोक और कनिष्क ने बौद्ध धर्म का जब विदेशों में प्रसार किया था तो उसके राजनीतिक प्रभावों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता. क्रूसेड (धर्म-युद्ध) के नाम पर ईसाई धर्मावलम्बियों ने अपना राजनीतिक प्रभुत्व सारी दुनिया में स्थापित कर दिया था. ईसाई मतानुसार –

'जीसस क्राइस्ट का क्रॉस, समस्त मानव-इतिहास का केंद्र-बिंदु है और वही मानव-अस्तित्व को सार्थक बनाता है.'

मुस्लिम शासकों और सेनानायकों ने 'जिहाद' का नारा देकर एशिया, अफ्रीका और यूरोप में न केवल अपना साम्राज्य-विस्तार किया अपितु खुलेआम लूटपाट भी की. औरंगज़ेब ने इस्लाम के संरक्षक का जामा पहनकर अपने पिता को क़ैद कर और भाइयों की हत्या कर मुगलिया तख़्त हासिल कर लिया. शिवाजी हिन्दू धर्म के रक्षक कहलाकर छत्रपति बन गए.इस प्रकार धर्म के लिए और धर्म के नाम पर होने वाली घटनाओं का इतिहास में बहुत महत्त्व है.

2.7.16 औपनिवेशिक इतिहास

उपनिवेशों की स्थापना ने जहाँ एक ओर यूरोप के देशों को समृद्ध, शक्तिशाली तथा साधन-संपन्न बनाया वहां दूसरी ओर सैनिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी दृष्टि से पिछड़े पराजित राष्ट्रों को गुलामी की लम्बी यातना और अपमान से गुज़रना पड़ा. औपनिवेशिक इतिहास – अनवरत शोषण और दमन की गाथा है किन्तु पाश्चात्य देशों के इतिहासकारों ने इसका इतिहास इस प्रकार लिखा है जिस से यह प्रतीत होता है कि औपनिवेशिक शासकों ने ही इन परतंत्र राष्ट्रों में पहली बार सभ्यता के बीज बोए थे और स्थानीय निवासियों को सभ्यता का पहला पाठ पढ़ाया था. रुडयार्ड किपलिंग की अवधारणा - 'वाइट मैन्स बर्डन' इस मानसिकता का प्रतिनिधित्व करती है.

गुलाम देशों के जागरूक इतिहासकारों ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इतिहास लिखकर अपने गौरांग प्रभुओं का प्रतिकार किया. उदहारण के लिए अंग्रेज़ों की दृष्टि में जहाँ 1857 का विद्रोह एक 'सिपाही विद्रोह' मात्र था वहां वीर सावरकर जैसे इतिहासकारों ने इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में देखा.

2.7.17 आविष्कारों का तथा तकनीकी विकास का इतिहास

आदि काल में आग जलाने की तकनीक जानने से लेकर अन्य गृहों तक पहुँचने तक मनुष्य ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति की है. मिस्र के 400 फुट तक ऊंचाई वाले दैत्याकार पिरामिड, प्राचीन काल की वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति के प्रमाण हैं. हड़प्पा कालीन सभ्यता के पक्के मकान, उसका जल-निकासी प्रबंध आज भी आश्चर्यजनक लगते हैं. किंचित आविष्कारों ने इतिहास का स्वरुप बदल दिया.

बारूद का आविष्कार, मनुष्य की ऐसी ही एक उपलब्धि थी. इसके बाद व्यावहारिक दृष्टि से तीर-तलवार का उपयोग तो केवल युद्धाभ्यास के लिए ही होने लगा. प्रोफ़ेसर इरफ़ान हबीब सिंचाई के साधन के रूप में रहट (पर्शियन

व्हील) के आविष्कार को कृषि-विकास के इतिहास में एक युगांतरकारी घटना मानते हैं. बाबर जब भारत पर आक्रमण करते समय 'तुलुगमा (घुड़सवार सेना तथा तोपखाने का संयुक्त आक्रमण) रणनीति लेकर आया था तो अपनी फ़ौज से कई गुनी बड़ी फ़ौज को हराने में उसे सफलता मिली थी.

कोपरनिकस तथा गेलीलियो की खगोल-शास्त्र विषयक खोजों ने तथा गेलीलियों द्वारा दूरबीन के आविष्कार ने भौगोलिक खोजों का मार्ग प्रशस्त किया. संसार को मध्यकाल से आधुनिक युग में प्रविष्ट कराने का श्रेय तीन आविष्कारों को दिया जाता है – छापाखाना, मशीनी चरखा (स्पिनिंग व्हील) तथा वाष्प इंजन. इन आविष्कारों के विषय में ज्ञान प्राप्त किए बिना हम आधुनिक इतिहास को समझ ही नहीं सकते. इसी प्रकार एल्फ्रेड नोबल द्वारा डायनामाइट के आविष्कार ने और राइट बंधुओं द्वारा हवाई जहाज के आविष्कार ने आधुनिक इतिहास का स्वरुप ही बदल दिया. स्वयं एल्बर्ट आइन्स्टाइन को यह आभास भी नहीं होगा कि इतिहास में उनके सापेक्षता के सिद्धांत के कितने सृजनात्मक और कितने विनाशकारी परिणाम होंगे.

आज वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति ने 'ग्लोबल विलेज' की परिकल्पना को साकार कर दिया है. इतिहास के क्षेत्र में भी उत्खनन, कार्बन डेटिंग तथा समुद्री-सतह पर सभ्यताओं की खोज में वैज्ञानिक प्रगति ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई है.

2.7.18 यात्रा-वृतांत

यात्रा-वृतांत इतिहास का अभिन्न अंग हैं. इतिहास की ऐसी शायद ही कोई विधा हो जिसके बारे में यात्रा-वृतांतों के माध्यम से हमको जानकारी प्राप्त न होती हो. चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ की 'इंडिका' भारतीय धर्म. संस्कृति, समाज, प्रशासन, कूटनीति, उद्योग-व्यवसाय आदि के विषय में विशद सामग्री उपलब्ध कराती है. गुप्तकाल में फाह्यान तथा हर्ष के काल में ह्वेनसांग के वृतांतों का समकालीन इतिहास में अत्यंत महत्त्व है.

अल-बिरूनी का ग्रन्थ - 'किताब-उल-हिन्द' तो भारत के विषय में सबसे उपयोगी जानकारी देता है. मार्को पोलो, अब्दुल रज्ज़ाक, इब्न बतूता, सर थॉमस रो, ट्रेवेलियन, बर्नियर, मनूची आदि के वृतांतों के बिना हम मध्यकालीन भारतीय इतिहास को पूरी तरह समझ ही नहीं सकते. ब्रिटिश कालीन भारत में बिशप हेबर ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर जो अपना यात्रा-वृतांत लिखा था उस से हमको तत्कालीन समाज, तत्कालीन अर्थ-व्यवस्था तथा राजनीतिक स्थिति की प्रामाणिक जानकारी मिलती है. जहाँ डलहौज़ी तथा उसके जैसे साम्राज्य-विस्तारवादी अवध-राज्य की दुर्दशा का बहाना करके उसे हड़पना न्याय-संगत ठहरा रहे थे वहां बिशप हेबर अपने यात्रा-वृतांत में यह बताता है कि नवाब के शासन में अवध की प्रजा खुशहाल है. इसी प्रकार राहुल सांकृत्यायन के तिब्बत-यात्रा-वृतांत का अध्ययन किए बिना हमारी तिबात के विषय में जानकारी हमेशा अधूरी रहेगी.

2.7.19 दैनन्दिनी

दूसरी शताब्दी के रोमन सम्राट मार्कस औरेलियस की ग्रीक भाषा भाषा में लिखी - 'मेडीटेशंस' नाम से ज्ञात रचना को पहली दैनन्दिनी कहा जाता है. इसका पूर्व-रूप हमको मध्य-पूर्व तथा पूर्वी एशियायी संस्कृतियों में भी मिलता है. 11 वीं शताब्दी के अरब लेखक इब्न बन्न की दैनन्दिनी के शिल्प की तुलना, आधुनिक दैनंदिनियों के शिल्प से की जा सकती है. पुनर्जागरण काल में फ्लोरेंटाइन्स ब्योनाकार्सो पिटी, ग्रेगोरियो दाती तथा कनिष्ठ मारिनो सनुतो की दैनन्दानियाँ प्रसिद्द हैं. ब्रिटिश पुनरुद्धार काल के सैमुएल पेपिस तथा जॉन ईवलिन ने अपनी दैनन्दनियों में लन्दन की प्लेग तथा वहां के अग्नि-कांड का आँखों-देखा हाल लिखा है.

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एम्स्तर्दम की एक बैरक में छिपी किशोर बालिका, एनी फ्रैंक की मरणोपरांत प्रकाशित दैनन्दिनी - 'दि डायरी ऑफ़ ए यंग गर्ल' नाज़ी अत्याचार का अत्यंत जीवंत वर्णन है.

2.7.20 हिस्ट्री फ्रॉम बिलो

उपाश्रितों से इतिहास – 'हिस्ट्री फ्रॉम बिलो इतिहास', की वह अवधारणा है जिसमें इतिहास-लेखन को राजनीतिक नेताओं तथा अन्य क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तियों के स्थान पर आम आदमियों पर केन्द्रित किया जाता है. 'हिस्ट्री फ्रॉम बिलो' शब्द, फ़्रांसीसी इतिहासकार जॉरजेज़ लेफ़ब्रे (1874-1959) की देन है और इसको 1960 के दशक में ब्रिटिश मार्क्सवादी इतिहासकारों ने प्रतिष्ठित किया था.

2.8 इतिहास का अन्य विषयों से सम्बन्ध

2.8.1 इतिहास और धर्मशास्त्र

पौराणिक कथाओं में ही नहीं, अपितु इतिहास में भी धर्म के मार्ग पर चलने वालों की विजय और अधर्म का मार्ग अपनाने वालों की सदा पराजय दिखाई जाती रही है. सेंट अगस्टाइन के ऐतिहासिक ग्रन्थ – 'सिटी ऑफ़ गॉड' में धर्म की पाप पर विजय दिखाई गयी है. ईसाई इतिहास लेखन की विशिष्टताओं में इतिहास में ईश्वरीय इच्छा की महत्ता, ऐतिहासिक बलों की दैविक प्रकृति तथा इतिहास लेखन के आधार-स्रोत के रूप में बाइबिल की महत्ता सम्मिलित हैं. इसी प्रकार अनेक मुस्लिम इतिहासकारों ने भी मुस्लिम शासकों की अन्य धर्मावलम्बियों पर विजय को इस्लाम की फ़तेह माना है. अनेक आधुनिक पाश्चात्य इतिहासकारों में भी इसी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं. गिबन, ह्यूम, मैकाले, एटन, मैकलैंड आदि ने इतिहास-लेखन में धर्म को प्रमुखता दी है.

2.8.2 इतिहास और नीति शास्त्र

इतिहास में 'नैतिक' और 'अनैतिक' पर सदैव विमर्श होता रहा है. इतिहास में प्रायः विजेता वर्ग के कृत्यों को तथा उसके दृष्टिकोण को, नैतिक तथा पराजितों के कृत्यों व उनके दृष्टिकोण को, अनैतिक ठहराया जाता रहा है. टॉयनबी सभ्यताओं के पतन का एक प्रमुख कारण उसके निवासियों की जीवन-शैली का अनैतिक होना मानता है.

2.8.3 इतिहास और राजनीति शास्त्र

कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' से लेकर मेकियावेली के 'दि प्रिंस' तक राजनीति शास्त्र तथा इतिहास का प्रगाढ़ सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है. रैंके के इतिहास-लेखन में भी राजनीतिशास्त्र तथा इतिहास का अन्तरंग सम्बन्ध दिखाई पड़ता है.

2.8.4 इतिहास और समाजशास्त्र

समाजशास्त्र के संस्थापक अगस्ते कॉम्ते ने इतिहास और समाजशास्त्र में भेद नहीं किया है. उसके अनुसार – 'इतिहास सामाजिक भौतिकशास्त्र है, इसके अंतर्गत मानवीय व्यवहार के सामान्य नियमों का अध्ययन होता है.'

2.8.5 इतिहास और भूगोल

किसी क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियां वहां के नागरिकों की प्रकृति के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. उदाहरण के लिए भारत जैसे प्राकृतिक सम्पदा से परिपूर्ण देशवासियों को अपने निर्वाहन अथवा अस्तित्व-संरक्षण के लिए कभी भी अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी इसलिए भारतीय इतिहास में विदेशों में किए गए सैनिक अभियान नाम मात्र के हैं जब कि मंगोलिया अथवा तुर्किस्तान जैसे दुर्गम एवं साधन-हीन क्षेत्रों के निवासियों का इतिहास सैनिक-अभियानों से भरा पड़ा है. 15 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हुई भौगोलिक खोजों ने तो इतिहास का स्वरुप ही बदल दिया. वास्तव में इतिहास और भूगोल के एक ही सिक्के के दो पहलू कहा जाए तो कोई अतिशायक्ति नहीं होगी.

2.8.6 इतिहास और साहित्य

प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक घटनाओं को साहित्य का विषय बनाया जाता रहा है. मध्यकालीन इंग्लैंड के इतिहास को जानने के लिए वाल्टर स्कॉट के उपन्यासों में रुचिकर सामग्री उपलब्ध होती है. रूमानी इतिहासकार हर्डर भी इतिहास और साहित्य के अभिन्न सम्बन्ध को स्वीकार करता है.

2.8.7 इतिहास और दर्शन

इतिहास पहले दर्शन शास्त्र का ही अंग माना जाता था. नेबूर तथा रैंके ने इसे एक स्वतंत्र विषय के रूप में प्रतिष्ठित किया था. फिर भी इतिहास और दर्शन के मध्य प्रगाढ़ सम्बन्ध रहा है. हेगेल के दर्शन का कार्ल मार्क्स के इतिहास-लेखन पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है. स्पेंगलर तथा टॉयनबी केवल इतिहासकार नहीं हैं, अपितु दार्शनिक-इतिहासकार हैं.

2.9 इतिहास का व्यापक क्षेत्र

आज किसी भी विषय का हम एकल अध्ययन नहीं कर सकते और न ही ऐसा करने का हमको हठ करना चाहिए. इतिहास की तो यह विशेषता है कि प्रत्येक विषय में उस विषय के इतिहास का अध्ययन किया जाता है इसलिए इतिहास की व्यापकता और उसकी उपयोगिता पर कोई प्रश्न नहीं उठाया जा सकता. इतिहास का क्षेत्र और उसकी व्याप्ति असीमित है. सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि आज भी इसके क्षेत्र का विस्तार हो रहा है और आगे भी होता रहेगा.

2.10 सारांश

इतिहास सामाजिक विज्ञान की श्रेणी में आता है. प्रत्येक युग के धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मूल्यों एवं परिस्थितियों के अनुरूप इतिहास का क्षेत्र परिवर्तित होता रहा है. इतिहास की विषयवस्तु - मेंभूगोल ,जलवायु ,शासन,धर्म ,परम्पराओं ,कानून , कला आदि सबका समावेश किया जाना आवश्यक हैस्पेंगलर . लेखन की परंपरा को समृद्ध -तथा टॉयनबी ने संस्कृतियों तथा सभ्यताओं का इतिहास लिखकर सार्वभौमिक इतिहास .वस्तु तथा उसके क्षेत्र को विस्तृत किया था-करते हुए इतिहास की विषय

कॉलिंगवुड के अनुसार इतिहास की दार्शनिक विषय-वस्तु वह विचार-प्रक्रिया है जिसे मनुष्य अपने मस्तिष्क अपने अनुभव द्वारा एक सजीव-रूप प्रदान करता है. मनुष्य का कार्य-व्यवहार ही इतिहास की विषय-वस्तु होता हैहेगेल ने इतिहास की विषय-वस्तु - समाज तथा राज्य को माना है. टॉयनबी की दृष्टि में इतिहास की विषय-वस्तु की व्यावसायिक वर्ग की अवधारणा के अनुसार 'इतिहास की विषय-वस्तु में मानव-जीवन से सम्बद्ध समस्त कार्य-व्यापार समाविष्ट होते हैं.' इतिहास के स्वरुप को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है – अतीत कालिक इतिहास तथा समसामयिक इतिहास. स्पेंगलर ने इतिहास को दो भागों में विभाजित किया है –प्रकृति-विषयक इतिहास तथा मानव-विषयक इतिहास.इतिहास के विभिन्न भेदों में उल्लेखनीय हैं –सैनिक इतिहास, क्लियोमैट्रिक्स, तुलनात्मक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, कूटनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास, राजनीतिक इतिहास, बौद्धिक इतिहास,सार्वभौमिक इतिहास, भौगोलिक खोजों का इतिहास, **मुद्राशास्त्र,** पुरा-लिपि शास्त्र, सामाजिक इतिहास, विधिक एवं प्रशासनिक इतिहास, धार्मिक इतिहास, औपनिवेशिक इतिहास, आविष्कारों का तथा तकनीकी विकास का इतिहास, यात्रा-वृतांत, दैनन्दिनी, हिस्ट्री फ्रॉम बिलो (उपाश्रितों से इतिहास).इतिहास का अन्य विषयों से सम्बन्ध -इतिहास और धर्मशास्त्र, इतिहास और नीति शास्त्र, इतिहास और राजनीति शास्त्र, इतिहास और समाजशास्त्र, इतिहास और भूगोल, इतिहास और साहित्य, इतिहास और दर्शन.

इतिहास का व्यापक क्षेत्र - इतिहास की तो यह विशेषता है कि प्रत्येक विषय में उस विषय के इतिहास का अध्ययन किया जाता है इसलिए इतिहास की व्यापकता और उसकी उपयोगिता पर कोई प्रश्न नहीं उठाया जा सकता.

अभ्यास प्रश्न

निम्नांकित पर चर्चा कीजिए-

1. इतिहास की विषय-वस्तु की दार्शनिक अवधारणा
2. सार्वभौमिक इतिहास
3. आविष्कारों तथा तकनीकी विकास का इतिहास

2.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. देखिए 1.2.5.2 इतिहास की विषय-वस्तु की दार्शनिक अवधारणा
2. देखिए 1.2.7.9 सार्वभौमिक इतिहास
3. देखिए 1.2.7.17 आविष्कारों तथा तकनीकी विकास का इतिहास

2.12 पारिभाषिक शब्दावली

बिग बैंग थ्योरी – जॉर्ज लेमेत्रे द्वारा प्रतिपादित ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का सिद्धांत जिसके अनुसार ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एक विस्फोट का परिणाम थी.

सिटी ऑफ़ गॉड – देवताओं का नगर

पीत्रा दुरा – इतालवी अलंकरण शैली - सफ़ेद संगमर्मर पर रंगीन (बहुमूल्य अथवा अर्ध-बहुमूल्य) पत्थर की पच्चीकारी

इन-ले-वर्क – किसी एक रंग के पत्थर पर दूसरे रंग के पत्थर की पच्चीकारी

सार्वभौमिक इतिहास – वैश्विक इतिहास

क्रूसेड – ईसाइयों द्वारा धर्म-विजय हेतु सैनिक-अभियान

वाइट मैन्स बर्डन – गौरांगों का सभी अश्वेतों को सभ्य बनाने का दायित्व. इन शब्दों का प्रथम प्रयोग, रुडयार्ड किपलिंग ने अपनी एक कविता में किया था.

कार्बन डेटिंग - रेडियो कार्बन के क्षरण के मापन द्वारा कार्बनिक पदार्थों की आयु निर्धारित करने की विधि

2.13 सन्दर्भ ग्रन्थ

कॉलिंगवुड आर. जी. – 'दि मैप ऑफ़ नॉलिज', ऑक्सफ़ोर्ड, 1924

कॉलिंगवुड आर. जी. – 'दि आइडिया ऑफ़ हिस्ट्री', ऑक्सफ़ोर्ड, 1946

गूच, जी0 पी0 - दि हिस्ट्री एण्ड दि हिस्टोरियन्स ऑफ़ दि नाइन्टीन्थ सेन्चुरी, लन्दन, 1913

इगर्स, जॉर्ज जी0, जेम्स, एम0 पावेल - लियोपोल्ड रैंके एण्ड दि शेपिंग ऑफ़ दि हिस्टोरिकल डिसिप्लिन, न्यूयार्क, 1990

श्रीधरन, ई0 - ए टैक्स्ट बुक ऑफ़ हिस्टोरियोग्राफ़ी, नई दिल्ली, 2013

लियोपोल्ड वान रैंके (सम्पादनः राजर वाइन्स) - 'दि सीक्रेट ऑफ़ वर्ड हिस्ट्रीः सेलेक्टेड राइटिंग्स ऑन दि आर्ट एण्ड साइंस ऑफ़ हिस्ट्री', न्यूयार्क, 2010

रैंके, लियोपोल्ड वान, 'यूनिवर्सल हिस्ट्री: दि ओलडेस्ट ग्रुप ऑफ़ नेशंस एंड दि ग्रीक्स', स्क्रिबनेर, 1884

वेल्स, एच. जी. – 'दि आउटलाइन ऑफ़ हिस्ट्री: बीइंग ए प्लेन हिस्ट्री ऑफ़ लाइफ एंड मैनकाइंड' न्यूयॉर्क, 1921

कार, ई0 एच0 (अनुवादकः चक्रधर, अशोक) - 'इतिहास क्या है', नई दिल्ली, 1993

थापर, रोमिला (सम्पादक) - 'इतिहास की पुनर्व्याख्या' नई दिल्ली, 1991
बुद्धप्रकाश - 'इतिहास दर्शन' इलाहाबाद, 1962
वर्मा, लालबहादुर - 'इतिहास के बारे में', इलाहाबाद, 2000
शर्मा, रामविलास - 'इतिहास दर्शन', नई दिल्ली, 1995
टोश, जॉन – 'दि पर्सूट ऑफ़ हिस्ट्री: एम्स, मेथड्स एंड न्यू डायरेक्शंस इन दि स्टडी ऑफ़ मॉडर्न हिस्ट्री' हार्लो, 1999
कॉम्ते, अगस्ते –'पॉज़िटिव फ़िलोसोफ़ी' (अंग्रेजी अनुवाद – मार्तेन्यू, एच., लन्दन, 1961

2.14 निबंधात्मक प्रश्न

1. अन्य विषयों से इतिहास के संबंधों पर चर्चा कीजिए.

इकाई तीन: ऐतिहासिक व्याख्या: अर्थ, प्रकृति, सिद्धान्त, प्रकार एवं विशेषताएं

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 कारणत्व के परिप्रेक्ष्य में इतिहास की व्याख्या

- **3.3.1 अतीत में हुई घटनाओं का स्पष्टीकरण**
- **3.3.2 इतिहास की व्याख्या करने में इतिहासकार का लक्ष्य**
- **3.3.3 ऐतिहासिक व्याख्याओं में अंतर के कारण**
- **3.3.4 ऐतिहासिक व्याख्याओं के विभिन्न स्वरुप**
- **3.3.5 ऐतिहासिक व्याख्या को प्रभावित करने वाले तत्व**

3.4 युग-चक्रवादी व्याख्या

- **3.4.1 भारतीय युग-चक्रवादी व्याख्या**
- **3.4.2 इतिहास में ईश्वरीय इच्छा की महत्ता**
- **3.4.3 ईसाई इतिहासकारों द्वारा इतिहास की व्याख्या**
- **3.4.4 ऐतिहासिक बलों की दैविक प्रकृति**
- **3.4.5 इब्न खल्दूम, स्पेंगलर तथा टॉयनबी की चक्रवादी व्याख्या**
- **3.4.6 नियतिवाद तथा अवश्यम्भाविता**

3.5 इतिहास की अन्य व्याख्याएँ

- **3.5.1 हेगेल की आदर्शवादी व्याख्या अथवा उसका आदर्शवादी सिद्धांत**
- **3.5.2 कॉम्ते द्वारा इतिहास की व्याख्या**
- **3.5.3 वर्ग-संघर्ष और इतिहास की भौतिकतावादी व्याख्या**
- **3.5.4 इतिहास की मूल्यसंपृक्त व्याख्या**
- **3.5.5 इतिहास की सांयोगिक व्याख्या**
- **3.5.6 इतिहास की यांत्रिक व्याख्या**
- **3.5.7 इतिहास की भौगोलिक व्याख्या**

3.6 इतिहास का अर्थ

- **3.6.1 भारतीय दर्शन के अनुसार इतिहास का अर्थ**
- **3.6.2 पारसी धर्म में इतिहास का अर्थ**
- **3.6.3 'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति**
- **3.6.4 अरब इतिहास दार्शनिक इब्न खल्दूम के अनुसार इतिहास का अर्थ-**
- **3.6.5 आधुनिक पाश्चात्य इतिहासकारों के अनुसार इतिहास का अर्थ**

3.7 इतिहास की प्रकृति

- **3.7.1 इतिहास स्वयं को दोहराता है**
- **3.7.2 इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है**

3.7.3 रेखीय इतिहास

3.8. इतिहास के सिद्धांत

3.8.1 आदर्शवाद

3.8.2 रूमानीवाद

3.8.3 प्रत्यक्षवाद

3.8.4 ऐतिहासिक भौतिकतावाद

3.9 इतिहास के प्रकार

3.10 इतिहास की विशेषता

3.11 सारांश

3.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.13 पारिभाषिक शब्दावली

3.14 संदर्भ ग्रंथ सूची

3.15 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

ऐतिहासिक व्याख्या का अभिप्राय अतीत का काल्पनिक किन्तु सजीव वर्णन है. उपयोगितावादी इतिहासकारों का अभिमत है कि अतीत की व्याख्या वर्तमान तथा भविष्य के लिए उपयोगी होती है.व्याख्या का स्वरुप सम्भावनात्मक होता है. कारण-कार्य सम्बन्ध में वह उद्देश्यपरक तथा मूल्यसंपृक्त भी होता है. राष्ट्रीयता, क्षेत्रीयता, जाति, धर्म, समय आदि कई कारण होते हैं जो कि इतिहासकार की व्याख्या को प्रभावित करते हैं. ऐतिहासिक व्याख्या का एक स्वरुप युग-चक्रवादी का होता है. इसमें व्याख्या का स्वरुप अवश्यम्भाविता की तरह होता है. प्राचीन भारतीय इतिहासकारों, ईसाई इतिहासकारों तथा मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकारों ने 'ईश्वरीय इच्छा', 'दि विल ऑफ़ गॉड' अथवा 'खुदा की मर्ज़ी' को इतिहास में निर्णायक माना है. इस चिंतन में नियतिवाद की स्पष्ट छाप है. इतिहास के चक्रीय सिद्धांत का पोषक अरब इतिहासकार इब्न खल्दून भी है. स्पेंगलर टॉयनबी ने भी चक्रीय सिद्धान्त का अनुकरण किया है. हेगेल इतिहास को विचाराश्रित विकास मानता है और उसके विकास को द्वंद्वात्मक कहता है. कार्ल मार्क्स इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की है. मार्क्स ने इतिहास की सोद्देश्यवादी व्याख्या करते हुए कहा है कि – 'हर वस्तु एक निश्चित अन्त की ओर गतिमान होती है और वह अन्त है एक वर्गहीन मानव-समाज.'इतिहास में व्याख्या के साथ मूल्यों के आधार पर गुण-दोष विवेचन संपृक्त रहता है.

किंचित इतिहासकारों की दृष्टि में संयोग भी ऐतिहासिक घटनाओं में निर्णायक भूमिका निभाते हैं. इटली के इतिहास-दार्शनिक बिलफ्रेंदो पारेतो को इतिहास की यांत्रिक व्याख्या का प्रतिपादक माना जाता है. जब हम संस्कृति और समाज की विविधता को भौतिक परिस्थितियों की विभिन्नता से जोड़ते हैं तो इतिहास की भौगोलिक व्याख्या सामने आती है.संस्कृत भाषा में 'इतिहास' शब्द को -'इति-ह-आस' इन तीन शब्दों का संश्लिष्ट रूप माना गया है. 'इतिहास' का अर्थ है - 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ.' 'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक (यूनानी) भाषा के शब्द – 'हिस्टोरिया' से हुई है

जिसका कि अर्थ 'अन्वेषण' होता है अर्थात् मानवीय अतीत के अन्वेषण द्वारा प्राप्त ज्ञान.'हिस्ट्री' शब्द का पहली बार प्रयोग हेरोडोटस ने किया था. 'हिस्ट्री' से उसका आशय- 'अन्वेषण' था. चूंकि इतिहासकार घटनाओं के दृष्टा तथा प्रायः उनके भागीदार हैं इसलिए वो आम तौर पर घटनाओं का विवरण अपने समय के परिप्रेक्ष्य में करते हैं. बेनेदेत्तो क्रोचे के शब्दों में – 'समस्त इतिहास, समकालीन है.' कार्ल मार्क्स के अनुसार – 'आज तक विद्यमान सभी समाजों का इतिहास, वास्तव में वर्ग-संघर्ष का इतिहास है.' स्वयं को दोहराना इतिहास की प्रकृति मानी जाती है इस अवधारणा . की पुष्टि इतिहास की युग .चक्रवादी व्याख्या से भी होती है-

अनेक इतिहासकार मानते हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है क्योंकि उनकी दृष्टि हर ऐतिहासिक घटना अपने आप में अनूठी होती है.हेगेल का विचार है कि इतिहास द्वंद्वात्मक संघर्ष की एक अटल प्रक्रिया है. इन परस्पर संघर्षरत प्रक्रियाओं में एक दूसरे से विरोधी विचारों का मुक़ाबला होता है. हेगेल के इस विचार में इतिहास की प्रकृति को रेखीय दर्शाया गया है.आदर्शवाद उस दार्शनिक मत को कहते हैं जिसमें कि वास्तविकता मस्तिष्क पर आश्रित होती है . आदर्शवादियों के अनुसार मनुष्यरूमानीवाद .परमात्मा के चरम स्वरुप को जानना है-जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मा-वीं शताब्दी के अंतिम चरण 18 संगीतात्मक तथा बौद्धिक आन्दोलन था जो कि यूरोप में ,साहित्यिक ,एक कलात्मक जीन जेकुअस रूसो .में विकसित हुआ था, कवि कीट्स, शेली तथा वर्ड्सवर्थ, उपन्यासकार वाल्टर स्कॉट तथा जर्मन इतिहासकार हर्डर रूमानीवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं. प्रत्यक्षवाद वह अवधारणा है जिसमें ज्ञान और विचार, निगमन की वैज्ञानिक प्रणाली पर निर्भर करते हैं. फ्रांसीसी दार्शनिक अगस्ते कॉम्ते ने प्रत्यक्षवाद के सिद्धांत का विकास किया . ऐतिहासिक भौतिकतावादी लेखन, इतिहास लेखन की वह शाखा है जो मार्क्सवाद के मुख्य सिद्धान्त -'ऐतिहासिक परिणामों को निर्धारित करने में सामाजिक वर्ग व आर्थिक दबावों की निर्णायक भूमिका' में विश्वास रखती है.

इतिहास के प्रकारों में उल्लेखनीय हैं – सैनिक इतिहास, क्लियोमैट्रिक्स, तुलनात्मक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, कूटनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास, राजनीतिक इतिहास, बौद्धिक इतिहास,सार्वभौमिक इतिहास, भौगोलिक खोजों का इतिहास, मुद्राशास्त्र, पुरा-लिपि शास्त्र, सामाजिक इतिहास, विधिक एवं प्रशासनिक इतिहास, धार्मिक इतिहास, औपनिवेशिक इतिहास, आविष्कारों का तथा तकनीकी विकास का इतिहास, यात्रा-वृतांत, दैनन्दिनी, हिस्ट्री फ्रॉम बिलो (उपाश्रितों से इतिहास), पर्यावरण का इतिहास, समसामयिक इतिहास. इतिहास की यह विशेषता है कि वह वर्तमान तथा भविष्य को समझने में हमारी सहायता करता है. 18 वीं शताब्दी के ब्रिटिश विचारक एडमंड बर्क ने भी इतिहास के अध्ययन को बेहतर वर्तमान और बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक माना है.कार्ल सेगन भी इतिहास को वर्तमान को समझने का साधन मानता है.

3.2 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको ऐतिहासिक व्याख्या के विभिन्न दृष्टिकोणों से आपको परिचित कराना तथा आपको इतिहास का अर्थ समझाना भी है. इस इकाई में इतिहास की प्रकृति, उसके सिद्धांतों तथा उसकी विशेषताओं से भी आपको अवगत कराया जाएगा. इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप अग्रांकित के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे-

1- इतिहास की युग-चक्रवादी, भौतिकतावादी, मूल्य-साम्प्रिक्त्यवादी, संयोगवादी तथा भौगोलिक व्याख्या के विषय में.

2- विभिन्न इतिहास-दार्शनिकों तथा विचारकों द्वारा इतिहास के अर्थ को स्पष्ट करने के विषय में.

3- इतिहास को खुद को दोहराने अथवा खुद को न दोहराने की अपनी प्रकृति के विषय में

4. इतिहास-विषयक विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों के विषय में.

5. इतिहास के विभिन्न प्रकारों अर्थात् उसके अनुशासनों के विषय में.

6. इतिहास की विशेषताओं के विषय में.

3.3 कारणत्व के परिप्रेक्ष्य में इतिहास की व्याख्या

3.3.1 अतीत में हुई घटनाओं का स्पष्टीकरण

ऐतिहासिक व्याख्या का अर्थ, क्या घटित हुआ है और क्यों घटित हुआ है, इन दोनों से होता है. व्याख्या द्वारा घटना अथवा समस्या को स्पष्ट किया जाता है ताकि उसे सरलता से समझा जा सके. प्रत्येक इतिहासकार वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में अतीत में हुई घटना अथवा घटनाओं का, स्पष्टीकरण करता है या उसकी/उनकी व्याख्या करता है. ऐतिहासिक व्याख्या द्वारा इतिहासकार मानवीय व्यव्हार, इच्छा, विचार, योजना तथा नीतियों का विश्लेषण करता है.कॉलिंगवुड के अनुसार प्रत्येक घटना के दो पक्ष होते हैं – वाह्य तथा आतंरिक. घटना के वाह्य-पक्ष का अभिप्राय अतीत में हुए महानायकों के विभिन्न कार्यों से है जब कि घटना के आतंरिक पक्ष का अभिप्राय उस विचार पर चिंतन करना है जो उस घटना के घटित होने का कारण बना. ऐतिहासिक व्याख्या का अभिप्राय अतीत का काल्पनिक किन्तु सजीव वर्णन है. ऐतिहासक स्रोतों के आधार पर इतिहासकार अतीत का एक काल्पनिक चित्र प्रस्तुत करता है.जहाँ साहित्यकार की रचना मात्र कल्पना-प्रधान होती है, वहां इतिहासकार की कल्पना साक्ष्यों पर आधारित होती है. उपयोगितावादी इतिहासकारों का अभिमत है कि अतीत की व्याख्या वर्तमान तथा भविष्य के लिए उपयोगी होती है. एक प्रसिद्द उक्ति है – 'जो इतिहास से सबक नहीं लेते, वे उसे दोहराने के लिए अभिशप्त हैं.'

3.3.2 इतिहास की व्याख्या करने में इतिहासकार का लक्ष्य

सुज़ाना लिप्सकूम्ब कहती है – लोग इतिहासकार से यह अपेक्षा करते हैं कि वह अतीत का प्रामाणिक वृतांत प्रस्तुत करे. फिर भी इतिहासकार एक समान उपलब्ध श्रोतों से अतीत में हुई एक ही घटना की अलग-अलग प्रकार से व्याख्या करते हैं. यूँ तो इतिहास में घटित किसी घटना का वृतांत उपलब्ध साक्ष्यों पर आधारित होता है किन्तु उसकी व्याख्या इतिहासकार के अपने दृष्टिकोण पर निर्भर करती है. इतिहास वाद-विवाद है, विचार-विमर्श है और संवाद है. ह्यूज ट्रेवर रोपर ने कहा है – 'जो इतिहास विवादस्पद नहीं है, वह मृत इतिहास है.'यह निर्विवाद है कि इतिहासकार का लक्ष्य – यथा-संभव सत्य के निकट पहुंचना होता है. किन्तु इतिहासकार की व्याख्या उसके पसंद-नापसंद पर बहुत कुछ निर्भर करती है. पीटर नोविक कहता है – 'इतिहासकार कहानी बुनता है और उसकी कृति में सत्य का पुट प्रायः उतना ही होता है जितना कि किसी कवि की कविता में अथवा किसी चित्रकार के द्वारा बनाए गए चित्र में.'

3.3.3 ऐतिहासिक व्याख्याओं में अंतर के कारण

समान साक्ष्यों तथा तथ्यों पर आधारित इतिहास में इतिहासकार की व्याख्याओं में अंतर के कारण हैं –

1. इतिहासकार का इतिहास-लेखन उसके अपने समय तथा उसकी अपनी अवस्थिति पर बहुत कुछ निर्भर करता है.
2. एक इतिहासकार, दूसरे इतिहासकार से अलग होता है. उसकी मानसिकता, उसका दृष्टिकोण, दूसरे इतिहासकार की मानसिकता तथा उसके दृष्टिकोण से भिन्न होता है.
3. प्रत्येक इतिहासकार के लेखन में उसके अपने व्यक्तित्व की छाप होती है अतः उसकी व्याख्या, अन्य इतिहासकारों की व्याख्या से अलग होती है.
4. एक ही घटना के विषय में उपलब्ध नए तथ्यों तथा नए साक्ष्यों के कारण भी समय बदलने के साथ-साथ इतिहासकार की व्याख्या में भी बदलाव आ जाता है.
5. ऐतिहासक तथ्यों की कोई भी व्याख्या निर्विवाद तथा पूर्णतया सत्य पर आधारित नहीं हो सकती. 'दि नेचर ऑफ़ हिस्ट्री' में आर्थर मार्विक कहता है – 'इतिहास का रूप तथा उसकी विषय-वस्तु, विभिन्न पीढ़ियों को उपलब्ध इतिहास-प्रणाली तथा सामग्री के अनुरूप बदलते रहते हैं.'

जी. आर. एल्टन 'दि प्रैक्टिस ऑफ़ हिस्ट्री' में कहता है – 'इतिहासकार का इतिहास ही उसकी व्याख्या है.'
ई. एच कार के अनुसार – 'इतिहास का अर्थ ही उसकी व्याख्या है.'कॉलिंगवुड के अनुसार –
'ऐतिहासिक व्याख्या क्रियाओं में अन्तर्निहित विचार की व्याख्या है.'स्पेंगलर ने ऐतिहासिक व्याख्या में भविष्य का संकेत किया है.

3.3.4 ऐतिहासिक व्याख्याओं के विभिन्न स्वरुप

व्याख्या का स्वरुप सम्भावनात्मक होता है. कारण-कार्य सम्बन्ध में वह उद्देश्यपरक तथा मूल्यसंपृक्त भी होता है.
ई. एच कार के अनुसार –'इतिहास में व्याख्या के साथ मूल्यों के आधार पर गुण-दोष विवेचन संपृक्त रहता है.'डब्लू, एच. वाल्श 'एन इंट्रोडक्शन टू दि फ़िलोसोफ़ी ऑफ़ हिस्ट्री' में व्याख्या की मूल्य-संपृक्त अवधारणा को स्वीकार किया है किन्तु जब वह कारणों की व्याख्या में धार्मिक, नैतिक तथा आर्थिक कारणों के महत्त्व पर ध्यान देता है तो मूल्यों से अधिक महत्त्व, साक्ष्यों को देता है –'व्याख्या साक्ष्य-प्रधान होनी चाहिए, न कि मूल्य-संपृक्त.' अतीत की व्याख्या विकासात्मक भी होती है. कार्ल मार्क्स ने इतिहास की आर्थिक व्याख्या करते हुए इतिहास-गति की विकासात्मक प्रक्रिया को दर्शाया था जो कि भविष्य की ओर संकेत करता था.

3.3.5 ऐतिहासिक व्याख्या को प्रभावित करने वाले तत्व

राष्ट्रीयता, क्षेत्रीयता, जाति, धर्म आदि कई कारण होते हैं जो कि इतिहासकार की व्याख्या को प्रभावित करते हैं. गिबन ने रोमन साम्राज्य के पतन के कारणों की व्याख्या में धार्मिक तथा नैतिक कारणों को विशेष महत्त्व दिया है जब कि कार्ल मार्क्स अपनी व्याख्या में आर्थिक कारणों को महत्त्व देता है. क्रोचे का कथन – 'समस्त इतिहास समसामयिक है.' इस ओर संकेत करता है कि ऐतिहासिक व्याख्या, काल तथा समय से अत्यधिक प्रभावित होती है और हम अतीत की व्याख्या वर्तमान दृष्टिकोण से ही करते हैं.

3.4 युग-चक्रवादी व्याख्या

3.4.1 भारतीय युग-चक्रवादी व्याख्या

चक्रीय अथवा चक्रवादी का अर्थ है – चक्रवत घूमते हुए, जहाँ से चले थे, वहीं पहुंचना. ऐतिहासिक व्याख्या का एक स्वरुप युग-चक्रवादी का होता है. इसमें व्याख्या का स्वरुप अवश्यम्भाविता की तरह होता है तथा यह नियतिवादी विश्वासों से प्रभावित होता है. इसे लौट फिर कर वही-वही होने के रूप में भी समझा जा सकता है. भारतीय अवधारणा के अनुसार इतिहास एक निरंतर चलायमान युग-चक्र है. मानव-जीवन, उसका सुख-दुःख, उसका उत्थान-पतन आदि सब इसी चक्र द्वारा नियंत्रित होते हैं. 'सतयुग', 'द्वापर', 'त्रेता' और 'कलयुग', ये चार युग हैं. इतिहास चक्रीय है – चूंकि हम बार-बार जन्म लेते हैं अतः हमको यह बार-बार अवसर मिलता है कि हम स्वयं का ब्रह्मांडीय चेतना से एकाकार कर सकें. इस युग-चक्र में कभी उत्थान होता है तो कभी पतन होता है. इतिहास का चक्र घूमता रहता है किन्तु इतिहास में अंतिम कुछ नहीं होता. समय के चक्र और धर्म के क्षेत्र में होने वाले निरंतर विकास के साथ इतिहास का स्वरुप भी बदलता रहता है. इस युग-चक्र में सत् और असत् बार-बार आते हैं. भगवद गीता में श्री कृष्ण जब अर्जुन को संबोधित करते हुए कहते हैं – यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,अभुत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्,धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे.इस संबोधन में युग-चक्रवादी अवधारणा की पुष्टि होती है. स्वयं भगवान को भी धर्म की हानि होने पर पुनः धर्म की संस्थापना के लिए तथा सज्जनों के उद्धार के लिए और दुष्टों के विनाश के लिए बार-बार अवतार लेना पड़ता है. यह कारण-कार्य के सिद्धांत की भी पुष्टि है.

3.4.2 इतिहास में ईश्वरीय इच्छा की महत्ता

प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास लेखन में ऐतिहासिक घटनाओं को उनके अन्तिम परिणाम पहुँचाने में ईश्वरीय इच्छा को अत्यधिक महत्व दिया गया है. प्राचीन भारतीय इतिहासकारों, ईसाई इतिहासकारों तथा मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकारों ने 'ईश्वरीय इच्छा', 'दि विल ऑफ़ गॉड' अथवा 'खुदा की मर्ज़ी' को इतिहास में निर्णायक माना है.

3.4.3 ईसाई इतिहासकारों द्वारा इतिहास की व्याख्या

ईसाई इतिहास लेखन की परम्परा में घटनाएं उस रूप में नहीं देखी गईं, जिस रूप में वो घटित हुईं बल्कि उन घटनाओं को एक दैवीय आवरण पहना कर उन्हें ईश्वरीय इच्छा के रूप में प्रस्तुत किया गया. ईसाई धर्मावलम्बी इतिहास चिन्तकों की दृष्टि में ब्रह्माण्ड में होने वाली हर घटना के पीछे ईश्वर की इच्छा होती है. ईसाई इतिहास की परम्परा में इतिहास को एक नाटक माना गया है. ईसाई धर्मावलम्बी इतिहास चिन्तक इतिहास की चक्रीय प्रकृति में विश्वास नहीं रखते हैं. उनका यह विश्वास है कि संसार में घटित सभी घटनाओं की दिशा ईश्वर द्वारा ही निर्धारित की जाती है. ईश्वर को सभी घटनाओं की परिणति का पहले से ज्ञान होता है. ईश्वर ऐतिहासिक शक्तियों का दिशा-निर्देशन करता है.

3.4.4 ऐतिहासिक बलों की दैविक प्रकृति

मध्ययुगीन ईसाई इतिहास लेखन की परम्परा के प्रमुख प्रतिनिधि संत अगस्ताइन हैं जिन्होंने कि ऐतिहासिक लेखन में दैवीय घटनाओं को प्रमुखता दी है. 'सिटी ऑफ़ गॉड' उनकी प्रमुख रचना है.

3.4.5 इब्न खल्दूम, स्पेंगलर तथा टॉयनबी की चक्रवादी व्याख्या

इतिहास के चक्रीय सिद्धांत का पोषक अरब इतिहासकार इब्न खल्दून का विचार है कि जब कोई समाज एक महान सभ्यता के रूप में विकसित हो जाता है तो अपने चरमोत्कर्ष के बाद उसके पतन का काल प्रारंभ हो जाता है. इसका अर्थ यह हुआ कि एक विकसित सभ्यता को पराजित करने वाला समाज, पराजित समाज की तुलना में असभ्य होता है. फिर विजयी समाज भी असभ्य से सभ्य होने के मार्ग पर अग्रसर होता है और अंततः विकास के चरमोत्कर्ष के बाद उसका भी पतन हो जाता है. इब्न खलदून ने इतिहास को मानव-समाज, विश्व-संस्कृति, सामाजिक परिवर्तन, संघर्ष, क्रान्ति तथा विद्रोह के फलस्वरूप राज्यों के उत्थान एवं पतन का विवरण बताता है. स्पेंगलर ने 'डिक्लाइन ऑफ़ दि वैस्ट' में एक नए सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है. वह सिद्धान्त है – 'प्रत्येक मानव-सभ्यता की एक सीमित जीवन-अवधि होती है और अन्ततः प्रत्येक सभ्यता का पतन होता है.'स्पेंगलर इतिहास को शाश्वत मानता है जिसमें विभिन्न संस्कृतियों का उत्थान और पतन होता रहता है. प्रत्येक संस्कृति एक जैव इकाई के समान है जिसके कि विभिन्न जीवन-चक्र होते हैं. प्रत्येक संस्कृति का अपना बचपन, जवानी और बुढ़ापा होता है और एक समय ऐसा भी आता है जब कि उस संस्कृति की मृत्यु हो जाती है, अर्थात् वह पूरी तरह नष्ट हो जाती है.

टॉयनबी ने 'ए स्टडी ऑफ़ हिस्ट्री' में स्पेंगलर के ग्रंथ 'दि डिक्लाइन ऑफ़ दि वैस्ट' में प्रतिपादित चक्रीय सिद्धान्त का अनुकरण किया है किन्तु उसे उसका प्राचीन यान्त्रिक नियतिवाद का आदर्श स्वीकार्य नहीं है. टॉयनबी यह मानता है कि ऐतिहासिक अध्ययन की सुबोधगम्य इकाइयां राष्ट्र अथवा काल नहीं बल्कि समाज अथवा सभ्यताएं हैं. टॉयनबी ने चुनौती और प्रतिक्रिया की परिकल्पना द्वारा विभिन्न सभ्यताओं के जन्म, विकास, विघटन और पतन के चक्र को समझने का प्रयास किया है. टॉयनबी का यह मानना है कि किसी सभ्यता का विकास तब होता है जबकि उसके समक्ष आई हुई चुनौती का उसके द्वारा दिया गया जवाब न केवल सफल हो अपितु आगे अधिक कठिन चुनौती का मुकाबला करने के लिए उसके नागरिक तत्पर हों.

3.4.6 नियतिवाद तथा अवश्यम्भाविता

वह दार्शनिक अवधारणा जिसके अनुसार प्रत्येक घटना, कार्य तथा निर्णय (मनुष्य से सम्बद्ध घटना, कार्य, निर्णय सहित), पूर्ववर्ती परिस्थितियों का अवश्यम्भावी परिणाम होता है.इसे अवश्यम्भावितावाद भी कहते हैं. अब चूंकि मानव-क्रिया सहित सभी घटनाएँ पूर्व में हुई घटनाओं द्वारा ही निर्धारित होती हैं इसलिए 'कुछ भी करने की स्वतंत्रता' एक भ्रम मात्र है.एडम स्मिथ, हेगेल, कार्ल मार्क्स, टॉलस्टॉय, बटरफील्ड आदि ने घटना की कारणता की अवश्यम्भाविता को स्वीकार किया है. कारणों की व्याख्या में अवश्यम्भावी तत्व निर्णायक भूमिका निभाते हैं.

3.5 इतिहास की अन्य व्याख्याएँ

3.5.1 हेगेल की आदर्शवादी व्याख्या अथवा उसका आदर्शवादी सिद्धांत

हेगेल इतिहास को विचाराश्रित विकास मानता है और उसके विकास को द्वंद्वात्मक कहता है. हेगेल की मान्यता है कि विश्व इतिहास की मूल प्रवृत्ति –'मानव-स्वतंत्रता का विकास है.'हेगेल ने अपने ऐतिहासिक प्रक्रिया सिद्धांत में यह विचार प्रस्तुत किया है कि संसार और उसके नियम स्थिर नहीं, अपितु प्रगतिशील हैं और यह प्रगति किंचित निश्चित सिद्धांतों पर आधृत होती है. हेगेल का विचार है कि इतिहास द्वंद्वात्मक संघर्ष की एक निरंतर होने वाली प्रक्रिया है. इसमें प्रत्येक धारणा को एक विपरीत विचार वाली प्रति-धारणा का सामना करना पड़ता है. इन दोनों के मध्य होने वाला संघर्ष अंततः संश्लेषण तक पहुँचता है. हेगेल इस वैश्विक-इतिहास को सम्पूर्ण मानवता का इतिहास अर्थात

मानव की बर्बर स्थिति से लेकर उसके सभ्य होने की विकास-यात्रा का वृतांत मानता है.हेगेल का विचार है बुद्धि ही विश्व का शासन करती है इसलिए वैश्विक-इतिहास एक बुद्धि-संगत प्रक्रिया है.हेगेल का विचार है कि इतिहास द्वंद्वात्मक संघर्ष की एक अटल प्रक्रिया है. इन परस्पर संघर्षरत प्रक्रियाओं में एक दूसरे से विरोधी विचारों का मुक़ाबला होता है. हेगेल इन्हें 'धारणा' तथा 'प्रति-धारणा' कहता है. इन दोनों का संघर्ष अंततः संश्लेषण में परिणत होता है जिसमें कि धारणा तथा प्रति-धारणा का संयोजन होता है.

3.5.2 कॉम्ते द्वारा इतिहास की व्याख्या

प्रत्यक्षवाद की अवधारणा के के प्रवर्तक कॉम्ते का विश्वास है कि जितनी शीघ्रता से धार्मिक तथा अभि-भौतिक विश्वासों का अंत होगा, उतनी ही शीघ्रता से मनुष्य वैज्ञानिक –चिंतन को अपना लेगा. इसी आधार पर कॉम्ते ने इतिहास की व्याख्या कर के प्रत्यक्षवाद का सिद्धांत प्रतिपादित किया है. कॉम्ते ने इसी बात पर बल दिया है कि इन्द्रिय-ज्ञान से परे कुछ भी वास्तविक नहीं है. किसी व्यक्ति, किसी वस्तु अथवा किसी घटना से सम्बद्ध एक व्यक्ति के आनुभविक ज्ञान को दूसरे-तीसरे व्यक्ति के आनुभविक ज्ञान से मिलकर उसकी पुष्टि की जाती है, उसका सत्यापन किया जाता है, उसे तर्क की कसौटी पर परखा जाता है फिर उसके बाद ही उस विषय का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है.

3.5.3 वर्ग-संघर्ष और इतिहास की भौतिकतावादी व्याख्या

इतिहास की आदर्शवादी व्याख्या के अंतर्गत ऐतिहासिक घटनाओं को मानव-मस्तिष्क की उपज माना जाता है किन्तु कार्ल मार्क्स ऐतिहासिक घटनाओं की इस व्याख्या को पूर्णतः नकारता है. उसकी दृष्टि में विचार तो मानव-मस्तिष्क में भौतिक संसार का प्रतिबिम्ब मात्र होते हैं. कार्ल मार्क्स ने ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर उसने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि पूंजीवादी समाज का विनाश तथा निकट भविष्य में समाजवादी क्रान्ति की सफलता अवश्यम्भावी है. वह इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट करता है कि ऐतिहासिक प्रक्रिया में प्राचीन समाज का आधार 'दासता', सामन्तवादी समाज का आधार 'भूमि' तथा मध्यवर्गीय समाज का आधार 'पूंजी' है. संक्षेप में हम कह सकते हैं कि मार्क्स ने हमको बताया है कि – 'समाज का इतिहास आर्थिक कारकों से निर्धारित होता है और यह कि - इतिहास वर्ग-संघर्ष का अभिलेख है. इस प्रकार कार्ल मार्क्स की समाजशास्त्रीय प्रणाली के दो आधार स्तम्भ हैं - इतिहास का भौतिकवादी विचार और वर्ग-संघर्ष.

मार्क्सवादी इतिहास लेखन ने श्रमिक वर्ग को हर स्थान पर केन्द्र-बिन्दु बनाने की प्रवृत्ति, दमित राष्ट्रीयताओं की महत्ता और आम आदमी के इतिहास (हिस्ट्री फ्रॉम बिलो) के अध्ययन के प्रणालीतन्त्र के सिद्धान्तों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. कार्ल मार्क्स के पूर्ववर्ती इतिहासकारों ने शासकों एवं राष्ट्रों के उत्थान एवं पतन की चक्रीय घटनाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया था. मार्क्स ने इतिहास की सोद्देश्यवादी व्याख्या करते हुए कहा है कि – 'हर वस्तु एक निश्चित अन्त की ओर गतिमान होती है और वह अन्त है एक वर्गहीन मानव-समाज.'

3.5.4 इतिहास की मूल्यसंपृक्त व्याख्या

इतिहास में व्याख्या के साथ मूल्यों के आधार पर गुण-दोष विवेचन संपृक्त रहता है. 'एन इंट्रोडक्शन टू दि filmफ़िलोसोफ़ी ऑफ़ हिस्ट्री' में डब्लू. एच. वाल्श कहता है कि कारणों की व्याख्या मूल्य-संपृक्त होती है और समसामयिक मूल्यों के आधार पर इतिहास की व्याख्या की जाती है.

3.5.5 इतिहास की सांयोगिक व्याख्या

किंचित इतिहासकारों की दृष्टि में संयोग भी ऐतिहासिक घटनाओं में निर्णायक भूमिका निभाते हैं भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं. सिकंदर और पुरु के युद्ध में पुरु के हाथियों का अचानक बिगड़ना पुरु की पराजय का कारण बताया जाता है. पानीपत के द्वितीय युद्ध में युद्ध में लगभग जीतते समय हेमो विक्रमादित्य की आँख में अचानक तीर लगने से जीती हुई बाज़ी हार में पलट गयी. किन्तु इतिहास की सांयोगिक व्याख्या का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता.

3.5.6 इतिहास की यांत्रिक व्याख्या

इटली के इतिहास-दार्शनिक बिलफ्रेंदो पारेतो को इतिहास की यांत्रिक व्याख्या का प्रतिपादक माना जाता है. इस दृष्टिकोण के अनुसार संसार एक यंत्र के समान है जिसकी कि गति वृत्तात्मक है.

3.5.7 इतिहास की भौगोलिक व्याख्या

जब हम संस्कृति और समाज की विविधता को भौतिक परिस्थितियों की विभिन्नता से जोड़ते हैं तो इतिहास की भौगोलिक व्याख्या सामने आती है. इस प्रकार की व्याख्या में ऐतिहासिक घटना के कारणों में भौगोलिक परिस्थितियों को विशेष महत्त्व दिया जाता है. इस अवधारणा के प्रतिपादकों में लूप्ले, देमूर्ते, और हटिंगडन के नाम आते हैं.

3.6 इतिहास का अर्थ

3.6.1 भारतीय दर्शन के अनुसार इतिहास का अर्थ

संस्कृत भाषा में 'इतिहास' शब्द को -'इति-ह-आस' इन तीन शब्दों का संश्लिष्ट रूप माना गया है. 'इतिहास' का अर्थ है - 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ.' भारतीय इतिहास-चिंतन की दृष्टि से - अतीत के जिन वृतांतों को हम निश्चयात्मक रूप से प्रमाणित कर सकें, उसे हम इतिहास के श्रेणी में रखते हैं. अपने ग्रन्थ – में आचार्य दुर्ग कहता है 'निरुक्ति भाष्य वृत्ति' – यह' अर्थात् 'इति हैवमासीदिति यत् कथ्यते तत् इतिहासः' निश्चित रूप से ऐसा हुआ थावह ,यह जो कहा जाता है ' .इतिहास है

3.6.2 पारसी धर्म में इतिहास का अर्थ

पारसी धर्म के प्रवर्तक ज़रथुस्त्र के अनुसार –'इतिहास - सत् और असत् के मध्य संघर्ष की तथा अंततः सत् की विजय की गाथा है.'

3.6.3 'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति

'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक (यूनानी) भाषा के शब्द – 'हिस्टोरिया' से हुई है जिसका कि अर्थ 'अन्वेषण' होता है अर्थात् मवीय अतीत के अन्वेषण द्वारा प्राप्त ज्ञान.

यूनानी मिथकशास्त्र में इतिहास तथा खगोलशास्त्र का विकास म्यूसेस की दैविक प्रेरणा के कारण माना जाता है और इस तरह इतिहास, कला से सम्बंधित प्रतीत होता है. इतिहास में हम वास्तविकता का विश्लेषण करने के स्थान पर हम अपने ढंग से उसकी व्याख्या करने पर बल देते हैं. सामान्यतः वैज्ञानिक ज्ञान, वस्तुगत वास्तविकता पर मानव-क्रिया का एक भाग है. इतिहास में सबसे अधिक महत्त्व लिखित वृतांत को दिया जाता है. यूनानियों से रोमवासियों को 'हिस्ट्री' का अर्थ ज्ञात हुआ और तदन्तर इसका प्रसार विश्व की अन्य भाषाओँ में हुआ. हैलीकर्नेसस के डायोनिसियस के अनुसार –'उदाहरणों से जो दर्शन प्राप्त होता है वह इतिहास है.''हिस्तोरे' का अर्थ – पदार्थों का, दिक्काल द्वारा निर्धारित ज्ञान होता है. इसमें स्मरण द्वारा उपलब्ध ज्ञान की महत्ता है (जब कि विज्ञान में बुद्धि, विवेक द्वारा उपलब्ध ज्ञान को तथा काव्य में स्वैर कल्पना (स्वप्न-चित्र) द्वारा प्राप्त ज्ञान को महत्ता दी जाती है). ग्रीक (यूनानी) भाषा में 'हिस्तोरे' उस विशेषज्ञ को कहते थे जो कि वाद-विवाद में निर्णायक की भूमिका निभाता था. 'हिस्ट्री' शब्द का पहली बार प्रयोग हेरोडोटस ने किया था. 'हिस्ट्री' से उसका आशय- 'अन्वेषण' था.'हिस्ट्री' - यह ज्ञान के अन्वेषण की वह शाखा है जिसमें कि विवरणों, घटनाओं के क्रमिक वृतांतों का परीक्षण तथा विश्लेषण किया जाता है.

थ्यूसीडाइट्स तथा पोलीबियस के अनुसार –इतिहास, राजनीतिज्ञों को शिक्षित करने वाला शास्त्र है.'अंग्रेज़ी भाषा में 'हिस्ट्री' शब्द का प्रवेश 1390 में हुआ इसका अर्थ – 'घटनाओं की गाथा' बताया गया. 15 वीं शताब्दी से इसे अतीत में हुई घटनाओं का लिखित वृतांत कहा जाने लगा और 1531 से इतिहास-विषयक शोध-कर्ता को इतिहासकार कहा जाने लगा.

3.6.4 अरब इतिहास-दार्शनिक इब्न खल्दूम के अनुसार इतिहास का अर्थ

प्रसिद्द अरब इतिहास-दार्शनिक इब्न खल्दूम के अनुसार -'इतिहास - मानव-समाज, विश्व-संस्कृति, सामाजिक परिवर्तन, युद्ध, क्रान्ति तथा राजनीतिक विप्लव के फलस्वरुप राष्ट्रों के उत्थान-पतन का वृतांत है.'

3.6.5 आधुनिक पाश्चात्य इतिहासकारों के अनुसार इतिहास का अर्थ

चूंकि इतिहासकार घटनाओं के दृष्टा तथा प्रायः उनके भागीदार हैं इसलिए वो आम तौर पर घटनाओं का विवरण अपने समय के परिप्रेक्ष्य में करते हैं और कभी-कभी इस आशय से वर्णन करते हैं कि अपने स्वयं के भविष्य के लिए हम उन घटनाओं से क्या और कैसे सीख़ ले सकते हैं. बेनेदेत्तो क्रोचे के शब्दों में –'समस्त इतिहास, समकालीन है.'

अरस्तू के अनुसार – 'इतिहास अपरिवर्तनशील भूतकाल का वृतांत है.' फ्रांसिस बेकन के अनुसार – 'इतिहास वह अनुशासन (विषय) है जो मनुष्य को बुद्धिमान बनाता है.' आर डब्लू एमर्सन के अनुसार – 'सही कहा जाए तो इतिहास जीवनियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है.'थॉमस कार्लाइल के अनुसार: 'मेरी दृष्टि में –'सार्वभौमिक इतिहास, मनुष्य की उपलब्धियों का वृतांत है. इतिहास, मुख्यतः महान व्यक्तियों के कार्यों की गाथा तथा समाज का गठन करने वाले व्यक्तियों के सामाजिक जीवन का कुल जोड़ है. इतिहास असंख्य व्यक्तियों की जीवनियों का सार है.'लेकी के अनुसार – 'इतिहास नैतिक क्रान्ति का लेखा-जोखा तथा उसकी व्याख्या है.'लेबनीज़ के अनुसार – 'इतिहास, धर्म का

वास्तविक निरूपण है.'वोल्तेयर के अनुसार –'अपराध तथा दुर्भाग्य को चित्रित करना इतिहास है.'गिबन के भी वोल्तेयर के इतिहास विषयक विचार को दोहराते हुए कहता है- 'वास्तव में इतिहास - अपराध तथा दुर्भाग्य के लेखे-जोखे से कुछ ही अधिक है.' सर जॉन सीले के अनुसार – 'इतिहास, प्राचीन राजनीति है.'कार्ल मार्क्स के अनुसार – 'आज तक विद्यमान सभी समाजों का इतिहास, वास्तव में वर्ग-संघर्ष का इतिहास है.' लार्ड ऐक्टन के अनुसार – 'मानव-स्वातंत्र्य की कहानी को बतलाना ही इतिहास है.'अमेरिकी इतिहासकार एलेन नेविन के अनुसार – 'इतिहास वह पुल है जो कि अतीत को वर्तमान से जोड़ता है और हमको भविष्य को जाने वाला मार्ग दर्शाता है.' 'व्हाट इज़ हिस्ट्री' में ई. एच. कार कहता है –'इतिहासकार तथा तथ्यों के मध्य निरंतर पारस्परिक क्रिया का प्रक्रम, इतिहास है. इसमें वर्तमान तथा अतीत के मध्य शाश्वत संवाद होता है.' अलग अर्थों में प्रयोग -शब्द का हम दो अलग 'इतिहास' – कर सकते हैं

1. वे घटनाएँ तथा वो कार्य जिनको मिलाकर मानव-अतीत बनता है. इस सन्दर्भ में इतिहास – अतीत का वास्तविक वृतांत है.

2. अतीत का वृतांत और उस वृतांत हेतु उपयुक्त अन्वेषण की विधियाँ. इस सन्दर्भ में इतिहास का अर्थ – अतीत में हुई घटनाओं का अध्ययन तथा उनका वर्णन है.

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि इतिहास के केंद्र में मुख्यतः मानव-गतिविधियाँ हैं और इसमें प्रगति एवं विकास हेतु मानव-संघर्ष का अध्ययन किया जाता है. इतिहास में परिवर्तन का अत्यधिक महत्त्व है क्योंकि जीवन में भी नियमतः परिवर्तन होते हैं. इसलिए सच्चा इतिहासकार वह है जो कि अपने दृष्टिकोण में जीवन के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में हो चुके, हो रहे, तथा होने वाले परिवर्तनों को महत्ता प्रदान करे. संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अतीत में घटित घटनाओं का वास्तविक तथा सत्यनिष्ठापूर्ण वृतांत – इतिहास है. ई. एच कार के अनुसार – 'इतिहास – अतीत और वर्तमान के मध्य एक चिरंतन संवाद है और इतिहासकार का मुख्य कार्य, वर्तमान की पहेली को समझने की कुंजी के रूप में अतीत को भलीभांति समझना है.'वीं शताब्दी का प्रसिद्द इटालियन 18 वह प्रकृति को ईश्वर की रचना .भिन्न मानता है-और प्रकृति के ज्ञान को भिन्न इतिहास के ज्ञान को ,दार्शनिक वीको और इतिहास कोमनुष्य की रचना मानता है .

आदर्शवादी विचारक इमैनुअल कांट के अनुसार –'इतिहास एक सार्वजनिक और वैश्विक प्रक्रिया है जिसमें कि प्रगति की योजना सन्निहित है. इसकी मूलभूत प्रवृत्ति – बौद्धिकता का तथा नैतिकता का, विकास है.' आदर्शवादी इतिहास-दार्शनिक हेगेल कहता है –'इतिहास केवल घटनाओं का अन्वेषण तथा संकलन ही ही नहीं है अपितु उनके भीतर छुपी हुई कार्य-कारण की गवेषणा भी है.') 'स्टोरी' को 'हिस्ट्री' में रेनियर 'इट्स पर्पस एंड मेथड ,हिस्ट्री' कहानी-कहता है ('हिस्ट्रीक-विकास ,शब्द 'थाओं के अन्वेषण से सम्बद्ध है और यह .सभ्य समाज में रह रहे मनुष्यों के अनुभवों की कहानी है'.

जी. एम्. ट्रेवेलियन के अनुसार –'इतिहास – अपरिवर्तनीय रूप में एक कहानी है.'हेनरी पेरिने भी इतिहास को एक कथा ही मानता है –'समाज में निवास करने वाले मनुष्यों के कार्यों तथा उनकी उपलब्धियों की गाथा ही इतिहास

है.'स्पेंगलर इतिहास की परिभाषा बताते हुए कहता है –मानव-जीवन अपनी आतंरिक प्रवृत्ति तथा मौलिक प्रेरणा से विकास और निर्माण की जिस प्रक्रिया में गतिमान है, उसी का नाम इतिहास है.'

3.7 इतिहास की प्रकृति

3.7.1 इतिहास स्वयं को दोहराता है

वर्ण्य विषयों के आधार पर यदि हम विचार करें तो इतिहास की प्रकृति आंशिक रूप से एक विज्ञान की है, आंशिक रूप से एक कला के विषय की है और आंशिक रूप से एक दर्शन की भी है.अतीत की घटनाओं का अध्ययन करने पर हम यह अवलोकन करते हैं कि समय-समय पर एक जैसी घटनाएँ होती हैं. एक ही जैसे कारणों से युद्ध होते हैं, उनके कई बार एक जैसे ही परिणाम होते हैं. अतीत में हुई अनेक क्रांतियों की परिस्थितियां भी लगभग एक समान पाई जाती हैं. विभिन्न राज्यों में और विभिन्न कालों में हुए उत्तराधिकार के युद्धों में भी सामी मिलता है. विभिन्न कालों में दुरभि-संधियों, षड्यंत्रों, राज्यों के उत्थान-पतन आदि में भी एक-रूपता देखी जा सकती है. इन सब बातों से इस अवधारणा की पुष्टि होती है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है.

इतिहास स्वयं को दोहराता है, इसकी पुष्टि इतिहास की युग-चक्रवादी व्याख्या से भी होती है.भारतीय अवधारणा के अनुसार इतिहास एक निरंतर चलायमान युग-चक्र है. इस युग-चक्र में कभी उत्थान होता है तो कभी पतन होता है. इतिहास का चक्र घूमता रहता है. इस युग-चक्र में सत् और असत् बार-बार आते हैं. आर. आर मार्टिन कहता है – 'इतिहास एक चक्र है क्योंकि मनुष्य की प्रकृति अपरिवर्तनीय है और यह सुनिश्चित है कि जो पहले हो चुका है, वह दुबारा भी होगा.'

3.7.2 इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है

अनेक इतिहासकार मानते हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है क्योंकिउनकी दृष्टि हर ऐतिहासिक घटना अपने आप में अनूठी होती है और उसकी किसी अन्य घटना से ऊपरी तौर पर भले समानता दिखाई दे किन्तु वास्तव में एक घटना दूसरी घटना के पूरी तरह से समान कभी नहीं हो सकती. ली बेंसन के अनुसार एक इतिहासकार अपने समय से पहले हुए इतिहासकारों के इतिहास-लेखन में व्यक्त विचारों को तो दोहराता है किन्तु इतिहास स्वयं को कभी नहीं दोहराता है –'इतिहास स्वयं को कभी नहीं दोहराता है किन्तु इतिहासकार खुद को दोहराता है.' डेविड इरविंग का यह मानना है कि इतिहास नित्य अपना रूप बदलता है –'इतिहास एक नित्य-परिवर्तनशील वृक्ष के समान है.'

3.7.3 रेखीय इतिहास

हेगेल का विचार है कि इतिहास द्वंद्वात्मक संघर्ष की एक अटल प्रक्रिया है. इन परस्पर संघर्षरत प्रक्रियाओं में एक दूसरे से विरोधी विचारों का मुक़ाबला होता है. हेगेल इन्हें 'धारणा' तथा 'प्रति-धारणा' कहता है. इन दोनों का संघर्ष अंततः संश्लेषण में परिणत होता है जिसमें कि धारणा तथा प्रति-धारणा का संयोजन होता है.

3.8. इतिहास के सिद्धांत

3.8.1 आदर्शवाद

आदर्शवाद उस दार्शनिक मत को कहते हैं जिसमें कि वास्तविकता मस्तिष्क पर आश्रित होती है और मस्तिष्क से स्वतंत्र उसका अस्तित्व नहीं होता. आदर्शवादियों के अनुसार मनुष्य-जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मा-परमात्मा के चरम स्वरुप को जानना है. आदर्शवाद से हमारा प्रथम परिचय भारतीय वैदिक, चीन के नव-कन्फ्यूशियसवादी व बौद्ध

दार्शनिक तथा नव-अफ़लातूनी यूनानी दार्शनिक कराते हैं. 18 वीं शताब्दी में यूरोप में बर्कले और कांट ने तथा और 19 वीं शताब्दी में हेगेलने आदर्शवादी ऐतिहासिक सिद्धांत का विकास किया. शेलिंग ,शौपेनआवर ने आदर्शवादी विचारधारा के विकास में अपना योगदान दिया.

3.8.2 रूमानीवाद

रूमानीवाद एक कलात्मक, साहित्यिक, संगीतात्मक तथा बौद्धिक आन्दोलन था जो कि यूरोप में 18 वीं शताब्दी के अंतिम चरण में विकसित हुआ था. यह प्रबल रूप से दृश्य-कलाओं, संगीत, तथा साहित्य में व्यक्त हुआ था किन्तु इसने इतिहास-लेखन, शिक्षा तथा मानविकी विज्ञान तथा प्राकृतिक विज्ञान की अनेक विधाओं पर अपनी गहरी छाप छोडी थी. रूमानीवाद ने राजनीतिक चिंतन को भी प्रभावित किया था. रूमानीवाद को हम आंशिक रूप से आधुनिकीकरण के तत्वों - औद्योगिक क्रान्ति के अति-यांत्रिकीकरण एवं ज्ञानोदय काल के सामाजिक तथा राजनीतिक मूल्यों तथा प्रकृति की वैज्ञानिक व्याख्याओं से उपजी मानसिक कुंठा की अभिव्यक्ति के रूप में देख सकते हैं. विचारक जीन जेकुअस रूसो, कवि कीट्स, शेली तथा वर्ड्सवर्थ, उपन्यासकार वाल्टर स्कॉट तथा जर्मन इतिहासकार हर्डर रूमानीवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं.

3.8.3 प्रत्यक्षवाद

प्रत्यक्षवाद वह अवधारणा है जिसमें ज्ञान और विचार, निगमन की वैज्ञानिक प्रणाली पर निर्भर करते हैं. प्रत्यक्षवाद के अनुसार – 'मनुष्य का ज्ञान उसके अनुभव तक सीमित है.' फ्रांसीसी दार्शनिक अगस्ते कॉम्ते ने प्रैक्सियोलोजी ') 'अनुशासनमानव .की स्थापना तथा प्रत्यक्षवाद के सिद्धांत का विकास किया (क्रिया का निगमनात्मक अध्ययन- '.अवलोकन है ,विषयक ज्ञान का स्रोत-विश्व' – कॉम्ते यह मानता है किरैंके का यह मानना है कि ऐतिहासिक युगों को पूर्व-निर्धारित आधुनिक मूल्यों एवं आदर्शों की कसौटी पर नहीं परखा जाना चाहिए बल्कि आनुभविक साक्ष्यों पर आधारित इतिहास के परिप्रेक्ष्य में उनका आकलन किया जाना चाहिए.

3.8.4 ऐतिहासिक भौतिकतावाद

मार्क्सवादी अथवा ऐतिहासिक भौतिकतावादी लेखन, इतिहास लेखन की वह शाखा है जो मार्क्सवाद के मुख्य सिद्धान्त -'ऐतिहासिक परिणामों को निर्धारित करने में सामाजिक वर्ग व आर्थिक दबावों की निर्णायक भूमिका' में विश्वास रखती है. मार्क्सवादी इतिहास लेखन ने श्रमिक वर्ग को हर स्थान पर केन्द्र-बिन्दु बनाने की प्रवृत्ति, दमित राष्ट्रीयताओं की महत्ता और आम आदमी के इतिहास (हिस्ट्री फ्रॉम बिलो) के अध्ययन के प्रणालीतन्त्र के सिद्धान्तों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

3.9 इतिहास के प्रकार

इतिहास सामाजिक विज्ञान की श्रेणी में आता है. एक समय में यह दर्शन शास्त्र का एक अंग था और कालांतर में यह राजनीति शास्त्र का अंग बन गया. आज एक स्वतंत्र विषय के रूप में इसकी प्रतिष्ठा है और नित्य ही इसका क्षेत्र-विस्तार होता जा रहा है. आज इतिहास का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है. आज उसमें विश्व का तथा मानव-जाति के विकास

का, समग्र रूप से अध्ययन किया जाता है.इतिहास के प्रकारों में उल्लेखनीय हैं – सैनिक इतिहास, क्लियोमैट्रिक्स, तुलनात्मक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, कूटनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास, राजनीतिक इतिहास, बौद्धिक इतिहास,सार्वभौमिक इतिहास, भौगोलिक खोजों का इतिहास, मुद्राशास्त्र, पुरा-लिपि शास्त्र, सामाजिक इतिहास, विधिक एवं प्रशासनिक इतिहास, धार्मिक इतिहास, औपनिवेशिक इतिहास, आविष्कारों का तथा तकनीकी विकास का इतिहास, यात्रा-वृतांत, दैनन्दिनी, हिस्ट्री फ्रॉम बिलो (उपाश्रितों से इतिहास), पर्यावरण का इतिहास, समसामयिक इतिहास.

3.10 इतिहास की विशेषता

इतिहास की यह विशेषता है कि वह वर्तमान तथा भविष्य को समझने में हमारी सहायता करता है. प्रसिद्द चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस कहता है –'यदि तुम भविष्य को परिभाषित करना चाहते हो (उसे समझना चाहते हो) तो अतीत का अध्ययन करो.' 18 वीं शताब्दी के ब्रिटिश विचारक एडमंड बर्क ने भी इतिहास के अध्ययन को बेहतर वर्तमान और बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक माना है –'वो लोग जो इतिहास नहीं जानते हैं, वो उसे दोहराने के लिए अभिशप्त हैं.'कार्ल सेगन भी इतिहास को वर्तमान को समझने का साधन मानता है –अपना वर्तमान को समझने के लिए तुमको अपने अतीत को जानना होगा.' किन्तु जॉर्ज बर्नार्ड शॉ इतिहास से सबक लेने वाली अवधारणा का उपहास उड़ाता है –'हम अपने अनुभव से यही सीखते हैं कि हम अपने अनुभव से कभी कुछ नहीं सीखते.'

3.11 सारांश

प्रत्येक इतिहासकार वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में अतीत में हुई घटना अथवा घटनाओं की व्याख्या करता है. ऐतिहासिक व्याख्या द्वारा इतिहासकार मानवीय व्यव्हार, इच्छा, विचार, योजना तथा नीतियों का विश्लेषण करता है. यूँ तो इतिहास में घटित किसी घटना का वृतांत उपलब्ध साक्ष्यों पर आधारित होता है किन्तु उसकी व्याख्या इतिहासकार के अपने दृष्टिकोण पर निर्भर करती है व्याख्या का स्वरुप सम्भावनात्मक होता है. कारण-कार्य सम्बन्ध में वह उद्देश्यपरक तथा मूल्यसंपृक्त भी होता है.राष्ट्रीयता, क्षेत्रीयता, जाति, धर्म, समय आदि कई कारण होते हैं जो कि इतिहासकार की व्याख्या को प्रभावित करते हैं. ऐतिहासिक व्याख्या का एक स्वरुप युग-चक्रवादी का होता है. इसमें व्याख्या का स्वरुप अवश्यम्भाविता की तरह होता है प्राचीन भारतीय इतिहासकारों, ईसाई इतिहासकारों तथा मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकारों ने 'ईश्वरीय इच्छा', 'दि विल ऑफ़ गॉड' अथवा 'खुदा की मर्ज़ी' को इतिहास में निर्णायक माना है. इस चिंतन में नियतिवाद की स्पष्ट छाप है. ईसाई इतिहास लेखन की परम्परा में घटनाओं को एक दैवीय आवरण पहना कर उन्हें ईश्वरीय इच्छा के रूप में प्रस्तुत किया गया. इतिहास के चक्रीय सिद्धांत का पोषक अरब इतिहासकार इब्न खल्दून भी है. स्पेंगलर ने तथा टॉयनबी ने भी चक्रीय सिद्धान्त का अनुकरण किया है. हेगेल इतिहास को विचाराश्रित विकास मानता है और उसके विकास को द्वंद्वात्मक कहता है.

कार्ल मार्क्स इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट करता है कि – 'हर वस्तु एक निश्चित अन्त की ओर गतिमान होती है और वह अन्त है एक वर्गहीन मानव-समाज.'इतिहास में व्याख्या के साथ मूल्यों के आधार पर गुण-दोष विवेचन संपृक्त रहता है. किंचित इतिहासकारों की दृष्टि में संयोग भी ऐतिहासिक घटनाओं में निर्णायक भूमिका निभाते हैं. इटली के इतिहास-दार्शनिक बिलफ्रेंदो पारेतो को इतिहास की यांत्रिक व्याख्या का प्रतिपादक माना जाता है.

इस दृष्टिकोण के अनुसार संसार एक यंत्र के समान है जिसकी कि गति वृत्तात्मक है. जब हम संस्कृति और समाज की विविधता को भौतिक परिस्थितियों की विभिन्नता से जोड़ते हैं तो इतिहास की भौगोलिक व्याख्या सामने आती है. इस अवधारणा के प्रतिपादकों में लूप्ले, देमूर्ते, और हटिंगडन के नाम आते हैं.

संस्कृत भाषा में 'इतिहास' शब्द को -'इति-ह-आस' इन तीन शब्दों का संश्लिष्ट रूप माना गया है. 'इतिहास' का अर्थ है - 'निश्चित रूप से ऐसा हुआ.' 'हिस्ट्री' शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक (यूनानी) भाषा के शब्द – 'हिस्टोरिया' से हुई है जिसका कि अर्थ 'अन्वेषण' होता है अर्थात् मानवीय अतीत के अन्वेषण द्वारा प्राप्त ज्ञान.'हिस्ट्री' शब्द का पहली बार प्रयोग हेरोडोटस ने किया था. 'हिस्ट्री' से उसका आशय- 'अन्वेषण' था. चूंकि इतिहासकार घटनाओं के दृष्टा तथा प्रायः उनके भागीदार हैं इसलिए वो आम तौर पर घटनाओं का विवरण अपने समय के परिप्रेक्ष्य में करते हैं. बेनेदेत्तो क्रोचे के शब्दों में – 'समस्त इतिहास, समकालीन है.'
कार्ल मार्क्स के अनुसार –'आज तक विद्यमान सभी समाजों का इतिहास, वास्तव में वर्ग-संघर्ष का इतिहास है.' स्वयं को दोहराना इतिहास की प्रकृति मानी जाती हैचक्रवादी व्याख्या से भ-इस अवधारणा की पुष्टि इतिहास की युग .ी होती है.अनेक इतिहासकार मानते हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता नहीं है क्योंकि उनकी दृष्टि हर ऐतिहासिक घटना अपने आप में अनूठी होती है. आदर्शवाद उस दार्शनिक मत को कहते हैं जिसमें कि वास्तविकता मस्तिष्क पर आश्रित होती है और मस्तिष्क से स्वतंत्र उसका अस्तित्व नहीं होताजीवन का अंतिम उद्देश्य -आदर्शवादियों के अनुसार मनुष्य . .परमात्मा के चरम स्वरुप को जानना है-आत्माभारतीय वैदिक चीन के ,नव-कन्फ्यूशियसवादी व बौद्ध दार्शनिक तथा नवकांट ने ,बर्कले .अफ़लातूनी यूनानी दार्शनिक आदर्शवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं- तथा हेगेल ने भी आदर्शवादी सिद्धांत का विकास किया .

रूमानीवाद एक कलात्मक, साहित्यिक, संगीतात्मक तथा बौद्धिक आन्दोलन था जो कि यूरोप में 18 वीं शताब्दी के अंतिम चरण में विकसित हुआ था. जीन जेकुअस रूसो, कवि कीट्स, शेली तथा वर्ड्सवर्थ, उपन्यासकार वाल्टर स्कॉट तथा जर्मन इतिहासकार हर्डर रूमानीवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं. प्रत्यक्षवाद वह अवधारणा है जिसमें ज्ञान और विचार, निगमन की वैज्ञानिक प्रणाली पर निर्भर करते हैं. फ्रांसीसी दार्शनिक अगस्ते कॉम्ते ने प्रत्यक्षवाद के सिद्धांत का विकास किया.ऐतिहासिक भौतिकतावादी लेखन, इतिहास लेखन की वह शाखा है जो मार्क्सवाद के मुख्य सिद्धान्त -'ऐतिहासिक परिणामों को निर्धारित करने में सामाजिक वर्ग व आर्थिक दबावों की निर्णायक भूमिका' में विश्वास रखती है.इतिहास के प्रकारों में उल्लेखनीय हैं –सैनिक इतिहास, क्लियोमैट्रिक्स, तुलनात्मक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, कूटनीतिक इतिहास, आर्थिक इतिहास, राजनीतिक इतिहास, बौद्धिक इतिहास,सार्वभौमिक इतिहास, भौगोलिक खोजों का इतिहास, मुद्राशास्त्र, पुरा-लिपि शास्त्र, सामाजिक इतिहास, विधिक एवं प्रशासनिक इतिहास, धार्मिक इतिहास, औपनिवेशिक इतिहास, आविष्कारों का तथा तकनीकी विकास का इतिहास, यात्रा-वृतांत, दैनन्दिनी, हिस्ट्री फ्रॉम बिलो (उपाश्रितों से इतिहास), पर्यावरण का इतिहास, समसामयिक इतिहास. इतिहास की यह विशेषता है कि वह वर्तमान तथा भविष्य को समझने में हमारी सहायता करता है. 18 वीं शताब्दी के ब्रिटिश विचारक एडमंड बर्क ने भी इतिहास के अध्ययन को बेहतर वर्तमान और बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक माना है.कार्ल सेगन भी इतिहास को वर्तमान को समझने का साधन मानता है.

अभ्यास प्रश्न

निम्नांकित पर चर्चा कीजिए-

1. भारतीय दर्शन के अनुसार इतिहास का अर्थ.
2. इतिहास स्वयं को दोहराता है.
3. ऐतिहासिक भौतिकतावाद

3.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. देखिए 1.3.6.1 भारतीय दर्शन के अनुसार इतिहास का अर्थ
2. देखिए 1.3.7.1 इतिहास स्वयं को दोहराता है
3. 1.3.8.4 देखिए ऐतिहासिक भौतिकतावाद

3.13 पारिभाषिक शब्दावली

दि नेचर ऑफ़ हिस्ट्री – इतिहास की प्रकृति

मूल्य-संपृक्त – मूल्यों से जुड़ा हुआ

संभावनात्मक – ऐसी बात अतवा घटना जिसकी होने की सम्भावना हो

एन इंट्रोडक्शन टू दि फ़िलोसोफ़ी ऑफ़ हिस्ट्री – इतिहास-दर्शन: एक परिचय

अवश्यम्भाविता – वह घटना (अथवा बात) जिसका होना अथवा घटित होना अनिवार्य हो

प्रैक्टिसयोलोजी – मानव-क्रिया का निगमनात्मक अध्ययन

3.14 संदर्भ ग्रंथ सूची

कालिंगवुड, आर0 जी0 - दि आइडिया ऑफ़ हिस्ट्री, लन्दन, 1978

गूच, जी0 पी0 - दि हिस्ट्री एण्ड दि हिस्टोरियन्स ऑफ़ दि नाइन्टीन्थ सेन्चुरी, लन्दन, 1913

इगर्स, जॉर्ज जी0, जेम्स, एम0 पावेल - लियोपोल्ड रैंके एण्ड दि शेपिंग ऑफ़ दि हिस्टोरिकल डिसिप्लिन, न्यूयार्क, 1990

श्रीधरन, ई0 - ए टैक्स्ट बुक ऑफ़ हिस्टोरियोग्राफ़ी, नई दिल्ली, 2013

कार, ई0 एच0 (अनुवादकः चक्रधर, अशोक) - 'इतिहास क्या है', नई दिल्ली, 1993

थापर, रोमिला (सम्पादक) - 'इतिहास की पुनर्व्याख्या' नई दिल्ली, 1991

बुद्धप्रकाश - 'इतिहास दर्शन' इलाहाबाद, 1962

वर्मा, लालबहादुर - 'इतिहास के बारे में', इलाहाबाद, 2000

शर्मा, रामविलास - 'इतिहास दर्शन', नई दिल्ली, 1995

टोश, जॉन – 'दि पर्सूट ऑफ़ हिस्ट्री: एम्स, मेथड्स एंड न्यू डायरेक्शंस इन दि स्टडी ऑफ़ मॉडर्न हिस्ट्री' हार्लो, 1999

रॉय एम, टोलेफ्सन –'आईडियलिज्म' ('हैण्डबुक ऑफ़ वर्ड हिस्ट्री: कन्सेप्ट्स एंड इश्यूज़, संपादक: ड्यूनर, जोसफ, न्यूयॉर्क, 1967)

लाल, के. बी. – 'पाश्चात्य दर्शन, वाराणसी, 1990,

कॉम्ते, औगस्ते –'पॉज़िटिव फ़िलोसोफ़ी' (अंग्रेजी अनुवाद – मार्तेन्यू, एच., लन्दन, 1961

‘बेसिक पोलिटिकल राइटिंग्स’ (रूसो), अंग्रेजी अनुवाद – डोनाल्ड ए. क्रेस, इंडियानापोलिस, 1987
‘दि सोशल कॉन्ट्रैक्ट’ (रूसो) अंग्रेजी अनुवाद – मॉरिस क्रेस्टन', लन्दन, 2007
रेनियर, जी. जे. – ‘हिस्ट्री: इट्स पर्पज़ एंड मेथड’ न्यूयॉर्क, 1965
चौबे, झारखंडे – ‘इतिहास-दर्शन’, वाराणसी, 2015
सिंह, परमानन्द –‘इतिहास-दर्शन, दिल्ली, 2014

3.15 निबंधात्मक प्रश्न

इतिहास की युग-चक्रवादी व्याख्या का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए.

इकाई चार : इतिहास में पूर्वाग्रह या झुकाव तथा वस्तुपरकता की समस्या

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 वस्तुनिष्ठता या वस्तुपरकता क्या है?
4.4 वस्तुपरकता के सिद्धांत
4.5 एतिहासिक वस्तुपरकता की समस्याएँ
4.5.1 ऐतिहासिक प्रमाण और व्यक्तिगत पूर्वाग्रह
4.5.2 सांस्कृतिक सापेक्षवाद
4.5.3 भाषा की उपयोगिता
4.6 सारांश
4.7 अभ्यास प्रश्न
4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.9 प्रस्तावित अध्ययन सामग्री
4.10 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता को हमेशा से महत्व दिया गया है| इसे इतिहास लेखन की नीवं भी कहा जाता है, क्योकि इसपर इतिहास की ईमारत बनायी जाती है| इतिहासकारों का एक समूह इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता को आवश्यक बताते हैं, उनका ये विश्वास है कि उन्होंने अब तक जो भी लिखा है वह वस्तुनिष्ठता को ध्यान में रख कर किया है| वहीँ अनेक ऐसे भी इतिहासकार हैं जो ये मानते हैं की इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता व्यर्थ है| अर्थात इतिहास लेखन वस्तुनिष्ठ हो ही नहीं सकता| फिर भी इतिहास लेखन को वस्तुनिष्ठता से जोड़ कर देखा जाता है|

यह सही है कि ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करना कठिन कार्य है, परन्तु इतिहासकारों ने इसका भी हल निकलने की कोशिश की है| अर्थात स्त्रोतों का वस्तुनिष्ठ उपयोग किये जाना पर बल दिया है| यह सत्य है कि विज्ञान की भांति इतिहास में वस्तुनिष्ठता की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योकि विज्ञान सामान्य और इतिहास विशेष का अध्ययन करता है| वैज्ञानिक प्रयोगों से हम किसी भी एक नतीजे पर पहुँच सकते हैं, इनमे प्रयोगों से सम्बंधित प्राप्त नतीजों में अनेक मत नहीं होते| परन्तु ऐतिहासिक परिणाम अलग-अलग हो सकते हैं, क्योंकि इतिहास मानवीय क्रियाकलापों उनकी उपलब्धियों से सम्बंधित होता है| अतः इस तरह के निष्कर्ष में एक मत होना संभव नहीं है| विज्ञान में सार्वभौमिकता है, जबकि इतिहास में ऐसा कोई सार्वभौमिक नियम या सिद्धन्त नहीं है| हालांकि कुछ इतिहासकारों का यह मानना है कि वे भी ऐसे किसी सार्वभौमिक नियम को प्राप्त कर लेंगे| फिर भी यह दावा करना बहुत मुश्किल है कि क्या इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता को प्राप्त किया जा सकता है? इतिहासकार वेबर के अनुसार – वस्तुनिष्ठता एक दोष है, क्योंकि इतिहास में इस उद्देश्य को प्राप्त करना कठिन कार्य है| भावहीन निष्पक्षता इतिहास का गुण नहीं, बल्कि एक

दोष है| इस विषय ने एक विवाद का रूप ले लिया है| इतिहासकार ऑकशाट के अनुसार इतिहासकार तथ्य से नहीं बल्कि अपनी व्याख्या से किसी घटना का विवरण प्रस्तुत करता है| और यदि इस कथन को मान लिया जाय तो एतिहासिक वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना कठिन होगा| इतिहास में व्याख्या के बजे तथ्य आवश्यक होते हैं| वाल्श यह भी कहते हैं कि ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता सिद्धांत द्वारा नहीं बल्कि अभ्यास द्वारा ही लागू की जा सकती है| इतिहासकारों के मध्य किसी बात या घटना को लेकर एक मत या उस घटना का निष्पक्ष विवरण तभी संभव है जब वे तथ्यप्रधान वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करना अपना उद्देश्य बना लें| अधिकतर इतिहासकारों ने इसी सोच के साथ इतिहास लेखन किया कि उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा इतिहास की एक वस्तुपरक तस्वीर प्रस्तुत की है| इतिहासकारों में किसी मत को लेकर भिन्नता होते हुए भी उनका मानना है की उनके द्वारा लिखित विवरण अधिक वस्तुनिष्ठ है, जो उनके मध्य बहस का मुद्दा बना रहता है| 1970 के दशक में इतिहासलेखन में वस्तुनिष्ठता को सबसे अधिक मुश्किलों का सामना करना पड़ा| जब अस्तुनिष्ठाता को प्राप्त करने का दावा बहुत मुश्किल हो गया| यहाँ तक की इसके आलोचकों ने तो यहाँ तक कहा कि क्या यह आवश्यक है की इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता हो? यह विवाद इतना अधिक है फिर भी अनेक इतिहासकार अतीत का सही विवरण प्रस्तुत करने में विश्वास रखते हुए अपना कार्य क्र रहे हैं| अतः इस इकाई में इसी विवाद के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की जाएगी|

4.2 उद्देश्य

- इस पाठ को पढने के बाद हम यह समझ सकेंगे कि वस्तुनिष्ठता अथवा वस्तुपरकता क्या है? और इतिहास में इसकी क्या आवश्यकता है|
- इस पाठ के अध्ययन के द्वारा हम इतिहास में वस्तुनिष्ठता से सम्बंधित इतिहासकारों के विभिन्न मतों को समझ पाएंगे| और इनसे सम्बंधित विवाद के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा का सकेंगे|
- हम यह जान सकेंगे की प्राथमिक स्त्रोत क्या हैं, और उनके उपयोग से ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता को कैसे प्राप्त किया जा सकता है|
- हम इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता से सम्बंधित प्रयोगों के विभिन्न चरणों को समझ पाएंगे|
- इसके साथ ही हम एतिहासिक वस्तुनिष्ठता एवं वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता के अंतर को समझने का प्रयास कर सकते हैं|
- हम समझ पाएंगे कि इतिहास लेखन में वस्तुनिष्ठता की उपयोगिता एवं उसकी सीमाओं को समझ सकेंगे|

4.3 वस्तुनिष्ठता क्या है?

वस्तुनिष्ठता का अर्थ है जो प्रमाण व साक्ष्य प्राप्त है, इतिहासकारों द्वारा उनका बिना किसी पूर्वाग्रह के प्रयोग करना| साथ ही यह भी माना जाता है कि— वस्तुनिष्ठता का अर्थ यह नहीं है की इतिहासकार किसी घटना से सम्बंधित अपने विचार को ही त्याग दे| और इतिहासकार द्वारा ऐसा करना संभव भी नहीं है ओर न ही सही है, बल्कि वस्तुनिष्ठता का यह अर्थ है की इतिहासकार अन्य इतिहासकारों के विचारों का आदर करें| यदि दूसरे इतिहासकारों के विचार वैज्ञानिक पद्यति पर आधारित है तो उसका आदर करना चाहिए|

एक अर्थ यह भी है कि इतिहासकार को साक्ष्यों का सामना करने की शक्ति होनी चाहिये, किसी घटना या व्यक्ति के इतिहास के प्रत्येक पहलू को पूर्वाग्रह से ग्रसित हुए बिना लिखना चाहिए| अर्थात सभी तथ्यों का सामना करने का साहस होना चाहिए| यह भी माना जाता है कि इतिहासकार कितना भी इमानदार क्यों न हो, वैज्ञानिक पद्यति का

उपयोग भी करता हो, फिर भी जो कुछ भी वह लिखता है, वह उसकी शिक्षा, वातावरण तथा सामाजिक मूल्यों का प्रतिबिम्ब होता है| इस कारण यह भी कहा जाता है की इतिहासकार अपने वातावरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता| आर्थर मार्विक कहते हैं कि— इतिहासकार अपने युग व समाज का बंदी होता है| मानवीय रूप से यह संभव नहीं है इसलिए इतिहास में पूर्ण वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना असंभव है| या यह कहें की अत्यंत कठिन है| मार्विक की तरह ई० एच० कार भी मानते है कि इतिहासकार के तथ्य प्रमाण अथवा साक्ष्य पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ नहीं होते क्योंकि यह साक्ष्य लिखने वाले व्यक्ति के मस्तिष्क से छन कर इतिहासकार के सामने आती है| अतः इतिहासकार के साक्ष्य भी कभी-कभी वस्तुपरक नहीं होते| इतिहासकार जब किसी साक्ष्य को महत्व देता है तभी उसका उपयोग करता है, और जब इतिहासकार के साक्ष्य ही पूर्ण रूप से वस्तुपरक नहीं होंगे तो उसकी लेखनी में भी वस्तुनिष्ठता का आभाव होगा| परन्तु यह बात भी उचित है की इतिहास की वस्तुनिष्ठता साक्ष्यों की वस्तुनिष्ठता नहीं होती है बल्कि ये प्रमाण और उसकी व्याख्या का सम्बन्ध वस्तुनिष्ठ हो सकता है|

इतिहासकारों की परिकल्पना उतनी ही वस्तुनिष्ठ होती है जितनी की वैज्ञानिकों की परिकल्पना| परन्तु इतिहासकारों के तथ्यों के लिए ऐसा नहीं कहा जा सकता| इसलिए कि इतिहासकार इस बात के लिए इतने सक्षम नहीं होते कि वे अपने प्रमाणों को प्रयोगों के आधार पर उनकी जांच कर सकें| इतिहासकारों की परिकल्पना वैज्ञानिकों के सामान होती है| क्रिस्टोफर ब्लेक के अनुसार— इतिहासकार केवल कागज़ पर वास्तविकता को उतार सकता है| इसके अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई साधन नहीं है, इस कारण भी इतिहास में वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करना कठिन है|

इतिहासलेखन में यह महत्वपूर्ण होता है की प्रत्येक नस्ल व युग अपने अतीत को कितना अधिक महत्व देते हैं| क्योंकि हर नस्ल, समाज, और युग इतिहास को या अतीत को अपने दृष्टिकोण से देखता है| और प्रत्येक युग व काल का दृष्टिकोण उसके वर्तमान से प्रभावित होता है| यह भी कहा जाता है की वर्तमान हमेशा अतीत की व्याख्या करता है| यदि हम मान लें कि वर्तमान अतीत की व्याख्या अपने दृष्टिकोण से करता है| तो उसकी व्याख्या दुसरे युग की व्याख्या से भिन्न होगी| इसी प्रकार से एक नस्ल के लिए जो वस्तुनिष्ठ है दुसरे युग व नस्ल के लिए वस्तुनिष्ठ नहीं होगी| इतिहासकार घटनाओं का विवरण देते समय वस्तुनिष्ठ साक्ष्यों का उपयोग करे फिर भी वह पूर्ण वस्तुनिष्ठता को प्राप्त नहीं कर सकता| यहाँ तक की इतिहासकार द्वारा इतिहास लेखन में जिन शब्दों का चुनाव किया जाता है वह उसकी मानसिकता को प्रदर्शित करती है| उदहारण के रूप में यदि कोई इतिहासकार तुर्कों एवं राजपूतों के मध्य हुए युद्धों का वर्णन कर रहा है ओर राजपूतों की वीरता का बखान करने में अच्छे शब्दों का चुनाव करता है तथा दूसरी ओर तुर्क योद्धाओं के लिए दूसरे शब्दों का चुनाव करता है, अतः ये शब्द उसकी मानसिकता को प्रदर्शित करता है| ई०एच० कार कहते हैं की— इतिहास की पुस्तक को पढ़ते हुए पाठक को उसमे वर्णित घटनाओं को उतना महत्व नहीं देना चाहिए बल्कि लेखक की लेखनी के द्वारा उसके व्यक्तित्व को उसके विचारो को समझने का प्रयास किया जाना चाहिए| और उसकी मानसिकता के द्वारा वस्तुनिष्ठता का पता चलता है| अतः यह कह सकते हैं की ई० एच० कार इतिहासकार और उसकी मानसिकता को अधिक महत्व देते हैं, न की घटना को| क्योंकि उसने जो कुछ भी लिखा होगा उससे वस्तुनिष्ठता प्रभावित होगी| वस्तुनिष्ठता को समझाने का एक अन्य पहलु यह भी है की— जब इतिहासकार किसी घटना का विवरण देते समय देशप्रेम की भावना स प्रेरित दिखता हो तो यह भी सही नहीं है, क्योंकि ऐसा करते हुए वह पक्षपात पूर्ण व्यवहार करता है| अतः इस प्रकार का इतिहास लेखन वस्तुनिष्ठ नहीं रह पायेगा|

उदहारण के रूप में यदि हम 1857 की क्रांति की घटना पर विचार करें तो हम यह पाते हैं की इंग्लैंड और भारतीय इतिहासकारों के विचारों में बहुत भिन्नता दिखाई देती है| अनेक भारतीय इतिहासकार इसे स्वन्त्रता संग्राम की सीढी का

प्रथम चरण मानते हैं| और ब्रिटिश इतिहासकार इसे एक विद्रोह की भांति मानते हैं| परन्तु हम यह जानते हैं की विद्रोह और स्वन्त्रता संग्राम में अंतर होता है| अतः इन दोनों विश्लेषणों में पूर्ण वस्तुनिष्ठता का आभाव है|

इसी प्रकार यदि हम इंग्लैंड और अमेरिका के मध्य हुए युद्ध को देखें तो इसमें भी इतिहासकारों में मतभेद दिखाई देता है| अमेरिकी इतिहासकारों का कहना था की इस समय अंग्रेजों की निति असहनीय थी, क्योंकि इंग्लैंड की नौ सेना के जहाज़ अमेरिकी जहाजों को ज़ब्त कर लेते थे और उनके सैनिकों को इंग्लैंड की नौसेना में भर्ती कर लेते थे| जबकि इंग्लैण्ड के इतिहासकारों के अनुसार अंग्रेजी सैनिक अपने जहाजों को छोड़कर अमेरिकी जहाजों में शरण लेते थे| ऐसे सैनिकों की तलाशी की जाती थी और मिलने पर जबरन उन्हें पुनः भर्ती किया जाता था|

अतः इन दोनों मामलों में इतिहासकार देशप्रेम की भावना से प्रेरित होकर इतिहास लेखन कर रहे थे, जो की गलत है| इन दोनों उदाहरणो के ज़रिये हम साफ यह देख पा रहे हैं कि एक ही घटना के दो बिलकुल अलग विवरण हैं, क्योंकि कहीं न कहीं देश-प्रेम की भावना भी इतिहास को वस्तुनिष्ठ बनाये रखने में बाधित प्रतीत होती है| जिससे वस्तुनिष्ठता को आघात पहुंचता है| ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता का एक पहलु यह भी है कि इतिहासकार जिन स्त्रोतों का उपयोग करता है वे भी कभी-कभी वस्तुनिष्ठ नहीं होते| अनेक विद्वानों का मानना है की प्राथमिक स्त्रोत अधिक वस्तुनिष्ठ होते हैं| परन्तु क्या इसे मानना सही होगा, आइये हम परीक्षण करने की कोशिश करते हैं| मुख्यतः ऐसा माना जाता है की प्राथमिक स्त्रोत पर अपने समय का प्रभाव होता है, जिस समय वह घटना घटित होती है| मुग़ल काल में अबुल फज्ल जब अकबरनामा की रचना करता है, तो वह उसमे लिखता है की वह सत्य ही लिख रहा है| परन्तु यदि हम उसका विश्लेषण करे तो हम देखते हैं की वह अकबर की अत्यंत प्रशंसा करता है| जोकि पूर्वाग्रह से ग्रसित दिखाई पड़ता है| इसलिए इतिहासकार के समक्ष यह समस्या होती है कि उसके साक्ष्य भी पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ नहीं हैं| अतः प्रश्न यह भी है कि इतिहासकार जिन साक्ष्यों के आधार पर लिखता है, उसका विवरण भी कहाँ तक वस्तुनिष्ठ है| यह अवश्य कहा जा सकता है की इतिहासकार को अपने साक्ष्यों का मूल्यांकन करना चाहिए| और यह इतिहासकार का कर्तव्य भी है कि वह अपने विवरण को जहाँ तक संभव हो सके सत्य के करीब ला सके| जबकि इतिहास में कोई अंतिम सत्य नहीं है जो इसकी कमजोरी भी है और इसे दृढ़ता भी प्रदान करता है| इतिहासकारों का यह भी मानना है कि वस्तुनिष्ठता का अर्थ है, तथ्यों या प्रमाणों का संतुलित उपयोग या समीक्षा करना है| यह भी आवश्यक है कि इतिहासकार इस कार्य हेतु सक्षम हों और उसे अपने तथ्यों का ज्ञान हो| ई० एच० कार कहते हैं की सभी इतिहासकारों से इसकी अपेक्षा की जाती है, इसलिए इतिहासकार की प्रशंसा करना कि उसे अपने तथ्यों का ज्ञान है निरर्थक बात है क्योंकि यह उसका कर्तव्य है की वह अपने साक्ष्यों का अध्ययन करके तथ्यों को क्रमबद्ध रूप से विश्लेषित करे| कार यह भी कहते हैं कि कोई भी एतिहासिक विवरण उस समय वैज्ञानिक होगा जब विवरण तथ्यों के अनुकूल होगा| इतिहासकार जिन घटनाओं क वर्णन कर रहा है, उसमे उसे घटनाओं के सम्बन्ध भी बताने चाहिए| और उसे पूर्वाग्रह से ग्रसित भी नहीं होना चाहिए| तभी विवरण वस्तुनिष्ठ हो सकता है| कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इतिहासकार एक जासूस की भांति होता है, क्योंकि एक जासूस ऐसी जगह जाता है जहाँ अपराध हुआ हो| उसका कर्तव्य है कि वह वहां से साक्ष्यों को जमा करे और उस अपराध को समझने का प्रयास करे| इसी तरह इतिहासकार का कर्तव्य है कि अतीत में होने वाली घटनाओं का अपनी लेखनी के द्वारा पुनर्गठन करे| इस तरह से इतिहासकार और जासूस के कार्य सामान है परन्तु इतिहासकार का कार्य उस जासूस से कठिन है क्योंकि जासूस घटना के तुरंत बाद पहुचता है जिससे साक्ष्य मिलने में आसानी होती है, और इतिहासकार उन घटनाओं के साक्ष्य तलाशता है जो कई वर्षों पूर्व हो चुके हैं| उससे यह आशा की जाती है कि वह अपने विवरण में निष्पक्ष हो, किसी का पक्ष न ले बल्कि केवल सत्यता पर अपना ध्यान केन्द्रित करे|

4.4 वस्तुपरकता के सिद्धांत और उसका विकास

यूरोपीय इतिहास लेखन को प्राचीनतम इतिहास लेखन की संज्ञा दी जाती है| जिसे इतिहासकार प्रभावी परंपरा के रूप में मानते हैं| यूरोपीय इतिहास लेखन के आरम्भ से ही इस बात पर जोर दिया गया कि ऐतिहासिक दस्तावेजों में वास्तविक यथार्थता और वास्तविक लोग उल्लेखित हों| वस्तुनिष्ठतावादी परंपरा को मानने वाले इतिहासकार अतीत की यथार्थता और उसको ठीक वैसे ही प्रस्तुत करने की संभावना में यकीन रखते हैं| इतिहासलेखन के आरंभिक काल से ही हमें इसके प्रमाण उपलब्ध हैं| आरंभिक यूरोपीय इतिहासकार हेरोड़ोट्स जिन्हें इतिहास का पिता के नाम से भी जानते हैं, उन्होंने अपनी रचना History of Persian War में ईरान और यूनान राजनैतिक युद्ध का ही नहीं बल्कि उनके सांस्कृतिक संघर्ष का भी वर्णन किया है| जिसमे उन्होंने सत्यता एवं वस्तुनिष्ठता एवं उसकी उपयोगिता पर जोर दिया है| उनके अनुसार- लोगों के व्यवहार एवं इरादों में एकरूपता हो, और इतिहासकारों के लिए यह आवश्यक है कि वे स्वयं अतीत के लोगों द्वारा लिखित दस्तावेजों के माध्यम से संसार को समझने का प्रयास करें|

इसके बाद थुसीडाइडिस ने अपनी रचना History of Pelonoppesian War के द्वारा इतिहास की उपयोगिता को दर्शाया है| उनका कहना है की इतिहास का उपयोग वर्तमान की समस्याओं को समझने में किया जाता है| इसके पश्चात यूनानी इतिहास लेखन में इस परंपरा को नहीं अपनाया गया| अर्थात इतिहास लेखन में वस्तुपरकता का पालन नहीं किया गया| पोलिबियस के साथ ही इतिहास लेखन में पुनर्जागरण का प्रादुर्भाव होता है| उन्होंने हेरोड़ोट्स और थुसीडाइडिस के सिद्धांतो का पालन किया| पोलिबियस ने इतिहास लेखन में साक्ष्यों के प्रयोग से पूर्व उनकी सत्यता जाँच करने पर बल दिया| एक प्रकार से उन्होंने साक्ष्यों के मूल्यांकन करने को कहा| इसके बावजूद अनेक इतिहासकार आरंभिक यूनानी इतिहासकारों को व्यवसायिक इतिहासकार की श्रेणी में नहीं रखते| आर्थर मार्विक के अनुसार- यूनानी और रोमन इतिहासकारों ने वस्तुनिष्ठता पर बल तो दिया परन्तु खासकर यूनानी इतिहासकार स्वयं को धर्म से अलग नहीं कर पाए| और इनका मुख्य उद्देश्य राजनैतिक एवं सैनिक जीवन के प्रति लोगों को आकर्षित करना था| परन्तु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि इन आरंभिक इतिहासकारों ने ही इतिहास लेखन में वस्तुपरकता के महत्व को समझाने का प्रयास किया| पेट्रार्क और मैकयावेली ने भी इतिहास लेखन में वैज्ञानिक पद्यति का प्रयोग किया तथा मिथक एवं किंवदंतियों को दूर करके वास्तविकता को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है|

19वीं शताब्दी में वैज्ञानिक इतिहास लेखन की प्रवृत्ति का विकास आरम्भ हुआ| जिसका आधार मूल स्त्रोत थे, और इनकी सत्यता को जांचने के लिए एक नयी पद्यति आरंभ की गयी| इतिहासकारों को प्रशिक्षण दिया गया कि वे एतिहासिक स्त्रोतों का उपयोग किस प्रकार से करें| जिसका आरम्भ बर्थोल्ड नेंबूर द्वारा किया गया| जिसका विकास लियोपोल्ड वाँन रांके ने किया, उन्होंने सत्यता के परीक्षण के लिए एक नयी शैली का आरम्भ किया| लेकिन एक बार जब यह स्त्रोतों की सत्यता प्रमाणित हो जाए कि ये स्त्रोत उसी समय के हैं जिनका इतिहासकार द्वारा अध्ययन किया जा रहा है, तभी इतिहासकार से वस्तुनिष्ठ होने की आशा की जा सकती है| रांके ने इन प्राथमिक दस्तावेजों को प्राथमिक स्त्रोत कहा| और यह माना कि ये स्त्रोत उस काल का सही और सत्य वर्णन देने में सहायक हो सकते हैं जिस काल से ये सम्बंधित है| इसलिए इतिहासकारों को प्रकाशित दस्तावेजों के बजाए अभिलेखागार के दस्तावेजों पर अधिक भरोसा करना चाहिए, क्योंकि ये प्रकाशित दस्तावेज पूर्वाग्रह से ग्रसित हो सकते हैं| फिर भी उनका यकीन था कि अतीत का पुनर्निर्माण संभव है, और वस्तुपरकता को पाया जा सकता है| इतिहासकार के एतिहासिक विश्लेषण को जानने के लिए उसके पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसे- उसका जन्म कहाँ हुआ, उसके परिवार, उसकी आदतें, इत्यादि को जानना आवश्यक है, क्योकि इसी के सहयोग से इतिहासकार की लेखनी को समझा जा सकता है| रांके के अनुसार-

प्रत्येक युग व समाज पर किसी विचारधारा का प्रभाव होता है| और यही उस युग व समाज के लोगों की विचारधारा को समझने में हमारी सहायता करता है|

रांके प्रथम इतिहासकार है जिन्होंने यह कहा कि अतीत का अध्ययन वर्तमान की विचारधारा से प्रभावित नहीं होना चाहिए| और इतिहासकारों का ये कर्तव्य है कि वे बताएं अतीत में क्या हुआ था? अतीत में यह क्यों हुआ, और कैसे हुआ यह इतिहासकार का काम नहीं है| रांके ने यह भी बताया कि इतिहासकारों द्वारा समकालीन स्त्रोतों, तथा दस्तावेजों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए| इसमें कोई संदेह नहीं है कि रांके से पहले भी दस्तावेजों तथा समकालीन स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है परन्तु निश्चित रूप से उन्होंने पहली बार व्यापक रूप में इसका प्रयोग किया| उनका मानना था की इतिहास के प्रमुख स्त्रोत समकालीन घटनाओं में भाग लेने वाले तथा उनके पत्राचार ही इतिहास के प्रमुख स्त्रोत हो सकते हैं| इतिहास के स्त्रोत के विषय में अपनी कृतियों से उन्होंने क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं| रांके ने स्त्रोतों की विश्वसनीयता को निर्धारित करने की नयी शैली प्रारंभ की| एतिहासिक स्त्रोतों के लेखकों की विश्वसनीयता को जानने के लिए उनकी तथा उनके पारिवारिक पृष्ठभूमि को जानने की अवश्यकता है| रांके व उसके इतिहासलेखन का यूरोपीय इतिहास लेखन पर गहरा प्रभाव पड़ा| परन्तु ऐसा भी नहीं था, कि सभी इतिहासकार रांके की शैली से प्रभावित थे| कुछ ने इसे स्वीकार नहीं किया, उनका कहना था की रांके ने इतिहास लेखन में कविता (कल्पना) को समाप्त कर दिया है, और किसी घटना के विश्लेषण में कल्पना की अवश्यकता तो होती ही है, और रांके ने तो घटना का विश्लेषण ही नहीं किया| 19वीं सदी के इतिहास लेखन की एक अन्य विचारधारा सकारात्मक धारा (Positive School Of History) का विकास हुआ| इस विचारधारा के लेखकों ने प्राकृतिक लेखन पर विशेष ध्यान दिया, और इन इतिहासकारों ने इतिहास के लिए वैसे ही सार्वभौमिक नियम बनाये जो विज्ञान के नियम होते हैं| जिसके प्रवर्तक ऑगस्ट काम्टे थे, उनके अनुसार समाज का अध्ययन करने के लिए उसी प्रकार के नियम बनाये जाने चाहिए, जैसे वैज्ञानिको के लिए| बीसवीं सदी में रांकेवादी परम्परा की आलोचना होनी आरम्भ हो गयी, और इतिहास लेखन में राजनैतिक इतिहास से अलग अन्य क्षेत्रों का भी इतिहास लिखा जाना चाहिए| अब सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास लिखे जाने आरम्भ होने लगे| फिर भी ऐसा नहीं था कि रंकेवादी परम्परा को बिलकुल ही छोड़ दिया गया हो, अब भी वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ही अधिक महत्व दिया गया| जिसके विकास की गति दिन-प्रतिदिन बढ़ ही रही थी|

4.5 एतिहासिक वस्तुपरकता की समस्याएँ

इतिहास व्यक्ति विशेष से प्रभावित होता है| क्योकि एतिहासिक तथ्यों का लेखन एक इतिहासकार के द्वारा किया जाता है, जो स्वयं के देशकाल परिस्थितियों से प्रभावित होने के कारण उसके द्वारा चुने गए विषय-वस्तु भी पूर्वाग्रह से ग्रसित हो सकते हैं| इतिहास स्त्रोतों पर आधारित होते हैं, और उसकी वस्तुपरकता के लिए प्राथमिक स्त्रोत महत्वपूर्ण हैं| क्योकि यह माना जाता है की प्राथमिक स्त्रोत वस्तुनिष्ठ होते है| परन्तु यह भी हमेशा सत्य नहीं होता है क्योकि प्राथमिक साक्ष्य घटना घटित होने के बाद लिखे जाते हैं| आर्थर मर्विक भी इससे सहमत हैं उनका भी मानना है की इतिहासकार भी पूर्वाग्रह से ग्रसित हो सकते हैं| समकालीन रचना सत्य भी हो सकती है तथा असत्य भी| कहने का अर्थ यह है कि प्राथमिक साक्ष्य में भी वस्तुनिष्ठता का आभाव होता है| इसलिय इतिहासकारों से अपेक्षा की जाती है की प्राथमिक साक्ष्यों का सावधानी से प्रयोग करें अँधा अनुकरण न करें| उदहारण के रूप में अबुल फजल ने अकबर के बारे में जो भी लिखा, इतिहारकारों को आंख बंद करके स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए| यद्यपि उसका विश्लेषण किया जाना

चाहिये फिर उसके आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए, यदि इतिहासकार प्राथमिक साक्ष्य पर आँख बंद करके भरोसा करता है तो इतिहास की वस्तुनिष्ठता को आघात पहुंचता है|

इतिहास की वस्तुनिष्ठता का एक अन्य पहलु यह है कि जब इतिहासकार घटना का विवरण देता है तो वह पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ हो, ऐसा संभव नहीं है, क्योंकि प्रत्येक इतिहासकार अपने व्यक्तिगत भावना से घटना का विश्लेषण करता है| इसलिए इतिहासकारों के नतीजे भिन्न-भिन्न रहते हैं| इसके अतिरिक्त हम यह जानते हैं कि इतिहास साक्ष्यों पर आधारित हैं, लेकिन इतिहासकार द्वारा इस बात का फैसला करना कि कौन से साक्ष्य महत्वपूर्ण हैं और कौन से निरर्थक यह उसकी व्यक्तिगत भावना होती है, और जब भी इतिहासकार की व्यक्तिगत विचारधारा की भावना दिखती है, वस्तुनिष्ठता के लिए घातक सिद्ध होता है|

इतिहासकारों से यह अपेक्षा की जाती है कि, वह अतीत की घटनाओं का जहाँ तक संभव हो सके, सत्यापित विवरण करेगा| यह सत्य है कि शत-प्रतिशत वस्तुनिष्ठ विवरण संभव नहीं है| आर्थर मार्विक कहते हैं कि इतिहास में वस्तुनिष्ठता का अर्थ संतुलित मूल्यांकन और प्रयोग है| आर्थर मार्विक का यह भी मानना है कि साक्ष्यों के संतुलित उपयोग के लिए यह आवश्यक है कि इतिहासकार योग्य हो, जिसे अपने साक्ष्यों का ज्ञान होना चाहिए, उसका यह कर्तव्य है की जहाँ तक संभव हो सके घटनाओं का सच्चा विवरण दे|

इसके सम्बन्ध में इतिहासकार क्रोचे का स्पष्ट कहा है कि मनुष्य की आत्मा अपने युग के प्रति संवेदनशील होनी चाहिए| इतिहास की निरंतर पुनर्चर्चा इस अवश्यकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है| एक ही ऐतिहासिक तथ्य की उपयोगिता तथा अनुपयोगिता विभिन्न युगों में बदलती रहती है| उदहारण के रूप में उपनिवेशवाद तथा दास प्रथा किसी युग की सामाजिक आवश्यकता थी और वर्तमान में सामाजिक अभिशाप| इस प्रकार मानव जीवन की रुचियाँ तथा निहित स्वार्थ का स्वरुप प्रत्येक युग में बदलता रहता है, और उसमे समानता और एकरूपता की इच्छा करना एक भूल है| इस प्रकार एक युग का इतिहास दूसरे युग से भिन्न होता है| इतिहास का स्वरुप प्रत्येक युग में परिवर्तित रहा है, जो की इतिहास के लिए आवश्यक भी है| उदाहर्द के रूप में नेपोलियन बोनापार्ट की साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध सम्पूर्ण यूरोप में राष्ट्रवादी भावना के युग की अवश्यकता थी| इटली और गरमानी का एकीकरण राष्ट्रवाद का ही परिणाम था, पान्तु 20वीं सदी में उग्र राष्ट्रवाद प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बना| अतः युग की अवश्यकता इतिहासकारों के नज़रिए को हमेशा प्रभावित करती रही हैं| जिससे हम यह कह सकते हैं कि इतिहास में वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता की कल्पना संभव नहीं है|

यदि यह मान भी लिया जाय की इतिहास में वस्तुपरकता का होना संभव नहीं है, फिर भी यह कठिन अवश्य है| बियर्ड ने यह स्पष्ट किया है कि इतिहास का प्रत्येक छात्र इस बात को बेहतर जनता है की इतिहासकार अपने आस-पास के सामाजिक वातावरण और आर्थिक परिस्थिति से प्रभावित होता है| अतः उसके द्वारा एतिहासिक नियम तथा विधाओं की उपेक्षा करना स्वाभाविक है| एसी परिस्थिति में इतिहासकार से वस्तुनिष्ठता कि अपेक्षा करना उचित नहीं है| कार्ल बेकर ने भी यह स्पष्ट किया है कि इतिहास की पुनर्रचना प्रत्येक मनुष्य की आतंरिक भावनाओं के अनुकूल की जाती है|

4.5.1 ऐतिहासिक प्रमाण और व्यक्तिगत पूर्वाग्रह

इतिहास लेखन में प्रमाणों साक्ष्यों की अपनी एक विशिष्ट महत्ता है| परन्तु एक इतिहासकार द्वारा सभी प्रमाणों पर भरोसा कर लेना और तथ्यों साक्ष्यों से संतुष्ट हो जाना बहुत ही मुश्किल है| इतिहासकार के स्त्रोत ही पूर्ण रूप से सही हों, वस्तुनिष्ठ हो, यह कह पाना संभव नहीं है, क्योंकि यह साक्ष्य लिखने वाले के मस्तिष्क से छन कर पहुचते हैं| साक्ष्य

लिखने वाला व्यक्ति भी अपने माहौल, आस-पास के वतावरण से प्रभावित होता है| इस बात के समर्थन करते हुए में ई० एच० कार कहते हैं कि-

कोई भी दस्तावेज हमें सत्य तक नहीं पहुँचाते हैं| ये उतना ही बताते हैं जितना दस्तावेज के लेखक ने सोचा होता है| शायद उसने वही सोचा हो जो वह चाहता था की अन्य लोग भी वैसा ही सोचें| और दस्तावेज को लिखने वाला व्यक्ति भी अपने समाज का बंदी होता है, जिसका प्रभाव उसकी लिखनी पर पड़ना आवश्यक है|

हम यह भी कह सकते हैं कि जब इतिहासकार किसी साक्ष्य को महत्त्व देता है तभी उसका उपयोग करता है| अतीत का लेखक तय करता है की उसे क्या लिखना है और वर्तमान का लेखक उस चुने हुए साक्ष्य को कांट छाट कर प्रस्तुत करने योग्य बनाता है| अतः जब इतिहासकार के साक्ष्य ही पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ नहीं होंगे तो उसके लेखन में भी वस्तुनिष्ठता का आभाव होगा| हा यह अवश्य है की इतिहास की वस्तुनिष्टता साक्ष्यों की वस्तुनिष्टतानहीं होती है बल्कि ये प्रमाण और उनकी व्याख्या का सम्बन्ध वस्तुनिष्ठ हो सकता है| कार्ल बेकर के अनुसार इतिहास अतीत की घटनाओं का सर्वांगीण विवरण है, परन्तु अतीत की घटनाओं का वर्णन प्रत्येक युग का इतिहासकार सामान रुप से प्रस्तुत नहीं करता| प्रत्येक पीढ़ी का इतिहासकार अपने युग की अवश्यकता के अनुसार लिखता है|

इसी प्रकार से ये एतिहासिक रचनाये लेखक की अपनी अभिव्यक्ति होती है| हैजलिट ने भी इसके समर्थन में कहा है कि कला, रूचि, वाणी में व्यक्ति की भावना प्रधान होती है, तर्क नहीं| इतिहासकार की रचना भावप्रधान होती है| रांके ने भी यह कहा है कि इतिहासलेखन व्यक्ति की अंतर्चेतना का विषय है| हेनरी पीरेन के अनुसार इतिहास का विषय स्वयं समाज होता है| उसका कार्य अपने ही तरह के लोगों के जीवन से सम्बंधित घटनाओं को समझना और उसका विवरण करना है| वह कितना ही पक्षपात से रहित हो, पूर्ण वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता है| ई० एच० कार इस बात का समर्थन करते हुए कहते हैं कि इतिहासकार अपने समय की देन है और राजनीति से निर्मित होता है| वह अपने समय काल से प्रभावित होता है और अतीत को वर्तमान के दृष्टिकोण से देखता है| इसलिए अतीत का वस्तुनिष्ठ चित्रण कठिन है| यह भी है कि वे अतीत के किसी एक पहलु का तो वर्णन कर सकते हैं परन्तु सभी पहलुओं का वर्णन संभव नहीं है| इस तरह किसी एक क्षेत्रको चुना जाना भी वस्तुनिष्ठता को प्रभावित करता है|

4.5.2 सांस्कृतिक सापेक्षवाद

हाल के दिनों में कुछ इतिहासकरों के दावा किया है की इतिहासकारों द्वारा किया गया अतीत का वर्णन उनका अपना नजरिया होता है| अनेक ऐसी किवन्दन्तिया, गाथाये है, जिनका प्रयोग इतिहासलेखन में किया जाता है| ये गाथाएं आवश्यक रूप से लेखक की सामाजिक सांस्कृतिक पूर्वाग्रह से प्रभावित होती है| और ये विभिन्न संस्कृतियां संसार को अपने नज़रिए से देखती हैं| इसलिए ऐसा संभव है की भिन्न संस्कृति वाले लेखक किसी अन्य संस्कृति के साथ न्याय न कर सकें| अनेक ऐसे समाज है जहाँ भिन्न-भिन्न प्रतीकों के मायने भिन्न है| जिसका अर्थ हम तभी समझ सकते है जब उस समाज का हिस्सा हों| जैसे विभिन्न समाज में लोग सूर्य ग्रहण की घटना का वर्णन अलग-अलग ढंग से करते हैं| इसके अतिरिक्त इतिहासकार गिर्त्ज़ कहते हैं की 'वास्तिकता उतनी ही काल्पनिक है जितनी की कल्पना'| समाज और संस्कृति को एक साथ समझने पर जोर दिया गया है| इसिहस्कार अतीत की घटनाओं का वर्णन कल्पना के आधार पर ही करते हैं, जो एतिहासिक वस्तुनिष्ठता के दृष्टिकोण से सही नहीं है|

4.5.3 भाषा की उपयोगिता

इसका आरम्भ स्वीडिश भाषा विज्ञानी फर्डीनेंड द सोस्युर ने की जिन्होंने भाषाविज्ञानं की संरचना से सम्बंधित सिद्धांत प्रस्तुत किये| उनके सिद्धांतों ने संरचनावाद, संकेतविज्ञान, और उत्तरसंरचना वाद जैसे कई बौद्धिक आंदोलनों को

प्रभावित किया| उनके अनुसार भाषा एक ऐसी व्यवस्था है, जो किसी भाषा में शब्द भौतिक वस्तुओं से नहीं बल्कि धारणाओं से जुड़े होते हैं| अर्थात भाषा संसार में वस्तुओं से सम्बंधित नहीं है| सोस्युर के अनुसार भाषा अपने आप अर्थ बनती है और मनुष्य के विचार भाषा द्वारा बनाये जाते हैं| इतिहास लेखन में यदि इसकी उपयोगिता देखी जाये तो जैक देरिदा का डीकंस्ट्रकशन थ्योरी कार्य सराहनीय है| इन्होने भाषा व्यवस्था के बाहर वास्तविकता को समझने की सम्भावना को पूरी तरह नकार दिया| उनके भाषा किसी बाहरी यथार्थ का आइना नहीं है बल्कि स्वतः एक पूर्ण व्यवस्था है जिसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं है| अन्य इतिहासकारों ने भी अर्थ की विलुप्तता को लेकर आशंका व्यक्त की है | इस पर लारेंस स्टोन कहते है कि – यदि दस्तावेज के बाहर कुछ भी नहीं है तो हमारे द्वारा स्वीकृत इतिहास एकदम समाप्त हो जायेगा और तथ्य और कल्पना में कोई अंतर नहीं रह जायेगा|

4.6 सारांश

इतिहास लेखन में प्रयोग किये जाने वाले साक्ष्य वस्तुनिष्ठता पर आधारित होंगे ऐसा माना जाता हैं क्योंकि वस्तिनिष्ठाता साक्ष्यों के प्रयोगों को प्रमाणित करती है| इतिहास लेखन में वस्तुपरकता को प्राप्त करना अत्यंत कठिन कार्य है, फिर भी इतिहासकार से इसकी अपेक्षा की जाती है| कि वह साक्ष्यों के प्रयोगों में वस्तुनिष्ठ हो जबकि इतिहासकार मानव स्वभाव के तहत देशकाल, परिस्थितियोंसे प्रभावित होता है| प्राथमिक स्त्रोत को इतिहासकारों ने वस्तुपरकता के अधिक निकट पाया है| परन्तु यह भी पूर्ण रूप से सत्य नहीं है| क्योकि यदि यह भी लेखनी के रूप में हमें प्राप्त होता है, तो यह भी लिखने वाले के विचारों उसकी मानसिकता से प्रभावित होगा| जिससे वस्तुनिष्ठता को आघात पहुँच सकता है| एतिहासिक वस्तुनिष्ठता एक जटिल समस्या है, पर इतिहासकारों ने इसका भी समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है| फिर भी वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता की तरह ही ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता की कल्पना करना एक भूल है| डेविड थामसन के अनुसार- इतिहास न तो वल्तेरियन दृष्टिकोण की प्रगाढ़ विषयनिष्ठता और न गणित की निर्वैक्तिक निश्चयात्मक वस्तुपरकता| अतः इतिहास में उपरोक्त दोनों बातों की कमी है| वाल्श कहते हैं कि इतिहास में दो प्रधान तत्व होते हैं—

इतिहासकार द्वारा दिए गए विषयनिष्ठ तत्व तथा साक्ष्य| अतः इतिहासकार साक्ष्यो को प्रधानता देकर इतिहास को वस्तुनिष्ठ बना सकते हैं क्योकि इतिहासकार का प्रत्येक कथन साक्ष्यों पर आधारित माना जाता है| सर चार्ल्स के अनुसार यह सत्य है कि इतिहास लेखन इतिहासकार के व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करता है| इतिहासकार अपनी रचना की निर्व्यक्तिक बनाने का प्रयास करते हुए भी कुछ कठोर तथ्यों को अस्वीकार नहीं कर सकता| इतिहास में तथ्य को प्रधानता देकर एतिहासिक वस्तुनिष्ठता सुरक्षित रखी जा सकती है| वर्तमान इतिहासकारों से वस्तुनिष्ठ रचना की अपेक्षा की जाती है|

4.7 अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. वाल्श के अनुसार इतिहास में कितने प्रधान तत्व होते हैं?

प्रश्न 2. प्राथमिक स्त्रोत क्या हैं?

प्रश्न 3. इतिहास लेखन में पुनर्जागरण का श्रेय किसे दिया जाता है?

प्रश्न 4. वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 5. हेरोड़ोट्स की पुस्तक का नाम क्या है?

.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1. वाल्श के अनुसार इतिहास के दो महत्वपूर्ण तत्व होते है| एक विषयनिष्ठता और साक्ष्य| और इतिहासकार साक्ष्यों को महत्व देकर इतिहास को वस्तुनिष्ठ बना सकते हैं|

उत्तर 2. किसी घटना के होने के समय काल में लिखित दस्तावेज को प्राथमिक स्त्रोत की श्रेणी में रखते हैं| ये दस्तावेज समकालीन युग के चित्रण के लिए आवश्यक होते हैं|

उत्तर 3. इतिहासकार लियोपोल्ड वान रांके को इतिहास लेखन में पुनर्जागरण लाने का श्रेय प्राप्त है|

उत्तर 4. वस्तुनिष्ठता का अर्थ है, तथ्यों या प्रमाणों का संतुलित उपयोग या समीक्षा करना है| और वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता वह है जिसके अंतर्गत सभी इतिहासकार वैज्ञानिको की भांति एक मत हों, उनके परिणाम सामान हों|

उत्तर 5. History of Persian War जिसमें हेरोड़ोट्स ने ईरान और यूनान के राजनैतिक युद्ध का ही नहीं बल्कि उनके सांस्कृतिक संघर्ष का भी वर्णन किया है|

4.9 प्रस्तावित अध्ययन सामग्री

आर्थर मार्विक, द नेचर ऑफ़ हिस्ट्री, (न्यू यार्क, 1989)|

कीथ जेन्किन्स, द पोस्टमाडर्न हिस्ट्री रीडर, (लन्दन एंड न्यूयार्क राउटलेज़ 1997)|

मार्क ब्लाख, हिस्टोरियन क्राफ्ट|

आर० जी० कलिंगवुड, दि आइडिया ऑफ़ हिस्ट्री|

पैट्रिक गार्डेनर, द नेचर ऑफ़ हिस्टोरिकल एक्स्प्लनेशन, (ऑक्स्फ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,1961)|

रिचर्ड जे० इवांस, इन डिफेन्स ऑफ़ हिस्ट्री, (लन्दन एंड न्यूयार्क राउटलेज़ 1998)|

ई० एच० कार, व्हाट इज हिस्ट्री|

सी० बेहन मैकुला दि ट्रुथ ऑफ़ हिस्ट्री, (लन्दन एंड न्यूयार्क राउटलेज़ 1998)|

विल्हेम विन्डेलबांड, ऑन हिस्ट्री एंड नेचुरल साईंसेज, 1984, हिस्ट्री एंड थ्योरी, 1980|

4.10 निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. वस्तुनिष्ठता क्या है? इतिहासलेखन में वस्तुनिष्ठता के विकास के विभिन्न चरणों की व्याख्या करे?

प्रश्न 2. वस्तुपरकता को लेकर इतिहासकारों के मध्य विवाद क्या हैं? आलोचनात्मक परिक्षण करे|

प्रश्न 3. इतिहास लेखन में वैज्ञानिक वस्तुनिष्ठता से क्या तात्पर्य है? क्या वास्तव में इसे प्राप्त किया जा सकता है?

इकाई पांचः इतिहास की पुराण परंपरा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 पुराणों के साहित्यिक स्रोत

5.3.1 ब्राह्मण साहित्य में पुराण

5.3.2 आरण्यक तथा उपनिषद

5.3.3 सूत्र ग्रंथ तथा पुराण

5.3.4 पुराण तथा कौटिल्य का अर्थशास्त्र

5.3.5 पुराण तथा धर्म स्मृति

5.3.6 दार्शनिक चिंतक व पुराण

5.3.6.1 कुमारिल भट्ट

5.3.6.2 शंकराचार्य व पुराण

5.3.6.3 बाणभट्ट व पुराण

5.4 पुराणों के ऐतिहासिक स्रोत

5.5 पुराणों की उत्पत्ति

5.6 पुराणों का रचनाकाल

5.7 पुराणों के प्रकार

5.8 पुराणों का वर्गीकरण

5.8.1 गुणों के आधार पर

5.8.2 वर्गो के आधार पर

5.8.3 विषयों के आधार पर

5.9 पुराणों के उद्देश्य

5.10 पुराणों की मिथक परम्परा

5.11 पौराणिक ऐतिहासिक वंशावली

5.11.1 आर्यों का मूल स्थान

5.11.2 महाभारतोत्तर राज वंश शक

5.11.3 मौर्यों का पौराणिक वृत्त

5.12 पुराणों मे समाहित अन्य विषय

5.13 पुराण संहिता

5.14 पुराणों के लक्षणों का परिचय

5.15 पुराणों का अवतरण

5.16 पुराणों की प्रतिष्ठा (आर्ष ग्रन्थो मे उपलब्ध सुत्रो के आधार पर)

5.17 सारांश

5.18 स्वमूल्यांकन प्रश्न

5.19 सन्दर्भग्रन्थ सूची

5.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप यह जान पायेंगे कि–

1. पुराणों की प्राचीन प्रामाणिकता
2. पुराणों के ऐतिहासिक साक्ष्य
3. पुराणों के विभिन्न वर्गीकरण
4. पुराणों के विभिन्न दृष्टिकोण
5. पुराणों की प्रासंगिकता

5.2 प्रस्तावना

अतीत से लगाव मनुष्य का एक जन्मजात गुण होता है और प्राचीन भारत में अतीत के प्रति एक जीवंत चेतना थी। यघपि यह एक संसारिक, मानवीय, ऐतिहासिक अतीत बोध के रूप मे विकसित नहीं हो पाई । इतिहास की एक वाचिक या मौखिक परंपरा जैसा कि गाथा और नाराशांसी (वीरों के गुणगानों या प्रसिद्ध लोगों की प्रशस्तियां) के रूप मे दिखती है, ऋग्वैदिक काल में भी एक अस्पष्ट और अव्यवस्थित रूप में अस्तित्व में थी। उत्तरवैदिक काल और उसके बाद अर्ध–ऐतिहासिक रचनाओं के आख्यान, इतिवृत्त, वंश और वंशानुचरित, पुराण और इतिहास जैसे अन्य रूपों का अविर्भाव हुआ। यदाकदा गाथा और नराशांसी को परस्पर संयोजित करके आख्यान में समाविष्ट कर दिया जाता था, जिसका सरल अर्थ ब्राह्मण साहित्य में उल्लेखित देवासुर और परिप्लावनी जैसे ऐतिहासिक वृतांत थे। इतिवृत्त, जिसका अर्थ घटना है पूर्ववर्ती काल के मनुष्यों और वस्तुओं का पारंपरिक विवरण है। वंशावलियां और पुरोहितां के वंशवृक्ष प्राचीन जनश्रुति की अन्य कोटि है। इस प्रकार की छुटपुट रचनाओं को जब संकलित किया गया तो वे वंशचरित्र के रूप में विकसित हुये, जिनसे उपलब्ध विवरणों के आधार पर परवर्ती काल में पुराणों के राजनैतिक अंशों की रचना हुई। मिथक, दंतकथा और इतिहास के इस संग्रह को धर्मतंत्रीय और मिथकीय दोनों प्रकार का इतिहास कहा जा सकता है। भारत के गहन ज्ञानकोष ऋग्वेद में कुछ सूक्त ऐसे मिलते हैं जिनमें भारत की

परम्परागत कलाएँ सन्निहित प्रतीत होती हैं, उनका कुछ अंश उस समय के श्रौत ग्रंथों में चला गया तथा कालान्तर में एक ऐतिहासिक परम्परा का निर्माण हुआ तथा शेष वीरकाव्य के रूप में एक पीढी से दूसरी पीढी तक पहुॅच गया। उत्तरवर्ती काल में ऐतिहासिक परम्पराएं समाविष्ट हो गई तथा उनमें एक पुराण परम्परा भी शामिल है। भारतीय संस्कृति में पुराणों का अनुशीलन अनिवार्य है ।परम परमात्मा ही सत्य है अतः अलग–अलग खंडों में अलग–अलग देव को उपास्य मानकर वर्णित पुराण की कथाओं में देव, ऋषि, सागर, तीर्थ, पशु, सहकार पूर्वक कार्य करते हैं, इसलिये पुराण भारतीय संस्कृति को जानने के लिये कुंजी के समान है।

5.3 पुराणों के साहित्यिक स्रोत

विष्णु पुराण में पुराण के 5 लक्षण बताये गये हैं सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश मन्वन्तर तथा वंशानुचरित, इनमें वंशानुचरित में विभिन्न वंशावलीयों का उल्लेख है, जो इतिहास के निकट है। ''मांगल्यनितिहास पुराणानी'' अर्थात चिंरजीवी मनुष्य की कथाएँ कीर्तियाँ और मांगलिक इतिहास पुराण का पाठ करना श्रेयस्कर है। रामायण में वाल्मिकी ने भी पुराण की ऐतिहासिक विश्वसनीयता को स्पष्ट किया है, और राजा को उनमें उल्लेखित कथाओं को सुनने का निर्देश दिया है। महाभारत में भी पुराण के आख्यान को रेखांकित किया गया है। धार्मिक साहित्य के साथ ही लौकिक साहित्य में भी इतिहास पुराण के संदर्भ मिलते हैं। अर्थशास्त्र में उल्लेख मिलता है कि राजा इतिहास का श्रवण करें। पंतजलि ने भी इतिहास में पुराण को एक विद्या के रूप में स्वीकार किया है। व्यास स्मृति में वेद का पारगंत विद्वान होने के लिए 6 वेदांग की चर्चा कि गयी है। (शिक्षा, व्याकरण ,कल्प , निरूक्त, छन्द, ज्योतिष) तथा पुराण की मीमांसा करना आवश्यक बताया गया है। शुक्र ने भी अपने नीतिसार में 32 विद्याओं का उल्लेख किया है, जिसमं इतिहास पुराण भी शामिल हैं। वैदिक साहित्य से ले कर धर्मशास्त्र में वर्णित इतिहास पुराण परंपरा के आधार पर हम कह सकते हैं कि पुराण प्राचीन भारत की एक विशिष्ट परंपरा थी। पुराण परंपरा का इसी के तहत सृजन हुआ इनमें ऐतिहासिक तथ्य मौजूद हैं, जो भारतीय इतिहास को जानने में सहायक सिद्ध होते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास में पुराण का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। पुराणों में भारतीय इतिहास कि जानकारी आदिम् युग से ले कर गुप्त काल तक प्राप्त होती है। ऋग्वेद में पुराण शब्द का प्रयोग अनेक बार किया गया है, पुराण शब्द को प्राचीनता का द्योतक माना जाता है। अथर्ववेद में पुराण शब्द इतिहास गाथा और नाराशंसी शब्दों के साथ प्रयोग में लाया गया है, यहां पर पुराण शब्द को प्राचीन भारत के लेखन के रूप में प्रयोग किया गया है। यहां से मौखिक परंपरा पुराण परंपरा के रूप में विकसित हुई।

वर्ण्य विषय प्राचीन परंपरा से सबंद्ध रहने पर भी पुराण सदैव नूतनता की और संकेत करते हैं। पद्मपुराण में पुराण कि व्याख्या की गयी है। ''पुरा परंपरा वष्टि कामयते'' अर्थात् जो प्राचीनता की कामना करे वह पुराण है। ब्रह्मांड पुराण में पुराऐतद् अमृत विश्लेषण के द्वारा पुराणों कि ऐतिहासिकता को स्पष्ट किया है। अतः द्रष्टव्य है कि, पुराण शब्द स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त न होकर इतिहास पुराण संयुक्त शब्द आया है। ब्राह्मण ग्रंथ में गाथा, नाराशंसी, पुराण आदि के मंत्रों का उच्चारण धार्मिक गृहकृत्यों में तथा उत्सव पर्वों में किया जाता था। उत्तर वैदिक ग्रंन्थों में शतपथ ब्राह्मण, इतिहास और पुराण का उल्लेख साहित्य की शाखा के रूप में अथवा उपवेद के रूप में किया गया है। मूल पुराण केवल एक ही ग्रंथ रहा होगा जिसमें प्राचीन राजाओं के इतिवृत्त तथा वंशावलियाँ संग्रहित कर के क्रमबद्ध की गयी और उनको तिथि क्रम के अनुसार जोड़ दिया गया । उत्तर वैदिक काल में पुराणों की लक्षणात्मक व्याख्या की गयी तथा उसका इतिहास से भिन्न स्वरूप निर्मित किया गया।

छान्दोग्य उपनिषद् में नारद मुनि अपने अधीन विद्याओं के अंर्तगत पुराण का उल्लेख कर उसे पंचम वेद मानते हैं। यास्क मुनि ने अर्थ भिन्नता को स्पष्ट करके इतिवृत को इतिहास तथा कल्पितकथा, आख्यान को पुराण नामांकित किया। आचार्य शंकर के द्वारा प्राचीन आख्यान सूचित करने वाले ग्रंथ को इतिहास माना तथा सृष्टि प्रक्रिया के वर्णन को पुराण कहा अचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार किसी प्राचीन युग में पुराण का इतिहास से तथा आख्यान से पार्थक्य और वैशिष्टय माना

जाता था। परंतु पुराणों के स्वरूप में अभिवृद्धि होती गई और दोनों के मध्य विभेदक रेखा क्षीण होती चली गई और इतिहास व पुराण एकाकार हो गये दोनों के पारस्परिक संबंधों को देखते हुए उनमे अंतर करना कठिन प्रतीत होता है।

पुराण व इतिहास का क्षेत्र विभिन्न रूपों में स्वतंत्र है। कुछ परिणामों के आधार पर इनकी उपलब्धता सिद्ध होती है।

अर्थववेद में पुराण शब्द इतिहास को भी व्यक्त करता है। सर्वप्रथम पुराण शब्द का प्रयोग अर्थववेद (11/7/24) में उल्लेखित है।इतिहास और पुराण का पृथक प्रयोग उत्तरवैदिक कालीन ग्रंथों में मिलता है। पुराण इतिहास को नहीं वरन् अन्य ग्रंथों को भी व्यक्त करता है। पुराणों के प्राचीन उल्लेख में पुराण का उदय उच्छिष्ट संज्ञक ब्रह्य से बताया गया है। अर्थववेद में मंत्र का अर्थ ऋक, साम तथा छंद है। मंत्र का अर्थ है उच्छिष्ट से ऋचाऐं, साम, छंद तथा पुराण यजुष्ट के साथ उत्पन्न हुये।

5.3.1 ब्राह्मण साहित्य में पुराण

शतपथ ब्राह्मण तथा गोपथ ब्राह्मण में पुराणों का उल्लेख हुआ है। गोपथ ब्राह्मण का कथन है कि कल्परहस्य नामक ब्राह्मण , उपनिषद्, इतिहास तथा पुराणों के साथ वेद उत्पन्न हुये। गौपथ ब्राह्मण पांच वेद की बात करता है और ये वेद निम्न है – सर्ववेद, पिशाचवेद, असुरवेद, इतिहासवेद, पुराणवेद (गौपथ पूर्वभाग 2/10)।शतपथ ब्राह्मण में इतिहास पुराण का स्पष्ट र्निदेश किया गया है

5.3.2 आरण्यक तथा उपनिषद

श्रुति के इस अंश में भी पुराण की स्थिति सिद्व होती है, वृहदारण्यक उपनिषद में पुराण के उदय को वेद के समान बताया है जिस प्रकार गीली लकडी के धूम्र के बादल अलग निकलते हैं उसी प्रकार उस सत्ता से निःष्वासित यह पुराण है।, आरण्यक के युग में पुराण एक न होकर अनेक रूप मे आख्यान के रूप में हैं।

5.3.3 सूत्र ग्रंथ तथा पुराण

आश्वलयन गृहसूत्र में पुराण का उल्लेख मिलता है सूत्र ग्रंथों में इतिहास व पुराण का अनुशीलन स्वाध्याय के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है।आपस्तम्ब धर्म सूत्र के अनुसार (;2/23/135) प्रवृत्ति मार्ग पर रहने पर संसार के जन्म मरण के चक्कर में घूमना पडता है तथा निवृत्ति मार्ग का आ़श्रय करने पर मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

5.3.4 पुराण तथा कौटिल्य का अर्थशास्त्र

कौटिल्य का कथन है कि सामवेद, ऋग्वेद तथा यजुर्वेद को भारतीय संस्कृति मे वेदत्रयी कहा गया है तथा त्रयी इतिहास वेद व अथर्व वेद के अर्न्तगत आते हैं ;अर्थशास्त्र (1/13)। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पुराणों के वर्ण्य विषय का बेहतर उल्लेख है।

5.3.5 पुराण तथा धर्म स्मृति

धार्मिक स्मृतियों में पुराणों का उल्लेख मिलता हैं वेदों का विस्तार पूर्वक स्वरूप पुराणों में मिलता है यहां बहुश्रुत का उल्लेख मिलता है। बहुश्रुत अर्थात वह व्यक्ति जो वेद वेदांग को जानता है तथा इतिहास पुराण में कुशल होता है तथा इनकी सिद्वि के लिये पुराण दक्षता आवश्यक है।

5.3.6 दार्शनिक चिंतक व पुराण

विभिन्न दर्शनकारों द्वारा जो पुराणों का निर्देश किया गया है वह पुराणों में अंकित है।भारतीय संस्कृति में आचार के द्वारा ही कार्य रूप मे परिणत किये विना विचार का भी महत्व नहीं है, इसलिये दार्शनिक ग्रन्थों में पुराणों को उत्कष्टता से प्रस्तुत किया गया है

5.3.6.1 कुमारिल भट्ट

इनके द्वारा पुराणों के स्वरूप में तथा विषय के संबंध में बहुत ही मूल्यवान तथ्य दिये गये हैं, उदाहारण स्वरूप, कुमारिल ''स्वर्ग'' व्याख्या की मान्यता पर प्रश्न करते हैं कि स्वर्ग ताराओं का देश है, जो इतिहास पुराणों की मान्यता के अनुसार मेरू का पृष्ठ है। इसी व्याख्या का विवरण मत्स्य पुराण (11/37–38),पद्मपुराण, पातालखण्ड (8/72–73) में मिलता है, जहॉ पर मेरू पर्वत के पृष्ठ पर स्वर्ग की स्थिति बताई है।

5.3.6.2 शंकराचार्य व पुराण

शंकराचार्य ने पुराण तथा उनके विषय का निर्देश दिया है, पुराण को स्मृति शब्द के द्वारा ही सर्वत्र निर्दिष्ट किया है। आचार्य शंकर के अनुसार बीते हुए और आगे होने वाले कल्प का कोई परिणाम नहीं होता, इसी पौराणिक धारणा का शंकरभाष्य की अंतिम पंक्ति में विवरण मिलता है। जहां कल्प को अनन्त बताया गया है। आचार्य शंकर के द्वारा एक श्लोक उदघृत है, जिसका अर्थ है कि महेश्वर ने वेद के शब्दों से भूतों के नाम तथा रूप, कर्म प्रवृत्ति को सृष्टि के आरम्भ में बनाया है। इसी का भावार्थ विष्णु पुराण (15/63) में मिलता है। देवों के विषय मे आचार्य का मत है कि देवों में सामर्थ्य की सम्भावना है तथा इतिहास पुराण से जानकारी मिलती है कि देवों का विग्रह होता है ।

5.3.6.3 बाणभट्ट व पुराण

संस्कृत के मर्मज्ञ विद्वान महाकवि बाणभट्ट पुराणों से सागोपांग तो थे, तथा विशेष वायुपुराण से परिचित थे। उनके ग्रंथ कादम्बरी व हर्षचरित में पुराणों का उल्लेख मिलता है। कादम्बरी के पूर्वभाग में जाबालि मुनि के आश्रम का प्रसंग आया है। उत्तर कादम्बरी में पोराणिक कथा का उल्लेख मिलता है। हर्षचरित में पुराण के दो प्रसंग वर्णित हैं। पुराण के संबंध मे आचार्य भट्ट कहते हैं कि पुराणों का पठन पाठन जनता के समक्ष किया जाता था तथा वायु पुराण में उनका कथन है कि पावन वायु पुराण हर्षचरित से अभिन्न है तथा पुराणों का पठन पवित्र कर्म है। पुराण के लिये पवन प्रोक्त शष्द हर्षचरित्र में भी वर्णित है।

5.4 पुराणों के ऐतिहासिक स्रोत

पौराणिक इतिहास की सत्यता प्रामाणिक शिलालेख व मूद्राओ के द्वारा सिद्ध होती है काशी प्रसाद जयसवाल तथा अन्य विद्वानो ने ऐतिहासिक परिक्षण कर इसके परिणाम सिद्ध किये है यघपि पुराण को ऐतिहासिक मानना युक्ति संगत है क्योकि इसमे जनश्रुतियो एवं दंत कथाओ के साथ – साथ ऐतिहासिक तथ्य भी है। वंश या पुराणो का वह अंश जिसमे वंशावलियां पुराणो के ऐतिहासिक तथ्य को ही निरूपित करती है।

एफ. ई. पार्जिटर की दो पुस्तकें – द डायनेस्टीज ऑफ द कलि एज (1913) और एन्शियण्ट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन (1922) मे पौराणिक ग्रंथो का एक उत्कृष्ट आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने के साथ – साथ उनके राजवंशीय भाग की ऐतिहासिकता पर भी गहराई से विचार करती है । वाकाटक वंश की पुराणों में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। वायु पुराण तथा ब्रह्मांङ पुराण में राजा विन्ध्यशक्ति के पुत्र का नाम प्रवीर मिलता जो प्रवरसेन प्रथम ही प्रतीत होता है। प्रवरसेन के द्वारा वाजपेय तथा अश्वमेघ के अनुष्ठान का पौराणिक निर्देश वाकाटक के ताम्र पत्र से प्राप्त होता है, उसके चारों पुत्रों का पौराणिक

उल्लेख ही सत्य प्रतीत होता है। आन्ध्रों के विषय में भी पौराणीक अनुश्रृति प्रमाणिक है। पुराणों में पुलोमा वशिष्ठ पुत्र नामक आन्ध्र राजा का उल्लेख है। वायु पुराण के एक हस्त लेख में राजा के पुत्र शातकर्णी का उल्लेख मिलता है। कान्हेरी शिलालेख में राजा शातकर्णी वशिष्ठ पुत्र नामांकित है जो पुराणों के साक्ष्य को प्रमाणित करता है। इसकी रानी महाक्षत्रप् रूद्रदामन की पुत्री थी।

आन्धों के उत्तराधिकारियों में मान नामक शक राजा का वर्णन पुराणों से मिलता है। तथा इस राजा की मुद्रा हैदराबाद के दक्षिण से प्राप्त हुई है यह महिष्य देश का शासक था। शिशुनाग वंश, नन्द वंश, कण्व वंश, आन्ध्र वंश, आन्ध्र भृत्य मित्र, नागवंशी इत्यादि राजाओं की समग्र ऐतिहासिक सामग्री पुराणों की देन है। सूतों के द्वारा राजाओं की वंशावली को सुरक्षित रखा गया है। जहां एक ही नाम के दो राजा है वहां पुराणों ने स्पष्ट संकेत के द्वारा समझाया है। पार्जीटर ने अपने ग्रंथ प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक अनुश्रृति में पुराणों के अंर्तगत ऐतिहासिक महत्व को विद्वानों के समक्ष प्रमाणभूत तथा यथा सिद्ध किया है।

5.5 पुराणों की उत्पत्ति

यास्क, पाणिनी तथा स्वंय पुराणों ने अपनी व्युत्पत्ति दी है। पाणिनी के अनुसार पुराभवं (प्राचीनकाल में होने वाला) अन्य सूत्रों मे भी पाणिनी ने ''पूर्व कालैक सर्व जरत्पुराण केवलाः समा विकरणेन, पुराण प्रोक्तेषु ब्राह्मी कलोशु(4–3–105) में पुराण शब्द का प्रयोग किया है।

1. सूत परंपरा
2. व्यास परंपरा

5.5.1 सूत परंपरा

उत्तर वैदिक काल में मंत्री अथवा चारण को सूत कहा जात था सूत ग्रामणी के साथ युद्ध में मंत्रों का पाठ करता था। उत्तर वैदिक काल में सूत महत्वपूर्ण अधिकारी स्वीकार किया जाता था, सूत एक रत्निन के रूप में राज्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव रखता था। सूतों के द्वारा राजा व ऋषि पुरोहितों की वंशावलियों की रचना की गई। वायु पुराण में इन्हें सम्मानित ऋषि व वैदिक मंत्रों का ज्ञाता कहा जाता था। कालांतर में यह विशेष वर्ग से जुड़ गया। अग्नि पुराण के अनुसार सूत के द्वारा इतिहास पुराण परंपरा सूरक्षित रखी गई, समयानुसार इनकी स्थिति बदली तथा बाद में यह कार्य दरबारी कवि या चारण भाट के द्वारा किया जाने लगा भाट अर्थात जो राजाओं के इतिहास को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करें उसे चारण कहा गया। तथा यह अपने आश्रयदाता राजा का वंशानुचरित गान करने लगा। अतः इनका लेखन एक महत्वपूर्ण परंपरा रही।इतिहास लेखन की परम्परा में सूतों की उपस्थिती महत्वपूर्ण थी सूत शब्द वेदों में मिलता है, जहॉ पर यजुर्वेद में गीतों के साथ , ब्राह्मण ग्रंथ में अदूषित तथा संहिताओं मे मागध के साथ जुड़ता है ।

यह स्पष्ट है कि व्यास पूर्व काल में पुराण की संकल्पना एक विशिष्ट अर्थ में थी, लोक प्रचलित विद्या विशेष ही पुराण कहलाती थी, परंतु महर्षि व्यास के द्वारा आख्यान,उपाख्यान,गाथा व कल्प को जोड़ कर पुराण संहिता की रचना की गई।

5.6 पुराणों का रचनाकाल

पुराण ब्रह्मा के द्वारा प्रकट हुए और समय समय पर ऋषियों व अवतारों के द्वारा प्रचारित हुए। वायु पुराण में उल्लेख मिलता है कि ,पुराण किसी विशिष्ट ग्रन्थ का बोधक न हो कर विद्या विशेष का बोधक है। पुराण अर्थात प्रकीर्ण भाव से बिखरी हुई विद्या का वर्णन है, इसे ग्रन्थ के रूप में निर्बद्ध करने का कार्य कृष्ण द्वैपायन व्यास ने किया इसलिए वह पुराण कर्ता कहलाए।

कृष्ण द्वैपायन व्यास तथा उसके शिष्य लोमहर्ष तथा प्रशिष्य ऊग्रश्रवा, काश्यप हैं जिनका काल चार हजार वर्षों से अर्वाचीन नहीं कहा जा सकता। वर्तमान में पुराणों में विविध विषयों और प्रसंगों के समावेश प्रवत्ति के कारण इतने प्रक्षेपक है

कि स्वतः उनकी अर्वाचीनता प्रकट होती है। चन्द बरदायी कृत पृथ्वीराज रासो में व्यास कृत अष्टादश पुराणों का श्लोक संख्या सहित उल्लेख मिलता है पृथ्वीराज रासो कि रचना इस प्रमाण से न केवल पुराणों की 12वीं तथा 14वीं शताब्दी का रचा जाना असिद्ध हो जाता है, वरन 12वी, सदी से भी पूर्ववर्ती प्रमाणित हो जाता है। भास, कालिदास, बाणभट्ट, प्रभ्रति इत्यादि साहित्यकारों के द्वारा पुराणों के उल्लेख और पुराण सामग्री के प्रचुर उपयोग से भी पुराणों की प्राचीनता प्रकट होती है आपस्तंभ धर्मसूत्र जिसका रचना काल प्रभूति जैसे विद्वानों ने भी पाणिनी से पूर्व माना है। अर्थात् (ईसा पूर्व 500–600 ईसा पूर्व) इस सूत्र में भविष्य पुराण का उल्लेख मिलता है तथा जिसमें श्लोक भी दिये गये हैं। इस स्थिति में पुराणों का रचना काल कई हजार वर्ष पूर्व सिद्ध हो जाता है। ग्रीक पर्यटक जो ईसा की प्रथम शताब्दी में भारत भ्रमण पर आए (डॉ0 काम्र स्टोस्टोम्) इन्होंने अपने यात्रा वृतांत में लिखा है कि भारत में एक लाख श्लोक का ग्रंथ है तो निश्चय यह शत सहस्त्र की ओर संकेत करता है। पुराण प्राचीन इतिहास के सुवर्ण कलश, विज्ञान रूपी समुद्र में तैरने वाले संस्कृति के दिग्दर्शक तथा अनादी काल से चली आ रही संस्कृति के दृढ स्तम्भ है । पीं. वी. काणे के अनुसार पुराणों ने वेदों के समकक्ष ही पद प्राप्त किया तथा स्वयं को इतिहास के साथ गहरे अर्थ में समाविष्ट किया ।पुराण मर्मज्ञ वेदव्यास ने प्राचीन सामग्री का विस्तार पुराणों के रूप में किया।

5.7 पुराणों के प्रकार

व्यासकृत आदिपुराण का विस्तार आगे चलकर 18 पुराण में हुआ। बाद में इन सभी की पुराण संहिता निर्मित हुई और उन्हें व्यास का आदिपुराण माना गया। मूल पुराण ग्रन्थ में प्रत्येक पुराण बारह हजार श्लोक का था, परंतु बाद में आख्यान व उपाख्यान को जोड़ कर संख्या में वृद्धि की गयी। समग्र पुराण की श्लोक की संख्या चार लाख व कुछ हजार है। पुराण के अंर्तगत महापुराण व उपपुराण का भी उल्लेख मिलता है। कुल 18 महापुराण व 18 उपपुराण रचे गये है।

1. ब्रह्मपुराण 2. पद्मपुराण 3. विष्णुपुराण 4. वायुपुराण 5. भागवतपुराण 6. नारदीयपुराण 7. मार्कण्डेयपुराण 8. अग्निपुराण 9. भविष्यपुराण 10. ब्रह्मवैववर्तपुराण 11. वराहपुराण 12. लिंगपुराण 13. स्कंदपुराण 14. वामन्पुराण 15. कुर्म्पुराण 16 मत्स्यपुराण 17. गरूर्डपुराण 18. ब्रह्मांडपुराण

विभिन्न विद्वानों के अनुसार निम्न 18 उपपुराण है।

1. सनत कुमार 2. नर्सिंह 3. नन्द 4. शिव धर्म 5. दुर्वासा 6. नारदीय 7. कपिल 8. वामन 9. औरानस 10. मानव 11. वरूण 12. कलि 13. महेश्वर 14. साँब 15. सोर 16. पाराशर 17. मरिच 18. भार्गव

इसके अतिरिक्त कुछ औप पुराण भी माने गये है।

1. वरपुराण 2. कुर्म पुराण 3. भागवत 4. मूदगल 5. कार्त्तिक 6. वशिष्ठ 7. देवी 8. महाभागवत 9. वृहद्धर्म 10. परानन्द 11. पशुपति ।

5.8 पुराणों का वर्गीकरण

अष्टदश पुराणों के वर्गीकरण अनेक प्रकार से किये गये हैं। भिन्न–भिन्न पुराणों ने इस विषय में विभिन्न दृष्टिकोण का प्रयोग किया है, जो पुराण पंच लक्षणों से युक्त है, वे प्राचीन माने जाते हैं। तथा जो पंच लक्षणों से विहीन है वे उत्तरकालीन माने जाते है। वायु, ब्रह्मांण्ड, मत्स्य, विष्णु पुराण प्राचीन माने जाते हैं।क्योकि ये पंच लक्षणों को स्पष्ट करते है।

महापुराणों का वर्गीकरण तीन प्रकार से मिलता है।

1. गुणों के आधार पर
2. वर्गों के आधार पर
3. विषयों के आधार पर

5.8.1 गुणों के आधार पर

सात्विक पुराणों मे विष्णु का महत्व है राजस पुराणों में ब्रह्मा व अग्नि का महत्व है तथा तामस पुराणों में शिव का महत्व है।

पद्म पुराण के अनुसार विष्णु पुराण ,नारद पुराण , गरूड़ पुराण, पद्म पुराण व वराह पुराण को **सात्विक** बताया गया है। भविष्य पुराण ,वामन पुराण ,ब्रह्मण पुराण को **राजस** पुराण कहा गया है। मत्स्य पुराण, कुर्म पुराण , लिंग पुराण ,शिव पुराण ,स्कंद पुराण, अग्नि पुराण को **तामस** पुराण कहा गया है ।

1. **सात्विक** – विष्णु, नारदीय, भागवत, गरूड, पद्म, वराहपुराण
2. **तामसिक** – मत्स्य, कुर्म, लिंग, शिव, अग्नि, स्कन्द पुराण
3. **राजसिक** – ब्रह्मांण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, ब्रह्म, वामन, भविष्य पुराण

5.8.2 वर्गो के आधार पर

पांच वर्गों के आधार पर तमिल ग्रन्थों में पुराणों का वर्गीकरण मिलता है।

1. ब्रह्मा – ब्रह्मपुराण, पद्म पुराण
2. सूर्य – ब्रह्मवैवर्त पुराण
3. अग्नि – अग्निपुराण
4. शिव – शिवपुराण, स्कंद, लिंग, कूर्म, वामन, वराह, भविष्य, मत्स्य, मार्कण्डेय, ब्रह्मांण्ड पुराण।
5. विष्णु – नारद, भागवत, गरूड, विष्णु,।

5.8.3 विषयों के आधार पर

विषयों के आधार पर पुराणों के छह प्रकार मिलते हैं। आधुनिक विद्वानों ने पुराणों में वर्णित विषयों का परीक्षण करने के पश्चात विषय विभाग के अनुसार पुराणों के छः वर्ग निधारित किये है–

1. कला, विज्ञान, औषधि, संगीत, तथा व्याकरण –मानव समाज के लिये उपयोगी समस्त विद्याओं का आध्यात्मिक तथा भौतिक सार एकत्र कर दिया है, ये विषय अग्निपुराण, नारद पुराण व गरूड पुराण में मिलते है।
2. तीर्थ व व्रत संबंधित व्याख्या – पद्म पुराण, भविष्य पुराण, स्कंद पुराण।
3. प्रक्षिप्त अंश का दृष्टि कोण – ब्रह्मपुराण, भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण।
4. कलियुगीन राजवंशों की जानकारी –ऐतिहासिक पुराण से तात्पर्य उस पुराण से है जिसमें कलयुग के राजाओं का वर्णन विशेष इतिहास की दृष्टि को लक्ष्य मे रखकर किया गया है– वायुपुराण, ब्रह्मांण्ड पुराण।
5. शैवमत का उल्लेख –इसमे साम्प्रदायिक पुराणों का उल्लेख है, लिंग पुराण, वामन पुराण, मार्कण्डेय पुराण।
6. प्रक्षिप्त अंश – वराह पुराण, मत्स्य पुराण, कूर्म पुराण।

5.9 पुराणों के उद्देश्य

भारतीय पुराणों की परंपरा का अवलोकन करने पर पुराणों के **उद्देश्य** भी दिखाई देते हैं। तथा उद्देश्य सदा ही जीवन के इर्द गिर्द ही रहते हैं क्योंकि वह सामाजिक जीवन के उद्देश्यों का निर्धारण करतें हैं।

1. **ऐतिहासिक दृष्टिकोण** – पुराणों मे प्रचुर मात्रा में ऐतिहासिक तथ्य मिलते हैं जो प्राचीन भारतीय इतिहास की स्पष्ट वंशावली ,इतिहास तथा आर्थिक व राजनैतिक दृष्टिकोण की रूपरेखा को तय करते हैं।
2. **धार्मिक दृष्टिकोण**– भारतीय संस्कृति में वेदों को ज्ञान का अथाह सागर कहा है परन्तु पुराणों ने विभिन्न आख्यानों द्वारा उस ज्ञान को जन सुलभ बनाया तथा धार्मिक प्रचार प्रसार को और अधिक समृद्ध बनाया।
3. **लोक शिक्षण–** पाठकों को शिक्षण देने के लिये पुराणों ने सरल, सरस ,सुंदर विषयों के द्वारा कथाओं का निर्माण किया जिसके कारण कथाएँ आकर्षक तो बनी ही परंतु अप्रत्यक्ष जीवन निर्माण के लिये भी पुराणों के शिक्षण ने प्रेरित किया।
4. **गौरवशाली अतीत** – भारतीय समाज की मान्यता है, कि वह अतीत को सदैव याद रखता है। तथा उसके गौरव को विभिन्न गौरव गाथाओं से संजोता है। अतः पुराणों में भी इस सुखद अतीत के दर्शन राजा , राजवंश , ज्ञानी पुरूष, धर्मनिष्ठ, श्रेष्ठ पुरोहित, आज्ञाकारी व धर्माचारणी प्रजा के रूप में मिलते हैं।
5. **जीवन का समग्रदर्शन** – पुराणों ने इतिहास लेखन की परंपरा का निर्वहन भी किया तथा समग्रचरित्र रूपी आदर्शों का भी निर्माण किया जो समाज के लिये प्रेरक हैं।
6. **जीवन मूल्यों का मापदंड़**– जीवन के विविध मूल्यों कों स्थापित करने में पुराण सदैव आदर्श रहे हैं जैसे राजा हरिश चन्द्र की सत्य निष्ठता।
7. **समस्याओं का समाधान** – विभिन्न पौराणिक कथाओं के द्वारा समाज की अनेक समस्याओं को रेखंकित किया गया है। जिससे जन साधारण प्रेरणा ले कर सामाजिक समस्याओं का सरल निदान प्राप्त कर सकता है।

5.10 पुराणों की मिथक परम्परा

भारतीय पुराणों में कहीं कहीं मिथक परंपरा का स्वरूप भी देखने को मिलता है। मिथक को सामान्य शब्दों में वह परंपरागत कथा कहा गया है जिसका संबंध प्राकृतिक घटनाक्रम तथा मानव के भावों से होता है। इस आधार पर पुराण के तीन प्रकार उल्लेखनीय है।

1. **सृष्टि मिथक** – पुराणों के सर्ग में उपस्थित हैं, उदाहरण– वराह पुराण व मत्स्य पुराण में उल्लेखित आख्यान।
2. **प्रलय मिथक** – प्रतिसर्ग में उपस्थित हैं उदाहरण – मनु द्वारा मानव सृष्टि का प्रलय होने की घटना।
3. **वंशावली व प्रणयाचार** – राजवंशों के प्रणयाचार संबंधित मिथकों का उल्लेख।

5.11 पौराणिक ऐतिहासिक वंशावली

पुराणों में जितने भी वंशों का वर्णन है – उनका विवरण मनु से प्रारंभ होता है मनुओं की संख्या 14 है परंतु वंश के प्रतिष्ठापक की दृष्टि से 2 मनु विशेष हैं, 1. स्वायम्भु 2. वैवस्वत्

स्वंयभू मनु के वंश में प्रियवृत, ऋषभ तथा भरत जैसे प्रतापी राजा हुए।

वैवस्वत मनु पौराणिक इतिहास का मेरूदण्ड माना जाता है। मनु के 9 पुत्र थे तथा इन्होंने भारत वर्ष के विभिन्न प्रांतों में जा कर अपना शासन स्थापित किया पौराणिक तथ्यों से प्रमाण मिलते है कि, मनु से 3 राज वंशों का उदय हुआ 1. सूर्य वंश 2. चन्द्र वंश 3. सौद्युम्न वंश ।

इक्ष्वाकु वंश की वंशावली– यहां वंश से तार्त्पय शासक परंपरा के लिये है, इस वंशावली में 98 शासकों का वर्णन है। जेष्ठ पुत्र इक्ष्वाकु मनु के उत्तराधिकारी होकर मध्य देश के शासक हुए ।

चन्द्र वंश का उदय– यह मनु से प्रारंभ होता है सूर्यवंश ज्येष्ठ पुत्र इक्ष्वाकु से चलता हैं और चन्द्र वंश पुत्री इला से चलता है।

5.11.1 आर्यों का मूल स्थान

पुराणों में इस विषय पर पर्याप्त सामग्री मिलती है, पुराण आर्यों का निवास मध्य देश में ही मानते हैं, कुछ प्रमाण निम्न है। पुराण मानवों को कभी भी आर्यो से भिन्न नही मानते, जाति, धर्म व भाषा की दृष्टि से दोनों ही समान कहे गये हैं।

1. आर्यों के दो प्रधान वंश थे जिसमे सूर्यवंश की राजधानी अयोध्या थी तथा चन्द्र वंश की राजधानी प्रयाग थी तथा इन दोनों के मध्य आर्यों का निवास था। इन क्षेत्रों में निवास के लिये आर्यों ने किसी भी अनार्यों से युद्ध नहीं किया वे पहले से ही इन क्षेत्रों मे निवास करते थे।
2. चन्द्रमा तथा सूर्य वंश का विस्तार अपने मूल केंन्द्र अयोध्या तथा प्रयाग (प्रतिष्ठान) से पूर्व दक्षिण व पश्चिम की और विस्तारित है। पश्चिमोत्तर से पूर्व की और आर्यों का विस्तार नहीं मिलता।
3. आर्यों ने भारत के अंदर ही अपना विस्तार कर उत्तरापथ पर अपना अधिकार जमाया साथ ही भारत के बाहर भी पश्चिमोत्तर के गिरिभागों को पार कर अफगानिस्तान, मध्य एशिया, इरान तथा भूमध्यसागर तक स्वयं को विस्तारित किया ।
4. ऋग्वेद मे उल्लेख मिलता है कि (10/75) आर्य इन नदियों को पार कर घोड़ो व रथों के साथ पश्चिम की ओर बढ़े तथा ऋग्वेद में नदियाँ पूर्व से पश्चिम की और दिखाई गई हैं, जो आर्यों के विस्तार का स्पष्ट द्योतक हैं।
5. वेदों मे पुरू के युद्ध का इतिहास मिलता है तथा सुदास व दस राज युद्ध का भी उल्लेख है, अतः पुराण व वेद स्वीकार करते हैं की आर्य बाहर से नहीं आये।

5.11.2 महाभारतोत्तर राज वंश शक

पुराणों की वंशावली में महाभारतोत्तर राजवंशों का विवरण महाभारत की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक है। छटी शताब्दी ईसा पूर्व का इतिहास जानने के लिये पुराणों का आधार प्रांसंगिक है, क्योंकि समय व्यतीत होता गया तो पुराणों की ऐतिहासिकता और अधिक निखरती गयी। शक, कण्व, व आन्ध्र के ऐतिहासिक ज्ञान का आधार पुराण ही हैं। यदि पुराण नहीं होते तो इन राजवंशों के केवल नाम ही ज्ञात हो पाते।

व्रहद्रथ, प्रद्योत, शिशुनाग वंश– व्रहद्रथ ने मगध साम्राज्य की स्थापना की यह जरासंध के पुत्र सहदेव के वंश का था। पुराणों के अनुसार व्रहद्रथ वंश के 32 राजाओं ने मगध पर शासन 1000 वर्षों तक किया। मत्स्य पुराण में उल्लेख मिलता है, कि इस वंश का अंतिम राजा रिपुंजन्य था, इसकी हत्या पुलिक नामक मंत्री ने की थी और उसने प्रद्योत वंश की स्थापना की (मत्स्य 270/30–31)। पुराणों के अनुसार प्रद्योत वंश में 5 राजा हुए तथा उनका अंत शिशुनाग द्वारा हुआ। शिशुनाग वंश का अंतिम राजा महापदम् नन्द था। पुराण के अनुसार नन्द वंश का उन्मुलन चाणक्य के सहयोग से हुआ।

उद्वरिष्यति कौटिल्यः समैद्वदिशभिः सुतान्। भूक्त्वा महीं वर्षशतम् ततो मोरर्यान गमिष्ययति।। (मत्स्य 170.21)

5.11.3 मौर्यों का पौराणिक वृत्त

पुराणों से मौर्य वंश क्रम जानने में सहायता मिलती है। मौर्यों का वंशानुक्रम मत्स्य पुराण (272), ब्रह्मांड पुराण, विष्णु पुराण (4/24) भविष्य पुराण (12/1) में वर्णित है। पुराणों के अनुसार मोर्यों का शासन काल 137 वर्षों तक रहा।पुराणों की वंशतालिका इस प्रकार है

चन्द्रगुप्त
अशोक
कुणाल
बंधुपालित
इन्द्रपालित
देववर्मा
शतधनुष

बृहद्रथ

शुंग वंश – शुंगों के इतिहास वृत्त की आधार शिला पुराण हैं। इनका इतिहास मत्स्य, वायु, ब्रह्मांड,व भविष्य पुराण में मिलता है।

पुष्यमित्रस्तु सेनानों रूद्रष्टय स व्रहद्रथान। करिष्यति वै राज्यम् षटविंशति समा नृपः।।

पुष्यमित्र की प्रमाणिकता पुराणोक्त है, शुंग वंश के अन्य राजाओं का विवरण भागवत पुराण के अतिरिक्त अन्य ग्रंन्थो में सुलभ नहीं है।

कण्व वंश–हर्ष चरित्र मे कहा गया है कि अति स्त्री व्यसन के परवश देव भूति को आमत्य वासुदेव ने रानी वेश धारण करके उसकी दासी पुत्री द्वारा मरवा दिया । शुंग का विनाश देवभूति को मार कर अमात्य वासुदेव द्वारा हुआ ।पुराण में इस घटना का उल्लेख है।

देवभूति तु शुंग राजनम् व्यसनिनम् तस्यैवामात्यः। कण्वो वसुदेव नामा तम् निहत्य स्वंयवनि मोक्ष्यति (विष्णु पुराण 4.24.39)

मत्स्य पुराण के अनुसार कण्व वंश की वंशावली निम्न है–

वसुदेव

भूमिमित्र

नारायण

सुशर्मन

मत्स्य पुराण में आन्ध्रों का वृतान्त मिलता है। सातवाहनों को पुराण में आन्ध्र या आन्ध्र जातीय कहा है (वायु पुराण 99/348–358, ब्रह्मांड पुराण 3/74/160–170)

विष्णुपुराण (4/24/12–13) भविष्य पुराण(12 /1/22–28) में भी आन्ध्रों का विवरण मिलता है। इनका मूल्य स्थान गोदावरी व कृष्णा नदियों की घाटियों मे था। मत्स्य पुराण के अनुसार इनका शासन काल 450 वर्ष का था। आन्ध्रराजाओं के संस्थापक सिमुक थे। पुराणों में शातकर्णि के दो उत्तराधिकारीयों के नाम मिलते हैं, यज्ञ श्री शातकर्णि के अभिलेख उपलब्ध हैं ।

सात वाहनों के परवर्ती राजवंश–इनका संक्षिप्त विवरण पुराणों में उपलब्ध है। पुराणों मे राजवंशों का संकलन सातवाहन के शासन काल तक पूरा हो चुका था। क्षेत्रीय राज वंशों में जिनकी चर्चा पुराणों में है, वह प्रमुख रूप से शक, हूण, वाकाटक, मग इत्यादि हैं। अतः परवर्ती राजवंशों का अल्प विवरण उपलब्ध है, इनके अतिरिक्त नैवैध्य राजवंशों की चर्चा वायु व ब्रह्माण्ड पुराण मे मिलती है। गुप्त साम्राज्य के समय का अल्प विवरण उपलब्ध है, उसके बाद का विवरण नहीं है। गुप्तों के मूल स्थान के विषय में वायु पुराण में श्लोक मिलता है।

अनुगंग प्रयागंम च साकेत मगधन्तथा। एतान जनपदान सर्वान भोक्ष्यन्ते गुप्तवंशराजा।। (वायुपुराण 99/283)

पूर्व गुप्तों के समकालीन कुछ राजवंश जैसें चंपावती के नाग, मथुरा के नाग, कालीं, सोराष्ट्र, अवन्ती आदि के राजवंशों की जानकारी मिलती है।

5.12 पुराणों मे समाहित अन्य विषय

जनमानस को वैदिक तत्वों का प्रतिपादन कराना पुराणों का उद्धेश्य था। कुछ नूतन विषयों का समावेश पुराणों मे किया गया। उदाहरणार्थ .– भूगोल, खगोल, धर्म, संस्कार, व्रतोपासना, दान, राजधर्म, दीक्षा, वैदिक साहित्य का विवरण,शैव,वैष्णव, शाक्तधारा, आयुर्वेद इत्यादि।

तीर्थ महात्यम – पुराणों में तीर्थ महिमा का विपुल वर्णन मिलता है। तीर्थ यात्री के पौराणिक प्रसंग को भूगोल का पूरक मानना चाहिए, उदाहणार्थ – स्कंद पुराण के रेवा खंड का समीक्षण कीजिए। रेवा नर्मदा के तीर पर स्थित है तथा तीर्थ का यह विवरण उस प्रदेश की भोगोलिक वृत की पूर्ति करता है। ब्रह्म पुराण मे तीर्थ का विशाल विवरण मिलता है ।

राजधर्म – पुराणों में राजा की उत्पत्ति , उसके कितने सहायक अंग ,उपांग तथा राजा के मुख्य धर्म क्या है ? जैसे विषयों का समुचित समाधान किया गया ह। मत्स्य पुराण में राजकुमार की शिक्षा दिक्षा तथा सप्तांग का उल्लेख किया गया है।

कृपणानाथ वृद्धानां विधवानां च योपिताम् । योगक्षेंग च वृतिं च तर्थेव परिकल्पयेत् ।। (मत्स्य पुराण 215/64)

विज्ञान – पुराणां में इन विधाओं का वर्णन संक्षिप्त है, परन्तु प्रमाणिक है।

वास्तु विद्या– मंदिर तथा राज प्रसाद की निर्माण विधि को वास्तु शास्त्र के नाम से जानते है, मत्स्य पुराण में वास्तु संबधित चार विषयों का विवेचन मिलता है–

1. वास्तु विद्या के मूल सिद्धान्त
2. स्थान का चयन तथा उसके निर्माण की रूप रेखा
3. देवो की मूर्तियो का निर्माण
4. मंदिर व राजप्रसादो की रचनात्मक रूप रेखा निधारण करना।

भूगोल – पुराणों में भू–विवरण की अपनी विशिष्टता है। यहां पर सप्तद्वीपों का उल्लेख मिलता है ।कप्तान स्पीक ने पुराणों के संकेतों को आधार मानकर मिस्र देश में बहने वाली अफ्रीका की नदी नील का पता लगाया। मेरू पर्वत पुराण परम्परा के अनुसार इला वृत्त के मध्य में स्थित है, जो जम्बुद्वीप का केन्द्र माना जाता है। इला वृत्त के चारों ओर मेरू पर्वत है तथा पौराणिक भूगोल मे तीनां द्वीप जम्बुद्वीप, कुशद्वीप तथा शाकद्वीप की पूरी जानकारी उपलब्ध है ।

गंगा की सप्तधारा का वर्णन वायु पुराण (47/37–51) में मिलता है, भारत वर्ष के नौ खंडों का विभाजन पुराणों मे मिलता ह–
1. इन्द्रद्वीप 2. कसेरू 3. ताम्रपर्ण 4. गभस्तिमान 5. नागद्वीप 6. सौम्य 7. गंधर्व 8. वरूण 9. भारत

पौराणिक भूगोल में पर्वतों के दो प्रकार मिलते है–

1. **वर्ष पर्वत** – ये पर्वत एक वर्ष को दूसरे वर्ष से पृथक करते हैं
2. **कुल पर्वत** – देश के भीतर प्रांतों की सीमा बनाते हैं

ईश्वर दर्शन– पुराण कहते हैं कि ब्रह्म सब प्रकार के नाम ,रूप तथा भाव से परे है। वेद कहते हैं **एकं सदविप्रा बहुदा वदन्ती** पुराणों मे उल्लेख है कि **एकम सत् प्रेम्णा बहुधा भवति** पुराणों ने उद्घाटित किया है कि एक ही परं तत्व विभिन्न रूप और नाम में निहित है। भगवान की विभूतियों के दर्शन हमें पुराणों में मिलते ह। पुराणों ने उदघाटित किया है कि एक ही परम तत्व भगवान विभिन्न नामों में विचित्र शक्ति, सामर्थ्य तथा सौन्दर्य को प्रकट कर सम्पूर्ण संसार मे लीला विलास कर रहे हैं तथा प्रत्येक सम्प्रदाय किसी न किसी रूप मे उसकी उपासना करता है। पुराणों ने सर्वातीत् ब्रह्म को सबके मध्य में लाकर मनुष्य के अंदर देवत्व के बोध को उजागर किया। वैदिक तत्वों को रोचक रूप से जनसाधारण के समक्ष प्रस्तुत किया। वैदिक धर्म को लोकप्रिय बनाने का श्रेय पुराणों को ही है।

वैष्णव का पौराणिक स्वरूप– ऋग्वेद के अनुसार विष्णु सौर देवता है, यास्क का कथन है कि रश्मियों द्वारा व्याप्त होने के कारण विष्णु नाम से अभिहित है। पुराणों ने इस जगत के मूल में वर्तमान, नित्य, अजन्मा, अक्षय, अव्यव,एकरस तथा हेय के अभाव से निर्मल परब्रह्म को विष्णु की संज्ञा दी है, वह सर्वदा है।

शक्यते वक्तुं यः सदास्तीति केवलम (विष्णुपुराण 1/2/11)

विष्णु सर्वव्यापी है, और विश्व उन्हीं में बसा है, इसलिए वे वासुदेव के नाम से विश्रुत है।

शिव का पौराणिक स्वरूप– शिव ही सत्य ज्ञान तथा अनन्त रूप है, सबका मूल शिव है, शिव के दो स्वरूप हैं, सगुण व अगुण, अगुण अर्थात निर्विकारी स्वरूप, सगुण अर्थात जगत की उत्पति वाला रूप।

विष्णु के वाम अंग से हरि की, दक्षिण अंग से ब्रह्मा की तथा हृदय से रूद्र की उत्पत्ति होती है। तथा तीनों का मूलाधार शिव ही हैं। शिव व विष्णु के एक्य का प्रतिपादक विष्णु पुराण के इस पद से होता है।

स एवाहम् महादेवः स एवाहम् जर्नादनः । उभयोरन्तरं नास्ति घटस्थजलयोरिव।।

शिव तथा शक्ति में भी अभिन्नता है, दोनों का संबन्ध अविनाशी है।शिव के साथ शक्ति छिपकर निष्क्रिय रहती है और कभी प्रकट होकर सक्रिय रहती है

एव परस्पराक्षेपा शक्तिशक्तिमतोः स्थिता। न शिवेन बिना शक्तिन च शकत्या बिना शिव।।

5.13 पुराण संहिता

मत्स्य पुराण (अ• 53,/3) के अनुसार सब शास्त्रों में ही पुराण की रचना ब्रह्मदेव ने सबसे पहले की और इसके बाद उनके मुख से वेद विनिर्गत हुये। व्यास द्वारा पुराण संहिता का प्रणयन करके पुराणों को व्यवस्थित रूप से प्रतिष्ठित किया गया व लोमहर्षण को पढ़ाया गया तथा उसके प्रचार का साधन उन्ही को बनाया गया। लोमहर्षण के द्वारा पुराण संहिता बनाई गई, जो व्यास की पुराण संहिता पर आधारित थी। , पाराशर ऋषि, व्यासमुनि व शुकदेव ने पुराणों के प्रणयन में अपनी शक्तियां लगा दी, विष्णु पुराण का श्रेय पाराशर ऋषि को , 18 पुराणों का प्रणयन व्यास मुनि को तथा प्रसार की महिमा का श्रेय शुकदेव जी को प्राप्त है। ये पुराण संहिताएँ भी एकार्थवाचक होने पर भी पाठान्तरों से भिन्न थीं, उनमें मैलिक कोई पार्थक्य नही था।

वेद व्यास ने आख्यान, उपाख्यान, गाथा व कल्प शुद्धि ये पुराण संहिता के उपकरण है इनके अधार पर **पुराण संहिता** की रचना की है इनका विवरण निम्न है।

आख्यान, उपाख्यान– यहां पर आख्यान से तार्त्पय स्वंय दृष्टा अर्थ का कथन तथा उपाख्यान अर्थात सुने गये अर्थ का कथन आकार में जो वृहत हो वह आख्यान जो स्वल्प हो वह उपाख्यान।इन शष्दों के अर्थ के विषय में इतना तो निश्चित है कि ये दोनों कथानक के अर्थ को स्पष्ट करते है।

इतिहास – जयनामेतिहासोहयं श्रोतव्यो विजिगोषुणा

अमर सिंह के अनुसार इतिहासः पुरावृतम् है, अमरसिह की अपनी कृति नामलिंगअनुशासनम् (अमरकोश) में वह कहते हैं–

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशों मन्वंतराणि च । वंशानूचरितम् चैव पुराणम् पंचलक्षणम् ।।

गाथा– पुराणों में भी ऐसी गाथाएँ उपलब्ध हैं जिसमें किसी महान व्यक्ति का सार्वभौम जीवन दर्शन संक्षेप में ही एक दो श्लोक में अभिव्यक्त किया गया है, परन्तु अधिकाशं में ये गाथाएँ भारतीय साहित्य के सुदूर अतीत काल से सम्बद्ध हैं तथा ऐतिहासिक व्यक्ति के दान, महत्व, अभिषेक आदि घटनाओं का वर्णन हैं। कभी–कभी तो एक ही लघुकाय गाथा के भीतर एक वृहत इतिहास या आख्यान छिपा रहता है। सचमुच ये प्रवाहमान परम्परा की महत्वपूर्ण गाथाएँ इतिहास तथा पुराण दोंनों के निमार्ण मे उपकरण का काम करती हैं ।

कल्पशुद्धि – कल्प का तात्पर्य है एतन्नामक वेदांग जिसके भीतर श्रौत, गृह्म, धर्मसूत्र, सदाचार तथा संस्कार सबका अनतर्भाव है ।

5.14 पुराणों के लक्षणों का परिचय

पुराणों की सर्वत्र मान्यताओं के आधार पर पॉच विषयों का उल्लेख मिलता है–

1. **सर्ग –** जगत के नाना पदार्थों की उत्पत्ति सर्ग कहलाती है। प्रकृति में तीन गुण होते हैं, तथा जब ये गुण क्षुब्ध होते हैं तब महत् की उत्पत्ति होती है। महत् से तीन तत्व तामस्, राजस् व सात्विक् बनते हैं। इनमें त्रिविध अंहकार से तथा अंहकार से पंचतनमात्रा , इन्द्रियॉ, पंचमहाभूत की उत्पति होती है। इसी का नाम सर्ग है। (भागवत पुराण 12/7/11)
2. **प्रतिसर्ग–** सर्ग से विपरित अर्थात् प्रलय इस ब्रह्माड़ का स्वभाव प्रलय हो जाता है। तथा प्रलय चार प्रकार का होता हैं। नैमित्तिक, प्राकृतिक, नित्य, आत्यन्तिक।
3. **वंश –** भूत, भविष्य व वर्तमानकालीन संतान परंपरा को वंश नाम से पुकारते हैं। राजाओं की सनातन परंपरा तथा ऋषियों की वंशावली का उल्लेख हैं।

4. **मन्वन्तर–** यह शब्द सृष्टि के काल का द्योतक है। मन्वन्तर 14 होते हैं और प्रत्येक का 1 अधिपति विशिष्ट मनु होता है। इनके सहयोगी 5 पदार्थ होते हैं। मनु, देवता, मनुपुत्र, इन्द्र, सप्तऋषि, भगवान, ये 6 विशिष्टताओं से युक्त समय को मन्वन्तर कहते हैं।
5. **वंशानुचरित –** परंपराओं तथा राजाओं का विशिष्ट विवरण वंशानुचरित कहलाता है।

पुराणों के 10 लक्षण –

श्रीमद्भागवत पुराण तथा ब्रह्मवैर्वत पुराण में 10 लक्षण निर्दिष्ट हैं। सर्ग, विसर्ग, वृत्ति, रक्षा, अंतराणि, वंश, वंशानुचरित , संस्था, हेतु, उपाश्रय।

1. **सर्ग –** जगत के नाना पदार्थों की उत्पत्ति सर्ग कहलाती है। प्रकृति में तीन क्षुब्ध गुण होते हैं तथा जब ये गुण क्षुब्ध होते हैं तब महत् की उत्पत्ति होती है। महत् से तीन तत्व तामस्, राजस् व सात्विक् बनते हैं। इनमें त्रिविध अंहकार से तथा अंहकार से पंचतनमात्रा , इन्द्रियॉ, पंचमहाभूत की उत्पति होती है। इसी का नाम सर्ग है। (भागवत पुराण 12/7/11)
2. **विसर्ग–** जीव की सृष्टि अच्छी व बुरी वासनाओं की प्रधानता के कारण जो चराचर शरीरात्मक उपाधि से विशिष्ट जीव की सृष्टि क्रिया करते हैं। उसे विसर्ग कहते हैं।
3. **वृत्ति –** मनुष्य जीवन निर्वाह के लिये जिन वस्तुओं का उपयोग करता है वह वृत्ति कहलाती है।
4. **रक्षा–** इसका संबंध अवतार प्रक्रिया से है, भगवान की अवतार लीला विश्व रक्षा के लिये होती है। इसलिये इसे रक्षा की संज्ञा दी गई है।
5. **अंतराणि –** यह शब्द सृष्टि के काल का द्योतक है। मन्वन्तर 14 होते हैं और प्रत्येक का 1 अधिपति विशिष्ट मनु होता है। इनके सहयोगी 5 पदार्थ होते हैं। मनु , देवता, मनुपुत्र, इन्द्र, सप्तऋषि, भगवान, इन 6 विशिष्टताओं से युक्त समय को अंतराणि कहते हैं।
6. **वंश –** भूत, भविष्य व वर्तमान कालीन संतान परंपरा को वंश नाम से पुकारते हैं। राजाओं की सनातन परंपरा तथा ऋषियों की वंशावली का उल्लेख हैं।
7. **वंशानुचरित –** परंपराओं तथा राजाओं का विशिष्ट विवरण वंशानुचरित कहलाता है।
8. **संस्था –** सर्ग से विपरित अर्थात् प्रलय, इस ब्रम्हा का स्वरूप प्रलय हो जाता है। तथा प्रलय चार प्रकार हैं। नैमित्तिक, प्राकृतिक, नित्य, आत्यन्तिक।
9. **हेतु –** जीव अदृश्य के द्वारा विश्व सृष्टि या प्रलय का कारण होता है। उसे भागवत् पुराण में हेतु कहा गया है।
10. **उपाश्रय –** जीव की तीन वृत्तियॉ हैं – जागृत, स्वप्न, तुरीय इन दशाओं में चैतन्य का निवास है। जो क्रमशः विश्व , तेजस् तथा प्राज्ञ के नाम से प्रख्यात है। इन अवस्थाओं से परे तुरिय तत्व के रूप में जो लक्षित होता है वह ब्रह्मा है और उसे उपाश्रय कहते हैं।

5.15 पुराणों का अवतरण

पुराणों के अवतरण के विषय मे दो धाराओं का वर्णन मिलता है–

1. व्यासपूर्व 2.व्यासोत्तर

व्यास का कार्य था पुराण संहिता का निर्माण करना उस युग मे पुराण का अर्थ लोक प्रचलित था। प्राचीन ग्रन्थों में पुराण शब्द का प्रयोग मिलता है संहिता का नहीं। अतः यह किसी ग्रन्थ विशेष का द्योतक न होकर विघा विशेष का वाचक है। स्कंद पुराण में उल्लेख मिलता है कि कालांतर मे वह त्रिवर्ग का साधन था। ब्रहमा ने सभी शास्त्रों में पुराणों का स्मरण किया और उनके मुख से वेद निःसृत हुए।

पुराण सर्वषास्त्राणां प्रथम ब्रहमना समृतम, नित्यं शष्दमयं पुण्यं शतकोटि प्रविस्तरम्ष अनन्तरं च वकत्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिःसृता

यहा पर शतकोटि प्रविस्तरम् को पुराण कहा गया है (शतकोटी किसी निशिचित रूप का संकेत न होकर द्योतक है पुराण का)

पुरा परम्परा वष्टि पुराणं तेन तत स्मृतम् । अस्मातपुरा ब्रहमनतीदं पुराणं तेन तत् स्मृतम् ।।(वायुपुराण 1/103/55) स्कंद तथा मत्स्य परंपरा में पुराणों को त्रिवर्ग अर्थात धर्म, अर्थ, काम तीनों विषय का प्रकाशक कहा गया है। पुराण लौकिक शास्त्र है, यह वेद से भिन्न है, परन्तु तदानुकुल शास्त्र माना जाता है व पुराण लोक गौरव से परे है। पुराणों में दो धाराएं उल्लेखित हैं वेदधारा, व पौराणिक धारा। यहां पर वेद धारा धार्मिक है तथा पुराण धारा लोक वृत्त का अनुशीलन है।

इतिहास पुराणानि भिघन्ते लोकगोरवात

इसका स्पष्टीकरण ऋषि मार्कण्डेय ने किया है कि ऋषियों ने वेद ग्रहण किया और मुनियों ने पुराण को ग्रहण किया। यहॉ पर ऋषि से तात्पर्य तपस्या से पूत मन्त्र दृष्टा व्यक्ति ऋषि है ।मुनि अर्थात दुःखों से उदिग्न न होने वाला स्थिर बुद्धि व्यक्ति मुनि है

5.16 पुराणों की प्रतिष्ठा (आर्ष ग्रन्थो मे उपलब्ध सुत्रो के आधार पर)

इतिहास पुराणाभ्यां वेद समुपबृहयेत् ।विमेत्यल्पश्रुताद वेदो मामय प्रहरिष्यति ।।

महाभारत आदिपर्व (1/267–272)

त्रृचय : समानि छन्दसि पुराणं यजुषा सह उच्छिष्टा ज्र्जासरे सर्व दिदि देवा जदविश्रिताः

;अर्थववेद –(11/7/24)

तमितिहासश्च पुराणं च गाथाश्च नाराशंसी चश्वानुव्ययलन ;

अर्थव–(15/6/11)

पुराणां सर्वशाश्त्राणं प्रथंम ब्रहमणा स्मृतम्, अनन्तर च वकोभ्यो वेदास्तस्य इतिहास पुराणां पंचम वंदानां वेदम ;

न्यायदर्शन (4/1/62)

स्वाध्यायं श्रावयते चिञये धर्मशास्त्राणी चैव हि ।आरव्याानानी इतिहास पुरानानि खिलानी च ।।

(मनुस्मृति 3/232)

पुराणों की प्रासंगिकता निम्न है।

1. पुराण भारतीय इतिहास की प्राचीन परंपरा के द्योतक हैं, जो जनमानस के लिये सम्मान जनक हैं।
2. भारतीय दर्शन, इतिहास व धर्म शास्त्रों का विवेचन विस्तार पूर्वक पुराण में मिलता है।
3. पुराणों में वर्णित आख्यान, उपाख्यान व नाटक अन्य इतिहासकारों के लिए प्रेरणा दायक हैं।
4. जीवन के गंभीर पहलुओं को समझने के लिये पुराण का प्रतिकात्मक स्वरूप समर्थ है।
5. पुराण किसी वर्ग विशेष के लिये नहीं वरन जन साधारण के लिए श्रद्धा व आदर्श माने जाते हैं।

5.17 सारांश

उत्तरवैदिक काल मे अंगिरस , अर्थवन और भृगु कुल ने आपस में मिलकर एक भृंगविंगरस समूह का निर्माण किया इनका मिश्रण इतिहास लिखने के लिये महत्वपूर्ण था इनका उल्लेख ऋग्वेद में आया है, इनका इतिहास पुराण परंपरा से बहुत अंतरंग संबंध रहा ह। छान्दोग्य उपनिषद के अनुसार अथवर्वेद जो इस परपंरा का एक ही ग्रन्थ है, इतिहास पुराण से वैसे ही सबंधित है, जैसे ऋक, ऋग्वेद से ,यजुस्, यजुर्वेद से और साम, सामवेद से ।वही उपनिषद और स्पष्ट करके कहता है कि अथर्वगिरस मधुमक्खी और इतिहास पुराण फूल है ।

इतिहास की मौखिक परम्परा पॉच विशिष्ट स्वरूप में प्राप्त होती है। गाथा, नाराशंसी, आख्यान, इतिहास और पुराण। , पुराण अधिक व्यापक शब्द है, जो है तो विशेषण, लेकिन संज्ञा के रूप यह अर्थववेद में आ चुका है, जहॉ एक परिच्छेद मे इसका निश्चय अर्थ ''प्राच्य विद्या'' है ।

पुराण का दूसरा अर्थ मिलता है प्राचीन जनश्रुति, प्राचीन भारत में मनुष्य अतीत को चित्रित करने के लिये मानवीय क्रिया कलापों में सक्रिय सहभागिता करते थे तथा कृपा मोक्ष मुक्ति के लिये इतिहास और पुराण को एक आदर्श के विकल्प के रूप में देखते थ, क्योंकि इनमें जनश्रुतियां , दंत कथाओं व ऐतिहासिक तथ्य भी हैं।

रोमिला थापर के अनुसार इतिहास पुराण को कपोल कल्पित कहकर अस्वीकार करने की बजाय यदि उसे राज्य रूपी संस्था प्रणाली के निर्माण के विभिन्न चरणों को जोड़कर देखा जाये तो इसमें एक सशक्त आधार की झलक मिल सकती ह। इतिहास पुराण परम्परा ने भारतीय ज्ञान की परम्परा को सुरक्षित रखा तथा पुराणों का विस्तार होता रहा जो पुराण उपपुराणों के रूप मे हमारे समक्ष हैं।

5.18 स्वमूल्यांकन प्रश्न

टिप्पणी करिये–

1. पुराण शब्द से आप क्या समझते है।
2. पुराणों के वर्गीकरण पर टिप्पणी किरिये ।

लघुउत्तरीय प्रष्न –

1. प्रचलित 18 पुराणों के नाम लिखिए ।
2. पुराणों के काल क्रम को समझाइये ।

दीर्घउत्तरीय प्रष्न –

1. पुराणों मे उल्लिखित एतिहासिक बिन्दुओं का वर्णन कीजिये ।
2. पुराणों मे स्थित विषयों को किस प्रकार समझाया गया है, इस पर प्रकाश डालिये
3. भारतीय संस्कृति में पुराणों की महत्ता को रेखांकित किजिये ।
4.

5.19 सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. सिंह भगवान ,प्राचीन भारत के इतिहासिकार , सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन नई दिल्ली 2011
2. चौबे झारखण्डे , इतिहास दर्शन विश्वविघालय प्रकाशन वाराणसी 2011
3. पाठक विश्वंभर शरण अनुवादक प्रदीप कांत – प्राचीन भारत के इतिहासकार ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन नई दिल्ली 2001
4. श्री धरन ई• इतिहास लेख अनुवादक मानजीत सिंह सलूजा ओरियंट ब्लैकस्वॉन नई दिल्ली 2011
5. उपाध्याय आचार्य बलदेव पुराण विमर्श

इकाई–छहः भारत में जीवनी साहित्य का विकास

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 प्राचीन काल में जीवनी साहित्य का विकास

6.3.1 जीवन चरित्र लेखन

6.3.2 राजपूतकालीन

6.4. मध्यकाल में जीवनी साहित्य का परिचय

6.4.1 दिल्ली सल्तनत कालीन आत्मकथा लेखन

6.4.2 मुगलकालीन आत्मकथा लेखन

6.4.3 अकबर का काल

6.4.4 जहांगीर का काल

6.5 आधुनिक काल में जीवनी साहित्य लेखन

6.5.1 महात्मा गांधी का सत्य का प्रयोग

6.5.2 सुभाषचंद्र बोस का इंडियन स्ट्रगल

6.5.3 डॉ.राजेन्द्र प्रसाद का इंडिया डिवाइडेड

6.5.4 मौलाना अबुल कलाम आजाद का इंडिया विंस फ्रीडम

6.6 सारांश

6.7 अभ्यास हेतु प्रश्न

6.8 संदर्भ ग्रंथ

6.1 प्रस्तावना

भारत में जीवनी साहित्य का विकास प्राचीन काल से प्रारंभ होता है । हर्षवर्धन ने स्वयं तीन नाटकों की रचना की जिससे उसकी साहित्य रूचि का बोध होता है। राजपूत काल में भी इस दिशा में पर्याप्त प्रगति हुई परन्तु भारत में इस्लाम के आगमन से इसमें तीव्रता आई और जीवनी साहित्य लेखन की परम्परा विकसित हुई। अरबों एवं तुर्कों ने इसमें अधिक रूचि ली और परम्परा को आगे बढ़ाया। सीरत तबकात के साथ साथ जीवनी लेखन को अब निश्चित आधार मिला। मध्यकाल के बाद आधुनिक काल में इसमें और अधिक तीव्रता आ गई। यह जीवनी साहित्य इतिहास स्रोत के रूप में काफी सहायक सिद्ध हुआ।

6.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आप जान सकेंगें कि

- भारत में किस प्रकार जीवनी साहित्य का विकास हुआ।
- भारत में जीवनी साहित्य की लोकप्रियता के क्या कारण थे।
- भारत में इस्लाम के आगमन से इसमें किस प्रकार तीव्रता आई।
- मध्यकाल में जीवनी साहित्य लेखन को किस प्रकार एक निश्चित आधार मिला।
- मध्यकाल के पश्चात आधुनिक काल में इसमें पर्याप्त विकास हुआ।
- जीवनी साहित्य से तत्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं की पुष्टि होती है, अर्थात एतिहासिक स्रोत का कार्य भी करता है।

6.3 प्राचीन भारत में जीवनी साहित्य

जीवनी साहित्य के इतिहास लेखन का प्रारम्भ हर्षवर्द्धन के काल से माना जाता है, वह स्वयं एक उच्चकोटि का विद्वान एवं विद्या प्रेमी था। उसे संस्कृत के तीन नाटक ग्रन्थों का रचियिता माना जाता है –प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानन्द।

प्रियदर्शिका–चार अंको का नाटक हैं जिसमें, वत्सराज उदयन तथा प्रियदर्शिका की प्रणय कथा का वर्णन है। 'रत्नावली' में भी चार अंक हैं तथा यह नाटक वत्सराज उदयन तथा उसकी रानी वासदत्ता की परिचायिका नागरिका की प्रणय कथा का बड़ा ही रोचक वर्णन करता है। ' नागनन्द –बौद्ध धर्म से प्रभावित रचना है और इसमें पांच अंक हैं। इस नाटक में जीमूतवाहन नामक एक विद्याधर राजकुमार के आत्महत्या की कथा वर्णित है।

बाणभट्ट ने हर्षचरित में उनकी काव्य चातुर्य की प्रशंसा की है तथा बताया है कि उसकी कविता का शब्दों द्वारा पर्याप्त रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता। अन्यत्र बाण लिखते हैं कि ' काव्य कथाओं में वह अमृत की वर्षा करता था जो उसकी अपनी वस्तु थी, दूसरे से प्राप्त हुई नही।' भारत की साहित्यिक परम्परा में कवि के रूप में हर्ष को सत्रहवीं शदी तक स्मरण किया गया है। विद्वान जयदेव ने हर्ष को भास, कालिदास, मयूर आदि कवियों की समकक्षता में रखते हुए उसे, कविताकामिनी का साक्षात हर्ष से निरूपित किया है। भारतीय साहित्य के अतिरिक्त चीनी यात्री इत्सिंग ने भी हर्ष के विद्या–प्रेम की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि –'उसने जीमूतवाहन की कथा के आधार पर एक नाटक ग्रन्थ लिखा तथा बाद में उसका मंचन करवाया ' इससे उसकी लोकप्रियता काफी बढ़ गई थी। इस नाटक का तात्पर्य नागानन्द से लगता है।

उत्तर प्राचीन भारत में भी अनेक शासकों ने अपनी विद्वता एवं विद्या–प्रेम का प्रमाण प्रस्तुत किया है। राष्ट्रकूट नरेश विद्वान तथा विद्या प्रेमी थे और उनके दरबार में उच्चकोटि के विद्वान आश्रय पाते थे। अमोधवर्ष ने कन्नड़ भाषा में प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ 'कविराजमार्ग' लिखा था। पल्लव नरेशों का शासन संस्कृत तथा तमिल दोनों ही भाषाओं के साहित्य की उन्नति का काल रहा। कुछ पल्लव नरेश उच्चकोटि के विद्वान थे। महेन्द्र वर्मा प्रथम ने ' मत्तविलास प्रहसन ' नामक हास्य–ग्रन्थ की रचना की थी। इसमें कापालिकों एवं बौद्ध भिक्षुओं की हँसी उड़ाई गयी है। चोल राजाओं का शासनकाल तमिल भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए प्रसिद्ध है। बुद्धि मित्र की प्रमुख कृति वीर–रसोल्लियम है। वह चोल शासक वीर राजेन्द्र को महान तमिल विद्वान बताता है।

6.3.1 जीवन चरित्र लेखन

बाणभट्ट रचित हर्षचरित कान्यकुन्ज के शासक हर्ष पर लिखी एक आख्यायिका है। बाण भार्गव कुल का था तथा इतिहास में रूचि उसे सम्भवतः अपनी पारिवारिक परम्परा से प्राप्त हुई होगी। हर्षचरित इतिहास ग्रन्थ ना होकर काव्य की श्रेणी में आता है। छठी शताब्दी ईस्वी से काव्य उस क्षेत्र में अतिक्रमण करता दिखाई पड़ता है जो पहले इतिहास का क्षेत्र माना जाता था। इतिहास लेखन पर इस प्रवृत्ति के गम्भीर प्रभाव पड़े, इन इतिहास काव्यों में प्रत्यक्ष तथ्य–संप्रेषण के स्थान पर अप्रत्यक्ष तथा लक्षणात्मक अभिकथन मिलते हैं, जिनका मूल उद्देश्य सौन्दर्य शास्त्रीय प्रभाव उत्पन्न करना है। इस प्रकार ऊपर चर्चित गौण इतिहास लेखन के साथ ही प्राथमिक इतिहास लेखन विद्या में भी तथ्यपक्ष की अपेक्षा कला पक्ष की सर्वोपरिता प्रतिष्ठापित होने लगी।

बाण का अभिप्राय घटनाओं का यथारूप लेखन नहीं है बल्कि अपने नायक हर्ष द्वारा एक विशिष्ट लक्ष्य की उपलब्धि है जिसमें विभिन्न घटनाएं अनिवार्यतः परिणत होंती हैं हर्ष के पूर्वज पुष्यभूति को भी श्री

(भाग्य की देवी) से यह वर प्राप्त हुआ था कि वह एक स्वतंत्र राजवंश की स्थापना करेगा जिसमें हर्ष नामक सम्राट होगा और वह स्वयं उसकी सेवा में रहेगी। काव्य में नायक द्वारा अन्त में किसी विशिष्ट स्त्री की प्राप्ति चरम लक्ष्य की प्राप्ति का प्रतीक होती है। हर्ष चरित में नायक की बहन राज्यश्री द्वारा (जैसा का नाम से भी स्पष्ट है) इस प्रतीकात्मकता का प्रतिबिम्ब होता है। राज्यश्री मौखरी सम्राट से विवाह करती है। गौड़ तथा मालव शासक मिलकर उस पर आक्रमण करते हैं जिसमें वह मारा जाता है। राज्यश्री जंगलो में भाग जाती है। हर्ष का बड़ा भाई राज्यवर्धन शत्रुओं को मार भगाने के उद्येश्य से प्रयास करता है; सफल होने पर भी वह गौड़ शासक के षड़यंत्र का शिकार बन जाता है। हर्ष अनिछा से शासक बनता है और शत्रुओं से बदला लेने की शपथ लेता है। अपने सेनानायक के नेतृत्व में वह एक सेना भेजता है और स्वयं अपनी बहन की खोज में निकलता है। बाण ने युद्ध के विवरण में कोई रूचि नही दिखाई हैं तथा केवल हर्ष द्वारा राज्यश्री की प्राप्ति तदनन्तर उसके द्वारा राज्य प्राप्ति पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। अपने विवरण में संभवतः सत्य से दूर हुए बिना ही बाण अपने कथानक को काव्य शैली में प्रस्तुत कर सका है।

6.3.2 राजपूत कालीन

लगभग 1192 में जयानक ने, उत्तरी राजस्थान के शासक पृथ्वीराज तृतीय के ऊपर 'पृथ्वीराज विजय' नामक काव्य की रचना की। जयनक कश्मीरी ब्राहमण था और वह सम्भवतः भार्गव कुलोत्पन्न था। वह पृथ्वीराज को राम का अवतार मानता है। और इस प्रकार उसे सूर्यवंश से सम्बद्ध करता है। पृथ्वी पर उसके अवतरण का प्रमुख प्रयोजन तुर्कों का विनाश था। जयनक पृथ्वीराज के तुर्कों पर विजय (1191) का विवरण देता है मानो वह निर्णयात्मक युद्ध हो। किन्तु ,वस्तुतः वह निर्णयात्मक युद्ध नहीं था क्योंकि शीघ्र ही तुर्कों ने पुनः पंजाब पर आक्रमण कर दिया और युद्ध में पृथ्वीराज पराजित हुआ और मारा गया। ऐसा प्रतीत होता है कि जयनक अपने अपूर्ण काव्य को लेकर कश्मीर चला गया जहां पन्द्रहवीं शताब्दी में जोनराज ने इस पर एक टीका लिखी।

जयनक काव्य के कई सर्गों में चाहमानों का पूर्ववर्ती इतिहास देता है। उसकी मुख्य कथावस्तु यह है कि तुर्को ने आक्रमण करके मन्दिरों इत्यादि का विध्वंस किया जिससे ब्रह्मा ने विष्णु से अवतार लेने की प्रार्थना की। विष्णु ने पहले चाहमान को उत्पन्न किया जिससे चाहमान वंश उद्भव हुआ। सातवीं शताब्दी से उसका इतिहास अधिक प्रमाणिक होने लगता है तथा अन्य स्त्रोतों एवं अभिलेखों से इसकी पुष्टि होती है। सम्पूर्ण ग्रन्थ काव्यात्मक शैली में है जिसमें नायक संयोगिता के रूप में भाग्य–देवी को प्राप्त करमे की चेष्ठा करता है और सफल भी होता है। काव्य में कई स्थानों पर कवि सुलभ कल्पनाओं तथा अतिमानवीय घटनाओं की प्रभूतता दिखाई पड़ती है।

अपभ्रंश में लिखित 'पृथ्वीराजरासो' को पृथ्वीराज तृतीय के दरबारी कवि चन्द्र की रचना मानी जाती है। इसमें बहुत कुछ बाद में जोड़ा गया है और अब इस ग्रन्थ की कई पाण्डुलिपियां प्राप्त है। इसके अधिकांश भाग चौदहवी शताब्दी के बाद के माने जाते हैं किन्तु किसी अंश के विषय की तिथि के बारे में निश्चयात्मक रूप से कह सकना कठिन है।

6.4 मध्यकाल में जीवनी साहित्य का परिचय

भारत पर अरबों एवं तुर्कों के विजय तथा सल्तनत की स्थापना के पश्चात जीवनियां लिखने की प्रवृत्तियां बढ़ जाती हैं। पूर्व–इस्लाम काल में ही अरबों के बीच वंशावलियॉ लिखने की परम्परा विकसित थी। इन्हें " अन्साब " कहते थे। यह परम्परा मुसलमान अरबों ने भी बनाए रखी। उन्होने "अस्मा–उर–रिजाल" के रूप में एक नई श्रेणी की रचना प्रस्तुत की जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के सम्बन्ध में संक्षिप्त जीवन–वृतान्त संकलित किए गये थे। धार्मिक उपयोगिता के दृष्टिकोण से सर्वप्रमुख रचनाएं हजरत मुहम्मद साहब की जीवनियों के रूप में थी जो "सीरत" कहलाती थीं। 'सीरत' में हजरत मुहम्मद साहब के जीवन एवं उनके

आदर्शो को वर्णित किया गया है। 'सीरत' के अलावा सामान्य इतिहास से सम्बंधित ग्रन्थ 'तबकात' की भी रचना हुई जिनमें विभिन्न लोगों के सम्बन्ध में ऐतिहासिक जानकारी प्रस्तुत की गई। दूसरी ओर ईरान में ईरानियों का दृष्टिकोण कुछ भिन्न था और ईरानी इतिहासकारों की अभिरूचि विशेषकर शासक वर्ग की जीवनी और उपलब्धियों में थी और इसी का वर्णन उन्होंने अधिक मात्रा में किया है। यही प्रभाव मध्यकालीन भारत के इतिहासकारों की रचना में भी स्पष्टतः देखा जाता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि ईरान के माध्यम से जो विभिन्न प्रभाव भारत पहुँचे उनमें इतिहास–लेखन की कला भी थी।

दिल्ली सल्तनत की 1206 ई० में संस्थापन के साथ ही भारत में तुर्कों की सत्ता को एक निश्चित आधार मिला। मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन का काम भी इसी शताब्दी से प्रारम्भ हुआ। सल्तनत कालीन इतिहास के स्त्रोत अधिकतर लिखित ग्रन्थों और रचनाओं के रूप में है जिन्हें साहित्यिक स्त्रोत की संज्ञा दी जा सकती है। इनकी कई श्रेणियां निर्धारित की गई है जो निम्नलिखित हैं –

1 सामान्य इतिहास की रचनाएँ

2 भारतीय इतिहास की रचनाएँ

3 प्रशस्तियां

4 नैतिक उपदेश सम्मिलित इतिहास

5 काव्य–रूपी इतिहास

6 आत्मकथाएं

प्रशस्तियों की परम्परा प्राचीन काल में भी देखी जा सकती है। मध्यकालीन प्रशस्तियों के लिए 'मनाकिब एवं फजायल' के शब्द का प्रयोग किए गये हैं। अनेक शासकों के काल में उनकी उपलब्धियों, उनकी महानता की व्याख्या की गई है। शम्स–ए–शिराज अफीफ ने अपनी पुस्तक तारीख–ए–फिरोजशाही में फिरोजशाह तुगलक के जीवन और कार्यों का भी वर्णन है। यह पुस्तक तैमूर के आक्रमण के तुरंत बाद लिखी गई थी। अफीफ, फिरोजशाह के शासनकाल को शान्ति एवं संपन्नता के युग के रूप में दर्शाता है। वे फिरोज के शासन के सिर्फ सकारात्मक पक्षों को ही उजागर करते हैं। इतना ही नही, उन्होंने नकारात्मक तथ्यों को भी सकारातमक बनाने का प्रयास किया है। हिन्दुओं के प्रति अफीफ कां विचार मिनहाज और बरनी से ज्यादा उदार था अफीफ यह भी मानते थे कि ऐतिहासिक कार्य ईश्वर द्वारा ही निर्धारित होता है। अनेक कमजोरियों के बावजूद अफीफ कृत ' तारीख–ए–फिरोजशाही ' सामान्य जनता की स्थिति पर प्रकाश डालती है। उनके ग्रन्थ से पतन्नोन्मुख सल्तनत पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। अफीफ की रचना का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि उन्होंने इतिहास–लेखन में एक नई परम्परा का आरम्भ किया, जो अबुल फजल के समय में अपने विकास के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई।

6.4.1 दिल्ली सल्तनत कालीन आत्मकथा लेखन

दिल्ली सल्तनत काल में फिरोजशाह तुगलक एक मात्र सुल्तान है जिसने अपनी आत्मकथा लिखी है। हालांकि प्रो०हबीन मुहम्मद बिन तुगलक की आत्मकथा प्राप्ति का दावा करते हैं परन्तु अन्य इतिहासकार इस पर संदेह व्यक्त करते हैं। फिरोज शाह तुगलक के आत्मकथा का नाम है 'फुतफहात–ए–फिरोजशाही'। इस ग्रन्थ को लिखने का मुख्य उद्येश्य था अपने आप को आदर्श मुस्लिम शासक सिद्ध करना। इसमें उसके इस्लाम धर्म के प्रसार हेतु किए गए प्रयत्नों, उसकी नितियों व विशेषकर जनकल्याण सम्बंधी आचरण प्रस्तुत किया गया है। इसी पुस्तक में सुल्तान कहता है कि "जब अल्लाह अपने बन्दों की आजीविका नही छीनता तो मैं कैसे किसी को उसके पद से हटा सकता हूँ"।

फिरोजशाह तुगलक की आत्मकथा 'फुतुहात–ए–फिरोजशाही' आठ अध्याय एवं कुल 32 पृष्ठों का है जिसे फारसी भाषा मे लिखा गया है। तबकात–ए–अकबरी के लेखक निजामुद्दीन अहमद के अनुसार ,

"वास्तव में यह फिरोजबाद की जामा मस्जिद के भीतर एक अष्ट भुजाकार मीनार पर फिरोजशाह द्वारा अंकित एक शिलालेख था। फिरोज ने आत्मकथा के आठों अध्याय पत्थर पर खुदवा दिया था "। शम्स अफीफ भी फिरोज की आत्मकथा का उल्लेख करता है। फुतुहात–ए–फिरोजशाही में उसने अपने शासन के विभिन्न आदेशों तथा उसके द्वारा निर्मित भवनों का उल्लेख किया है। इसी में उसने परोपकार की अपनी मूल अवधारणा की व्याख्या की है। इसमें वह अपना आदर्श व्यक्त करता है – "ईश्वर की कृपा से मेरे हृदय में असीम अभिलाषा सदैव बनी रहती थी कि मैं निर्धन लोगों सहायता करूं और उन्हें सान्त्वना दूँ। मैं चाहता था कि बड़े आदमियों को चाहिए कि वे ईमानदार आदमियों की सहायता करें क्योंकि खजाना बड़ा होने से अच्छा है लोंगो का कल्याण , दुखी हृदयों से अच्छा है, खाली खजाना"। इसी में फिरोज का यह भी कथन है–"किसी भी कारण से मुस्लमानों का रक्त ना बहाया जाए और न ही स्वस्थ लोंगो के अंग भंग किए जाएं"। आत्मकथा में वह अपनी रूढिवादी कार्यवाइयों का उल्लेख तो करता है किन्तु मदिरापान पर रोक लगाने की बात नही करता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि फिरोजशाह तुगलक का कार्यकलापों एवं उसकी नितियों को जानने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्त्रोत है।

विजयनगर साम्राज्य के सर्वश्रेष्ठ शासक कृष्णदेव राय ने भी अपनी आत्मकथा तेलगू भाषा में 'अमुक्तमाल्यदा' लिखी। इस ग्रन्थ में उन्होंने अपने राजनीतिक विचारों एवं प्रशासनिक नीतियों की विवेचना की है। उन्होंने इस ग्रन्थ में लिखा है कि, "राजा को तालाबों एवं सिंचाई के अन्य साधनों एवं कल्याणकारी कार्यों द्वारा प्रजा को संतुष्ट रखना चाहिये। विदेशी व्यापार के विकास के लिए सुविधाजनक बन्दरगाहों की व्यवस्था और विदेशी व्यापारियों को संरक्षण प्रदान करना चाहिए। राजा द्वारा कभी भी धर्म और न्याय की अवहेलना नही करनी चाहिये"। आगे कृष्णदेव राय ने यह भी लिखा है कि, "एक मुकुटधारी राजा को सदा धर्म को दृष्टि में रखकर शासन करना चाहिये, उसे सदैव धर्म एवं न्यास का सम्मान करना चाहिये " राजा को लोगों पर मामूली कर लगाने का सुझाव देता है। कृष्णदेव राय ने सिद्धान्त निर्धारित कर दिया था कि राज्य की कुल आय चार बराबर भागों में बाँटी जानी चाहिये। इस प्रकार उनकी यह कृति उनकी नीतियों एवं कार्यों को अच्छी तरह से प्रतिबिम्बित करती है।

6.4.2 मुगलकालीन आत्मकथा लेखन

भारत में मुगल वंश के स्थापना के साथ ही आत्मकथा लिखने की परिपाटी चल पड़ी। इस वंश के संस्थापक बाबर ने स्वयं आत्मकथा ' तुजुक–ए–बाबरी' तुर्की भाषा में लिखी। जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर, भारत में मुगल शासन का संस्थापक , एशिया के इतिहास में सबसे अधिक आकर्षक चरित्रों में से एक है, समीछाधीन काल के इतिहास के लिए हम जिन समकालीन लेखकों के ऋणी हैं उनमें बाबर के तुजुक–ए–बाबरी को सम्मानित स्थान प्राप्त है। यह पुस्तक उनके कार्य छेत्र तथा उसके समय के इतिहास का सर्वोत्त्म वर्णन प्रस्तुत करती है।

तुजुक–ए–बाबरी का अनुवाद अकबर के शासनकाल में फारसी भाषा में दो बार हुआ – पहले इसका अनुवाद पैदाखां ने तथा उसके बाद अबदुर रहीम मिर्जा ने बाबर नामा के नाम से किया। आज बाबर का अनुवाद कई यूरोपीय तथा एशियाई भाषाओं में हो चुका है। अंग्रजी में इसका बहुमूल्य अनुवाद तीन अनुवादकों –लीडेन एण्ड अर्स्किन एलकिंग और श्रीमती ए० एस० बेवरिज द्वारा हुआ है जिनमें से प्रथम दो अनुवाद फारसी अनुवाद से अंग्रजी में, जबकी श्रीमती बेवरिज ने मूल तुर्की पाठ से अनुवाद किया है। अतः श्रीमती बेवरिज द्वारा किया गया अनुवाद अपेक्षाकृत अधिक प्रमाणिक और विश्वसनीय माना जाता है। यह पुस्तक बाबर के बारे में पूर्ण लेखा – जोखा प्रस्तुत नही करती। प्राप्त हस्तलिपियों से उनके बिच काफी अन्तर का पता चलता है क्योंकि ये हस्तलिपियां केवल टुकड़ों में ही कहानी प्रस्तुत करती हैं। बाबर के अस्तित्वकाल के 48 वर्षों में से केवल 18 वर्ष की गतिविधियों पर ही प्रकाश डाला गया है।

बाबर नामा की विषय साम्रगी तीन– भू–क्षेत्रीय भागों में बंटी थीं– उसके बाद के शासन की भूमि –फरगान, काबुल तथा हिन्दुस्तान, सम्पूर्ण कथानक यद्यपि क्रमिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है लेकिन सामयिक स्थितियों का ब्योरा प्रस्तुत करते हुए लेखक ने संदर्भ की प्रासंगिकता की दृष्टि में रखते हुए अपने जीवन की पूर्ववर्ती घटनाओं का भी वर्णन किया है। यह तो सत्य है कि संस्मरण स्पष्ट रूप से उसके द्वारा अपने खाली समय में लिखे गए है, हांलाकि उसने यह कब लिखना आरम्भ किया, यह जानना असंभव सा प्रतीत होता है। कथानक के प्रथम भाग में लेखक द्वारा प्रस्तुत घटनाओं और चरित्रों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने और शैली के गहन अध्ययन करने से यह अनुमान लगाया गया है कि बाबर ने इन पृष्ठों को घटनाओं के घटित होने के काफी समय बाद स्मरण करके लिखा शेष विवरण, विशेषकर भारत के सन्दर्भ में व्यक्तिगत डायरी या पत्र पत्रिकाओं के रूप में लिखा प्रतीत होता है। संस्मरण का पहला भाग, जो कि कालांतर में लेख द्वारा संशोधित किया जान पड़ता है, बड़ा ही रोचक है। वास्तव में यह भाग उसके जीवन के उस समय से सम्बंधित है जब उसका समय दुर्भाग्यपूर्ण चल रहा था और घुमक्कड़ जीवन व्यतीत कर रहा था। यद्यपि उस समय भी वह, सदैव जोशीला, सक्रिय तथा साहसी था; पाठक उसके इस काल की विभिन्न घटनाओं के साथ तारतम्यता स्थापित करता तथा उसके विवरण से उछल पड़ता है और इस युवा योद्धा के भयंकर कारनामों का कल्पना चित्र बनाता है

बाबर एक उत्कृष्ठ साहित्यिक अभिरूचि तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति था तथा उसकी शैली साधारण, सीधी सादी और आकर्षक स्वरूप की थी। वह परिचय या पृष्ठभूमि आदि के विवरण के शब्द जाल में उलझाने के बजाय यथार्थ, संक्षिप्त और स्पष्ट विवरण देना पसंद करता है। फारसी और चुगताई तुर्की भाषा के एक प्रसिद्ध कवि के रूप में अपने गद्यखण्डों तथा छंदों में विशुद्ध और अकृत्रिम शैली का श्रेय बाबर को ही जाता है। अपने दुखान्त विवरण के मध्य में, अपनी कठिनाइयों की गहनता और अपने दुर्भागय को सम्बोधित गति के सर्जन के समय वह किसी कविता का उदाहरण देने के लिए रूक जाता है। अपने युद्ध तथा आमोद – प्रमोद को अपनी कपव्यधारा से मानवीकृत किया है।

अपनी अभिव्यक्ति में बाबर सच्चा तथा स्पष्टवादितापूर्ण अपनी भावनाओं को स्वयं में से निकालता है तथा अपनी उपलब्धियां और विफलताओं, सदगुण तथा बुराइयों को एक ही सांस में बिना शब्दों को तोड़े – मरोड़े या हिचकिचाहट के, किसी भी लक्षण के बिना उनका वर्णन करता है। इसके संस्मरणो की विशेषताएं उन्हें प्रमाणिक तो बनाती हैं साथ ही उनका आकर्षण भी बराबर बना रहता है। एक अनुमान के अनुसार बाबरनामा प्रत्येक युग के बेशकीमती अभिलेखों में से एक है; इसे सेंट अगस्टाइन और रूसो के स्वीकारोक्तियों (confessions) तथा गिब्बन और न्यूटन के संस्मरणों के समक्ष रखा जा सकता है। एशिया में यह अनोखा और लगभग बिल्कुल अकेला है।

6.4.3 अकबर का काल

हुमायूँनामा : अकबर के आग्रह करने पर हमीदा बानो बेगम ने अपने भाई हुमायूँ की जीवनी लिखी। अपने पिता बाबर की मृत्यु के समय हमीदा बानो मात्र आठ वर्ष की थी और हुमायुँ के संरक्षण में पली। हुमायूँ के जीवन को उसने निकटता से देख ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर किया है।

यह पुस्तक आम बोलचाल की फारसी भाषा में लिखी है जिसमें जहाँ–तहाँ तुर्की भाषा के शब्द और कहावतों का प्रयोग हुआ है। साहित्यिक गुणवत्ता की दृष्टि से पुस्तक में कुछ खास नहीं है और न ही इसमें तत्कालीन राजनीतिक विकास पर प्रकाश डाला गया है। इतना सब होते हुए भी पुस्तक ाक अपना ऐतिहासिक महत्त्व कम नही है क्योंकि यह पुस्तक एक ऐसी लेखिका द्वारा तैयार की गई थी जिसमें वर्णित अनेकानेक घटनाओं की वह चश्मदीद ग्वाह थी। हुमायूँनामा में गुलबदन बेगम ने जिन सूचनाओं का विवरण दिया है वे सूचनाएँ या तो बघटनाओं के भागीदारों से सम्बंधित है या फिर उनसे जो इनके साक्षी रहे है।

गुलबदन ने बाबर के बारे में बहुत ही संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है। उसने हुमायूँ के घराने के बारे में उत्कृष्ट विवरण प्रस्तुत किया है लेकिन उसके भाई कामरान के साथ उसके टकराव के सम्बन्ध में दुर्लभ सामग्री प्रस्तुत की है। अपने भाइयों के बिच होने वाले इस भ्रातृघातक युद्ध का विवरण बहुत ही अफसोसजनक शैली में दिया है।

6.4.4 जहांगीर का काल

जहांगीर के शासनकाल के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करने का सबसे पहला प्राथमिक स्त्रोत सम्राट द्वारा लिखित आत्मकथा ' तुजुक–ए–जहांगिरी'है। अपने पूर्वज बाबर के पदचिहनों का अनुसरण करते हुए जहांगीर ने प्रथम बारह वर्षों के अपने शासन के दौरान अपने ही हाथों से संस्मरण लिखा तथा उसके बाद का यह कार्य मोतमद खां को सौंपा गया। उसके बाद उसके 19 वें वर्ष के प्रारम्भ तक के शासन का दैनिक वृतांत जहांगीर के लिए उसके द्वारा लिख गया।

'तुजुक–ए–जहांगीरी' उसके प्रथम 18 वर्षों के शासनकाल के कालानुक्रम अनुसार राजनैतिक, सामाजिक तथा सुसंहत रिकार्ड है। यह युद्धों, विद्रोहों, विजयों, सेनापतियों तथा नौकरशाहों की पदोन्नतियों तथा पदच्यूति आदि का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में सम्राट के अद्‌भुत तथा विचार करने योग्य विकास कार्यों को वर्णित किया गया है, जिसमें समय – समय पर राजमंत्र को सुप्रवाही बनाने हेतु जारी किए गये शाही फरमानों, हुक्मनामों तथा नियमों का पालन करने के लिए जारी विनियमों का भी वर्णन है। यह पुस्तक कुलीन लोगों के चरित्र, योग्यता , दरबार के कियाकलापों, अन्तरराज्यीय सम्बन्धों तथा सम्राट और अपने सरकारी अधिकारियों के बीच सम्बन्ध पर भी विस्तृत प्रकाश डालती है। यह पुस्तक देश की सामान्य आर्थिक दशाओं, सम्राट की भौतिक स्मृद्धियों, समय – समय पर पड़े अकालों, महामारियों, जिनका परिणाम लोगों के जीवन तथा जनता द्वारा उठाई गई कठिनाइयों की व्याख्या करती है।

यह पुस्तक कई स्थानों पर शाही ' हरम ' की झलक तथा राजकुमारों तथा शाही घराने से जुड़े अन्य महत्त्पूर्ण कुलीनों के चरित्र तथा व्यक्तित्व का जीवन चित्रण प्रस्तुत करती है। कहीं – कहीं पर सम्राट असामसन्य रूप से अपने जीवन की व्यक्तिगत घटनाओं को लिखने में अत्यन्त उदार हो गया है। इन सब चित्रों के बावजूद साहित्यिक गुण, उद्येश्य के प्रति सत्यनिष्ठा के दृष्टिकोण से बाबर की उन चीजों की ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में जहांगीर के संस्मरण की तुलना नही की जा सकती। जहांगीर ने ये संस्मरण बाबर और अकबर के योग्य उत्त्राधिकारी के रूप में अपनी उपलब्धियों पर प्रकाश डालने के लिए अव्यक्त उद्येश्य लेकर लिखे थे, इसलिए यह सभी कृत्यों के लिए आधिकारिक दृष्टिकोण या औचित्य को प्रस्तुत करता है। उसने अपने जीवन के कुछ अप्रिय या लोकावाद घटनाओं को या तो छोड़ दिया है या उनके महत्त्व को कम करके आंका है।

6.5 आधुनिक काल में जीवनी साहित्य लेखन

6.5.1 महात्मा गांधी का सत्य का प्रयोग

यह पुस्तक 1920 के अंत तक पोरबंदर में अपने जन्म से गांधी के जीवन का वर्णन करता है। सरकार के साथ असहयोग की उनकी नीति अखिल भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा पारित होने के बाद हुई थी। गांधी कहते हैं कि इस समय, उनका जीवन इतना सार्वजनिक हो गया है कि उसे इसके बारे में लिखने की कोई जरूरत नहीं है। यह पुस्तक मूल रूप से है कि गांधी के सिद्धांतों पर उनके आने के बारे में क्या आता है। यह उनकी खोज और सच्चाई में विश्वास के बारे में है।कहानी पोरबंदर और राजकोट में गांधी के बचपन से शुरू होती है। जब तक वह हाई स्कूल खत्म नहीं कर लेते, तब तक उन्हें स्थानीय स्कूलों में शिक्षित किया जाता है। जब वह 13 वर्ष की आयु में हाई स्कूल में था, तो गांधी ने एक विवाह में कस्तूरबाई नाम की एक महिला से शादी कर ली। कस्तूरबा अपने पूरे जीवन से उनके द्वारा खड़ा है वह उस समय शादी

के बारे में उत्साहित हैं यद्यपि, गांधी और कस्तुरबाई अपने बच्चों के लिए शुरुआती विवाह के खिलाफ हैं। उनके पिता मर जाते हैं जब वह सोलह और अभी भी स्कूल में है। गांधी उच्च विद्यालय खत्म करते हैं और भाईनगर में स्थित एक स्थानीय महाविद्यालय, सामलदास कॉलेज मां पढ़ाई करते हैं। वह सिर्फ एक सेमेस्टर के लिए रहता है और फिर वह इंग्लैंड जाता है जहां वह तीन साल में एक बैरिस्टर बन सकता है। गांधी की मां इस विचार के खिलाफ हैं और उसे अनुमोदन प्राप्त करने के लिए, गांधी के पास वाइन, महिला या मांस को दूर नहीं करने का प्रतिज्ञा की जाती है कानून शिक्षा पूरी करने के बाद, गांधी उच्च न्यायालय में दाखिला लेते हैं और भारत लौटते हैं।गांधी खुद को भारत में कानून का अभ्यास करने के लिए अनिश्चित हैवह एक परिचित के साथ हस्तक्षेप करने की कोशिश करता है, जो अब अपने भाई की तरफ से इंग्लैंड में राजनीतिक एजेंट है। वे तर्क करते हैं और तेज शब्दों का आदान–प्रदान करते हैं। गांधी के कैरियर को खतरे में है क्योंकि अपील राजनीतिक एजेंट के पास जाते हैं। गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में एक कानूनी फर्म से एक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है ताकि उन्हें मामले के साथ मदद मिल सके। एक साल बिताने के बाद वह भारतीय समुदाय की मदद के लिए वहां रहने का फैसला करता है। वह 1914 में ँप के प्रकोप से सिर्फ दो सप्ताह पूर्व दक्षिण अफ्रीका में काम करता है।भारत में वापस, वह अपना सार्वजनिक कार्य जारी रखता है, जो दक्षिण अफ्रीका में अपने काम से सत्याग्रह के साथ पहले से ही नाम रखता है, या गैर–हिंसक विधियों द्वारा सिविल अवज्ञा और प्रतिरोध।

गांधी की किताब ने अपने जीवन के सामान्य लक्ष्य और इरादे को सही रूप से दर्शाया है दृ सच्चाई की खोज और उस सच्चाई में अपनी दृढ़ विश्वास। उनका मानना है कि सच्चाई ईश्वर है और उसके सभी प्रयोगों ने सच्चाई और पवित्रता प्राप्त करने के अपने प्रयासों को चिंतित किया है। आहारविज्ञान के साथ उनका प्रयोग एक जीवन–काल सौदा है, और वह संपूर्ण आहार खोजने की तलाश करता है दृ जो वासना को मिटा देता है और मनुष्य को उसके मन और विचारों को नियंत्रित करने की अनुमति देता है। इस रूपरेखा के भीतर, वह सरकारी सुधारों के लिए अपने सिद्धांतों को विकसित करता है हिंसा के लिए बिना सहानुभूति और प्रतिरोध का उपयोग करते हुए इस आंदोलन में शामिल हैं। कोई भी देश के कानूनों को जानने और सम्मान के बिना सिविल अवज्ञा का अभ्यास नहीं कर सकता क्योंकि किसी को यह चुनना चाहिए कि कौन–कौन से कानून अनहोनी और जब अशिक्षित ऐसा नहीं कर सकते, यही कारण है कि आंदोलन और विरोध के राष्ट्रीय दिन हिंसा में हुई। जनसंख्या को सिविल अवज्ञा के सिद्धांतों को नहीं सिखाया गया था। 1920 में आंदोलन और असहयोग की अवधि के दौरान गांधी ने अपनी पुस्तक समाप्त की। उस समय के बाद उनके जीवन की घटनाओं को अच्छी तरह से जाना जाता है।

6.5.2 सुभाषचंद्र बोस का इंडियन स्ट्रगल

इंडियन स्ट्रगल में बोस की गांधी की भूमिका का मूल्यांकन और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, स्वतंत्र भारत के लिए उनका अपना दृष्टिकोण और राजनीति के लिए उनका दृष्टिकोण शामिल है। पुस्तक में गांधी के बारे में बोस की आलोचना थी कि वे महात्मा पर बहुत नरम और औपनिवेशिक शासन के साथ उनके व्यवहार में लगभग भोले थे और जो उनकी यथास्थितिवाद के साथ ''भारत में ब्रिटिश का सबसे अच्छा पुलिसकर्मी'' बन गया था। ख्द्, बोस ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक वामपंथी विद्रोह की भी भविष्यवाणी की, जो ''स्पष्ट विचारधारा, कार्यक्रम और कार्य योजना'' के साथ एक नई राजनीतिक पार्टी को जन्म देगा, जो अन्य बातों के अलावा ''जनता के हितों के लिए खड़ा'' होगा, वकील भारतीय लोगों की पूर्ण स्वतंत्रता, एक मजबूत केंद्र सरकार के साथ एक संघीय भारत की वकालत करते हैं और भूमि सुधार, राज्य योजना और पंचायतों की एक प्रणाली का समर्थन करते हैं।

1935 में वियना वापस आने पर, बोस की मुलाकात रोम में बेनिटो मुसोलिनी से हुई, जहां उन्होंने तानाशाह को अपनी पुस्तक की एक प्रति दी। बोस नेहरू के फासीवाद के विरोधी थे और भारत में साम्यवाद और फासीवाद के संश्लेषण के बजाय तर्क दिया। राजनीतिक जीवन में सैन्य अनुशासन के प्रस्तावक और एक मजबूत पार्टी द्वारा सरकार के एक वकील, बोस भी नाजी पार्टी के मॉडल को खारिज करने और राजनीतिक दलों के भीतर और दोनों के लिए लोकतंत्र का आह्वान करने वाले अधिनायकवाद के विरोध में थे। बोस की वैचारिक झुकाव, जिसे उन्होंने पुस्तक में रेखांकित किया है, को 'फासीवादी' बताया गया है, लेकिन भारतीय स्वतंत्रता को महसूस करने में विफलता के साथ उनकी बढ़ती हताशा और आकार के अनुसार नहीं, जैसे कि मेगालोमैनिया के रूप में वर्णित किया गया है।

6.5.3 डॉ.राजेन्द्र प्रसाद का इंडिया डिवाइडेड

इस पुस्तक में विशेष रूप से इस सिद्धांत की जांच की गई कि भारत के हिंदू और मुस्लिम दो राष्ट्र थे, और निष्कर्ष निकाला कि हिंदू–मुस्लिम मुद्दे के समाधान के लिए सांस्कृतिक स्वायत्तता के साथ एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के गठन की मांग की जानी चाहिए। विभिन्न समूह जो राष्ट्र बनाते हैं। यह हिंदू–मुस्लिम संघर्ष की उत्पत्ति और वृद्धि का पता लगाता है, जो भारत के विभाजन के लिए कई योजनाओं का सारांश देता है, जिन्हें आगे रखा गया, और लाहौर संकल्प की आवश्यक अस्पष्टता को इंगित करता है। , यह मुस्लिम–बहुल राज्यों के संसाधनों से संबंधित है और दिखाता है कि विभाजन की सुझाई गई योजना कैसे अव्यावहारिक थी, और हिंदू–मुस्लिम प्रश्न के नए समाधान का प्रस्ताव करती है।

6.5.4 मौलाना अबुल कलाम आजाद का इंडिया विंस फ्रीडम

पुस्तक मौलाना अबुल कलाम आजाद की है, जो लगभग 6 वर्ष (1939 – 46) तक कांग्रेस के अध्यक्ष बने रहे। यह द्वितीय विश्व युद्ध का समय था और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण था। इस अवधि के दौरान वह ब्रिटिशों के साथ महत्वपूर्ण निर्णय लेने और बातचीत करने में थे। उनके कार्यकाल के दौरान, क्रिप्स मिशन, शिमला सम्मेलन, ब्रिटिश कैबिनेट मिशन संकल्प और कई और महत्वपूर्ण चर्चाएँ हुईं। मूल रूप से, इस अवधि ने स्वतंत्रता और विभाजन की ओर मार्ग प्रशस्त किया। और राष्ट्रपति बनने तक उन्होंने हर फैसले में बहुत अग्रणी भूमिका निभाई।

मौलाना आजाद, गांधी जी और उनके अनुयायियों के विपरीत, अहिंसावादी नहीं थे। वह सिर्फ यह मानता था कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अहिंसक तरीका सबसे अच्छा तरीका था। इसलिए उन्होंने संबंधित मुद्दों पर गांधीजी और अन्य के साथ मतभेद किया। ताकि पूर्व–विभाजन के समय का एक और दिलचस्प दृश्य दिखाई दे।

मुस्लिम होने के नाते, उसने जिन्ना और दो राष्ट्र सिद्धांत का विरोध क्यों और कैसे किया, यह पुस्तक में प्रस्तुत एक अन्य महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है।

सरदार पटेल और नेहरू के बारे में कई आश्चर्यजनक खुलासे हुए हैं, उनके द्वारा इस पुस्तक में। उदाहरण के लिए, सरदार पटेल को गांधीजी ने कैसे बनाया था और उन्हें बहुत प्रिय था, लेकिन विभाजन के बाद सरदार पटेल पूरी तरह से उनके खिलाफ हो गए, यहां तक कि उनका अपमान भी किया। वह वास्तव में सरदार पटेल पर गांधी की हत्या का दोष लगाता है!

6.6 सारांश

सारांश के रूप में सकते हैं जीवनी साहित्य लेखन तत्कालीन समाज का दर्पण के रूप में कार्य करता है। तत्कालिक ,सामाजिक ,राजनीतिक ,धार्मिक ,आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति को प्रतिबिंबित करता है।इससे अतीत को जाने में काफी सहायता मिलती है जीवनी साहित्य का विकास समय और काल के अनुरूप

शनै–शनै होता गया। इसका विकास प्राचीन काल से प्रारंभ होकर आधुनिक काल तक निरंतर एवं अनवरत चलता रहा वर्तमान में यह एक महत्वपूर्ण कला के रूप में उभर चुकी है और इसकी महत्ता काफी बढ़ गया है।

6.7 अभ्यास हेतु प्रश्न

- जीवनी साहित्य के विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?
- मध्यकाल में जीवनी साहित्य के उत्थान का वर्णन कीजिए ?
- जीवनी साहित्य किस प्रकार समाज को प्रतिबिंबित करता है, उल्लेख कीजिए ?
- जीवनी साहित्य के प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए ?

6.8 संदर्भग्रंथ

के. सी .श्रीवास्तव–––प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति
राय चौधरी ,मजूमदार एवं दत्ता–––प्राचीन भारत का वृहत इतिहास
दास,पूरी,चोपड़ा–––भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास
जे. एल.मेहता–––मध्यकालीन भारत का वृहत इतिहास खंड–एक और दो
इम्तियाज अहमद–––मध्यकालीन भारत का इतिहास
महात्मा गांधी–––सत्य का प्रयोग
सुभाषचंद्र बोस–––इंडियन स्ट्रगल
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद–––इंडिया डिवाइडेड
मौलाना अबुल कलाम आजाद–––काइंडिया विंस फ्रीडम

इकाई सात : प्राचीन इतिहास लेखन: हेरोडोटस ,थ्यूसीडाइडस

7.1 प्रस्तावना

7.2 इकाई प्राप्ति के उद्देश्य

7.3 प्राचीन इतिहास लेखन की यूनानी परम्परा

7.3.1 पूर्व क्लासिक युग और लेखन की प्रवृत्ति

7.3.2 क्लासिक युग और इतिहास-लेखन की प्रवृत्ति

7.4. हेरोडोटस (Herodotus) (484-425 ई०)

7.4.1 हेरोडोटस की रचना एवं विषय-वस्तु

7.4.2 लेखन के उद्देश्य

7.4.3 स्रोतों की पहचान और उनसे जानकारियाँ प्राप्त करना

7.4.4 ऐतिहासिक घटनाओं और प्रक्रियाओं को समझना

.5 थ्युसीडाइडस Thucydides (460-400ई०पू०)

7.5.1 थ्युसीडाइडस की रचना

7.5.2 विषय वस्तु

7.5.3 लेखन-पद्धति

7.5.3 थ्युसिडाइडस की इतिहास दृष्टि

7.6 हेरोडोटस एवं थ्युसिडाइडस का तुलनात्मक विश्लेषण

7.7 सारांश

7.8 तकनीकी शब्दावली

7.9 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

7.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

7.11 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

.12 निबन्धात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

आपको संभवत: यह ज्ञात हो कि अंग्रेजी शब्द 'हिस्ट्री' यूनानी शब्द 'हिस्तोरिया' से बना है जिसका अर्थ है अनुसंधान या जाँच पड़ताल। ऐसा माना जाता है कि हेरोडोटस पहले ऐसे लेखक हैं जिन्होंने अपने कार्य के वर्णन के लिये 'इतिहास' शब्द का प्रयोग किया। हेरोडोटस को इतिहास का जनक माना जाता है। साथ ही यह भी सर्वमान्य है कि हिस्ट्री अथवा इतिहास का उद्गम स्थल प्राच्य-संस्कृति का केन्द्र यूनान रहा है। हेरोडोटस और उनके उत्तराधिकारियों द्वारा किये गये कार्यों को अन्य रचनाओं के आंकलन

के लिये मानदंड माना जाता है। इस इकाई में आप प्राचीन यूनानी इतिहास लेखन तथा यूनानी इतिहासकारों के लेखन के बारे में जानेंगे।

इस इकाई में जिन दो इतिहासकारों को आप के अध्ययन के लिये चुना गया है, वे प्राचीन काल के ख्याति लब्ध इतिहासकारों में से हैं। वे हैं-पाँचवीं सदी ईसा पूर्व के '**हेरोडोटस**' और '**थ्यूसीडाइडस**'। इन दोनों ने ही यूनानी में लिखा है।

1.1 7.2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्नलिखित विषयों के बारे में जानने योग्य हो जायेंगे-

- प्राचीन यूनानी इतिहास लेखन परम्परा की विशेषताओं को जान सकेंगे।
- यूनानी चिन्तन के परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे।
- हेरोडोटस के इतिहास दर्शन के विषय में विश्लेषण कर सकेंगे।
- थ्युसिडाइडस के इतिहास दर्शन के बारे में जानेंगे।

1.2 7.3 प्राचीन इतिहास लेखन की यूनानी परम्परा

आपके अध्ययन की सुविधा हेतु यहाँ प्राचीन इतिहास लेखन की यूनानी परम्परा को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा गया है-

- पूर्व क्लासिक युग
- क्लासिक युग

पूर्व क्लासिक युग अर्थात हेरोडोटस के पहले और क्लासिक युग, अर्थात हेरोडोटस-थ्युसिडाइडस के समकालीन।

7.3.1 पूर्व क्लासिक युग और लेखन की प्रवृत्ति

सबसे पहले आप हेरोडोटस के पूर्व यूनानी लेखन की स्थितियों या ऐसे कह सकते हैं कि पूर्व यूनानी लेखन की प्रवृत्तियों के बारे में स्पष्ट रूप से समझ लें। मोटे तौर पर यूनानी इतिहास को तीन भागों में बाँटा गया है-

- सिकन्दर पूर्व
- सिकन्दर के समकालीन
- सिकन्दर के पश्चात

हेरोडोटस सिकन्दर के पूर्व के दार्शनिक हैं। इनके युग को क्लासिकल युग माना गया है। किन्तु हेरोडोटस के पूर्व भी रचनायें लिखी जा रही थीं। उस काल को '**पूर्व क्लासिकल युग**' कहा जाता है। पूर्व क्लासिकल युग में किसी भी प्रकार की या आंशिक ऐतिहासिक जानकारी देने वाली रचनाओं का वर्गीकरण तीन श्रेणियों में किया गया है।

- लोक आख्यान-काव्य या महाकाव्य के रूप में
- शासकों की स्मृति में रचे गये वृतांत
- हिब्रू धर्म ग्रंथ

अब आप ये जान लें कि लोक आख्यान, शास्कों की याद में रचे ग्रंथ और हिब्रू धर्म ग्रंथ क्या हैं।

- लोक आख्यान यद्यपि इतिहास नहीं थे, किन्तु वे अतीत की घटनाओं में हमारी रुचि जगाते हैं और आख्यान की एक तकनीक का ज्ञान करवाते हैं।धर्म ,मिथक और देवगण की यूनानी महाकाव्यों में भरमार है। यूनानी लोक आख्यानों में इलियड,ओडिसी,एनियन का नाम आता है किन्तु 'होमर' कृत **'इलियड'** का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है । इस ग्रंथ में सौन्दर्य की मलिका हेलन के कारण हुए ट्राय युद्ध के अंशों का वर्णन है।

  पाश्चात्य महाकाव्य या 'इपिक' एक सुदीर्घ इतिवृत्तात्मक कविता होती है जिसमें नायक या नायिका के वीरतापूर्ण कृत्यों का वर्णन होता है। गद्य में लिखे व्राट सामाजिक या ऐतिहासिक उपन्यास 'इपिक' कहलाये। उदाहरण के तौर पर भारतीय महाकाव्य में 'रामायण और महाभारत को अंग्रेजों ने रखा है।
- शासकों की विभिन्न गतिविधियों विशेषकर सैन्य सफलताओं या विजयों के वृतांत हमें महलों और मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण किये हुए मिलते हैं, जो इतिहास जानने में सहायक हैं। इस श्रेणी में 'हित्ती' वृतांत उल्लेखनीय हैं।
- हिब्रू धर्मग्रंथ (यहूदियों के धर्मग्रंथ 'ओल्ड टेस्टामेंट') जो किंवदन्तियों और मौखिक परंपरा से आते हैं। इनमें भी अप्रत्यक्ष रूप से हमें प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है।

उक्त रचनाओं को इतिहास की श्रेणी में रखा जाय या नहीं इसका उत्तर देते हुए कालिंगवुड ने कहा है कि- "उपयोगी होते हुए भी उन रचनाओं को इतिहास की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। क्योंकि ये वास्तविक इतिहास की कसौटियों पर खरे नहीं उतरते। इन्हें आंशिक इतिहास, धर्ममूलक या मिथक माना जा सकता है।"

7.3.2 क्लासिक युग और इतिहास-लेखन की प्रवृत्ति

इसके पश्चात आरम्भ होता है-'क्लासिक युग'

अति प्राचीन काल में जब इतिहास लेखन आरम्भ भी नहीं हुआ था, मनुष्य मिथक और गाथाओं के माध्यम से अपने अतीत की कथा-स्मृति को यथा-संभव सुरक्षित रखता था। किन्तु उस समय सत्य और कल्पना आपस में इस तरह घुल-मिल जाते थे कि उन्हें अलग कर पाना मुश्किल हो जाता था। कालिंगवुड का मत है कि- मध्यपूर्व की प्राचीन सभ्यताओं में एक प्रकार के धार्मिक इतिहास के बीज मिलते हैं। भारतीय और चीनी परंपरा मध्यपूर्व से प्राचीनतर है और वहाँ भी इतिहास बीज रूप में मौजूद है। पर सामान्यतः इतिहास लेखन का आरम्भ यूनान के हेरोडोटस से माना जाता है। यद्यपि हेरोडोटस भी गाथाओं और मिथकों से पूरी तरह मुक्त नहीं थे पर उन्होंने अपने इतिहास में मनुष्य के कार्यों को देश काल में स्थित करना शुरु किया और आरम्भिक इतिहास लेखन की अमंत यात्रा प्रारम्भ हुई।

वास्तव में यूनान में इतिहास-लेखन का वास्तविक स्वरूप छठीं शताब्दी ईसा-पूर्व से प्रारम्भ हुआ। यूनान में यह बौद्धिक संक्रमण का काल था। इस काल में मिथकीय आख्यानों और धर्ममूलक कथाओं से हटकर कुछ ऐसा रचा गया जिसे विद्वानों ने इतिहास की श्रेणी में रखा। और, इस लेखन का संपूर्ण श्रेय दिया गया-'हेरोडोटस' और 'थ्युसीडाइडस' को। 'इलियड' के पूर्व और बाद की बहुत सी घटनाओं की जानकारी इस काल के लेखकों को नहीं थी। इन्होंने वस्तुतः पूर्व के इतिहास से पूर्णतः अनभिज्ञ तथा इतिहास विरोधी सांसारिक परिवेश के बीच ऐतिहासिक तत्वों से युक्त ग्रंथ लिखे।

इस काल में यूनान में काव्य के साथ-साथ गद्य का विकास होने लगा। इससे काव्यात्मक कल्पनाशीलता पर अंकुश लगा। भूगोल, कालगणना, दर्शन तथा विज्ञान का चिंतन आकार लेने लगा। वहाँ की नयी विकसित वैज्ञानिकता इतिहास लेखन में परिलक्षित होने लगी। समुद्री और व्यापारिक यात्राओं के कारण अन्य देशों के इतिहास-भूगोल से संपर्क हुआ। जिसका प्रभाव इतिहास-लेखन पर पड़ा। **'लोगोग्राफी'** जो इतिहास के अर्थ का मूल है, का प्रभाव इन दार्शनिक इतिहासकारों के लेखन में इतिहास की एक विधा के

रूप में विकसित हुई। लोगोग्राफर मिथक से इतिहास में संक्रमण के बिन्दु पर स्थित हैं। स्थानीय इतिहास उनका विषय था,और स्थानीय मिथक उनका स्रोत। यूनानी इतिहास-लेखन के मुख्य विषय के रूप में 'युद्धों का इतिहास' था।

यूनानी लेखकों ने पूर्ववर्ती लेखकों के वर्णन को अपना आधार नहीं बनाया अपितु स्वयं की खोज और आलोचना के माध्यम से इतिहास लेखन किया। यूनानी इतिहास लेखकों में प्रमुख हैं- हिकाटियस, हेरोडोटस, थ्युसीडाइडस, ज़िनोफोन तथा पोलिबियस।

हेरोडोटस और थ्यूसीडाइडस ऐसे समय की देन हैं जिसे अक्सर यूनान के इतिहास में सामान्य तौर पर और एथेंस के इतिहास में विशेष रूप से '**क्लासिकी युग'** के रूप में जाना जाता है। हमें अन्य स्रोतों से ज्ञात होता है कि यह समय सुकरात जैसे दार्शनिकों तथा एशीलस, सोफ़ोक्लीस जैसे नाटककारों का समय था। इन इतिहासकारों के अध्ययन हालाँकि प्रत्यक्षत: इस सांस्कृतिक समृद्धि को प्रतिबिम्बित नहीं करते। दर असल यदि यह इतिहास विवरणों के मामले में समृद्ध हैं तो यह एक अत्यन्त संकुचित दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करते हैं। निःसंदेह आज के पाठकों की कई बार इच्छा होती है कि काश इन लेखकों ने अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल अधिक व्यापक मुद्दों के लिये किया होता।

इन प्राचीन इतिहासकारों की सबसे अधिक दिलचस्पी ऐसी घटनाओं के विस्तृत वृतान्तों को देने में रही जिन्हें वे प्रमुख मानते थे। घटनाओं के अनवरत अनुक्रम में 'क्यों' पर अटकलें लगाने में वे शायद ही कभी रुके हों। घटनाओं के काल और स्थान का तो सावधानीपूर्वक ध्यान रखा गया है लेकिन उसके आगे यह बहुत ही कम पता चलता है कि कोई घटना विशेष क्यों घटी। फिर भी,वृतांतों को आकार देने वाले परिप्रेक्ष्यों को पहचानना संभव है। एक ओर तात्कालिक वातावरण और इसकी राजनीतिक अपेक्षाओं के परे लेखकों ने विभिन्न प्रकार के विचारों पर काम किया जो संभवत: इनके समय के अधिकांश शिक्षित लोगों के मन में थे। कुछ उदाहरणों में भावी घटनाओं के सूचक के रूप में शकुन-अपशकुन की मान्यता की स्वीकृति के साथ जोड़ कर भाग्य को स्वीकार करना इनमें शामिल था। अन्य लोगों ने मनुष्य के भाग्य में सुनहरे अतीत से एक दीर्घकालिक स्थिर पतन की धारणा को ध्यान में रखकर कार्य किया। लेकिन कुछ अन्य उदाहरणों में हम अस्पष्ट रूप से ही सही मानवीय कारणों के महत्व की मान्यता पाते हैं। कभी-कभार मनुष्य के भाग्य की अस्थिरता की स्वीकृति जैसे एक मामूली विचार से तर्कों का ढ़ाँचा तैयार किया गया।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I) 'इलियड' की रचना किसने की है?

II) ओल्ड टेस्टामेन्ट किस धर्म का ग्रंथ है?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

A)पूर्व क्लासिक युग

B)क्लासिक युग

C) लोक आख्यान

7.4 हेरोडोटस (Herodotus) (484-425 ई०पू०)

हेरोडोटस एक महान घुमक्कड़, भूगोलवेत्ता, अपने रीति-रिवाजों और इतिहास का प्रेमी, यूनानी तथा बारबेरियन के प्रति समभाव रखने वाला, पूर्वाग्रह रहित व्यक्तित्व का था। वह सैन्य मामलों का थोड़ा बहुत जानकार भी था। इस वजह से उसकी युद्धों पर लिखी पुस्तक विश्वसनीय मानी जा सकती है।

प्रो० लाल बहादुर वर्मा का मत है कि-

"हेरोडोटस ने मनुष्य के कार्यों को वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में देखा। अपनी कुशाग्र जिज्ञासा और ईमानदार निर्णय के सहारे उसने इतिहास लिखा। उसके पास कोई वैज्ञानिक शोध पद्धति नहीं थी। वह प्राप्त सूचनाओं पर यथावत विश्वास कर लेता था। जिनके बारे में वह लिखता था, उनकी भाषा से भी परिचित नहीं था। इसलिये कुछ विद्वान उसे इतिहासकार मानने पर आपत्ति करते हैं। तथापि यह निर्विवाद है कि वह मनुष्य को देश काल में स्थित कर देखने लगा था। देश काल का यही संदर्भ इतिहास की पूर्व शर्त है।"

यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस का समय संभवत: 484-425 ई० पूर्व रहा होगा, ऐसा अनुमान है। हेरोडोटस का जन्म एशिया माइनर के एक यूनानी बस्ती हालिकार्नेसस में (वर्तमान में Bodrum in Turkey) 484 ई०पू० में एक कुलीन व्यापारी परिवार में हुआ था। यह क्षेत्र उस समय पर्शियन साम्राज्य का अंग था। उसके परिवार को देश निर्वासन का दण्ड मिला और फिर कभी वह वापस अपनी जन्मभूमि नहीं गया। हेरोडोटस ने फिलिस्तीन तथा बेबीलोन सहित पश्चिम एशिया के इलाकों में, उत्तरी अफ़्रीका में विशेषकर मिस्र में, भूमध्य सागर में बसे कई द्वीपों तथा मुख्य भूमि यूनान में बहुत दूर-दूर तक यात्राएं की। यात्रा के दौरान उसने जो कुछ भी देखा और लोगों से सुना सबको वह कलमबद्ध करता रहा।

7.4.1 हेरोडोटस की रचना एवं विषय वस्तु

लेखक और भूगोलवेत्ता हेरोडोटस ने अपना सम्पूर्ण जीवन अपनी इसी कृति को समर्पित कर दिया। उसकी रचना है- **'यूनान-पर्शियन युद्ध'** 499-474 ई०पू (**Greco-Persin Wars**) है, जिसे '**हिस्ट्री**' कहा गया। हेरोडोटस के पूर्व किसी ने भी अतीत की घटनाओं से जुड़े कारण और परिणामों का इतने योजनाबद्ध तरीके से वर्णन नहीं किया था।

हेरोडोटस के बाद संपादकों ने उसकी रचना **'Histories'** को 9 भागों में बाँट दिया। जिसका प्रत्येक भाग कलाओं की देवियों में से किसी एक को समर्पित है। प्रथम पाँच भाग में पर्शियन साम्राज्य के उत्थान-पतन, वहाँ की भौगोलिक स्थिति, पर्शियनों की विजयों, लोगों के रहन-सहन, रीति रिवाजों का रोचक वर्णन है। अगले चार भागों में युद्ध का वर्णन है।

7.4.2 इतिहास लेखन के उद्देश्य

यह स्पष्ट है कि इतिहास लेखन स्वबोध विमर्श और स्पष्टतया निश्चित विषयों को लेकर किया गया। इनमें महान और भव्य मानी जाने वाली स्मृतियों को संजोना भी हो सकता था और महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण भी हो सकता था। लगभग अनिवार्य रूप से युद्ध और संग्राम ही विवरणों में छाये हुए हैं, तथापि अन्य उद्देश्य भी स्पष्टतया और कभी-कभी अप्रत्यक्ष तौर पर दिये गये हैं। उदाहरण के लिये हम देखते हैं कि हेरोडोटस ऐसा वृतान्त प्रस्तुत करते थे जो संपूर्ण ,रोचक और आकर्षक होता था। वे अपने वृतान्तों में मानव शास्त्र के (नृविज्ञानी) ऐसे हवाले भी देते थे जो अधिकांशत: अद्भुत कल्पना लोक के निकट होते थे।

इस समय के अधिकांश इतिहासकारों ने अपने उद्देश्य पहले ही घोषित कर दिये ।उसी प्रकार लेखन की शुरुआत करते समय हेरोडोटस लिखता है-

"यह शोध हैलिकारनासस के हेरोडोटस द्वारा किया गया जिसे उसने इस उम्मीद के साथ सबके समक्ष लाया है कि मनुष्यों ने जो कुछ किया है उसकी यादों को खत्म होने से बचाया जा सके और यूनानी और बर्बर लोगों के महान और आशचरय्जनक कार्यों को उनकी महिमा खोने से रोक सकें; और लिखित रूप से यह स्थापित कर सकें कि उनके झगड़ों के कारण क्या क्या थे।"

कुछ हद तक उनका यह आरम्भिक कथन उनके निष्कर्ष की टिप्पणियों से न्यायोचित प्रतीत होता है। जहाँ हेरोडोटस एथेंस वासियों की विजय पर खुश होते हैं वहीं स्पार्टावासियों की बहादुरी की प्रशंसा भी करता है।इस प्रकार वह एक निष्पक्ष इतिहासकार की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

7.4.3 स्रोतों की पहचान और उनसे जानकारियाँ प्राप्त करना

प्रमाणों और स्रोतों का प्रश्न स्पष्ट और अस्पष्ट दोनों ही रूपों से कुछ लेखनों में व्यक्त किया गया है। दूसरे-तीसरे व्यक्तियों से सुनी-सुनाई दूरदराज की घटनाओं के बारे में लिखना हेरोडोटस की शैली थी। जिज्ञासा और निरीक्षण की अपनी मेधा के बल पर वह यह जानने की कोशिश करता है कि घटनायें कैसे हुईं। यद्यपि प्रत्यक्षदर्शी अवलोकनों को महत्व दिया गया है लेकिन जानकारियों के अन्य स्रोतों जैसे धार्मिक केन्द्रों, साक्षात्कारों, इतिवृत्तों, परम्पराओं और विभिन्न दस्तावेजों को काम में लाया गया। परस्पर प्रतिकूल विवरणों की संभावना को भी ध्यान में रखा गया और ऐसी स्थितियों के समाधान के लिये उपाय खोजे गये। उदाहरण के लिये फारसी शासक सायरस के इतिहास पर चर्चा करते हुए हेरोडोटस ने कहा कि-

''यहाँ मैं उन फारसी विद्वानों का अनुसरण करूँगा जिनका वर्णन सायरस के कारनामों को अतिरंजित करना नहीं बल्कि मात्र सत्य को वर्णित करना है। इसके अलावा मैं तीन और तरीके जानता हूँ जिनमें सायरस की कहानी सुनाई गई है, पर यह सभी मेरे किये गये वर्णन से अलग हैं।''

मकबरों के इर्द-गिर्द मिले अभिलेख और परंपरायें निश्चय ही महत्वपूर्ण स्रोत थे। इसका उत्कृष्ट उदाहरण 'डेल्फी का मकबरा' है, जिसके दिव्य वाक्यों का युद्ध में जाने जैसी प्रमुख किसी भी घटना से पहले शासक और राज्य हमेशा अनुसरण किया करता था। हेरोडोटस ने इस दिव्य वाक्यों में से कुछ की भविष्यवाणियाँ दर्ज़ की हैं जो ऐसा प्रतीत होता है कि जान बूझकर अनेकार्थक भाषा में व्यक्त किये जाते थे। हेरोडोटस ने किसी कार्य के सफलतापूर्वक पूरा होने पर मकबरे पर चढ़ाई गई भेंट का विवरण भी दिया है।

हेरोडोटस पाठक को अपनी कई यात्राओं का आँखों देखा विवरण भी उपलब्ध कराते हैं। मेसोपोटमिया में कृषि की स्थिति का उनका विवरण देखें-

> ''हम जितने भी देशों के बारे में जानते हैं उनमें से कोई भी इतना अन्न उपजाऊ देश नहीं है। यह देश अंजीर,जैतून, अंगूर या इसी प्रकार की अन्य पौध को उगाने का बेशक दावा नहीं करता लेकिन अनाज के मामले में यह इतना उपजाऊ है कि सामान्य पैदावार दो सौ और कभी कभी तीन सौ गुना होती है। गेहूँ और जौ के पौधों का फलक चौड़ाई में अक्सर चार अंगुल होता है। जहाँ तक बाजरे और तिल का प्रश्न है तो मैं यह नहीं कहूँगा कि वे किस उँचाई तक बढ़ते हैं हालाँकि यह मेरी जानकारी में है; क्योंकि मैं इस बात से अनजान नहीं हूं कि मैं बेबीलोनिया के उपजाऊपन के बारे में जो कुछ लिख चुका हूँ वह उनको अविश्वसनीय लगे जो कभी इस देश में गये ही नहीं।''

हेरोडोटस ने लोक परंपराओं / दंतकथाओं को भी जब-तब स्रोतों की तरह इस्तेमाल किया है। उदाहरण के लिये वह अविश्वस्नीय रूप से समृद्ध माने जाने वाले नरेश क्रोएशस और एथेंस के संविधान के संस्थापकों में से एक सोलोन के बीच एक लम्बी वार्ता उद्धृत करते हैं। फारसियों के अभिवादन के तरीकों का जीवन्त विवरण जो हेरोडोटस को प्रथम दृष्ट्या लगा उसका वर्णन भी किया है।

इतिहास का जनक 'गद्य रचना' का भी जनक माना गया। उसके वर्णन की विशेषता है–पक्षपातरहित और पूर्वाग्रह रहित वर्णन। वह राजनीतिक विवाद के प्रत्येक पक्ष का सही जिक्र करता है। ग्रीक लोगों की और विशेषकर एथेंसवासियों की विजयगाथाओं का उत्सव मनाते हुए, वह फारसियों और स्पार्टावासियों की वीरता को भी स्वीकार करते हैं।

उसका संपूर्ण लेखन दास्तानगोई शैली में और रोचक है। हेरोडोटस ने स्पष्ट तौर पर संभ्रांत और शिक्षित लोगों के लिये लिखा। वस्तुतः उनके अनुवादों से स्पष्ट होता है कि उन्होंने बड़ी सजगता से और चतुराई से प्रत्येक वाक्य का विन्यास किया।

7.4.4 ऐतिहासिक घटनाओं और प्रक्रियाओं को समझना

हेरोडोटस के इतिहास-लेखन में कोई दोष न हो ऐसा नहीं है। वह सुनी हुई बातों पर विश्वास कर लेता था। दरअसल अपशकुन और उनके आशय हेरोडोटस के वर्णनों से भरे पड़े हैं। तथापि हेरोडोटस को मात्र अन्धविश्वासी मानते हुए इनकी उपेक्षा कर हम भूल करेंगे। अपनी सभी तरह की विफलताओं और उपलब्धियों के साथ मानवीय कारण को भी यथोचित स्वीकार किया है। हेरोडोटस ने माना कि एक दुर्जेय बेड़ा बनाकर फारस के आक्रमण का सामना करने का एथेंस का प्रयास संकटपूर्ण था। यदि एथेंसवासी युद्ध की जगह शांति चुनते तो यूनान का बाकी हिस्सा कभी न कभी फारस के नियन्त्रण में आ जाता। उसने लिखा-

> "इसलिये अगर कोई अब यह कहे कि एथेंसवासी यूनान के मुक्तिदाता थे तो वह सत्य से दूर नहीं होगा क्योंकि वास्तव में उनके पास न्याय का तराजू था और वह जिसकी तरफ़ भी झुकते जीत उसी की होती….. और इसलिये देवताओं के बाद वही थे जिन्होंने आक्रमणकारियों को खदेड़ भगाया।"

यद्यपि किस्सों और किस्सागोई के प्रति हेरोडोटस की अतिशय आस्था को देखकर **'प्लूटार्क'** ने उसे **'झूठ का पिता'** कहा है। तथापि कहा जा सकता है कि काल के परिप्रेक्ष्य में देखने वाला हेरोडोटस पहला व्यक्ति था। **'सिसरो'** ने उसे **'इतिहास का जनक'** कहा और अधिकतर विद्वानों की तरह 'लुसियन' ने उसे थ्युसिडाइडस से ऊपर प्रतिष्ठित किया है। **'शाटवेल'** ने उसे **'पर्सियन युद्धों का होमर'** कहा है।कालिंगवुड ने अपनी पुस्तक 'आइडिया आफ़ हिस्ट्री' में हेरोडोटस के संपूर्ण कार्यों का विश्लेषण करते हुए उसे वैज्ञानिक इतिहास के सृजन का श्रेय दिया है। प्रश्न पूछने के हुनर से हेरोडोटस ने पिछली मानवीय गतिविधियों की जानकारी पाना संभव बनाया,जो पहले असंभव था। जनश्रुति लेखन को इतिहास के विज्ञान में बदलना पाँचवीं सदी का आविष्कार था और उसका आविष्कारक था हेरोडोटस।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हेरोडोटस के पूर्व भी गद्य रचना की गयी हैं। जिनमे हिकेटियस का जिक्र कई बार हेरोडोटस ने स्वयं किया है। किन्तु उनकी रचनायें किसी एक नगर या दूसरे नगर की सामान्य घटनाओं का क्रमिक वर्णन मात्र है। जबकि हेरोडोटस ने संपूर्णता में एक ऐसी मौलिक रचना की जो न केवल यूनान अपितु संपूर्ण यूरोप में अद्वितीय है। अनेक शिथिलताओं और अशुद्धियों के बावजूद 550 से 479 ई०पू के मध्य का न केवल यूनान का इतिहास अपितु पश्चिम एशिया और मिस्र का मौलिक इतिहास जानने का यह महत्वपूर्ण स्रोत है।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I) हेरोडोटस के लेखन का मुख्य विषय क्या था?

II) हेरोडोटस की प्रसिद्ध रचना का क्या नाम है?

III) हेरोडोटस को इतिहास का जनक किसने कहा?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

A)हेरोडोटस की रचना एवं विषय वस्तु

B) हेरोडोटस के इतिहास लेखन के उद्देश्य

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिजिये।

a) हेरोडोटस की जानकारी के स्रोतों का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

7.5 थ्युसीडाइडस Thucydides (460-400ई०पू०)

थ्युसिडाइडस का जन्म संभवतः 460 ई०पू०या उसके भी पहले हुआ। वह यूनानी इतिहासकारों में हेरोडोटस के बाद दूसरा महत्वपूर्ण विद्वान था। इतिहास के प्रति उसका दृष्टिकोण कदाचित हेरोडोटस से भिन्न था। उसने न केवल इतिहास को महाकाव्यात्मक कविता और अलौकिकवाद से अलग किया अपितु उसमें विश्लेषणात्मक पद्धति को महत्व प्रदान करके गम्भीर एवं वर्णनात्मक इतिहास-लेखन को प्राम्भ किया। 'बी० शेख अली' ने इस इतिहासकार के संबन्ध में लिखा है कि–थ्युसिडाइडस ने हमें सर्वप्रथम इतिहास के मूल सत्य से अवगत करवाया है जिसको हम अक्सर दोहराते हैं **"इतिहास घटनाओं और तथ्यों का अध्ययन है जिसके माध्यम से हम तर्क,निश्चित पद्धति और स्थायी क्रमबद्धता से जुड़े रहते हैं।"**

7.5.1 थ्युसिडाइडस की रचना एवं उसकी विषय वस्तु

थ्युसिडाइडस के लेखन का मुख्य विषय **'पेलोपोनेशियाई युद्ध का इतिहास'** (431-404 ई० पू०) (Peloponnesian War) है। यह आठ भागों में है। पर यह विभाजन किसी और ने किया होगा। अन्तिम भाग 411ई०के अभियान के बीच में अचानक रुक जाता है।

5वीं सदी ई० पू० में पेलोपोनेशियन युद्ध एथेंस और स्पार्टा के बीच संघर्ष था,जो लगभग तीस वर्षों तक चला। इस युद्ध के आरम्भ से ही उसने इसकी दिन-प्रतिदिन की घटनाओं को लिखना शुरु कर दिया था। यह ऐसा युद्ध था जिसमें अधिकांश अन्य यूनानी राज्य भी एक दूसरे के समर्थन में उलझ गये थे। थ्युसीडाइडस का एथेंस के साथ संबन्ध और भी निकट का था। वह एथेंस के ही थे और पेलोपोनीशियन युद्ध के दौरान जनरल थे, हालांकि जनरल की हैसियत से उसको असफल माना गया। जनरल के रूप में असफ़ल होने के बाद थ्यूसीडाइडस को निर्वासित कर दिया गया और उसने कुछ वर्ष उन देशों में बिताये जो एथेंस के विरोधी थे। 404 ई०पू० में सज़ा समाप्त होने पर वह एथेंस लौटा। अचानक मृत्यु हो जाने से उसका लेखन अधूरा ही रह गया। युद्ध समाप्ति के लगभग छ वर्ष पूर्व तक का विवरण हमें थ्यूसीडाइडस से ज्ञात होता है।

अपने लेखन का उद्देश्य हेरोडोटस के समान थ्युसिडाइडस ने भी अपने पूर्वजों के काल की घटनाओं की स्मृतियों को संजोना ही बताया है।

थ्यूसीडाइडस के कार्य में उसके बहुमूल्य अनुभव की झलक कई तरह से दिखती है। थुसिडाइडस चाहता था कि उसका लेखन तात्कालिक प्रशंसा प्राप्त करने वाले निबन्ध की तरह न होकर सर्वकालिक महत्व का हो।

7.5.2 लेखन-पद्धति

प्रो० लाल बहादुर वर्मा का मत है कि-

> "थ्युसिडाइडस का लेखन अधिक व्यवस्थित और सूक्षम था। वह यथासंभव कल्पना के सहारे लिखने से बचता था। उसकी दृष्टि पैनी थी और वह तथ्यों की जाँच करता था।उसका मानना था कि ऐसे लोगों का इतिहास लिखना चाहिये जिनका घटना से सीधा जुड़ाव हो। इस तरह उस्का लेखन सीमा बद्ध था।"

उसकी निष्पक्षता, स्पष्टवादिता ने उसकी भाषा-शैली को भी प्रभावित किया। इस कारण उसकी भाषा कर्कश हो जाती है।

युद्ध के दूसरे वर्ष प्लेग ने एथेंस को अपनी चपेट में ले लिया था। उसने 'प्लेग' का सजीव वर्णन किया है-"अच्छे-भले लोग अचानक ही सिर में दर्द और आँखों में जलन और लालिमा से व्याकुल दिखे। जीभ और गले से खून गिरने लगा। जिनसे बहुत ही दुर्गन्ध युक्त साँसे आने लगीं।"

थुसिडाइडस ने एथेंस में हेरोडोटस के पर्शियन युद्धों का इतिहास सुना था। हेरोडोटस के विपरीत थुसिडाइडस के लेखन का दायरा सीमित है। उसने प्राप्त स्रोतों की गहराई से जाँच-पड़ताल की और स्पष्ट आँकड़ों को आधार बनाया। उसने अतिप्राकृतिक और अतिमानवीय स्थितियों से अपने इतिहासलेखन को दूर रखने के लिये भविष्यवक्ताओं, मिथकों, दंतकथाओं, आश्चर्यों और चमत्कारों की गहनतम जाँच की। इसी आधार पर '**कालिंगवुड**' ने उसे "**इतिहास की वैज्ञानिक पद्धति का जनक**' कहा।

7.5.3 थ्युसिडाइडस की इतिहास दृष्टि

थ्युसिडाइडस विश्लेषण की जो गहराई इतिहास-लेखन के लिये लेकर आया उसका आधुनिक इतिहास चिंतन पर स्थायी प्रभाव पड़ा। थ्युसिडाइडस ज्यादा गहरी जाँच करना चाहता था। वह इतिहास प्रक्रिया का न केवल 'क्या' अपितु 'कैसे' और 'क्यों' भी जानना चाहता था। वह मानवीय मस्तिष्क के पीछे के इरादों और प्रक्रियाओं को खोजता था। उसके लिये इतिहास एक जैविक प्रक्रिया है, एक दूसरे से जुड़ी घटनाओं का तार्किक,व्यवस्थित और स्थायी क्रम से अध्ययन है। यही बीसवीं सदी में इतिहासवाद कहलाया। आधुनिक इतिहास पद्धति जो रचनात्मक तर्क करती है,उसका सबसे पहले उपयोग करने वाला थ्युसिडाइडस ही था। जब जानकारी के सभी सकारात्मक स्रोत विफल हो जाते थे,थ्युसिडाइडस पीछे से बहस करता था। ज्ञात से अज्ञात की ओर,ताकि किसी घटना के कारण या अनेकों कारणों का पता लगाया जा सके।

अंत मे 'जे०बी० ब्युरी' का मानना है कि-"इतिहास को आज के मुकाम तक पहुँचाने के लिये थुसिडाइडस ने सबसे बड़ा कदम उठाया।" वहीं 'बिल ड्युरां' उसे युद्ध में डूबे रहने का दोष देने के बावजूद एक योग्य इतिहासकार मानते हुए कहते हैं कि'-"उसमें सत्यनिष्ठा,निरीक्षण की पैनी नज़र,निष्पक्ष दिमाग,काम चलाउ भाषा-शैली थी।"

यह स्पष्ट है कि याद करने योग्य जो कुछ पाया गया वह एक महान युद्ध और उसके परिणाम थे। एक अर्थ में थ्युसीडाइडस भी इस परिप्रेक्ष्य को मानते हैं जिनका विवरण निम्नलिखित उद्धरण से प्रारम्भ होता है- "एथेंसवासी थ्युसीडाइडस ने पेलोपोनिशयनों और एथेंसवासियों के बीच हुए युद्ध का इतिहास लिखा जो उस पल से आरम्भ होता है जब युद्ध छिड़ा और जो इस विश्वास के साथ लिखा गया कि यह एक महान युद्ध होगा और इससे पहले हुए युद्धों की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण होगा।"

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I) पेलोपओनिशियन युद्ध के सम्बन्ध में किस इतिहासकार ने लिखा?

II) थ्युसीडाइडस राज्य की किस अवधारणा का समर्थक था?

III) किस इतिहास कार ने थ्युसिडाइडस को "इतिहास की वैज्ञानिक पद्धति का जनक' कहा।

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

A) थ्युसिडाइडस की रचना एवं उसकी विषय वस्तु

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिजिये।

a)थ्युसिडाइडस की इतिहास दृष्टि

7 .6 हेरोडोटस एवं थ्युसिडाइडस का तुलनात्मक विश्लेषण

इतिहासकार कालिंगवुड ने उक्त दोनों इतिहासकारों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। पांचवीं सदी ई०पू० के उक्त दोनों इतिहासकारों की सोच एवं लेखन शैली मे अंतर है। कुछ शब्दों में कहें तो थ्युसिडाइडस की विशेषता है-तथ्य, कारण,

कल्पनाशीलता और वस्तुनिष्ठता या विषयनिष्ठता । हेरोडोटस की विशेषता है-मिथक, किंवदन्तियां, भावुकता और व्यक्तिपरकता है। इनका विश्लेषण निम्न रूपों में किया जा सकता है-

- ❖ यूनानी इतिहास की अवधारणा में थ्युसिडाइडस हेरोडोटस का उत्तराधिकारी नहीं कहा जा सकता है।
- ❖ हेरोडोटस इतिहास के जन्मदाता हो सकते हैं इतिहास जनक के रूप में हेरोडोटस ने सर्वप्रथम इतिहास के वैज्ञानिक स्वरूप का प्रतिपादन किया।परन्तु मनोवैज्ञानिक इतिहास के जन्म दाता थ्युसिडाइडस ही है।उस पर हिप्पोक्रेटिक चिकित्सा शास्त्र का प्रबल प्रभाव है। इतिहास का मुख्य कार्य बीती घटनाओं और तथ्यों का अध्ययन करना है। किन्तु मनोवैज्ञानिक इतिहास का मुख्य कार्य मनोवैज्ञानिक नियमों की पुष्टि करना है।
- ❖ हेरोडोटस की इतिहास की अवधारणा मानववादी है अर्थात इतिहास में व्यक्तिगत कार्य का विशेष महत्व है। एक व्यक्ति के कार्य के परिणामस्वरूप संपूर्ण मानव समाज दुख भोगता है।
- ❖ हेरोडोटस ने प्राकृतिक नियमों को इतिहास में प्रधानता दी है। मानवीय कार्यों पर प्रकृति, भौगोलिक परिस्थिति तथा वातावरण का प्रभाव स्वाभाविक है।
- ❖ हेरोडोटस घटनाओं में ही रुचि रखता था। थ्युसिडाइडस की रुचि उन नियमों में थी जिनके अनुरूप घटनायें होती हैं।
- ❖ हेरोडोटस की लेखन शैली सरल स्वतः स्फूर्त और विश्वसनीय है,जबकि थ्युसिडाइडस की कर्कश, कृत्रिम और विकर्षक शैली है।
- ❖ हेरोडोटस इतिहास प्रक्रिया के सिर्फ 'क्या' तक ही अधिकतर सीमित रहा जबकि थ्युसिडाइडस 'क्या' के साथ 'कैसे' और 'क्यों' भी जानना चाहता था।
- ❖ अपनी उच्च कोटि की समझ से हेरोडोटस ने यह सिद्ध किया कि समक्षता से प्रश्न कर पिछली मानवीय क्रियाओं की विश्वसनीय जानकारी पाई जा सकती है।
- ❖ थ्युसिडाइडस ने इतिहास में नियतिवाद तथा अवश्यंभाविता के सिद्धान्त को अस्वीकार किया है। थ्युसिडाइडस ने कहा कोई घटना अवश्यंभावी नहीं होती। यदि मनुष्य को किसी घटना का पूर्ण ज्ञान हो जाय तो वह रक्षा के उपाय कर लेगा।
- ❖ थ्युसिडाइडस का मानना है कि इतिहास की बहुरूपता का प्रमुख कारण मानव मस्तिष्क है।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I- हेरोडोटस के लेखन की प्रमुख विशेषता बताइये

II-थ्युसिडाइडस के लेखन की मुख्य विशेषता बताइये

III-थ्युसिडाइडस को किसने 'मनोवैज्ञानिक इतिहास का जनक' कहा है?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

A- हेरोडोटस और थ्युसिडाइडस में पाँच अन्तर बताइये।

7.7 सारांश

संभवत: मानवता की एक महत्वपूर्ण तत्व के तौर पर पहचान ही इन आरंभिक इतिहासकारों का स्थाई योगदान है। हम उनके नजरिये को संकुचित और उनकी चिंताओं को संकीर्ण पा सकते हैं। फिर भी, वह हमें प्रामाणिकता और सत्याभास के सवाल उठाने और उनके हल खोजने के प्राचीनतम उदाहरण उपलब्ध कराते हैं। वह संभावित ऐतिहासिक व्याख्याओं से भी जूझते हैं। हम कुछ विशेष आधारों पर उनसे असहमत हो सकते हैं लेकिन उनकी खोज कई शताब्दियों के बाद भी इतिहासकारों के प्रयासों का अंग हैं।

प्रतिद्वन्द्वी इतिहासकार थ्युसिडाइडस जो मात्र उन तथ्यों पर भरोसा करता था,जो कम व्यक्तपतक हों कि क्या हुआ,जब्कि हेरोडोटस की अपने लेखन को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिये इस्तेमाल की गै दंतकथाओं के लिये आलोचन की जाती है।इस्के लिये लोग हेरोडोटस को पहला मिथ्यावादि और थ्युसि डाइडस को पहला इतिहासकार मानते हैं।किंतु किसी के भी कहने पर यह सत्य नहीं माना जा सकता। वस्तुत: हेरोडोटस कोरूखी सूखी राजनीतिक कथा को साहित्य में बदल कर पठनीय बनाने का श्रेय दिया जा सकता है। उनके उत्तराधिकारी सामान्यत: अधिक संयमित थे और विशेषकर लैटिन लेखकों ने एक गंभीर नैतिक स्वर अपना लिया था। उसे आगस्टस कालीन विशेषता की तरह भी देखा गया है जहाँ शासक ने अन्य बातों के अलावा अपनी भूमिका को प्राचीन परम्पराओं की पुनर्स्थापना के तौर पर भी देखा।

7.8 तकनीकी शब्दावली

पूर्व क्लासिक युग- यूनान के इतिहास में हेरोडोटस के पूर्व भी रचनायें लिखी जा रही थीं। उस काल को 'पूर्व क्लासिकल युग' कहा जाता है।

क्लासिक युग- हेरोडोटस-थ्युसिडाइडस के काल को 'क्लासिकल युग' कहा जाता है।

'लोगोग्राफी'-सरल गद्य में नगरों, राजपरिवार के लोगों, जनसामान्य, मंदिरों के उद्भव से संबन्धित मौखिक परंपरओं और जनश्रुतियों को प्रस्तुत करने की कला यूनान में लोगोग्राफी कहलाई।

7.9 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

इकाई 7 .3

1. I) होमर

II) यहूदी धर्म

2. A) देखिये 7 .3.1

B) देखिये 7.3.2

C) देखिये 7 .3.1

इकाई 1.4

1. I) पर्शियन युद्ध

II) हिस्ट्रीज या ग्रीक पर्शियन युद्ध

III) सिसरो

2. A) देखिये 7 .4.1

B) देखिये 7 .4.2

3. देखिये 7 .4.3

इकाई 1.5

1 I) थ्युसीडाइडस ने

II) प्रजातन्त्रात्मक।

III) कालिंगवुड

2.देखिये 7 .5.1

3. A) देखिये 7 .5.3

इकाई 1.6

1. I- मिथक, किंवदन्तियां, भावुकता और व्यक्तिपरकता
   II- तथ्य, कारण, कल्पनाशीलता और वस्तुनिष्ठता या वस्तुनिष्ठता
   III- कालिंगवुड
2. A- देखिये 7.6

1.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

- ई० श्रीधरन, इतिहास–लेख, (हिन्दी अनुवाद मनजीत सलूजा), हैदराबाद, (तेलंगाना), 2011.
- प्रोफेसर झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001.
- डा० गोविन्द्चन्द्र पाण्डे, (संपादित) इतिहास: स्वरूप एवं सिद्धान्त,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1999
- आर्थर मारविक, इतिहास का स्वरूप, (अनुवाद) लाल बहादुर वर्मा,ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन,दिल्ली, 2003.

1.11 सहायक /उपयोगी सामग्री

- ई० श्रीधरन, इतिहास–लेख, (हिन्दी अनुवाद मनजीत सलूजा), हैदराबाद, (तेलंगाना) ,2011
- प्रोफेसर झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001.
- डा० गोविन्द्चन्द्र पाण्डे, (संपादित) इतिहास: स्वरूप एवं सिद्धान्त,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1999
- आर्थर मारविक, इतिहास का स्वरूप, (अनुवाद) लाल बहादुर वर्मा,ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन,दिल्ली, 2003.
- एल्फ्रेड ज़ान् चर्च एन्ड विलियम जैक्सन ब्रोडिब (अनुवाद), द एनाल्स एन्डद हिस्ट्रीज आफ टेसीट्स, माडर्न लाइब्रेरी, 2003.
- लाल बहादुर वर्मा, इतिहास:क्यों-क्या-कैसे,
- एरिक हाब्स्बम, इतिहासकार की चिंता,
- मार्क ब्लाख, इतिहासकार के शिल्प, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, 2005.
- लाल बहादुर वर्मा का आलेख, इतिहास लेखन और इतिहास दर्शन पढ़ें
- https://www.history.com/topics/ancient-history/herodotus
- https://www.britannica.com/biography/Thucydides-Greek-historian

1.12 निबन्धात्मक प्रश्न

- इतिहास लेखन की यूनानी परम्परा पर प्रकाश डालिये।
- इतिहास लेखन की यूनानी अवधारणा का हेरोडोटस के संदर्भ में वर्णन कीजिये।
- हेरोडोटस का एक इतिहासकार के रूप में मूल्यांकन कीजिये।
- थ्यूसिडाइडस का एक इतिहासकार के रूप में मूल्यांकन कीजिये।
- हेरोडोटस और थ्युसिडाइडस की लेखन शैली का तुलनात्मक वर्णन कीजिये।

इकाई आठ : मध्यकालीन चर्च और इतिहास लेखन: टेसीटस, सन्त आगस्टाइन

8 .1 प्रस्तावना

8 .2 इकाई के उद्देश्य

8 .3.1 रोमन इतिहास-लेखन

8 .3.2यूनानी और रोमन इतिहास की तुलना

8 .4 कार्नेलियस टेसीटस (55-120ई०पू०) (Publius Cornelius Tecitus)

8 .4.1 टेसीटस की कृतियां एवं स्रोत

8 .4.2 विषय वस्तु एवं टेसीटस की ऐतिहासिक दृष्टि

8 .5 मध्ययुगीन ईसाई इतिहास-लेखन

8 .5.1 मध्ययुगीन ईसाई इतिहास-लेखन एवम उसकी विशेषतायें

8 .6. सन्त आगस्टाइन (354-430 ई०) Aurelius Augustinus

8 .6.1 परिचय और कृतियाँ

8 .6.2 विषय-वस्तु

8 .7 सारांश

8 .8 तकनीकी शब्दावली

8.9 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

8 .10 संदर्भ ग्रंथ सूची

8 .11 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

8 .12 निबन्धात्मक प्रश्न

8 .1 प्रस्तावना

आधुनिक वैज्ञानिक युग में इतिहास की उपादेयता समाज के समक्ष महत्वपूर्ण विचारणीय प्रश्न है। इतिहास का अध्ययन कितना उपयोगी है, यह गंभीर चर्चा का विषय है। वस्तुतः इतिहास एक शीशा है जो मानवीय प्रयास को प्रतिबिम्बित करता है। मानव जीवन में इतिहास की उपयोगिता असंदिग्ध है। प्रो०शेक अली ने उचित ही कहा है कि – "इतिहास की उपेक्षा करने वाले राष्ट्र का कोई भविष्य नहीं होता है। अतः किसी राष्ट्र के उत्थान या विकास के लिये इतिहास का अध्ययन आवश्यक है।" यूनानियों के समान ही रोमन इतिहासकार प्राचीन इतिहास जानने के हमारे प्रमुख स्रोत हैं।

इस इकाई में आपको रोमन इतिहासकार 'टेसीटस' और ईसाई इतिहास लेखन में 'सेंट आगस्टाइन' एवं उनकी कृतियों का इतिहास एवं साहित्य की दृष्टि से उनकी उपयोगिता का अध्ययन करना है।

8.2 इकाई प्राप्ति उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्नलिखित विषयों के बारे में जानने योग्य हो जायेंगे-

- रोमन इतिहास लेखन की विशेषताओं, टेसीटस के चुने हुए लेखन से आप प्रारम्भिक रोमन साम्राज्य के बारे में अपनी समझ विकसित कर सकेंगे।
- रोमन इतिहास लेखन तथा यूनानी इतिहास लेखन की प्रवृत्तियों की प्रस्पर तुलना कर सकेंगे।
- इसाई इतिहास लेखन की विशेषताओं और सेंट आगस्टीन के लेखन से परिचित हो सकेंगे।
- सेंट आगस्टीन के लेखन ने पश्चिमी इसाईयत तथा पाश्चात्य दर्शन को कितना प्रभावित किया।

8 .3.1 रोमन इतिहास-लेखन

अपने कुलीन परिवारों की पूर्वजों के प्रति भक्ति के कारण प्राचीन रोमनों की अतीत के प्रति कुछ विशेष श्रद्धा थी। इनके प्रारम्भिक लेख विवरण मात्र थे। जिनमें धार्मिक मान्यताओं और अंधविश्वासी व्यवहार का प्रभाव था। यूनानियों की अपेक्षा रोमन अधिक व्यावहारिक थे और उनकी समझ दर्शन की अपेक्षा इतिहास के अधिक अनुकूल थी। तथापि यह स्पष्ट है कि रोमन इतिहास-लेख के उद्भव पर ग्रीक प्रभाव है। रोमन इतिहासकारों में केटो, लिवी, टेसीटस का नाम उल्लेखनीय है। **आगस्टन युग रोमन साम्राज्य का स्वर्ण युग चिन्हित किया जाता है।** टेसीटस जिसे आपके अध्ययन के लिये चुना गया है, इसी युग का था।

यूनान और रोम का युग कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इस युग की सम्यक जानकारी के बिना आप यूरोपीय चिंतन को समझ ही नहीं सकते। रोमन सभ्यता की चर्चा करते हुए हम देखते हैं कि इसके दो हिस्से थे- एक रोमन गणतंत्र ई०पू०509 से ई०पू०और दूसरा रोमन साम्राज्य जो ई०पू30 से 476ई० तक चला। यूनान के नगरों की तुलना में रोमन साम्राज्य अत्यंत विशाल था। 146 ई०पू० में पूरा यूनान रोम के अधीन हो गया । रोमन साम्राज्य एक बेजोड़ संस्था थी। इसका विस्तार यूरोप, एशिया और अफ्रीका तीनों महाद्वीपों तक था। ऐसा कहा जाता था कि रोमन साम्राज्य सीमाहीन था। इसकी सीमायें अनंत थीं। यह साम्राज्य लगभग पाँच शताब्दियों तक बना रहा। यह साम्राज्य अपने विशिष्ट शासक वर्ग के लिये भी जाना जाता है। यूनान की तरह रोमन शासकों में युद्ध नहीं होते थे। 476 ई० में रोमन साम्राज्य का पतन हो गया। कुछ विचारक रोमन साम्राज्य के पतन के कारणों में से एक कारण इसाई धर्म को बताते हैं। यह इसाई धर्म रोमन साम्राज्य के पतन के बाद संपूर्ण पश्चिमी जगत में फैल गया।

वार्षिक दस्तावेज लिखे जाने की व्यवस्था रोम में सदियों से थी। ये दस्तावेज **'अनाल मकसीमी'** कहलाते थे। पादरियों द्वारा इनका संग्रह और संरक्षण किया जाता था। इसमें प्रत्येक वर्ष नियुक्त होने वाले जजों और महत्वपूर्ण घटनाओं का हिसाब दर्ज़ होता था। संपन्न कुलों में मृत्यु के पश्चात संभाषणों का रिवाज था। इसे इतिहासकारों ने 'अनाल मकसीमी' में सम्मिलित कर लिया।

8 .3.2 यूनानी और रोमन इतिहास की तुलना

यूनानियों की तुलना में रोमन इतिहास लेखन की परंपरा का स्वरूप पिछड़ा हुआ है। उनके लेखन में यूनानी इतिहासकारों के समान न तो तीक्ष्णता और न ज्ञान है। इसलिये आधुनिक इतिहासकारों ने रोमन इतिहासकारों को यूनानी इतिहासकारों की श्रेणी में नहीं रखा है। चुँकि उन्होंने लम्बे समय तक इतिहास-लेखन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अतः उनका चिन्तन मौलिक नहीं है। वे साधारण रूप में अपने पूर्वगामी लेखकों के विचारों का ही समर्थन और अनुसरण करते रहे।

यूनानी और रोमन इतिहासकारों की तुलना निम्न लिखित रूपों में कर सकते हैं-

- यूनानी इतिहासकारों के लेखन का दायरा अत्यंत विस्तृत था,उन्होंने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू के संबन्ध में लिखा है, जबकि रोम इतिहास लेखकों ने महत्वपूर्ण कुलीनतंत्र से संबन्धित घटनाओं का विवरण लिखा।
- यूनानियों ने जीवन के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं का वर्णन किया है किन्तु रोमन इतिहासकारों ने जीवन के आधारभूत प्रश्नों का कोई वर्णन नहीं किया है।
- यूनानी इतिहास्कारों ने सत्य की खोज पर बल देते हुए उनके विश्लेषण को महत्व दिया जबकि रोमन विद्वानों ने घटना से संबन्धित कारणों को जानने की कोशिश कम ही की है।
- यूनानियों ने इतिहास में **'मानववाद'** को महत्व प्रदान करके इतिहास के क्षेत्र को व्यापक किया जबकि रोम के विद्वान केवल राजनैतिक व सैनिक घटनाओं के अन्दर सिमटे रहे।
- यूनानियों ने समस्त इतिहास के विवादास्पद पहलुओं के हल को स्पष्ट किया किन्तु रोम के विद्वानों ने जटिल समस्याओं की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।
- यूनानियों का रचनात्मक नेतृत्व में विश्वास था क्योंकि वे उसे संस्कृति एवं साहित्यिक विकास में सहायक समझते थे पतन्तु रोम का इतिहास-लेखन आत्मकथाओं पर केन्द्रित था और वे साहित्यिक विकास में संस्कृति की भूमिका को महत्व नहीं देते थे।

उक्त कमियों और खूबियों के बावजूद यूनानी-रोमन इतिहासकारों ने अपने युग की परिस्थितियों व आवश्यकताओं को दृष्टिग रखते हुए उद्देश्यपूर्ण इतिहास-लेखन की दिशा में उल्लेखनीय योगदान किया।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I. किस युग को रोमन साम्राज्य का स्वर्ण युग चिन्हित किया जाता है?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

a) रोमन इतिहास लेखन परंपरा

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिजिये।

A.यूनानी व रोमन इतिहास-लेखन में अन्तर स्पष्ट कीजिये।

B. 'मानववाद' से आप क्या समझते हैं?

8 .4 कार्नेलियस टेसीटस (55-120ई०पू०) (Publius Cornelius Tecitus)

रोमन इतिहासकारों में कार्नेलियस टेसीटस (Publius C.Tacitus) महत्वपूर्ण नाम है। वह एक जाना माना वक्ता था। टेसीटस के प्रारम्भिक जीवन के बारे में अधिकारिक रूप से कुछ ज्ञात नहीं है अपितु अनुमान पर आधारित है। अनुमानतः उसका जन्म उत्तरी इटली के कुलीन परिवार में हुआ था। माता पिता के बारे में जानकारी नहीं है तथापि तह तय है कि वह जन्मना संभ्रान्त परिवार से ताल्लुक रखता था। विद्वानों ने उसे `रोम के थ्युसिडाइडस' की संज्ञा दी है। उसका जन्म 55 ई० और निधन 120 ई० में हुआ था। टेसीटस अपने समकालीनों का बहुत बड़ा आलोचक था।

टेसीटस ने भाषण कला तथा गद्य रचना का अध्ययन किया साथ ही कानून की शिक्षा प्राप्त की थी। 77 ई० में उसका विवाह एग्रीकोला की बेटी से हुआ।

8 .4.1 टेसीटस की कृतियां एवं स्रोत

98 ई० में उसने 'एग्रीकोला' और 'दि जर्मेनिया' कि रचना की। उसने अपनी रचनायें **लैटिन भाषा** में लिखीं। किन्तु जिन कृतियों के लिये टेसीटस की ख्याति है उनमें दो महत्वपूर्ण हैं-

1- **'ऐनल्स'**

2- **'हिस्ट्रीज'**

इनके अतिरिक्त **'डायलाग्स आन द ओरेटर्स, 'एग्रीकोला' और 'डि जर्मेनिया'** उसकी अन्य रचनायें हैं।

स्रोतों की बात करें तो इतिहास ग्रन्थ, भाषण, पत्र, राजाज्ञाएं, सेनेट के अधिनियम एवं प्राचीन परिवारों की परंपराएं टेसीटस की जानकारी के **स्रोत** थे। टेसीटस स्रोतों के लिये कम चिंतित हैं। शाही परिवार से उसके निकट संबन्ध थे। अतः बहुत सी गोपनीय या राजनैतिक सूचनायें प्राप्त कर लेना उसके लिये आसान था। इसके बावजूद उसके लेखन में लिखित और मौखिक स्रोतों के अनियमित संदर्भ मिलते हैं। जिन्हें टेसीटस ने विभिन्न घटनाओं जैसे, युद्धों, षड़यंत्रों, सेनेट की कार्यवाहियों निर्माण गतिविधियों और लोक कार्यवाहियों के विस्तृत इतिहास को दर्ज़ करने के लिये चुना। उसके पश्चात परिश्रम से अपने इतिवृत्तों में कालक्रम से प्रत्येक वर्ष का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। थुसीडाइडस के समान टेसीटस भी शाही परिवार के कुचक्रों और हत्याओं के बारे में अफवाहों का विश्लेषण करते हुए स्पष्टतया उसे नकारते हुए अमर्यादित अनुमान मात्र समझता था। उसकी विश्लेषणात्मक शक्ति अद्वितीय थी और वह तथ्यों एवं घटनाओं को विश्लेषण के बाद ही अपने ग्रंथ में स्थान देता है।

8 .4.2 विषय वस्तु एवं टेसीटस की ऐतिहासिक दृष्टि

उसके दोनों ख्याति लब्ध ग्रंथ **'ऐनल्स' और 'हिस्ट्रीज'** अधूरे ही प्राप्त हैं।

'ऐनल्स' में जूलियन वंश के सम्राटों-टाइबेरियन, कैलिगुला क्लाडियस एवं नीरो (14-68ई०) का इतिहास है। वस्तुतः आगस्टस की मृत्यु से लेकर 69 ई०तक का वर्णन है। अनुमानतः इसके 16 से 18 भागों में से 12 शेष बचे हैं।

'हिस्ट्रीज' में गल्बा से लेकर डोमिशियन की मृत्यु तक (68-96ई०) रोमन सम्राटों का विवरण है। यह फैलेवियन राजवंश का इतिहास है। अनुमानतः इसके 12 या 14 मूल भाग थे। जिसमें से साढ़े चार भाग प्राप्त हैं।

'डि जर्मेनिया' में उसने जर्मन संस्थाओं का अध्ययन करके जर्मन लोगों की व्यक्तिवादी भावनाओं और स्वातंत्र्य प्रेम का वर्णन किया है। साथ ही रोम के एकतंत्र और पराधीनता के वातावरण का भी व्यंग्य के माध्यम से विरोध प्रस्तुत किया है।

'एग्रीकोला'- एग्रीकोला, ब्रिटेन के गवर्नर के रूप में उसके श्वसुर एग्रीकोला की जीवन गाथा है।

यह स्पष्ट है कि इतिहास-लेखन स्वबोध विमर्श और स्पष्टतया निश्चित विषयों को लेकर किया गया। उसने लगभग 50 वर्षों के रोमन साम्राज्य के इतिहास का चित्रण किया। इस कार्य का प्रारम्भ होता है आगस्टस के शासन के अंत से और इसमें सैन्य तथा प्रशासनिक विशिष्ट वर्गों की उद्विग्नता, उत्तराधिकार संबन्धी उनकी फ़िक्र और राजनीतिक मामलों में सेना की भूमिका का वर्णन किया गया है। उसके वृतांत की खास बात यह है कि राजनैतिक व्यक्तियों से निकटता से जुड़े होने के कारण वह बताता है कि रोमन संभ्रान्त वर्ग में किसी भी स्तर में एकरूपता नहीं थी।

इन इतिहासकारों के लेखन के परिप्रेक्ष्य में महान और भव्य मानी जाने वाली स्मृतियों को संजोना और महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण देना उनका उद्देश्य प्रतीत होता है। युद्ध और वृतांत का वर्णन अधिकतर और अनिवार्य रूप से दिखता है। अन्य ब्यौरे सहायक रूप में आ जाते हैं। वैसे इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह समय ही ऐसा था। रोमन साम्राज्य का विस्तार निसंदेह युद्धों के बल पर हुआ था। जिनकी गाथाएँ लिखी गईं। ये गाथायें अप्रत्याशित नहीं हैं अपितु उनमें परिलक्षित होने वाला नैतिकता का स्वर इन्हें विशिष्ट बनाता है। रोमन साम्राज्य के पतन की आशंका की पीड़ा से आगस्टन युग का यह इतिहासकार चिंतित था।

एक संदर्भ में टेसीटस की रचनाओं में सैन्य गतिविधियों के प्रति उसका झुकाव स्पष्ट दिखता है। तथापि सामान्य तरीके से लड़ाकू नायकों का महत्व स्थापित करने का प्रयास नहीं करता अपितु आलोचना ही करता है। टेसीटस ने लिखा है-

> **"मेरा उद्देश्यहर घटना का विस्तार से वर्णन करना नहीं अपितु उन घटनाओं का वर्णन करना है जो अपनी बदनामी के लिये कुख्यात और अच्छे कार्यों के लिये सुप्रसिद्ध है। मैं इसे इतिहास का सर्वश्रेष्ठ कार्य मानता हूँ जिससे कि कोई अच्छा कार्य गुमनामी में खो न जाय और आने वाली पीढ़ियां बुरे शब्दों और कार्यों के बारे में अपनी धारणा बना सकें।"**

टेसीटस अपने लेखन को लेकर सचेत था। टेसीटस ने अपने लेखन को शिक्षात्मक माना है। वह लिखता है –

> **"बहुत कुछ जिसका मैने वर्णन किया है, वह दर्ज़ करने के लिये नगण्य लग सकता है.....मेरा कार्य सीमा बद्ध और अकीर्तिकर है, शांति पूरी तरह खंडित हो चुकी है, राजधानी में मनहूस निराशा छायी है, शासक अपने साम्राज्य के विस्तार को लेकर चिंता रहित हैं-यही मेरे विषय हैं। तथापि पहली नज़र में नगण्य लगने वाली घटनाओं का अध्ययन बेकार नहीं जायेगा।क्योंकि इन्हीं से बड़े परिवर्तनों के आंदोलन जन्म लेते हैं।"**

टेसीटस ने इतिहास के काम के बारे में नैतिक दृष्टिकोण अपनाया। इसके अनुसार इतिहासकार का मुख्य काम मनुष्यों के कार्यों पर प्रतिक्रिया देना, अच्छे और बुरे कारनामों को भावी पीढ़ियों के लिये बचाना है। यद्यपि टेसीटस के लेखन में संकीर्णता और पक्षपात दीखता है। ऐनल्स और हिस्ट्रीज के उपलब्ध अंशों के आधार पर यह निर्णय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि उसने रोमन साम्राज्य का इतिहास लिखा या रोम नगर का। उसके आख्यान में खास व्यक्तियों और महत्वपूर्ण घटनाओं का सामान्य वर्णन है , न कि उनके पीछे के कारणों, प्रक्रियाओं और विचारों का।

अपने पूर्वाग्रह युक्त विचारों के कारण टेसीटस सम्राटों की हमेशा आलोचना करता है। उसने सम्राटों को मानव-राक्षस कहा है। जबकि परवर्ती लेखकों ने उन्हीं सम्राटों की प्रशंसा की है। राजनैतिक घटनाओं के आर्थिक प्रभावों, जन-जीवन, उद्योग, व्यापार-वाणिज्य, विज्ञान, महिलाओं की स्थिति, आस्था, दर्शन, कला किसी का वर्णन नहीं किया है।

टेसीटस की इतिहास **लेखन की शैली** प्रवक्ता के समान है। आस्था के प्रश्न पर वह सावधानीपूर्वक किन्तु दोहरा रुख अपनाता है। कहीं कहीं शकुन-अपशकुन, चमत्कारों, दैवी घटनाओं को स्वीकार करता है और कहीं अस्वीकार। उसकी लेखन शैली स्पष्ट, चुटीली, सुक्तिपरक है। ऐतिहासिक साहित्य में टेसीटस के मुकाबले कम साहित्य रोचक हैं। वह अपनी बातों को पात्रों के मुँह से कहलाता है। कभी-कभी वाक्य प्रवाह में सत्यता से हट जाता है। चरित्र और व्यक्तित्व चित्रण में टेसीटस माहिर था। उसके लेखन में रोम के पतन के काल का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। उदाहरण के तौर पर देखें। अपने इतिवृत्त में एक स्थान पर टेसीटस ने लिखा है कि –

> **"मैं इतिहास के उस काल का विवरण दे रहा हूँ जो घोर संकटों से भरा है, अपने युद्धों से भयभीत है, जनसंघर्ष से ग्रस्त है और शांति के दौर में भी संत्रास से परिपूर्ण है।"**

चुंकि वह एक सतर्क साहित्यकार था अतःअपने विचारों और प्रस्तुतीकरण से उसने अपने लेखन को दमदार बना दिया टेसीटस यूनानी-रोमन विश्लेषण की तकनीक से परिचित था और उस विधा पर उसको महारत थी। अंततः बहुत ही योग्यता से लैटिन में रचे उसके लेखन पाठकों को प्रभावित करते हैं।

'जे०डब्ल्यु थाम्पसन' का मत है कि- "उसकी विश्लेषण क्षमता प्रशंसनीय थी, विशेषकर व्यक्तियों के चरित्र-चित्रण की। उत्तम व्यंग्य शैली ने टेसीटस को पठनीय बनाया। टेसीटस के लिखे इतिहास को बहुत सावधानी से पढ़ना चाहिये।"

कालिंगवुड का मत है कि-"चरित्र-चित्रण के लिये टेसीटस की वैसी सराहना नहीं की जा सकती जैसी अक्सर की जाती है। इसलिये कि उसके चरित्र-चित्रण के सिद्धान्त में मूल विकृति है। उसके चरित्र-चित्रण का ढंग ऐतिहासिक सत्य के साथ खिलवाड़ है। टेसीटस का मनोवैज्ञानिक उपदेशात्मक तरीका ऐतिहासिक पद्धति को समृद्ध करने कि बजाय उसकी दरिद्रता को दर्शाता है और ऐतिहासिक ईमानदारी के गिरते मानक का संकेत है।" कालिंगवुड ये भी कहते हैं- "ऐतिहासिक साहित्य में योगदान के मामले में टेसीटस का व्यक्तित्व विशाल है लेकिन वह इतिहासकार था या नहीं, जिज्ञासा रहेगी। बावजूद इसके लिवी और टेसीटस रोमन इतिहास चिन्तन के आजू-बाजू खड़े दो महान स्मारक हैं।"

'प्रोफेसर शाटवेल' का मत है कि- "कुछ त्रुटियों को नजरअंदाज कर दिया जाय तो टेसीटस का नाम विश्व के इतिहासकारों में अग्रणी है। जिसका मूल कारण उसकी चरित्र-चित्रण की अद्भुत क्षमता नहीं अपितु इतिहास के प्रति उसका दृष्टिकोण है जिसके द्वारा वह लोगों के अच्छे व बुरे कार्यों का लेखा प्रस्तुत करता है।"

अनेक शिथिलताओं के बावजूद टेसीटस रोमन इतिहासकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि टेसीटस एक तेज मस्तिष्क का महान विद्वान था। प्रथम उसने इतिहास के महान व्यक्तियों के उद्देश्यों को समझने का प्रयास किया और तत्पश्चात उन्हें अपने इतिहास लेखन का विषय बनाया। इसलिये उसकी रचनाओं में विचारों और दार्शनिक पहलुओं का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I. रोमन इतिहासकार टेसीटस का पूरा नाम है।
II. टेसीटस की प्रमुख कृतियों के नाम बताइये।

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

a) रोमन इतिहासकार टेसीटस द्वारा प्रयुक्त स्रोत
b) ऐनल्स' 'हिस्ट्रीज' की विषय वस्तु

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिजिये।

A. टेसीटस की ऐतिहासिक दृष्टि एवं महत्ता पर प्रकाश डालिये।

8 .5. मध्ययुगीन ईसाई इतिहास-लेखन

सर्वप्रथम आप यह जान लें कि ईसाई इतिहास लेखन, चर्च इतिहास-लेख, मध्ययुगीन यूरोपीय इतिहास लेखन का ही दूसरा नाम है।

ईसाई जीवन पद्धति आने के पश्चात धीरे-धीरे तीसरी सदी से यूनानी-रोमन इतिहास लेखन की गुणवत्ता में गिरावट शुरु हो गई। ईसाइयत ने आकर्षण का केन्द्र वर्तमान से हटाकर भविष्य के जीवन में ले जाकर मानव जीवन के प्रति रवैये में मूलभूत बदलाव ला दिया।

8. 5.1 मध्ययुगीन ईसाई इतिहास-लेखन एवम उसकी विशेषतायें

प्रोफेसर लाल बहादुर वर्मा का मत है कि- "ईसा की प्राम्भिक शताब्दियों में जब यूनान का पतन हो रहा था, इतिहास की महत्ता समाप्त हो रही थी। ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार में समाज को धर्म प्रधान बनाना आरम्भ किया।

समय की धारा के अनुकूल ही सेंट आगस्टाइन ने इतिहास में ईश्वर को स्थापित कर दिया। एक नियतिवादी समाज में मनुष्य के कार्यकलापों का क्या महत्व हो सकता है। भिक्षुओं ने जिन्हें जीवन औत समाज की सीमित जानकारी थी, इतिहास लेखन को भी धार्मिक कार्य समझा। यूरोप में शताब्दियों तक ऐसा ही इतिहास लिखा जाता रहा जो कैथोलिक चर्च की सत्ता की प्रतिष्ठा और स्थायित्व बनाये रखने में सफल हो।"

इतिहास के प्रति अपनी सारी उदासीनता के बावजूद आरम्भिक ईसाई चर्च को उसकी जरूरत थी। ईसा मसीह के देवत्व के साथ-साथ उनके मानव रूप को स्थापित करना तथा उनके जीवन चरित को जानना आवश्यक था। ईसाइयत अपने आप इतिहास बना रही थी। अपने अनुयायियों की शिक्षा के लिये उसकी परंपराओं की रक्षा करना आवश्यक हो गया था। येरूसलम में चर्च के फैसलों, शहीदों की स्मृति तथा मिशनरियों के कामों की कहानियों को संजोना ही नहीं था अपितु नये धर्म के विरुद्ध विधर्मियों द्वारा लगाये जा रहे आरोपों का जवाब भी देना था। इस प्रकार तीसरी सदी के अंत तक ईसाई इतिहास लेखन का क्रमशः विकास हुआ।

ईसाई इतिहास प्रारम्भ से ही बहुत तोड़ा-मरोड़ा हुआ था। तथापि चर्च या ईसाई इतिहास लेखन की प्राचीनतम उपलब्धि सर्वव्यापी इतिहास की अवधारणा को सूत्रबद्ध करना था। ईसाइयों में यह हठधर्म था कि सृष्टि के समय से ही ईसाई पूरी मानव जाति का धर्म बने। **यूसीबियस को चर्च के इतिहास का संस्थापक माना जाता है।**

ईसाइयत ने इतिहास लेखन को किस तरह प्रभावित किया तथा ईसाई इतिहास लेखन के गुण-दोष क्या थे इनकी व्याख्या 'आर०जी०कालिंगवुड' ने अपनी पुस्तक **'आइडिया आफ हिस्ट्री'** में की है जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न है-

1-ईसाई इतिहास लेखन को उन अर्थों में क्रान्तिकारी माना जाता है कि ईसाइयत ने पूर्व में चली आ रही ग्रीक-रोमन अवधारणाओं को त्यागकर ऐतिहासिक चिंतन में क्रान्ति लायी एवं कुछ सिद्धान्त दिये-

पहला, ईसाइयत **'मनुष्य की अपर्याप्तता और ईश्वर पर निर्भरता'** का अपना आधारभूत सिद्धान्त लेकर आयी। जिसके अनुसार मनुष्य की उपलब्धियाँ मानवीय प्रयासों के कारण नहीं प्राप्त हुईं हैं अपितु इसलिये प्राप्त हुईं हैं कि ईश्वर यही चाहता था। मनुष्य ईश्वर का माध्यम मात्र है।

दूसरा है, 'सृष्टि का सिद्धान्त' जिसके अनुसार यह मान्यता है कि ईश्वर के अतिरिक्त कुछ भी स्थायी और शाश्वत नहीं है। चुंकि सभी चीजें उसी ने बनायी हैं तो वह जब चाहे उसे नष्ट कर सकता है।

2- कालिंगवुड का मत है कि ईसाई इतिहासलेखन को 'निर्वाण इतिहासलेख' कहा गया है। ईसाई सिद्धान्तों पर लिखे गये प्रत्येक इतिहास की विशेषता है- **सर्वव्यापी, दैवीय, भविष्यसूचक और कालबद्ध** होना। सर्वव्यापी अर्थात नस्लें कैसे बनीं, सभ्यतायें कैसे उठीं और गिरीं इन बातों का वर्णन होगा। दैवीय इतिहास अर्थात घटनायें नियति का परिणाम दर्शायी गई होंगी। भविष्य सूचक अर्थात इसाई इतिहास लेखन में ईसा के ऐतिहासिक जीवन को ध्यान में रखकर इतिहास को दो कालों में बाँटा गया है। अंध युग और प्रकाश युग । इसी को कालिंगवुड भविष्यसूचक इतिहास कहता है। कालबद्ध इतिहास अर्थात ईसाई इतिहास लेखन को दो भागों में बाँटने के बाद पुनः कई कालों और युगों में बाँट कर अध्ययन किया गया है।

3-ईसाई चिंतन में यह माना जाता था कि ऐतिहासिक प्रक्रिया मनुष्य नहीं ईश्वर के उद्देश्यों का नतीज़ा है। मनुष्य एक साधन मात्र है। ईसाई दृष्टिकोण की सर्वव्यापकता ने ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्यों को बराबर कर दिया। न कोई विशेष नस्ल है, न ही विशेषाधिकार युक्त वर्ग।

4-इन विशेषताओं के साथ-साथ ईसाई इतिहास लेखन में कुछ दोष भी हैं। जैसे लेखन की दोषपूर्ण पद्धति। ईसाई धर्म कथाओं की सत्यता की जाँच-पड़ताल नहीं की जाती थी न ही कार्य कारण संबन्धों का अध्ययन किया जाता था। अपितु जब भी असाधारण स्थिति आती थी तो दैवी इच्छा शक्ति में उसका स्पष्टीकरण तलाशा जाता।

5-ईसाई इतिहास लेखन में युग निर्धारण दोषपूर्ण था। ऐतिहासिक युगों या कालों का निर्धारण 'इलहाम' के द्वारा किया गया मानते थे।इलहाम अर्थात पहले से ही अंदेशा हो जाना।

6- कभी-कभी ईसाई इतिहास लेखन में युगांतविज्ञान के तत्व आ जाते थे, युगांतविज्ञान अर्थात भविष्य को पहले से ही जानने की क्षमता। इतिहास अतीत का अध्ययन करता है न कि भविष्य का। अतः यह दोषपूर्ण था।

7-मध्ययुगीन ईसाई इतिहासकारों ने इतिहासकार के प्राथमिक कर्तव्य की उपेक्षा की। उन्होंने प्रत्येक घटना के पीछे नियति या प्रारब्ध को देखा। परिणाम यह हुआ कि मनुष्यों द्वारा किये जा रहे अच्छे या बुरे कार्य महत्वहीन हो गये। किसी घटना के परिप्रेक्षय में इतिहासकारों ने खोजी दृष्टि नहीं रखी। न ही स्रोतों की जाँच परख की। कालिंगवुड के शब्दों में "मध्ययुगीन ईसाई इतिहास लेख जानबूझकर उलझी हुई और विद्रूप की गई।

8- उक्त गुण-दोषों के साथ ईसाई इतिहास लेखन ने यूरोपीय इतिहास चिंतन को विभिन्न तरीके से प्रभावित किया। ईसाई दृष्टिकोण ने यूनानी-रोमन इतिहास लेखन की कमियों को सुधारा।

प्रथम, वैश्विक इतिहास के रूप में इतिहास की ईसाई अवधारणा सर्वमान्य हो गई। सभी ऐतिहासिक घटनाओं के लिये एक कालानुक्रम ढाँचा सार्वभौमिकता का प्रतीक बन गया।

द्वितीय, नियति या भाग्य की बात सर्वमान्य हो गई।और युगांत का विचार भी सर्वमान्य हो गया।

तीसरे, इतिहास का कालों में विभाजन स्वीकार हो गया।

ये सभी तत्व जो आधुनिक काल के इतिहास लेखन हेतु आवश्यक हैं, ईसाइयों ने विकसित किया। ये ईसाई इतिहास चिंतन की देन हैं।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

A. ईसाई इतिहास लेखन, का दूसरा नाम है।
B. चर्च के इतिहास का संस्थापक माना जाता है।
C. 'आर०जी०कालिंगवुड' की अपनी इतिहास दर्शन की पुस्तक का क्या नाम है?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

a) ईसाई इतिहास लेखन के गुण-दोष क्या थे

8 .6. सन्त आगस्टाइन (354-430 ई०) Aurelius Augustinus

8.6.1 जीवन परिचय और कृतियाँ

अपनी आत्मकथा में आगस्टाइन ने स्वयं अपने बारे में जानकारी दी है जिससे हमें उसके संबन्ध में सूचनायें प्राप्त करना आसान हो जाता है। आगस्टाइन का जन्म 13 नवम्बर 354 ई०में थगास्टीन में एक निम्न मध्यमर्गीय परिवार में हुआ था। यह स्थान अब अल्जीरिया के नाम से जाना जाता है। आगस्टाइन का जन्म जब हुआ, उस समय पश्चिमी रोमन साम्राज्य पेगनवाद और इसाईयत के द्वन्द्व से जूझता हुआ अपनी अन्तिम अवस्था में था।

आगस्टाइन की उच्च शिक्षा रोमन अफ्रीका की राजधानी कार्थेज में हुई। वह **'पेगन'** थे। उनके पिता म्युनिसिपल में नौकरी करते थे। आगस्टाइन की माता ईसाई धर्म को मानती थीं। युवावस्था में आगस्टाइन भोग विलास में लिप्त हो गये। बाद में मिलान के बिशप सेंट एम्ब्रोज से प्रेरित होकर वह धर्म परिवर्तन करके ईसाई बन गये। धर्म परिवर्तन के पश्चात इटली से उत्तरी अफ्रीका की वापसी पर उसने अध्यापन और लेखन कार्य में अपना जीवन लगा दिया। बाद में वह हिप्पो का **'बिशप'** बन गया। मृत्यु 76 वर्ष की आयु में 28 अगस्त 430 को हुई।

प्रथम वास्तविक इतिहास दर्शन पाँचवीं शताब्दी में अफ्रीकी इसाई विशप 'सेंट आगस्टाइन' द्वारा लिखा माना जाता है। प्रारम्भिक ईसाई चर्च में संत आगस्टाइन का महानतम व्यक्तित्व था। प्रारम्भिक यहूदी इतिहास, ईश्वर द्वारा

यहूदी समाज को अस्तित्व में लाने से संबन्धित अनुक्रमिक घटनाओं की व्याख्या था। प्रारम्भ में यह सफलता का इतिहास था। बेबीलोन वासियों द्वारा यहूदियों की पराजय तथा उनके बन्दी बनाये जाने के पश्चात आशा की नयी किरण आयी। इसाई चर्च दिन-प्रतिदिन शक्तिशाली होता गया तथा चौथी शताब्दी में ईसाई धर्म रोम साम्राज्य का राजकीय धर्म बना।

उनकी दो रचनायें विश्व के क्लासिक ग्रंथों में मानी गयी हैं।

1- **कन्फेशंस'**-

2- **डि सिविटाट डेई'** अर्थात **'सिटी आफ गाड'**

'कन्फेशंस' आगस्टाइन की आत्मकथा है। यह अत्यंत ईमानदारी और गंभीरता से लिखी गयी है तथा सीधे ईश्वर को संबोधित है। धर्म, आस्था और इश्वर में श्रद्धा की उसकी यात्रा आसान नहीं थी। अपने पिछले पापों के कारण वह परेशान था और वह जानना चाहता था कि क्या ईश्वर उसे सुन रहा है। तभी उसके कानों में एक लड़के और एक लड़की की मिली-जुली आवाज में एक गीत सुनाई दिता 'इसे लो और पढ़ो', 'इसे लो और पढ़ो'। इन शब्दों को उसने ईश्वरीय आज्ञा माना। उसे ज्ञान हुआ कि यौन आनंद के संबन्ध में जीसस का कोइ प्राविधान नहीं है। उसके मन को बहुत शांति मिली। यह पुस्तक आगस्टाइन के भोग-विलास पूर्ण आरम्भिक जीवन और बाद में दार्शनिक गहराइयों में डूबने तथा अत्यंत भावनात्मक आध्यात्मिक यात्रा का वर्णन है। अपने प्रश्नों के उत्तर के बाद धीरे धीरे वह ईसाई धर्म की ओर प्रेरित हुआ और आगे उसने एक बिशप के रूप में कार्य करते हुए अपना संपूर्ण जीवन ईसाई धर्म को समर्पित कर दिया। यह ग्रंथ अपने प्रथम प्रकाशन से ही बहुत तारीफ़ों के साथ पढ़ी जाती है।

जबकि दूसरी रचना **'सिटी आफ गाड'** विश्व की महानतम कृतियों में एक है। यह ईसाईयत की गाथा का एक प्रभावी दस्तावेज़ है। यह इस आरोप का खंडन करने के लिये लिखी गई थी कि 410 ई० में अलारिक के अंतर्गत विजिगोथ्स के हाथों रोम के हारने का कारण ईसाई धर्म नहीं था। यह बाइस भागों में 1200 पन्नों में समाहित है तथा 413- 426 ई० में लिखा गया।

8.6.2 विषय-वस्तु

पाँचवी शताब्दी में रोम, यूरोप की बर्बर जातियों / आतंकवादियों द्वारा लूटा गया । अलारिक के अधीन गाथ लोगों ने 410 ई० में रोम पर कब्जा कर उसे लूट लिया। यद्यपि रोम के लोग न तो पेगन थे और न ही विजिगोथ्स ईसाई थे। वे अराइन के विधर्मी थे। रोम नगर बहुत दिनों से अपनी राजनितिक और आर्थिक पहचान खो चुका था, तथापि उसकी आध्यात्मिक महत्ता बनी हुई थी। अक्सर उहापोह या संकट की स्थितियों में हर कोई किसी भी घटना का दोषारोपण किसी पर भी कर देता है। अतः पराजय की स्थितियों में कुछ लोगों द्वारा इस पराजय का दोष ईसाई धर्म पर लगाया गया। अपने नगर के साथ हुई इस बदसलूकी के लिये पेगन लोगों ने इसाईयत को जिम्मेदार ठहराया। नगरवासियों का यह मानना था कि प्राचीन देवों की उपेक्षा के कारण उन्हें दंड मिला है।

आगस्टाइन की इन बातों ने इतिहास दर्शन का रूप ले लिया। आगस्टाइन ने देखा कि इतिहास न तो बेतरतीब प्रकिया है, न ही यह लापरवाही और अंधभक्ति द्वारा नियंत्रित है। पेगन देवता और देवियां इतिहास का एक अंग हैं, नियति से शासित होती हैं, जो नश्वर है । बाइबिल बताता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर इतिहास का नियंता है। ईसाईयत ने इतिहास को बचाया है और इसे अर्थपरक बनाया है।

आगस्टाइन ने इसे अपनी आस्था के प्रति चुनौती माना। वे 13 साल तक अपनी पुस्तक लिखते रहे । **डि सिविटाट डेई'** पुस्तक में उन्होंने अपने पहले पाप से लेकर अंतिम फैसले तक सब का जिक्र किया। उन्होंने रोमन जगत को यह समझाने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी कि ऐसी आपदायें इसाईयत के कारण नहीं हैं, अपितु पिछले धर्म में किये गये गलत कार्यों के कारण सजा मिली है।

ईसाई धर्म पर हुए दोषारोपण के पश्चात अपनी बात को स्पष्ट करते हुए सेंट आगस्टाइन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ईश्वर का नगर' **(City of God)** में कहा –

इतिहास में दो नगर होते हैं-

पहला, ईश्वर का नगर

दूसरा, मनुष्य का नगर

अर्थात चर्च और राज्य । ईश्वर का नगर अर्थात 'सिविटाट डेई' या चर्च। इस नगर की स्थापना फरिश्तों ने की थी। यह दैवीय प्रेम पर आधारित है। उसकी छाया चर्च में दिखती है। चर्च का काम स्वर्ग की झलक को पृथ्वी पर लाना है। दूसरा, मनुष्य का नगर 'सिविटाट टेरेना' या 'राज्य' जिसे 'मनुष्य का नगर' कह सकते हैं। इसकी स्थापना शैतान के विद्रोह से हुई । इस लौकिक नगर का आधार भौतिक शक्ति है। यह नगर मनुष्यों से जुड़ी खुशियों और विवादों का अनुसरण करता है जो गलत है । मनुष्य के शहर सीमित और अस्थायी है किन्तु ईश्वरीय नगर असीम और स्थायी है । इतिहास में इनमें विभेद किया जा सकता है किन्तु उन्हें स्पष्टतः पृथक नहीं किया जा सकता। ईश्वर अपनी विशिष्ट ईश्वरीय दृष्टि से सबका पर्यवेक्षण करता है।

इस सम्बन्ध में **'विल ड्युरां' (Durant)** ने अपनी पुस्तक **'दि स्टोरी आफ सिविलाइजेशन IV: दि एज आफ फेथ'** में अपना मत व्यक्त किया है कि-

> **"इस पुस्तक के साथ एक दर्शन के रूप में 'पेगनवाद' का अंत और 'इसाईयत' का आरम्भ हुआ । यह मध्यकालीन यूरोपीय मानस का पहला निश्चित सिद्धान्तीकरण था।"**

जब से लिखी गई उसी समय से यह पुस्तक कैथोलिक धर्मज्ञान का आधार बनी। चर्च और राज्य के संबन्ध को परिभाषित करने का यह पहला प्रयास था। इस पुस्तक ने कैथोलिक इतिहास-लेखन को नियंत्रित किया। आगस्टीन के दिये सिद्धान्तों के आधार पर कैथोलिक चर्च लौकिक सत्ता को आध्यात्मिक सत्ता के नियंत्रण में रखने के पक्ष में था। आगस्टीन ने ऐतिहासिक प्रक्रिया का चित्रण अच्छाई-बुराई, देव-दानव, धर्मकेन्द्रित-धर्मनिरपेक्ष राज्य के मध्य संघर्ष के रूप में किया।उसने इतिहास, पवित्र या निर्वाण इतिहास को एक दैवीय योजना माना।

यहाँ आप यह जान लें कि यूनानी-रोमन मानवतावादी विचार ने मनुष्य को अपने भाग्य का बुद्धिमान निर्माता माना है, जबकि इसाई विचार ने अपने आप को इंसानी कमियों पर आधारित करते हुए माना कि मानवीय उपलब्धियों के पीछे ईश्वरीय शक्ति निहित होती है। ईश्वर मानवीय कार्यों की योजना बनाता है और उन्हें लागू करवाता है। मानवीय क्रियायें अंधी होती हैंये अंधविश्वास उसके मूलभूत पाप का नतीज़ा है।

हर्बर्ट बटरफील्ड ने 'डिक्शनरीज आफ हिस्ट्रीज आफ़ आइडियाज' में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि-'सेंट आगस्टाइन के लेखन में यूनानियों की इतिहास के चक्रीय विकास की अवधारणा का दृढ़ अस्वीकरण दिखाई पड़ता है। इतिहास में ईश्वर के संप्रकाशन की एक ही कथा है जिसमें ईसा का जन्म केन्द्र बिन्दु के रूप में स्थित है। इस बिन्दु तक यह कथा यहूदियों के पवित्र इतिहास द्वारा संचालित थी। इसके बाद चर्च या ईश्वर का नगर संचालन स्रोत बन गया।

मनुष्य के मामलों में ईश्वर को केन्द्र में रखने वाले इतिहास के नजरिये को अलग-अलग तरह से पवित्र इतिहास, मुक्ति इतिहास, दैवीय इतिहास या संरक्षीय इतिहास कहा गया। इन विचारों का अस्तित्व संपूर्ण मध्यकालीन यूरोप के प्रशासन में बना रहा। आधुनिक युग के प्रारम्भ में आत्मप्रकाशन करने वाले ईश्वर की अवधारणा धीरे-धीरे पृष्ठभूमि में चली गई किन्तु एक अर्थपूर्ण सार्वभौमिक वृत्त के रूप में ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया के स्वरूप की अवधारणा अवस्थित रही। वस्तुतः इतिहास के रूप में लिखित इसाई ऐतिहासिक रचनाओं का जब यूनानी परंपरा से मेल हुआ तब इतिहास की आधुनिक शाखा अस्तित्त्व में आयी।

इसाई धर्म के उदय के बाद सेंट आगस्टाइन प्रथम व्यक्ति था जिसने मानव इतिहास में सात विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया है। सेंट आगस्टाइन के लेखन ने पश्चिमी इसाईयत तथा पाश्चात्य दर्शन को प्रभावित किया।
पाँचवीं सदी में पेगन इतिहास-लेखन लुप्त हो गया। इसके बाद लगभग 800 सालों तक पश्चिम में ज्यादातर इतिहास-लेखन ईसाई लेखकों ने किया। जिनमें लगभग सभी पुरोहित थे। उन्होंने इतिहास एक ही ढर्रे पर लिखा। जिसे ईसाई या मध्ययुगीन कहा जा सकता है। आम लोगों द्वारा लिखित इतिहास लेखन 13वीं सदी तक ओझल रही।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I) आगस्टाइन की दो रचनायें कौन कौन सी हैं?

II) आगस्टाइन की आत्मकथा का शीर्षक क्या है?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

a) डि सिविटाट डेई' अर्थात 'सिटी आफ गाड' की विषय वस्तु बताइये।

8 .7 सारांश

हम देखते हैं कि इन प्रारम्भिक इतिहासकारों की चिंतायें उनके समय के वातावरण से उपजी थीं। टेसीटस एक कुशल पर्यवेक्षक और उत्तम शैलीकार था। वर्तमान समय में इस तरह की पुस्तक कभी-कभी ही लिखी जाती हैं। हमारे इतिहासकारों ने मध्ययुग के इतिहासकारों को जितने इतिहासबोध का श्रेय दिया है अक्सर उनके पास इससे अधिक इतिहास की समझदारी थी। फिर भी उनके लिये पवित्र और सामान्य बातों में अंतर करना कठिन होता था। घटनाओं को कभी-कभी ईश्वरीय निर्णय की तरह लिया जाता था। और चमत्कारों को स्वीकार किया जाता था।
उसी प्रकार किसी के लिये भी सेंट आगस्टाइन के उस ईसाई पथ मंडन की पुस्तक के प्रभाव को समाप्त करना आसान नहीं था। जिसमें विश्व इतिहास को ईश्वर लीला के रूप में प्रस्तुत किया गया। यद्यपि मध्ययुग के आख्याकार स्वयं जालसाजी में निपुण होते थे तथापि दस्तावेजों की परख में जरा सी भी आलोचनात्मक दृष्टि नहीं अपनाते थे। वे परंपराओं की सत्ता को पूरी तरह स्वीकारते थे। और चुंकि उनका दैवी हस्तक्षेप में विश्वास था,इसलिये वे इतिहास में कार्य-कारण विश्लेषण में संकोच करते थे। बावजूद इसके हम उनके नजरिये को संकुचित और उनकी चिंताओं को संकीर्ण पा सकते हैं। फिर भी, वह हमें प्रामाणिकता और सत्याभास के सवाल उठाने और उनके हल खोजने के प्राचीनतम उदाहरण उपलब्ध कराते हैं। इतना स्पष्ट हो जाता है कि उनकी की गई खोजें कई शताब्दियों के बाद भी इतिहासकारों के लिये अपनी उपादेयता बनाये हुए हैं।

8 .8 तकनीकी शब्दावली

'अनाल मकसीमी'- प्राचीन रोम के चर्च के वार्षिक दस्तावेज थे। पादरियों द्वारा इनका संग्रहण और संरक्षण किया जाता था। इसमें प्रत्येक वर्ष नियुक्त होने वाले जजों और महत्वपूर्ण घटनाओं का हिसाब दर्ज़ होता था।
'मानववाद'- अर्थात मनुष्य के कारनामों, उद्देश्यों, सफलताओं और विफलताओं का आख्यान है।इसका तात्पर्य यह है कि इतिहास में जो कुछ भी होता है वह मनुष्य की इच्छा शक्ति का परिणाम है।
पेगन- यूरोप में मूर्तिपूजकों के धर्म को पेगन कहा जाता था। यह धर्म इसाई धर्म के पूर्व अस्तित्व में था। इसाई धर्म के प्रचलन के बाद धीरे-धीरे यह धर्म समाप्त हो गया।
बिशप- मसीही धर्म का आचार्य।

8 .9 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

8 .3. इकाई

1. I) आगस्ट्न युग

2. b) देखिये 8 .3.1

3. A. देखिये 8 .3.2

B. देखिये 8 .3.2

8 .4इकाई

1. I) Publius C.Tacitus) कार्नेलियस टेसीटस

II) ऐनल्स' 'हिस्ट्रीज' 'डायलाग्स आन द ओरेटर्स, 'एग्रीकोला' और 'डि जर्मेनिया'

2. a) देखिये 8.4.1

b) देखिये 8.4.2

3. A) देखिये 8.4.2

8 .5 इकाई

1. A. चर्च इतिहास-लेखन या मध्ययुगीन यूरोपीय इतिहास लेखन

B. यूसीबियस को

C. 'आइडिया आफ हिस्ट्री'

2. a) देखिये 8 .5.1

8 .6 इकाई

1. I) कन्फेशंस'- डि सिविटाट डेई' अर्थात 'सिटी आफ गाड'

II) 'कन्फेशंस'

2. a) देखिये8 .6.2

2.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

- ई० श्रीधरन, इतिहास–लेख, (हिन्दी अनुवाद मनजीत सलूजा), हैदराबाद, (तेलंगाना), 2011.
- प्रोफेसर झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001.
- डा० गोविन्दचन्द्र पाण्डे, (संपादित) इतिहास: स्वरूप एवं सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1999.
- आर्थर मारविक, इतिहास का स्वरूप, (अनुवाद) लाल बहादुर वर्मा, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन,दिल्ली, 2003.
- www.exeter.ac.in

2.11 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री

- ई० श्रीधरन, इतिहास–लेख ,(हिन्दी अनुवाद मनजीत सलूजा), हैदराबाद, (तेलंगाना) ,2011
- प्रोफेसर झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001.
- डा० गोविन्द्चन्द्र पाण्डे, (संपादित) इतिहास: स्वरूप एवं सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1999.
- आर्थर मारविक, इतिहास का स्वरूप, (अनुवाद) लाल बहादुर वर्मा,ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन,दिल्ली, 2003.
- एल्फ्रेड ज़ान् चर्च एन्ड विलियम जैक्सन ब्रोडिब (अनुवाद), द एनाल्स एन्डद हिस्ट्रीज आफ टेसीट्स, माडर्न लाइब्रेरी, 2003.

- लाल बहादुर वर्मा, इतिहास:क्यों-क्या-कैसे,
- एरिक हाब्स्बम, इतिहासकार की चिंता,
- मार्क ब्लाख, इतिहासकार के शिल्प, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, 2005.
- लाल बहादुर वर्मा का आलेख, इतिहास लेखन और इतिहास दर्शन पढ़ें http://pahleebar.blogspot.in/2016/10/blog-post_9.html

2.12 निबन्धात्मक प्रश्न

- टेसीटस की ऐतिहासिक रचनाओं का वर्णन कीजिये।
- रोमन इतिहास लेखन की परंपरा पर प्रकाश डालिये।
- इतिहासकार के रूप में टेसीटस का मूल्यांकन कीजिये।
- रोमन व यूनानी इतिहास-लेखन की परस्पर तुलना कीजिये और रोमन विद्वानों के पिछड़ने के कारण बताइये।
- मध्ययुगीन ईसाई इतिहास-लेखन एवम उसकी विशेषतायें बताइये।
- इतिहासकार के रूप में सेंट आगस्टीन का मूल्यांकन कीजिये।
- सेंट आगस्टीन की दो नगरों की धारणा का वर्णन कीजिये। यह किस प्रकार इसाई धर्म का सहायक था?

ब्लाक-3

इकाई-नौ : इस्लामी परम्पराएं और इब्न खाल्दून, मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन:कल्हण, बरनी, अबुल फ़ज़ल, बदायूंनी

9 .1 प्रस्तावना

9 .2 इकाई प्राप्ति के उद्देश्य

9 .3.1इस्लामी परम्परायें और इब्न खाल्दून

9 .3.2 इब्न खाल्दून (1332-1406ई०)

9 .3.3 इब्न खाल्दून की कृति

9 .3.4 इब्न खाल्दून की इतिहास दृष्टि

9 .4 मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन

9 .4.1कल्हण

9 .4.2 प्रसिद्ध रचना राजतरंगिणी

9 .4.3 विषय वस्तु

9 .5 ज़ियाउद्दीन बरनी

9 .5.1ज़ियाउद्दीन बरनी की रचनायें

9 .5.2 बरनी की इतिहास दृष्टि

9 .6 शेख अबुल फ़जल (1551-1602ई०)

9 .6.1अबुल फ़ज़ल की विभिन्न रचनायें

9.7 अब्दुल कादिर बदायूंनी

9 .7.1अब्दुल कादिर बदायूनी की रचनायें

9 .7.2 मुन्तखब-उत-तवारीख का स्वरूप और विषय वस्तु

9 .7.3 बदायूंनी के इतिहास लेखन की विशेषतायें

9 .8 सारांश

9 .9 तकनीकी शब्दावली

9 .10 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

9 .11 संदर्भ ग्रंथ सूची

9.12 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

9.13 निबन्धात्मक प्रश्न

9 .1 प्रस्तावना

इतिहास अतीत और वर्तमान के बीच एक सेतु है और इतिहास-लेखन निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया। यह प्रक्रिया समय और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। इसलिये इतिहास का स्वरूप भी बदलता रहता है। वर्तमान समय में जो इतिहास की अवधारणा है, वह 18वीं सदी के यूरोप की देन है।

प्रोफ़ेसर सतीश चन्द्र ने भारत में इतिहास लेखन की इस्लामिक परम्परा का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि- "सामान्यतया यह माना जाता है कि भारत में इतिहास लेखन की परम्परा मुसलमानों के आगमन से प्रारम्भ होती है। किन्तु भारत में चौथी सदी में ही कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कृतियाँ मिलती हैं। भारतीय फ़ारसी इतिहास लेखन की बात करें तो इसकी शुरुआत 'हसन निज़ामी' की 'ताज़-उल-मआसिर' से मानी जाती है जबकि इतिहास लेखन का वास्तविक स्वरूप 'ज़ियाउद्दीन बरनी' के 'तारीख-ए-फ़िरोज़शाही' में दिखाई देता है। मुगल वंश की स्थापना के साथ इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण परिवर्तन उपस्थित हुआ। औरंगज़ेब ने अपने शासन के दसवें वर्ष से शासकीय लेखन बंद करवा दिया। उसके बाद लेखन निजी तौर पर शुरु हुआ।"

इस इकाई में आपको जिन इतिहासकारों के संबन्ध में बताया जाना है वे मध्यकाल के जाने-माने इतिहासकार हैं। इनमें से 'इब्न खाल्दून' पश्चिम एशियाई परंपरा का इस्लामी दुनिया का महत्वपूर्ण इतिहासकार है। 'कल्हण' प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक परंपरा के है। जबकि 'ज़ियाउद्दीन बरनी' सल्तनतकालीन इतिहासकार है और 'अबुल फ़ज़ल' तथा 'अब्दुल कादिर बदायूंनी' मुगलकालीन, विशेषकर अकबर के समकालीन रहे।

9 .2 इकाई के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्नलिखित विषयों के बारे में जानने योग्य हो जायेंगे-

- इस्लामी परम्पराओं तथा मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन की प्रवृत्तियों के विषय में।
- इब्न खाल्दून, कल्हण, बरनी, अबुल फ़ज़ल तथा बदायूंनी के जीवन तथा कृतित्व के बारे में।
- आप विभिन्न देश काल में किसी इतिहासकार की योग्यता का विश्लेषण कर सकेंगे ।
- मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन एवं अध्ययन की विषय-वस्तु के विषय में जानेंगे।

9 .3.1 इस्लामी परम्परायें और इब्न खाल्दून

अरबी में 'तारीख' का अर्थ है-**इतिहास** । यूनानियों से संपर्कों के बावजूद अरब के निवासी इतिहास लेखन, इतिहास दर्शन व इतिहासकारों से परिचित नहीं हो पाये। किन्तु पैगंबर मुहम्मद के पश्चात कुछ ऐसी घटनायें हुईं जिनसे यह माना जा सकता है कि मुस्लिमों ने इतिहास लेखन कि प्रवृत्तियों को अपनाया।

- पहला - एक विशाल साम्राज्य पर आधिपत्य, जिसने अरब इतिहास लेखन पर पहला प्रभाव डाला। जहाँ भी इस्लामी आधिपत्य स्थापित हुआ वहाँ अरबी भाषा और इतिहास लेखन की प्रवृत्ति साथ-साथ चलती रही।

- दूसरा- प्रभाव विजित ईरान का पड़ा। इतिहास लेखन की प्रेरणा सासानी ईरान से आयी दिखती है।
- तीसरा-इस्लामी इतिहास लेखन में सहायक तीसरा तत्व कालानुक्रम था, जो पैगम्बर मुहम्मद के मक्का से मदीना के सफ़र के साथ शुरु हुआ।

अब्बासी खिलाफ़त की स्थापना के साथ-साथ मुस्लिम इतिहास लेखन फला-फूला। मध्यकाल का मुस्लिम ऐतिहासिक साहित्य अत्यंत विविधता पूर्ण था। इसमें प्रचुर आयामों वाले सार्वभौम इतिहास, मुस्लिम आधिपत्य वाले एकल देशों के इतिहास, राजवंशों के इतिहास, नगरों के वृतांत, जीवनियां और यात्रा साहित्य सम्मिलित हैं। मध्ययुगीन मुस्लिमों ने भूगोल और यात्राओं के बारे में उल्लेखनीय साहित्य रचा। जिसमें अक्सर ऐतिहासिक रुचि की महत्वपूर्ण सामग्री होती थी। इस्लामी साम्राज्य का विस्तार, हज यात्राओं के प्रचलन, वाणिज्य एवं व्यापार तथा प्रशासन एवं कूटनीति की जरूरतों के प्रभाव में यात्राओं को प्रोत्साहन मिला। यात्राओं के साथ-साथ भौगोलिक और जनसमुदायों से संबन्धित साहित्य का भी विकास हुआ।

इस्लामी इतिहास-लेखन में स्रोत आलोचना की पद्धति को 'इस्नाद' कहते हैं। प्रारम्भ में स्रोतों के उल्लेख की जरूरत नहीं थी, किन्तु पहली सदी से स्रोतों का उल्लेख किया जाने लगा। और आधुनिक काल में तो यह सबसे आवश्यक शर्त हो गई है।

9 .3.2 इब्न खाल्दून (1332-1406ई०)

इब्न खाल्दून इस्लामी जगत का महत्वपूर्ण चिन्तक माना गया है। उसका जन्म 1332 ई० में ट्युनिश में हुआ था। वह अत्यंत दुस्साहसी था। उसने पश्चिमी अफ्रीका तथा कुछ अंशों में मुस्लिम अधिकृत स्पेन एवं मिस्र की तत्कालीन राजनीतिक कार्यविधियों में जम कर हिस्सा लिया। वह इन प्रदेशों के समसामयिक इतिहास से भलीभाँति परिचित था तथा उसे इस्लाम के प्रभुत्व के अंतर्गत स्थित अन्य देशों की राजनीति का भी ज्ञान था।

इब्न खाल्दून ने अपनी प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत कुरान, इस्लामी परंपराओं, धार्मिक विधि-विधान, रहस्यवाद के विशिष्ट तत्वों का अध्ययन किया। जबकि उच्च शिक्षा के अंतर्गत उसे तर्कशास्त्र, गणित, प्राकृतिक दर्शन एवं अध्यात्म शास्त्र का ज्ञान था। साथ ही उसने तत्कालीन भाषाओं, प्रशासन के व्यावहारिक कार्य व्यवहार का भी ज्ञान अर्जित किया।

9 .3.3 इब्न खाल्दून की कृति

इब्न खाल्दून की प्रमुख कृति **'किताब-उल-इबर'** है। वस्तुतः किताब-उल-इबर तीन पुस्तकों का सम्मिलित रूप है।

- ✓ पहली पुस्तक में सभ्यता, उसके मूल तत्वों और इंसानों पर उसके प्रभाव का वर्णन है।
- ✓ दूसरी पुस्तक में अरबों की कथा है।
- ✓ तीसरी पुस्तक में लेखक ने उत्तर-पश्चिम अफ्रीका एवं उसके बर्बर राजवंशों के ब्यौरे दिये हैं।

✓ पुस्तक के अंत मे **'अल-तारीफ' अर्थात उसकी आत्मकथा** संकलित है।

इस पुस्तक की भूमिका को **'मुकदमा'** कहा जाता है। उसे 19वीं सदी में पश्चिम के विद्वानों ने प्रकाश में लाया। वह 'मुकदमा' आज इतिहास दर्शन की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण बन चुका है। मुकदमा का महत्व इतना है कि इसमें वर्णित विचारों के कारण इब्न खाल्दून इतिहास के सिद्धांतकारों में प्रशंसा का पात्र बना हुआ है। 'मुकदमा' के विचारों की समृद्धि उसे मानव चिंतन का एक गंभीर समय बनाती है, जिसमें कई आधुनिक अनुशासनों की शुरुआत देखी जा सकती है। 'मुकदमा' के अंग्रेजी अनुवादक **'फ्रांज रोजेन्थाल'** के लिये यह कृति मानवजाति की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में स्थान रखती है।

9 .3.4 इब्न खाल्दून की इतिहास दृष्टि

वस्तुतः दार्शनिक इतिहासकार खाल्दून इतिहास को विज्ञान मानने वाला पहला इतिहासकार है। वह कहता है कि इतिहास घटनाओं और परिस्थितियों का विज्ञान है जिसके पीछे अनेक महत्वपूर्ण कारण होते हैं।

इब्न खाल्दून का प्रमुख प्रयोजन केवल इतिहास लिखना नहीं था, अपितु उससे परे जाकर इतिहास से सीखना था और इस कारण ऐतिहासिक घटनाओं के कारण तथा स्वरूप का सम्यक विश्लेषण, तुलना द्वारा उनमें निहित रहस्यों को समझना उसका उद्देश्य था। उसने इतिहास का अध्ययन एक दार्शनिक प्रयोजन के लिये किया। इस दृष्टिकोण से इतिहास का अध्ययन एवं लेखन किसी अन्य मुस्लिम इतिहासकार ने नहीं किया था । उसके अनुसार इतिहास वस्तुतः मानव समाज के विषय में सूचना है जो अपने विविध पक्षों में विश्व की संस्कृति है।

एक इतिहासकार में कौन से गुण होने चाहिये | इस संबन्ध में खाल्दून का विचार है-

- एक, घटनाओं और परिस्थितियों के कारणों का पता लगाने के लिये इतिहासकार के पास एक शंकालू / खोजी दिमाग होना चहिये।
- दूसरे, इतिहासकार को पूर्वाग्रही और पक्षपाती नहीं होना चाहिये।
- तीसरे समय और स्थान के अनुरूप स्वाभाविक वातारण की समझ होनी चाहिये।
- चौथे, अतीत और वर्तमान की तुलनात्मक समझ हो।
- पाँचवें, राज्यों और जातियों के उद्भव और विकास, उसके नियम-कानून, तहजीब तथा उनके इतिहास की प्रमुख घटनाओं की समझ होनी चाहिये।
- इब्न खाल्दून लिखते हैं कि इतिहासकार को अपना हुनर महज इसलिये जानना जरूरी है कि अतीत उस तक ऐसी चीजों के साथ लिपट के आता है जो अक्सर सच नहीं होती हैं। इतिहासकार को उनकी छानबीन करके ही विश्वास करना चाहिये। इसलिये श्रीधरन का मानना है कि "विको की तरह इब्न खाल्दून ने भी ऐतिहासिक आलोचना के कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किये।"

- आगे वह कहता है कि जो बात इतिहास को अध्ययन योग्य बनाती है वह है मनुष्य के सामाजिक संगठन का अनुसंधान। इतिहास मनुष्य के सामाजिक संगठन के बारे में जानकारी है जो वास्तव में मानव सभ्यता ही है। इतिहास संस्कृति का विज्ञान है। भौतिक, राजनैतिक,सामाजिक,नैतिक और दार्शनिक तत्वों के सम्मिलित प्रभाव का परिणाम ही संस्कृति है।

इब्न खाल्दून ने मनुष्य को एक 'सामाजिक प्राणी' माना है तथा सामाजिकता को मानव जीवन का आवश्यक तत्व। समाज जरूरी है क्योंकि मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। वह समाज विज्ञान की पृष्ठभूमि में राज्य का एक सिद्धांत प्रतिपादित किया। साथ ही उसने अर्थशास्त्रीय विचार भी दिये हैं। जैसे मनुष्य के सर्वांगीण विकास में श्रम की भूमिका का विश्लेषण वह करता है। यद्यपि खाल्दून ईश्वरीय शक्ति में अत्यधिक विश्वास करता था तथापि ऐतिहासिक घटनाओं के संदर्भ में बुद्धि को ही महत्व देता है।

इब्न खाल्दून की '**किताब-उल-इबर' 'अरबी भाषा' में** लिखी गई है। शैली वर्णनात्मक है, जो शिक्षक तथा छात्र के ज्यादा अनुकूल है।

पश्चिमी जगत के विद्वानों ने 19 वीं सदी में इब्न खाल्दून और विशेषकर उसके वैज्ञानिक विचारों को हाथों हाथ लिया। आश्चर्य की बात है कि अति धर्मशास्त्रीय वातावरण में पले खाल्दून के विचार अत्यंत मौलिक, तार्किक, वैज्ञानिक और धर्म निरपेक्ष थे। ऐसे विचार जिन्हें बाद में मैकियावेली, विको, मान्टेसक्यु, ऐडम स्मिथ और आगस्ट काम्टे ने अभिव्यक्त किया 14वीं सदी के चतुर्थ दशक में इब्न खाल्दून ने इतिहास लेखन को एक नई दृष्टि प्रदान की। उसने इतिहास जगत में पहली बार संस्कृति के विज्ञान की आवश्यकता को समझा तथा उसके अनुरूप कार्य किया ।उसके अनुसार इतिहास वस्तुतः मानव समाज के विषय में सूचना है,जो विश्व संस्कृति पर आधारित है। इसलिये अपने इतिहास में वह संस्कृति के विविध प्रकारों, स्वरूपों तथा पक्षों पर विस्तार से विचार करता है।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

i) इब्न खाल्दून की प्रमुख कृति का नाम बताइये।

ii) 'अल तारीफ' क्या है?

iii) अरबी में 'तारीख' का क्या अर्थ है?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये:

i) 'मुकदमा' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

ii) इब्न खाल्दून ने एक इतिहासकार के किये किन आवश्यक गुणों की बात की है?

iv) इस्लामी इतिहासलेखन में स्रोत आलोचना की पद्धति इस्नाद

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिजिये:

i)एक दार्शनिक इतिहासकार के रूप में इब्न खाल्दून का विश्लेषण कीजिये।

9 .4 मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन

भारत में इतिहास-लेखन की परम्परा के विकास के संदर्भ में पूर्व-मध्यकाल को महत्वपूर्ण माना जा सकता है। क्योंकि इस काल में देश के विभिन्न क्षेत्रों के लेखकों ने अपनी कृतियों में स्थानीय परंपराओं का वर्णन किया। पूर्व मध्यकाल के इतिहास लेखकों में से आपको 'कल्हण' और उसकी रचना 'राजतरंगिणी' के बारे में अध्ययन करना है।

भारत में इतिहास लेखन की परंपरा का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए 'सतीश चन्द्र' ने लिखा है कि-"आधुनिक ढंग का इतिहास लेखन भले ही ब्रिटिश शासन की स्थापना से शुरु हुआ हो, किन्तु भारत की अपनी देशी परम्परायें रही हैं, जिन्हें इतिहास-पुराण परंपरा कहा गया है। इसमें शासकों की वंशावली संबन्धी सारणियाँ, ऐतिहासिक आँकड़े तथा इतिहास दर्शन दिया हुआ है। कल्हण की राजतरंगिणी कश्मीर का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण की परिपक्वता तथा स्पष्टता साफ़ दिखती है।यह इतिहास लेखन की लम्बी परंपरा की विकसित कड़ी है।"

नोट:विद्यार्थियों को चाहिये कि वे मध्यकालीन इतिहास-लेखन / दर्शन की पुस्तकों का अध्ययन करें। विस्तृत अध्ययन से इस्लामी परंपराओं और मध्यकालीन भारतीय इतिहासलेखन की प्रवृत्तियों को समझना सुगम हो जायेगा।

9 .4.1 कल्हण

भारतीय इतिहास लेखन को बहुमूल्य योगदान देने वाले कल्हण कश्मीरी इतिहास लेखन परंपरा के एक प्रसिद्ध लेखक थे । यद्यपि कल्हण के जीवन वृत्त के बारे में हमारे पास अल्प जानकारी है तथापि तत्कालीन स्रोतों के आधार पर यह मत निकल कर आता है कि वह कश्मीर का एक ब्राह्मण था। उसका पिता चंपक कश्मीर के राजा हर्ष के दरबार का एक मन्त्री था। इस कारण कल्हण राजनीतिक मामलों तथा राजनीतिज्ञों के चरित्र से भली-भाँति परिचित था ।

9 .4.2 प्रसिद्ध रचना 'राजतरंगिणी'

उसने अपनी प्रसिद्ध रचना 'राजतरंगिणी' का लेखन 1148 ई० में आरम्भ किया। **राजतरंगिणी का अर्थ है- 'राजाओं की नदी"।** दो वर्ष के परिश्रम के बाद उसे पूर्ण करने में सफल रहा। ए०के० वार्डर ने अपनी पुस्तक 'भारतीय इतिहास लेखन की भूमिका' में इसे भारत का सर्वाधिक प्रसिद्ध इतिहास कहा है। राजतरंगिणी किसी एक शासनकाल का इतिहास न होकर कश्मीर का सामान्य इतिहास है। जिसमें पौराणिक काल (1148ई०पू०) से 1148ई० तक काश्मीर के राजाओं का अनवरत इतिहास है। इसमें लगभग संस्कृत के 8000 श्लोकों का वर्णन मिलता है। काश्मीर भारत का एकमात्र क्षेत्र है जहाँ इतिहास लेखन की परंपरा थी। राजतरंगिणी आठ सर्गों में विभाजित है। इन सर्गों को कल्हण ने 'तरंग' या 'लहर' कहा है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इसे तीन भागों में विभक्त किया गया है।

प्रथम भाग- पहले तीन सर्ग में कल्हण ने तत्कालीन परम्पराओं के संदर्भ में अतीत की घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया है।

द्वितीय भाग-चतुर्थ सर्ग से लेकर छठें सर्ग तक कार्कोट और उत्पल राजवंशों का विवरण है।

तृतीय भाग-सातवें और आठवें सर्ग में लेखक ने कश्मीर के दो योद्धा राजवंशों को अपना मुख्य विषय बनाया है।

बारहवीं शताब्दी के अन्य इतिहासकारों की तुलना में कल्हण ने **स्रोतों के विविध प्रकारों** का प्रयोग किया है। अपने ग्रंथ के लेखन में उसने समस्त तत्कालीन साक्ष्यों,पत्रों, शासनादेशों, अभिलेखों, मुद्राओं,दानपत्रों और प्राचीन स्मारकों जैसे अधिक मौलिक, पुरातात्विक एवं अधिकारिक स्रोतों का प्रयोग किया है। उसने अपने पूर्ववर्ती इतिहास लेखकों की ग्यारह पुस्तकों का अध्ययन किया। कल्हण को काश्मीर के भौगोलिक स्थिति का विलक्षण ज्ञान था। कल्हण ने प्राप्य स्रोतों की गहराई से छानबीन की। राजतरंगिणी के संबन्ध में ए०बी०कीथ का मत है – "सभी प्रकार की स्थानीय परम्परा और पारिवारिक विवरण, उनका अपना व्यक्तिगत ज्ञान और साथ ही उनके पिता एवं अन्य लोगों के ज्ञान इन सबने उनके रचनाकाल से पहले पचास वर्षों की घटनाओं की प्रस्तुति को प्रभावित किया। तथ्यों से संबन्धित दिये गये ब्योरे सटीक हैं।"

9 .4.4 विषय वस्तु

कल्हण का मुख्य उद्देश्य आदि काल की दन्तकथाओं से आरम्भ करके अपने समय तक कश्मीर का एक विस्तृत इतिहास लिखना था। यह ग्रंथ तत्कालीन जानकारियों का खज़ाना है। इस ग्रंथ में कल्हण ने उच्च से लेकर निम्न जाति, वर्ग, उनके रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र, वेष-भूषा, लोगों के आचार-विचार, विश्वास व परम्पराओं तथा स्त्री-पुरुष संबन्धों का सूक्ष्म चित्रण किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि आँखों देखी या कानों सुनी कोइ ऐसी चीज या घटना नहीं है जिसका वर्णन कल्हण ने नहीं किया हो।

राजनीतिक एवं प्रशासनिक प्रपंचों, दुर्भिक्ष, कराधान, मुद्रा जैसी बातों का अत्यंत सजीव वर्णन किया है। उसी प्रकार सामाजिक जीवन का भी जीवंत चित्र प्रस्तुत किया है। कल्हण का मत है कि जाति किसी सैनिक या असैनिक पद पर आसीन होने में बाधक नहीं थी। अंतर्जातीय विवाह का चलन था। राजतरंगिणी के वर्णन के अनुसार इस काल में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। पर्दा प्रथा और हरम का अस्तित्व नहीं था। स्त्रियों के नाम अचल संपत्ति थी। यहाँ तक कि वे सैन्य टुकड़ियों का नेतृत्व भी करती थीं।

शहरीकरण, पूजनीय स्थलों के निर्माण, मूर्तिभन्जकों द्वारा मूर्तियों के तोड़े जाने, युद्ध, विजय, सूखा, बाढ़, आगजनी की घटनाओं तथा उनके प्रभाव का वर्णन किया है।

राजतरंगिणी के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कल्हण ने कश्मीर के उन शासकों का वर्णन किया है जो उसके समय से पहले विद्यमान थे। जैसे- ललितादित्य, यशकार, जयसिंह, मेघावहन और मिहिरकुल इत्यादि।

कल्हण भारतीय इतिहास का प्रथम ऐसा इतिहासकार था जिसने आधुनिक इतिहास लेखन पद्धति के आधार पर अपने ग्रन्थ की रचना की। उसने घटनाओं के संदर्भ में अपना दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया है। कल्हण की मान्यता है

कि एक सच्चा इतिहासकार अपने ग्रंथ लेखन में पूर्वाग्रह और पक्षपात को स्थान दिये बिना उसे पूर्ण करता है। अपने लेखन में उसने तिथिक्रम को अत्यधिक महत्व प्रदान किया है। कल्हण ने कालक्रम व्यवस्था के लिये कलि, लौलिक और शक संवतों का प्रयोग किया है। कल्हण ने घटनाओं का पक्षपात रहित वर्णन करने के साथ-साथ राजाओं के संदर्भ में पक्षपात रहित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। आर० सी० मजूमदार का मत है कि "राजतरंगिणी प्राचीन भारतवासियों द्वारा प्राप्त ऐतिहासिक ज्ञान की उच्चतम सीमा को दर्शाती है।"

राजतरंगिणी में संस्कृत श्लोकों मे प्रांजल **भाषा** का प्रयोग करते हुए घटनाओं का विस्तृत एवं सूक्ष्म विवेचन किया है। प्रवाहपूर्ण भाषा के साथ दृष्टांत, लोकोक्तियाँ, उपाख्यान और संवादों का कलात्मक प्रयोग हुआ है। **लेखन शैली** में श्लेष का प्रयोग किया है इस कारण सही अर्थ समझना थोड़ा मुश्किल हो जाता है।

यद्यपि राजतरंगिणी काश्मीर का इतिहास जानने का अधिकारिक साक्ष्य माना गया है तथापि इसमें कुछ **दोष** भी हैं। उसने समस्त घटनाओं के संदर्भ में तिथियों का वर्णन नहीं किया है। दूसरे, कश्मीर के प्रति अतिशय लगाव के कारण इतिहासकार उसे राष्ट्रवादी कवि की संज्ञा प्रदान करते हैं। तीसरे, कल्हण अपने काल और परिवेश से संबद्ध अन्य लोगों की तरह अंधविश्वासों से पूर्णतः मुक्त नहीं थे।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कल्हण ने इतिहास लेखन की पूर्व परम्पराओं से पृथक एक तिथिपरक इतिहास प्रस्तुत किया। कल्हण ने आगामी इतिहास लेखकों को एक आदर्श मार्ग दिखाया।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I. राजतरंगिणी के रचयिता का नाम बताइये।

II. प्रत्येक सर्ग को कल्हण ने क्या कहा है?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये:

a) राजतरंगिणी की विषय वस्तु

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिजिये:

अ)कल्हण के ग्रंथों के आधार पर इतिहास के प्रति उनके दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिये।

ब)प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में कल्हण एवं उसके ग्रंथ की भूमिका लिखिये।

9 .5 जियाउद्दीन बरनी (1285-1359ई०)

ज़ियाउद्दीन बरनी के जीवन का विस्तृत वर्णन किसी समकालीन ग्रंथ में उपलब्ध नहीं है। उसने स्वयं तारीख-ए-फ़िरोजशाही में अपने जीवन तथा पूर्वजों के संबन्ध में यत्र-तत्र उल्लेख किया है। 'अमीर खुर्द' जो मुहम्मद तुगलक का समकालीन था, की 'सियारुल औलिया' में बरनी के विषय में संक्षिप्त उल्लेख है।

अनुमानतः बरनी का जन्म 1285 ई० में बरन (आज के बुलन्द शहर) में हुआ था। अपने पिता के साथ वह दिल्ली आ गया । दिल्ली उस समय मध्य एशिया में ज्ञान का महत्वपूर्ण केन्द्र था। वह बहुत ही अध्ययनशील था। व्यक्तिगत अध्ययन एवं विद्वानों, राजनयिकों तथा सूफ़ियों के व्यक्तिगत संपर्क ने उसे उच्च कोटि का विचारक एवं विद्वान बना दिया।

दिल्ली सल्तनत कालीन इतिहासकारों में ज़ियाउद्दीन बरनी भारत में पैदा हुआ प्रथम इतिहासकार है। वह उच्च वंश का था तथा दिल्ली सुल्तानों के साथ उसके परिवार के कई पीढ़ियों से निकटतम संबन्ध थे। यद्यपि कोई राजसी पद उसे प्राप्त नहीं हो सका। मुहम्मद बिन तुगलक के राजत्व काल के दसवें वर्ष (1334 ई०) 51 वर्ष की आयु में वह दरबार में नादिम नियुक्त हुआ। यह उसका स्वर्णकाल था।

अपने जीवन के अन्तिम छः वर्ष उसने अत्यन्त कष्ट एवं विपन्नावस्था में व्यतीत किये। 1357 ई० में उसने '**तारीख-ए-फ़िरोजशाही'** पूर्ण की । उस समय उसके आयु 74 वर्ष की थी । ऐसा माना जाता है कि 1558 ई० में उसकी मृत्यु हो गयी।

9 .5.1ज़ियाउद्दीन बरनी की रचनायें

मीर खुर्द के मतानुसार बरनी ने सात ग्रन्थों की रचना की । किन्तु एक इतिहासकार के रूप में उसकी ख्याति **'तारीख-ए- फ़िरोज़शाही'** से मिली। तारीख-ए-फिरोजशाही का फारसी संस्करण सर सैयद अहमद खाँ द्वारा संपादित किया गया। एशियाटीक सोसाइटी आफ़ बंगाल द्वारा प्रकाशित हुआ। उसकी दूसरी रचना **'फ़तवा-ए जहाँदारी'** (इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति इंडिया आफिस लाइब्रेरी लंदन में उपलब्ध है) दिल्ली सल्तनत काल में इस्लामिक सिद्धान्तों पर आधारित राज्य सिद्धान्तों पर लिखी गई एकमात्र पुस्तक है। प्रोफ़ेसर मोहम्मद हबीब 'फ़तवा-ए-जहाँदारी' को 'तारीख-ए-फ़िरोज़शाही' के ही क्रम में लिखी गई पुस्तक मानते हैं।

हम उसकी **रचनाओं के विषय वस्तु** की बात करें तो तारीख-ए-फ़िरोज़शाही की रचना बरनी ने 1357 ई० में पूर्ण की। इसमें बलबन के राज्यारोहण से लेकर फ़िरोज़शाह के छठें वर्ष का हाल है। वस्तुतः तबकाते नासिरी जहाँ खतम होती है, वहीं से तारीख-ए-फ़िरोज़शाही शुरु होती है। बरनी दो पुस्तकें लिखना चाहता था। एक बलबन से मुहम्मद बिन तुगलक तक और दूसरा फ़िरोज़ तुगलक का इतिहास। किन्तु बाद में उसने दोनों ग्रन्थों को एक में मिला दिया। इस ग्रन्थ के दोनों भागों की संरचना, दृष्टिकोण व विश्लेषण में भिन्नता है।

बरनी ने छः सौ पृष्ठों के अपने ग्रन्थ में 102 पृष्ठों में बलबन के कृतित्व का वर्णन है। खिल्ज़ीकाल के 30 वर्षों का इतिहास लगभग 250 पृष्ठों में लिखा। तुगलक वंश के 37वर्षों का इतिहास 180 पृष्ठों में लिखा और अन्तिम समय

में फ़िरोज़शाह तुगलक को प्रसन्न करने के उद्देश्य से लिखी गई अपनी रचना में उसके काल के मात्र छः वर्षों का वर्णन कर सका।

बरनी ने तारीख-ए-फ़िरोज़शाही स्पष्ट, सरल और प्रभावशाली गद्य **शैली** में लिखा है। **भाषा** फ़ारसी है। उस समय दिल्ली के आसपास प्रचलित हिन्दी भाषा, गाली-गलौज के शब्द, प्रचलित मुहावरों का प्रयोग करता है। कहीं-कहीं कटु, तीक्ष्ण तथा संकेतात्मक शब्दावली का प्रयोग करता है।

जैसा की पूर्व मे आपको बताया जा चुका है कि बरनी ने तारीख-ए-फ़िरोजशाही सहित अपने सभी ग्रन्थों की रचना अपने जीवन के अन्तिम समय में की। तारीख-ए-फ़िरोजशाही लिखते समय उसके पास न कोइ डायरी थी, न कोइ विवरण पुस्तिका। उसके **लेखन का मूल स्रोत** उसका अपना अथाह ज्ञान, विलक्षण स्मरण शक्ति और मौखिक साक्ष्य थे। के०ए० निज़ामी का मत है कि "बरनी के दिमाग में जो कुछ गहरी छाप छोड़ता था, उसे वह याद कर लेता था।" इतिहासकार अपने स्रोतों के रूप में सगे-संबन्धियों और अन्य रूढ़िवादी, ईश्वर से डरने वाले लोगों के साक्ष्य का उल्लेख करते हैं। बरनी ने घटनाओं को उनके तिथिक्रम के अनुसार व्यवस्थित नहीं किया है। 'हरबंस मुखिया' का मत है कि 'तिथियों को लेकर उसके मन में भ्रम और दुविधा है तथा कदाचित ही उनका स्पष्ट उल्लेख करता है। जहाँ उल्लेख करता भी है वो सटीक हों यह आवश्यक नहीं।

9 .5.2 बरनी की इतिहास दृष्टि

इतिहासकार के गुणों के सम्बन्ध में बरनी का मत है कि-

- एक अच्छे इतिहासकार को सत्यनिष्ठ होना चाहिये।
- अतिशयोक्ति तथा शब्दातिरेक की भाषा की उपेक्षा करते हुए अपने कथन में सटीक होना चाहिये।

यद्यपि अपने ग्रंथ के अंत में बरनी स्वतः ही चापलूस सा दिखता है। इतिहास के संबन्ध में उसकी अवधारणा है कि इतिहास अतीत की घटनाओं से सीख लेने की प्रेरणा देता है। दूसरे, उच्च कुल के अहंकार से वह कभी अपने को अलग नहीं कर सका । जिसका प्रभाव उसकी कृतियों पर भी पड़ा। **बरनी अपने समय का एकमात्र ऐसा इतिहासकार है जो इतिहास से लाभ, इतिहासकार के कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व, विषय-वस्तु, किसे पढ़ना चाहिये, की वृहद व्याख्या करता है। उसके इस प्रयास के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। उसने पहली बार राजनीति और अर्थव्यवस्था के विकास और घटनाओं के कारण और परिणामों का विश्लेषण किया।**

विचारों और लेखन में पूर्वाग्रह, पक्षपात, परम्परागत कट्टर इस्लामी दृष्टिकोण के बावजूद ज़ियाउद्दीन बरनी दिल्ली सल्तनत काल का महत्वपूर्ण इतिहासकार है। तथापि उसके कथनों में कई जगह अंतर्विरोध है। विभिन्न इतिहासकारों ने उसके संबन्ध में अलग-अलग मत प्रकट किये हैं। 'इलियट व डाउसन' का मत है कि "अभिलेखों तथा समकालीन ग्रंथों का परीक्षण कर सारांश निकालने की जिज्ञासा बरनी में नहीं थी। वे उसे गलत तिथियों का अव्यवस्थित लेखक तथा पक्षपाती मानते हैं।" 'निजामी' का यह मत है कि "चूंकि बरनी ने प्रत्येक अध्याय के

आरंभ में मलिकों और खानों की सूची दी है तथा अधिनियमों और आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों का उल्लेख किया है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उसे कुछ आलेख प्राप्त थे।" 'पीटर हार्डी' का मत है कि "बरनी का ऐतिहासिक अभिगम धर्मशास्त्रीय सांचे में ढला है। वह इतिहास को इस्लामी धर्मशास्त्र का एक अंग मानता था।" ए०वी०एम०हबीबुल्लाह के अनुसार-"बरनी का इतिहास उदाहरणों के माध्यम से उपदेशात्मक है।" 'के०एस०लाल' उसकी रचना को खल्ज़ी काल के लिये प्रामाणिक मानते हैं। 'डा०मेंहदी हुसैन' उसे मुहम्मद तुगलक कालीन वर्णन के लिये असफल मानते हैं। 'डब्ल्यु एच० मोरलैंड' तथा 'आई०एच०कुरैशी' के अनुसार उसका महत्व कृषि, शासकीय तथा आर्थिक नीतियों का सरकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

सारांश में कहा जा सकता है कि अनेक शिथिलताओं के बावजूद बरनी की तारीख-ए-फ़िरोज़शाही के बिना बलबन से मुहम्मद तुगलक के काल का इतिहास जानना असंभव है। वह घटनाओं का वर्णन ही नहीं करता अपितु उसका विश्लेषण भी करता है। तथा फ़िरोज़शाह के पहले तक निडर होकर शासकों की आलोचना करता है। दिल्ली सल्तनत कालीन सभी इतिहासकारों से तुलना के उपरांत यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि ज़ियाउद्दीन बरनी सर्वश्रेष्ठ इतिहासकार था।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

I. ज़ियाउद्दीन बरनी की महत्वपूर्ण रचनाओं के नाम बताइये।

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये:

A.तारीख-ए-फिरोज़शाही

B.फ़तवा-ए-ज़हाँदारी

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिजिये:

अ) ज़ियाउद्दीन बरनी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए मध्ययुगीन भारतीय इतिहासलेखन में उसके योगदान पर प्रकाश डालिये।

9 .6 शेख अबुल फ़जल (1551-1602ई०)

मध्यकालीन फ़ारसी इतिहासलेखन में अबुल फ़ज़ल का महत्वपूर्ण स्थान है। वह मुगल सम्राट अकबर के दरबारी इतिहासकारों में सबसे विशिष्ट स्थान रखता था और इस तथ्य का सीधा प्रभाव उसके इतिहास लेखन पर भी पड़ा।

अबुल फ़जल का जन्म 14 फ़रवरी 1551 ई० को आगरा में हुआ। पिता का नाम शेख मुबारक था। उसका परिवार उदारवादी धार्मिक दृष्टिकोण का था। सहिष्णुता और ज्ञान उसे विरासत में अपने पूर्वजों से प्राप्त हुआ था। उदार परिवेश और अपने पिता की विद्वता का पूरा प्रभाव अबुल फ़ज़ल पर पडा।15 वर्ष की अल्पायु में ही ज्ञान की

महत्वपूर्ण शाखाओं पर उसने अधिकार प्राप्त कर लिया। शीघ्र की उसकी ख्याति फ़ैलने लगी। भाई अबुल फ़ैज़ी की सिफ़ारिश पर 1574 ई० में उसे अकबर के समक्ष प्रस्तुत होने का मौका मिला। अपनी असाधारण ज्ञान और बादशाह के प्रति अटूट श्रद्धा के दम पर उसने शीघ्र ही दरबार में स्थान बना लिया तथा अकबर के विश्वसनीय मित्रों में जगह बना ली। बादशाह की नज़दीकी ने अबुल फ़ज़ल के कई शत्रु पैदा कर दिये। 1602 ई० में शाहजादे सलीम के इशारे पर बीर सिंह ने निर्दयतापूर्वक उसकी हत्या कर दी।

9.6.1अबुल फ़ज़ल की विभिन्न रचनायें

अकबर के दरबार में सेवा करते हुए अबुल फ़ज़ल ने विभिन्न प्रकार की रचनाये कीं। उसने भारतीय ईरानी इतिहास-लेखन में महत्वपूर्ण योगदान किया। उनकी कृतियां समकालीन राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक, प्रशासनिक तथा सामाजिक घटनाओं के वर्णन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनकी महत्वपूर्ण रचनायें हैं-‘**अकबरनामा**’,‘**आइन-ए-अकबरी**’, ‘**रुक्यात-ए-अबुल-फ़ज़ल**’(व्यक्तिगत पत्रों का संग्रह), ‘**मकतूबात-ए-अल्लामी**’ है।(इसे इन्शा-ए-अबुल-फ़ज़ल भी कहते हैं तीन भागों में विभक्त इस पुस्तक में प्रमुख अमीरों को संबोधित शासकीय फ़रमानों का वर्णन है।) इनके अतिरिक्त उसने ‘**पंचतंत्र**’ के अरबी अनुवाद ‘**एय्यार-ए-दानिश**’ का फ़ारसी अनुवाद ‘**कलीला-वा-दिमना**’ नाम से किया। **‘अकबरनामा’ और ‘आइन-ए-अकबरी ’ के कारण अबुल फ़ज़ल को विशेष ख्याति मिली।**

स्रोतों की बात करें तो अबुल फ़जल अकबर के मित्र, परामर्शदाता मंत्री, राजनयिक तथा सैन्य कमांडर थे,समृद्ध शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाले थे । राज्य के व्यवहार और इतिहास की धारा को समझने वाले थे ।अपने ग्रंथों की रचना बादशाह के आदेशानुसार अबुलफ़ज़ल ने किया था। उसे उस समय के समस्त लेख, अमीरों के नाम लिखे गये पत्र, फ़रमान तथा शासन संबन्धी अन्य कागजात अबुल फ़जल को प्राप्त थे। उसने अपने इतिहास संकलन में इस सामग्री का उपयोग किया ऐसी स्थिति के बाद जब अकबरनामा और आइन-ए-अकबरी तैयार हुई तो इनका महत्व स्वतः ही बढ़ गया।

9 .6.2 विषय-वस्तु

‘अकबरनामा’ तीन भागों में है। पहले भाग में अकबर के पूर्वजों का वर्णन है। दूसरे भाग में बादशाह अकबर के शासनकाल से संबन्धित घटनाओं का विवरण है। इसमें प्रत्येक शासक के शासनकाल को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक घटना का विवरण विशेष पद्धति से किया गया है। साथ ही प्रत्येक वर्ष की घटनाओं का वर्णन उनके घटित होने के सही क्रम से किया गया है। ‘आइन-ए-अकबरी’ वस्तुतः अकबरनामा का तीसरा भाग है। अबुल फ़ज़ल ने अकबरनामा के साथ-साथ इसकी रचना प्रारम्भ की थी किन्तु इसने पृथक ग्रन्थ का रूप धारण कर लिया। ‘आइन’ का अर्थ है ‘नियम’। इसमें अकबर के राज्यकाल से संबन्धित आंकड़ों और राज्य व्यवस्था सम्बन्धी नियमों और समस्याओं का सविस्तार उल्लेख किया गया है। इसमें साम्राज्य के वर्णनात्मक और सांख्यकीय सर्वेक्षण के साथ दरबार तथा प्रशासकीय प्रणाली का विस्तृत विवरण है।

वस्तुतः अकबरनामा में अबुल फ़ज़ल ने न तो मुस्लिम शासकों की उपलब्धियों का वर्णन किया है न ही इस्लाम से उनके सम्बन्धों का। उसने मात्र यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि अकबर की नीतियों से राज्य में एकता, स्थिरता और आर्थिक समृद्धि आयी। अबुल फ़ज़ल की धर्म निरपेक्ष प्रस्तुति ने आगामी सदी में स्थायी जगह बना ली। यद्यपि अकबरनामा और आइन हमें अकबर द्वारा संचालित अनेकों योजनाओं की जानकारी देते हैं, तथापि इनसे किसानों और कामगार वर्ग के रहन-सहन का पता नहीं चलता। फिर भी विभिन्न दृष्टियों से अबुल फज़ल द्वारा लिखित इतिहास बहुमूल्य है।

'विन्सेंट स्मिथ' ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि "संभवतः चीन को छोड़कर एशिया भर में ऐसा ग्रन्थ नहीं लिखा गया। यूरोप तक में, बिल्कुल ही अर्वाचीन काल को छोड़कर, जब सांख्यकीय तालिकाओं और गजेटियरों का उपक्रम प्रयोग में आने लगा, इस प्रकार का प्रामाणिक संकलन कठिनता से ही मिलेगा।"

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

i-आइन-ए-अकबरी किसकी रचना है।

ii-अबुल फ़ज़ल की दो प्रमुख रचनाओं के नाम बताइये।

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये:

i-आइन-ए-अकबरी

ii-अबुल फ़ज़ल

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिजिये:

1. अकबरनामा के ऐतिहासिक महत्व का मूल्यांकन कीजिये।
2. मुगलकालीन इतिहास में अबुल फ़ज़ल के योगदान का मूल्यांकन कीजिये।

9 .7 मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूंनी (1540-1596 ई०)

अब्दुल कादिर का जन्म 1540 ई० में टोडा में हुआ। बदायूं उनका पैतृक घर था। प्रारम्भिक शिक्षा 'शेख हातिम सम्भाली' द्वारा हुई और बाद में 'शेख मुबारक नागौरी' के शिष्यत्व में अध्ययन किया।

गुरु भाई फ़ैज़ी ने बदायूंनी को बहुत ही मेधावी और बहुमुखी प्रतिभा का धनी माना है। अबुल फ़जल और फ़ैज़ी उनके सहपाठी रहे। उसे अरबी, फ़ारसी संस्कृत का ज्ञान था। वह कवि, संगीतकार, गायक, वीणा वादक एवं खगोलाशास्त्री था। 1574 में बदायूंनी को अकबर के समक्ष अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ। उसकी प्रतिभा से प्रभावित होकर अकबर ने उसे 20 का मनसब प्रदान किया और बुधवार की नमाज़ पढ़ाने के लिये

आगरा की मस्जिद में 'इमाम' नियुक्त किया। 1579 ई०में अकबर ने इसके भरण –पोषण के लिये 1000 बीघा जमीन **'मदद-ए-माश'** के रूप में दी। बाद के वर्षों में बदायूंनी और अकबर के मध्य विभिन्न मसलों पर मतभेद रहा।

9 .7.1 अब्दुल कादिर बदायूनी की रचनायें

अब्दुल कादिर बदायूंनी ने अनेक मौलिक एवं अनुवादित ग्रन्थ लिखे। अनुवादित ग्रन्थ- 'बहर-उल-असमार' संस्कृत के 'कथा सरित्सागर का फ़ारसी अनुवाद' है। 'तर्ज़ुमा-ए-महाभारत' को **'रज्मनामा'** भी कहा जाता है। इलियट और डाउसन के अनुसार के अनुसार बदायूंनी ने महाभारत के आठ पर्वों में से केवल दो पर्वों का अनुवाद किया था। 'तर्ज़ुमा-ए-रामायण' अकबर की आज्ञा से 1584 मे बदायूंनी की निगरानी में किया गया। 'सिंहासन बत्तीसी' का फ़ारसी अनुवाद बदायूंनी ने किया।

मौलिक ग्रन्थ-अनुवादित ग्रन्थों के अतिरिक्त बदायूंनी ने कुछ मौलिक ग्रन्थों 'किताबुल अहादिस', 'तारीख-ए-अल्फ़ी', 'नजात-उल-रशीद' तथा 'मुन्तखब–उत-तवारीख' की रचना की। जिनमें मुन्तखब-उत-तवारीख उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना मानी गई है। इस ग्रंथ की रचना में पाँच वर्ष से अधिक का समय लगा। यह पुस्तक बदायूंनी ने गुप्त रूप से लिखी।

9.7.2 मुन्तखब-उत-तवारीख का स्वरूप और विषय वस्तु

उसका यह ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त है। पहले भाग में सुबुक्तगीन से लेकर हुमायूँ की मृत्यु तक का सामान्य इतिहास है और दूसरे खंड में अकबर के राज्यकाल के प्रथम चालीस साल की घटनाओं का वर्णन वार्षिक आधार पर दिया गया है। तीसरे भाग में समकालीन सूफ़ियों, विद्वानों, हकीमों तथा कवियों की संक्षिप्त जीवनियां हैं। इबादतखाना की धार्मिक परिचर्चाओं अकाल, भूकम्प, चितौड़ में जौहर तथा देखी गई इमारतों और भवनों का आँखों देखा प्रस्तुत विवरण अत्यधिक प्रामाणिक है।

स्रोत की बात करें तो बदायूंनी ने स्वयं यह स्वीकार किया है कि उसने निजामुद्दीन अहमद की पुस्तक 'तबकात-ए-अकबरी' और सरहिन्दी की पुस्तक 'तारीख-ए- मुबारकशाही' तथा अपनी जानकारी के आधार पर मुन्तखब की रचना की। जबकि इतिहासकार 'हरबंस मुखिया' का मानना है कि उक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त बदायूंनी ने मिनहाज की 'तबकात-ए नासिरी', जियाउद्दीन बरनी की 'तारीख-ए फ़िरोज़शाही' और अमीर खुसरो की 'आशिक' जैसे भिन्न-भिन्न स्रोतों से भी जानकारी प्राप्त की थी। अकबर के काल की घटनाओं का विवरण बदायूंनी के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है।

9 .7.3 बदायूंनी के इतिहास लेखन की विशेषतायें

बदायूंनी के इतिहास लेखन से पहले यदि आप बदायूंनी के व्यक्तित्व के कुछ पहलूओं को समझ लें तो उसके लेखन की विशेषताओं को समझना आसान हो जायेगा। बदायूंनी कट्टर सुन्नी मुसलमान था। वह अकबर के

उदारवादी विचारों से तालमेल नहीं बिठा सका वह अत्यंत विद्वान व्यक्ति था। अपने सहपाठी अबुल फ़जल की तुलना में उसे अपनी योग्यता के अनुरूप समुचित पद या सम्मान नहीं मिला जिसका प्रभाव उसके संपूर्ण लेखन पर मिलता है। संभवत: इसी कारण उसने अपनी रचना में अकबर की कटु आलोचना की और इसीलिये उसने अपना ग्रंथ अकबर के शासनकाल में प्रकट नहीं किया। जहाँगीर के काल में इस ग्रंथ की जानकारी हुई। खाफ़ी का कहना है कि जहाँगीर ने मुन्तखब के प्रकाशन पर रोक लगा दी थी।

इतिहास के संदर्भ में कारणात्मक्ता की अवधारणा के बारे में बदायूंनी का यह मानना है कि "व्यक्ति किसी ऐतिहासिक स्थिति की पृष्ठभूमि में रहकर कार्य नहीं करता है बल्कि अपनी प्रकृति के अनुसार मंशाएं पूरी करता है और आकांक्षाओं को मूर्त बनाता है। सभी क्रियाओं का स्रोत व्यक्तिगत आकांक्षा है जो ऐतिहासिक घटनाओं को जन्म देती है।"

मुन्तखब उत तवारीख की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी व्यक्तिनिष्ठता है। ऐतिहासिक घटनाओं के संबन्ध में उसके व्यक्तिगत दृष्टिकोण और व्याख्या में ऐतिहासिकता बिल्कुल नहीं है। उसके किसी भी निर्णय में शरीयत एकमात्र मानक है। हरबंस मुखिया कहते हैं कि-'मुन्तखब में उसने अकबर, अबुल फ़ज़ल,फ़ैज़ी की भर्त्सना करके अपने मन की भड़ास निकाल ली।

बदायूंनी के इतिहास लेखन की **भाषा** सरल, प्रवाहपूर्ण तथा बेलाग है। इतिहासकार हरबंस मुखिया इस ग्रन्थ को अत्यधिक पठनीय मानते हैं।

समीक्षात्मक रूप से यह कहा जा सकता है कि बदायूंनी का मुन्तखब-उत-तवारीख पूर्णत: विश्वस्नीय नहीं है। तथापि इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। इस ग्रंथ ने मुगलकालीन संस्कृति को समृद्ध किया है। इस ग्रंथ में अफ़गान इतिहास की जानकारी तबकात-ए-अकबरी से अधिक विस्तार में है । यह अबुल फ़ज़ल द्वारा लिखी गई अकबरनामा की अतिरन्जनापूर्ण प्रशस्तियों का पूरक है। 'मुन्तखब-उत-तवारीख' अथवा 'तारीख-ए-बदायूंनी' अब्दुल कादिर बदायूंनी द्वारा रचित मुस्लिम संसार का सामान्य इतिहास है। सय्यद अतहर अब्बास रिजवी का मत है कि "उसके इतिहास को उसके धार्मिक दृष्टिकोण एवं साहित्य संबन्धी कुशलता के कारण बड़ा महत्व प्राप्त है। यह ग्रंथ अकबर की धर्म संबन्धी धारणाओं के विकास की वह जानकारी देता है जो फ़ारसी इतिहास ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं है। परन्तु उसने यदि धार्मिक अधिनियमों को किसी क्रम से लिख दिया होता तो अकबर के धार्मिक विचारों के विकास और धार्मिक नीति का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता और उसके इतिहास का महत्व बहुत बढ़ जाता। किन्तु उसका मूल उद्देश्य इस्लाम के कल्पित ह्रास का चित्र प्रस्तुत करना था। हुमायूं के इतिहास के प्रसंग में उसने उस समय के शिया सुन्नी मतभेदों एवं अन्य समकालीन लोगों के धार्मिक विचारों की बड़े रोचक ढंग से चर्चा की है।"

निश्चित रूप से बदायूंनी एक मौलिक मस्तिष्क एवं इतिहास की अवधारणा रखता। इस दृष्टि से उसकी पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

स्व मूल्यांकन हेतु प्रश्न

1.लघु उत्तरीय प्रश्न

i. मुन्तखब-उत-तवारीख किसकी रचना है?

ii. 'रज्मनामा' किस ग्रंथ का फारसी अनुवाद है?

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये:

(क) बदायूंनी की कृतियों के नाम बताइये।

(ख) बदायूंनी की कृतियों का संक्षिप्त मूल्यांकन कीजिये।

3.नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

b) अब्दुल कादिर बदायूंनी के जीवन व कृतियों का विश्लेषण कीजिये।

9 .8 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप समझ चुके होंगे कि भारत में इतिहास-लेखन की परम्परा के विकास के संदर्भ में मध्यकाल महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस काल में देश के विभिन्न क्षेत्रों के लेखकों ने अपनी कृतियों में स्थानीय परंपराओं का वर्णन किया। 'इब्न खाल्दून' पश्चिम एशियाई परंपरा का इस्लामी दुनिया का महत्वपूर्ण इतिहासकार था। 'कल्हण' प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक परंपरा के,'ज़ियाउद्दीन बरनी' सल्तनतकालीन इतिहासकार और 'अबुल फ़ज़ल' तथा 'अब्दुल कादिर बदायूंनी' मुगलकालीन, विशेषकर अकबर के समकालीन रहे। जैसा कि 'सतीश चन्द्र' ने लिखा है कि आधुनिक ढंग का इतिहास लेखन भले ही ब्रिटिश शासन की स्थापना से शुरु हुआ हो, किन्तु भारत की अपनी देशी परम्परायें रही हैं, जिन्हें इतिहास-पुराण परंपरा कहा गया है। इसमें शासकों की वंशावली संबन्धी सारणियाँ, ऐतिहासिक आँकड़े तथा इतिहास दर्शन दिया हुआ है। कल्हण की राजतरंगिणी में ऐतिहासिक विश्लेषण की परिपक्वता तथा स्पष्टता साफ़ दिखती है। यह इतिहास लेखन की लम्बी परंपरा की विकसित कड़ी है। तथापि भारत में इतिहास लेखन की परम्परा मुसलमानों के यहाँ आगमन से प्रारम्भ मानी जाती है। भारतीय फ़ारसी इतिहास लेखन की बात करें तो इसकी शुरुआत ताज़-उल-मआसिर (हसन निज़ामी) से मानी जाती है किन्तु इतिहास लेखन का वास्तविक स्वरूप ज़ियाउद्दीन बरनी के तारीख-ए-फ़िरोज़शाही में दिखाई देता है। मुगल वंश की स्थापना के साथ इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण परिवर्तन उपस्थित हुआ। औरंगज़ेब ने अपने शासन के दसवें वर्ष से शासकीय लेखन बंद करवा दिया। उसके बाद लेखन निजी तौर पर शुरु हुआ|

9 .9 तकनीकी शब्दावली

'मदद-ए-माश'- मुगल काल में विद्वानों को दी जाने वाली राजस्व मुक्त अनुदानित भूमि।

'इस्नाद'- इस्लामी इतिहासलेखन में स्रोत आलोचना की पद्धति को 'इस्नाद' कहते हैं।

3.10 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

➢ इकाई 9 .3. स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

1 I) 'किताब-उल-इबर'

II) 'किताब उल इबर' पुस्तक के अंत में संकलित खाल्दून की आत्मकथा

III) इतिहास

2. I) देखिये 9 .3.3
II) देखिये 9 .3.4
III) देखिये 9 .3.1

3. I) देखिये 9 .3.1 से 9 .3.5

➢ इकाई 9 .4. स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

1 .I) कल्हण
II) 'तरंग' या 'लहर' कहा

2. a) देखिये 9 .4.4

3. अ) और ब) के किये देखें 9.4 संपूर्ण

➢ इकाई 9 .5 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

1. I) तारीख-ए-फिरोज़शाही, फ़तवा-ए-ज़हाँदारी

2. A. और B. हेतु देखिउए 9 .5.1

3. देखिये 9 .5

➢ इकाई 9 .6 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

1 .i- अबुल फ़ज़ल ii-अकबरनामा, आइन-ए-अकबरी

2. I) & II) देखिये 9 .6.2

3. I) देखिये 9 .6

➢ इकाई 9 .7 स्वमूल्यांकित प्रश्नों के उत्तर

1 .i) अब्दुल कादिर बदायूंनी
II) महाभारत का

2.निम्न लिखित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये:
(क) देखिये 9 .7.1
(ख) देखिये 9 .7.1

3. I) देखिये 3.7.1

3.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

- ई० श्रीधरन, इतिहास –लेख ,(हिन्दी अनुवाद मनजीत सलूजा), हैदराबाद, (तेलंगाना) ,2011
- श्री राम गोयल (सं) भारत में मुगल साम्राज्य का प्रारम्भिक इतिहास, मुन्शीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, नई दिल्ली,1987,
- डा० हरिशंकर श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन (1200-1445 ई०), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
- डा० सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन: धर्म और राज्य का स्वरूप, नयी दिल्ली, ग्रन्थ शिल्पी, 1996.

- डा० सतीश चन्द्र, एसेज आन मिडिवल इन्डियन हिस्ट्री,नई दिल्ली, ओयूपी,2005
- के०ए०निज़ामी, आन हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स आफ मेडिवल इंडिया, दिल्ली, 1983.

3.12 सहायक /उपयोगी सामग्री

- ई० श्रीधरन, इतिहास –लेख, (हिन्दी अनुवाद मनजीत सलूजा), हैदराबाद, (तेलंगाना) ,2011 |
- श्री राम गोयल (सं) भारत में मुगल साम्राज्य का प्रारम्भिक इतिहास, मुन्शीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, नई दिल्ली,1987|
- डा० हरिशंकर श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन (1200-1445 ई०), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.1997|
- डा० गोविन्द्चन्द्र पाण्डे, (संपादित) इतिहास: स्वरूप एवं सिद्धान्त,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1999
- डा० सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन: धर्म और राज्य का स्वरूप, नयी दिल्ली, ग्रन्थ शिल्पी, 1996.
- डा० सतीश चन्द्र, एसेज आन मिडिवल इन्दियन हिस्ट्री, नई दिल्ली, 2005.
- के०ए०निज़ामी, आन हिस्ट्री एण्ड हिस्टोरियन्स आफ मेडिवल इंडिया, दिल्ली, 1983.
- इरफान हबीब, मध्यकालीन भारत, भाग-8,देहली सल्तनत के इतिहास पर बरनी का सिद्धन्त, लेख, पृष्ठ-64-81,राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली.2003.
- Iqtidar Husain Siddiqui, ‘The orginal and grouth of an Islamic Historiography in India’, Journal of Objective Studies, Vol 1, Nos.1-2, July-October, 1989, Jamia Nagar, New Delhi.

3.13 निबन्धात्मक प्रश्न

1. एक दार्शनिक इतिहासकार के रूप में इब्न खाल्दून का विश्लेषण कीजिये।
2. कल्हण के ग्रंथों के आधार पर इतिहास के प्रति उनके दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिये।
3. प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में कल्हण एवं उसके ग्रंथ की भूमिका लिखिये।
4. ज़ियाउद्दीन बरनी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए मध्ययुगीन भारतीय इतिहास-लेखन में उसके योगदान पर प्रकाश डालिये।
5. अकबरनामा के ऐतिहासिक महत्व का मूल्यांकन कीजिये।
6. मुगलकालीन इतिहास में अबुल फ़ज़ल के योगदान का मूल्यांकन कीजिये।
7. अब्दुल कादिर बदायूंनी के जीवन व कृतियों का विश्लेषण कीजिये।